श्रीवीतरागाय नमः ।

जैन तीर्थयात्रादर्शक ।

सम्पादक-

श्रीमान् ब्रह्मचारी गेवीलालजी ।

संशोधक-

पं० गुलजारीलालजी चौधरी-केसली (सागर)।

प्रकाशक-

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

मालिक, दिगम्बर जैनपुस्तकालय, चंदावाड़ी-सूरत ।

द्वितीयावृत्ति] वीर सं० २४५७ [प्रति १०००

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस-सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया ।

मूल्य-रु० १-८-०

करीब १७-१८ वर्ष पहिले स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचंदजी जौंहरी जे० पी० बम्बईने अतीव परिश्रम व बड़ा भारी द्रव्य व्यय करके "भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थयात्रा दर्पण" नामक ग्रन्थ तैयार कराकर प्रगट किया था, जो अतीव लोकप्रिय हुआ था, उसके बादमें उसको संक्षेप करके तीर्थयात्रा विवरण व तीर्थयात्रा दीपक नामक छोटी २ पुस्तकें जैन यात्रार्थियोंके लाभार्थ अन्य भाइयोंकी ओरसे प्रकाशित की गई थीं। उनके बिक जानेपर तथा सेठजीका यात्रादर्पण पुराना होजानेसे एक ऐसे ग्रन्थकी आवश्यक्ता थी जो हरएक यात्रीको अपनी यात्रामें साथीका काम देसके। ऐसे कार्यको सभी यात्राएं खुद करनेवाला कोई अनुभवी व्यक्ति करें तब ही सरल व उपयुक्त ग्रन्थ बन सकता था। सौभाग्यसे ऐसे ही व्यक्ति श्रीमान् ब्र० गेबीलालजी मिल गये जिन्होंने सं० १९७८में कलकत्तामें चातुर्मास करके अपने निजी अनुभवसे अतीव परिश्रम करके 'जैन तीर्थयात्रा दर्शक' नामक पुस्तक लिखी और कलकत्ता जैन समाजने बड़ा चंदा करके उसकी २९०० प्रतियां छपाई थीं तथा प्रायः मुफ्तमें बांटी थीं और कुछ प्रतियां अतीव अल्प मूल्यमें दी गई थीं। जिससे इसका बहुत प्रचार हुआ और इसकी विशेष मांग होने लगी थी। तब हमने श्रीमान् ब्र० गेबीलालजीसे निवेदन किया कि यदि आप इस पुस्तकको

संशोधन करके फिरसे लिखदें तो हम हमारे पुस्तकालय द्वारा इसको प्रगट कर देंगे। तब ब्रह्मचारीजीने यह बात स्वीकार की। और सं० १९८९में लाडनूंमें चातुर्मास ठहरकर इसको फिरसे लिखी व हमें प्रकाशनार्थ भेज दी परन्तु आपकी भाषा पुरानी होनेसे उसमें संशोधन होनेकी व सिलसिलेवार इसकी पुनः कापी करानेकी आवश्यक्ता थी इसलिये प्रकट करनेमें विलंब होगया।

फिर हमने केसली (सागर) नि० पंडित गुलजारीलालजी चौधरी जो धुलियान (मुर्शिदाबाद)की दि० जैन पाठशालामें अध्यापक थे उनसे इसकी शुद्ध भाषामें कापी कराई। उसके बाद हमारे कार्यालयमें कार्याधिकतासे इसको छपानेका काम कुछ विलंबसे होसका तौभी अब यह ग्रन्थ तैयार होकर पाठकोंके सन्मुख उपस्थित होता है। इस 'जैनतीर्थयात्रादर्शक' पुस्तकको यदि हिंदुस्तानभरकी जैन यात्रा या कोई भी एक यात्रा करनेवाले यात्री अपने पास रखेंगे तो यह एक मार्गदर्शकका कार्य देगी तथा यदि इस पुस्तकको मंगाकर इसका स्वाध्याय करेंगे तो घर बैठे२ हिन्दुस्तानभरके जैन तीर्थ तथा प्रसिद्ध २ स्थानोंका ऐतिहासिक परिचय मिल सकेगा।

इस पुस्तकको विशेष उपयोगी बनानेके लिये हमने इसमें हिंदुस्थानका एक ऐसा नकशा हिंदी भाषामें बनाकर रखा है जिसके पासमें रखनेसे हरएक यात्राका सीधा व सरल मार्ग मालूम हो सकेगा। हम तो यहांतक कहते हैं कि इस मात्र एक नकशेको ही पासमें रखनेसे कोई भी अपरिचित भाई अकेले ही हरएक यात्राको

सुलभतासे कर सकेगा और किसीकी सहायता लेनेकी भी आवश्यक्ता नहीं पड़ेगी। इस नकशेमें हरएक सिद्धक्षेत्र, अतिशयक्षेत्र व क्षेत्रको लाल श्याहीसे सचित्र बता दिया है। इससे तो इसकी उपयोगिता व सुंदरता और भी अधिक बढ़ गई है, तथा यह नकशा अलग भी सिर्फ दो आनेमें देनेका हमने प्रबंध किया है। आशा है कि "जैन तीर्थयात्रा दर्शक" की इस दूसरी आवृत्तिके प्रकट होजानेसे जैन यात्रियोंको अतीव सुलभता होगी।

अंतमें हम इस ग्रन्थके रचयिता श्री० ब्र० गेबीलालजीका आभार मानते हैं कि जिन्होंने ऐसे कठिन व महत्वपूर्ण ग्रन्थको बनाया है। ब्रह्मचारीजीका चित्र व संक्षिप्त परिचय भी इस ग्रंथमें दिया गया है, जिससे ब्रह्मचारीजीकी अनुकरणीय समाजसेवा व त्याग-वृत्तिका पाठकोंको पता लग सकेगा। दूसरे श्री० पं० गुलजारी-लालजी चौधरी भी धन्यवादके पात्र हैं जिन्होंने इस पुस्तककी सिलसिलेवार प्रेस कोपी करदी थी। अब भी इस ग्रन्थमें कुछ त्रुटियां रह गई हों तो पाठक हमें सूचित करते रहें जिससे आगामी आवृत्तिमें वे त्रुटियां ठीक होसकें।

निवेदक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

प्रकाशक।

सूरत
वीर सं० २४५६
आश्विन सुदी ५.

इस समय संसारमें अगणित मत प्रचलित हैं। और बहुतसे मनुष्य उनके भक्त देखे जाते हैं। यद्यपि वर्तमानमें किसी भी मतका संचालक उपासक देव दृष्टिगोचर नहीं होता है तथापि उनके स्मरण-चिह्न वर्तमानमें मौजूद हैं, वे तीर्थोंके नामसे पुकारे जाते हैं। और लोग उन्हीं स्थानोंको बड़ी भक्तिभावसे पूजते हैं।

संसारका प्रत्येक प्राणी सुख और आराम चाहता है, कोई भी जीव दुःख एवं कष्ट नहीं चाहता है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जिस मतमें आराम रहता है, उसके अनुयायी बहुत होते हैं। परन्तु जिस मतके अंदर आरामका स्थान नहीं, किसी बातका मुलाहजा नहीं, इतनेपर भी उस मतमें दृढ़ता करानेवाला कोई व्यक्ति नहीं, उस मतसे लोग जल्दी गिर जाते हैं, अपनी इच्छानुसार मतको ग्रहण करके श्रद्धानसे भ्रष्ट होकर बहुत काल तक संसारमें घूमते हैं। यह बात निश्चित है कि काल दोषके प्रभावसे संक्लेशका कारण होनेपर भी उस मतके अनुयायी भले ही कम हों, पर उस सच्चे मतकी कीमत है। उसके अनुयायी मनुष्योंका जन्म सफल है। उसके ३ दृष्टांत है—

१—पत्थर बहुत होनेपर भी एक रत्न भला है।

२—मूर्ख हजारों पुत्र भी रहें परन्तु गुणी, विद्वान्, धर्मात्मा एक ही सुपुत्र श्रेष्ठ है।

३–हरिण व खरगोश हजारों होनेपर भी सिंह एक ही भला है।

इसी तरहसे सच्चे धर्मके अनुयायी थोड़े भी बहुत हैं। प्राचीनता एक प्रामाणिक पदार्थ है। जिस मतकी जितनी प्राचीनता होगी, वह मत उतना ही श्रेष्ठ होगा।

वर्तमानमें उस प्राचीनताके माननेवाले कम मनुष्य हों, लेकिन वह प्राचीनता उनका बहुपना, अनादि निधनपना प्रगट करती है।

आजकल ऊपरसे अच्छे दिखनेवाले बहुत मत हैं। बड़े२ विद्वान् प्राचीनकालके मतको उत्तम एवं गौरवकी दृष्टिसे देखते हैं। और मुक्तकंठसे प्रशंसा भी करने लग जाते हैं। क्योंकि सचाईका महत्व उनमें भरा हुआ है। आज दिगम्बर जैन मतानुयायी कम हैं। मगर उनके प्राचीन स्थान और आदर्श तत्व उनकी सचाई व प्रमाणताको बता रहे हैं, कोई मूर्ख लोग अज्ञानतासे भले ही निंदा करें। जैन मतके किसी भी तत्वपर आरूढ़ रहनेसे संसारके प्राणियोंका प्रत्यक्ष कल्याण होता है। यदि कोई प्राणी जैन धर्मको सम्पूर्ण रूपसे ग्रहण करें, तो क्या उसका कल्याण नहीं होगा? अवश्य ही होगा। जैन मत अहिंसातत्वप्रधान है। उसको धारण करनेवालोंका बल संसारमें कितना बढ़ गया है यह बात जगतप्रसिद्ध है। ज्यादः प्रशंसाकी जरूरत नहीं है। जैन धर्मका रहस्य शास्त्रोंमें वर्णित है। विद्वान् लोग उसको देख सकते हैं। और परीक्षा भी कर सकते हैं कि कौनसा धर्म अच्छा है। अनेक प्राचीन तीर्थोंको देखनेसे जैनधर्मकी दृढ़ता होसकती है।

यही सोचकर हमने वि० सं० १९७८ में कलकत्तामें चातुर्मास किया था और तब चार महिने भारी परिश्रम करके यह पुस्तक अपने प्रत्यक्ष अनुभवसे लिखी थी। फिर इसको छपाकर प्रचार करनेका विचार हुआ। तदनुसार कलकत्ता समाजको छपानेको कहा तो कलकत्ताके धर्मप्रेमी भाइयोंने इसको छपाकर प्रचार करनेका निश्चय कर लिया। इसी प्रकार कलकत्ताकी उदार, दानी समाजने प्रथमावृत्ति २१०० पुस्तकें चंदा करके छपाई। इसलिये कलकत्ता समाज एवं बा० किशोरीलालजी पाटणीको जितना धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है।

प्रथमावृत्तिकी पुस्तकें वितीर्ण होनेपर समाजमें इसकी मांग बहुत हुई। फिर वि० सं० १९८३ में गयामें प्रतिष्ठा हुई थी। और सं० १९८९ में फाल्गुन मासमें तीर्थराजश्री सम्मेदशिखरजी का श्री० सेठ घासीलाल पूनमचंद हुमड बम्बईवालोंने संघ निकाला था, उसमें आचार्य श्रीशांतिसागरजी महाराज (दक्षिण) भी अपने संघ सहित पधारे थे। उनके संघमें १० मुनि, ४ आर्यिका, ९० ब्रह्मचारी, १ क्षुल्लक व ८ ऐलक थे। जनताकी संख्या भी एक लाख होगी। उसीसमय संघपति सेठ घासीलाल पूनमचन्दजीने जिनबिंब प्रतिष्ठा कराई थी। वहांपर मैं भी गया था। सो उक्त दोनों प्रतिष्ठाओंमें हजारों भाइयोंने यात्राकी पुस्तककी मांग की। और कई सज्जनोंने पुनः प्रेरणाकी कि आपकी पुस्तक उपयोगी है, आप उसको पुनः प्रकाशित कराईये।

इतनेमें सूरतके दिगम्बर जैन पुस्तकालयके मालिक श्री० सेठ मूलचन्द किसनदासजी कापड़िया मिले, उनसे इस बातकी

जिकर करते ही आपने यह पुस्तक अपनी ओरसे प्रकाशित कर नेको कहा और मैंने उनको स्वीकारता दी।

इसके बाद मैंने सं० १९८९का चातुर्मास लाडनूं (मारवाड़)में किया और वहां पांच माह परिश्रम करके इस पुस्तकको भारतवर्षके जैन भाइयोंके लाभार्थ फिरसे लिखके तैयार की व सूरत प्रकाशनार्थ भेज दी थी जो अब प्रकट हो रही है। इसमें अब भी प्रमादवश और मेरे दूर रहनेके कारण कहीं पर अशुद्धियां रह गई हों तो पाठक सुधार लेवें और उसकी सूचना भी मुझे दें ताकि वे अशुद्धियां अगली आवृत्तिमें सुधारी जासकें। विज्ञेषु किमधिकम्।

समाजसेवी–ब्र० गेबीलाल।

स्व० कविवर द्यानतरायजी कृत-

चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्र पूजा ।

सोरठा ।

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निशदीस, मन वच तन पूजा करौं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् ।

अष्टक ।

गीता छंद ।

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल, कनकझारीमें भरौं ।
संसारपार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं ॥
सम्मेदगिरि गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकौं ।
पूजों सदा चौवीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकौं ॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

केशर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरौं ।
भवतापको संताप मेटौ, जोर कर विनती करौं ॥स०॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति०।

मोतीसमान अखंड तंदुल, अमल आनंद धरि तरौं ।
औगुन हरौ गुन करौ हमको, जोरकर विनती करौं ॥स०॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति०

शुभफूलरास सुवासवासित, खेद सब मनके हरौं ।
दुखधाम काम विनाश मेरो, जोरकर विनती करौं ॥स०॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्योः पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

नेवज अनेकप्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं ।
दुखधाम काम विनाश मेरो, जोरकर विनती करौं ॥स०॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक प्रकाश उजास उज्जल, तिमिरसेती नहिं डरौं ।
संशयविमोहविभरम तमहर, जोरकर विनती करौं ॥स०॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ धूप परम अनूप पावन. भाव पावन आचरौं ।
सब करमपुंज जलाय दीजे, जोरकर विनती करौं ॥स०॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बहु फल मंगाय चढाय उत्तम, चारगतिसों निरवरौं ।
निहचै मुकतिफल देहु मोकों, जोरकर विनती करौं ॥स०॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्योः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतमें. जोरकर विनती करौं ॥स०॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

सोरठा ।

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलासादिक नमों ।
तीरथमहाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥ १ ॥

चौपाई १६ मात्रा ।

नमों रिषभ कैलासपहारं । नेमिनाथ गिरनार निहारं ॥
वासुपूज्य चम्पापुर वंदौं । सनमति पावापुर अभिनंदौ ॥२॥
वंदौं अजित अजितपददाता । वंदौं संभव भवदुखघाता ॥
वंदौं अभिनन्दन गणनायक । वंदौं सुमति सुमतिके दायक ॥३
वंदौं पदम मुकतिपदमाधर । वंदौं सुपार्स आशपासाहर ॥
वंदौ चन्द्रप्रभ प्रभु चन्दा । वंदौं सुविधि सुविधिनिधिकंदा ॥४
वंदौं शीतल अघतपशीतल । वंदौं श्रियांस श्रियांस महीतल ॥
वंदौं विमल विमलउपयोगी । वंदौं अनंत अनंतसुखभोगी ॥५॥
वंदौं धर्म धर्मविसतारा । वंदौं शांति शांतमनधारा ॥
वंदौ कुंथु कुंथुरखवालं । वंदौं अरि अरिहर गुनमालं ॥ ६ ॥
वंदौं मल्लि काममल चूरन । वंदौं मुनिसुव्रत व्रतपूरन ॥
वंदौं नमि जिन नमित सुरासुर । वंदौं पास पासभ्रमजरहर ॥७
वीसौं सिद्ध भूमि जा ऊपर । शिखरसम्मेद महागिरि भूपर ॥
एक वार वंदै जो कोई । ताहि नरकपशुगति नहिं होई ॥८॥
नरगतिनृप सुर शक्र कहावे । तिहुंजग भोग भोगि शिव पावै ॥
विघनाविनाशक मंगलकारी । गुणविलास वंदें नरनारी ॥ ९ ॥

छंद घत्ता ।

जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करै ।
ताको जस कहिये सम्पति लहिये, गिरिके गुणको बुध उचरै ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व० ।

—✦—

विषय-सूची।

उपयोगी प्रश्नोत्तर !

१—तीर्थयात्रा करनेमें क्या फल, क्या फायदा होता है ?

उत्तर—पापकर्मोंका नाश, पुण्यकर्मोंका बंध और परम्पराय मोक्ष भी मिलता है। पुण्यसे सुखकी प्राप्ति होती है। "भाव सहित वंदे जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहिं होई", ऐसा ही शिखर महात्म्य, पूजापाठ आदि धार्मिक ग्रंथोंमें लिखा है।

२—इसके सिवाय और कुछ भी लाभ है ?

उत्तर—देखो ! शरीर तथा उत्तम कुल धन पानेकी सफलता पात्रोंको दान, सज्जन मिलन, देशाटन, नवीन२ पदार्थोंका देखना, शहरोंका देखना, बुद्धिका निर्मल होना, प्रबल कष्टादिकी सहनशीलता, नम्रता, त्यागादिककी बहुलता, आलस्य, परीषहादिकका विजय, धर्मायतनोंका निरीक्षण, अनाथालय, विद्यालय, बोर्डिंग, श्राविकाश्रम, कन्याशाला, विधवाश्रम देखना, पंडितोंका समागम, क्रोध, मान, माया, मत्सर भावोंका त्यागना, मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका, ब्रह्मचारी आदिके दर्शन, बड़े२ सेठ व विद्वान लोगोंका मिलाप इत्यादिक लाभ तीर्थयात्रासे होता है।

यात्रामें चेतावनी।

१–भाईयो ! मनुष्यजन्म, नीरोग्यशरीर, धनसम्पत्ति, उत्तम कुल आदिका पाना दुर्लभ है। जो इन सबको पाकर और घरमे प्रमादी होकर पड़ा रहता है उसका ये सब पाना व्यर्थ है।

२–गृहस्थी सम्बन्धी सब कार्य छोड़कर, शांतचित्त उदार भावोंसे शक्तिप्रमाण तप-दान त्याग करते हुए, मान, मत्सर, प्रमाद क्रोधादि कषायोंको त्यागकर शुद्ध भावोंसे तीर्थयात्रा करनी चाहिये।

३–सिद्धक्षेत्रोंके ऊपर वंदनाको जाते समय शौचस्नानादिसे निबटकर, शुद्ध वस्त्र पहिनकर, शक्तिप्रमाण सामग्री लेकर, बड़े आनंदके साथ जयर शब्द करते हुए जाना चाहिये। पहाड़ ऊपर ध्यान सहित, चित्तको शांत करके बड़े उत्कृष्ट भावोंके साथ यात्रा करनी चाहिये।

४–अपनी शक्तिप्रमाण चढ़ानेकी सामग्रीको दिनमें खूब सोधकर बढ़िया करके लेजाना चाहिये।

५–तीर्थोंपर जीर्णोद्धार, मरम्मत, नवीन कारखाना, पुजारी, मुनीमका खर्च ज्यादह रहता है। इससे उदार भावोंसे धनका मोह छोड़कर अच्छा भंडार भराना चाहिये। तीर्थोंपर नाना तरहके दुखी जीव रहते हैं उनको भी दान करना चाहिये। मुनि-आर्यिका, श्रावक, श्राविका, विद्यार्थी, पंडित ऐसे सुपात्रोंको यथायोग्य दान देना चाहिये।

६–गोदी, डोली आदिके मजदूरोंकी मजूरी ठीकर देनी चाहिये। किसीको दुःख न हो। किसीका दिल न दुखे, इस बातको ध्यानमें रखें।

७–जिस दिन वंदनाको जाना हो, उसके पहिले दिन शुद्ध, सादा, पाचक, हलका भोजन करो। ताकि वंदनामें कोई बाधा न होवे। पहाड़पर जूता पहिनकर मत जाओ। शांतिसे आगे-पीछेकी खबर रखते हुए धीरे२ पहाड़पर चढ़ो, दौड़ा भागी न करो। सामान, जेवर वगैरह समालते रहो। बालबच्चोंको होशयारीसे रक्खो।

८–तीर्थोंपर प्रेम व मेल मिलाप रखो। झगड़ा विसंवाद न करो।

९–तीर्थोंमें अपनी शक्तिप्रमाण दान करना चाहिये।

१०–जिस तीर्थ, क्षेत्र, रेल, शहरमें जाना हो, वहांका सब हाल याद रखो। स्टेशन, गाड़ीका बदलना, धर्मशाला, मंदिर, चैत्यालय, आसपास तीर्थ, बाजारका हाल इत्यादि सब पूछ रखना चाहिये। इससे बड़ा लाभ होता है।

११–रेलमें चढ़ने उतरते समय सब सामान सावधानीसे रखना, उठाना चाहिये। आगे पीछे यात्रियोंको देखकर बैठना-उठना चाहिये। सबल-निर्बलका ध्यान रखना चाहिये। कुलीकी मजूरी ठहरा लेना चाहिये। रेलमें शांति भाव रखना, चाहिये। किसीसे झगड़ा नहीं करना चाहिये। सबसे हेल-मेल रखना, मीठा वचन बोलना; सामान, जेवर, रुपया आदिकी सावधानी रखना। रेलमें लुच्चे, गुंडे, बदमाश, दगाबाज बहुत रहते हैं। सबसे सावधानी रखके ठगाना नहीं चाहिये। बहुत नींद भी नहीं लेना। बालबच्चोंको रेलकी खिड़कीसे दूर रखना। टट्टी पेशाब रेलके संडासमें ही करना चाहिये। घड़ी२ बाहर निकलनेसे गिरने व रेल चलनेका भय रहता है। रेलवेका महसूल घटता बढ़ता रहता है, सो पूछते रहना चाहिये। गाड़ीके पहिले टिकट लेलेना चाहिये। टिकटका दाम खिड़-

कीके पास लिखा रहता है । सो तुरत देख लेना चाहिये । रेल॰ रुपया, पैसा, नोट वगैरह विना जरूरत नहीं निकालना चाहि॰

१२–माता, पुत्री, बहिन, स्त्री आदिको अपरिचित आ॰ मीके पास मत बैठाओ। हर समय संभालते रहो ।

१३–रेलमें किसी भी आदमीका एकदम विश्वास मत करं अपनी चीज किसीके भरोसे मत रखो ।

१४–बहुतसे आदमी रेलमें सूरतके अच्छे मालूम पड़ते मगर लुच्चे दगाबाज होते हैं ।

१५–जिस समय धर्मशालासे रवाना हो उस समय अप॰ सब चीजें संभाल लो । दियावत्ती, लालटेन वर हमेशा साथ रखो अगर कोई टायम गाड़ी चूक जाय तो दूसरी गाड़ीसे चले जाओ

१६–कुली, तांगा आदिका किराया पहिले तय कर लो जिससे पीछे झगड़ा–फिसाद न हो ।

१७–तांगा, कुलीको अकेला छोड़कर मत जाओ । साथही रहना चाहिये । नहीं तो धोका खाओगे ।

१८–रेलवे, मोटर, तांगा, कुलीका नंबर याद रखो । टिक॰ टका नंबर नोटबुकमें लिखलो । क्योंकि यदि टिकट गुम जाय त॰ नम्बर बतानेसे चल जाता है ।

१९–स्टेशनपर आध घंटा पहिले पहुंचना अच्छा है । इससे टिकट लेनेमें, बैठनेमें, सामान रखनेमें आराम रहता है । देरीसे जानेमें हरएक बातकी गड़बड़ी होती है ।

२०–रेलके आते समय प्लेटफार्मसे दूर हट जाओ । औ॰ चलती रेलमें चढ़ना-उतरना नहीं चाहिये ।

२१–हिंदू तीर्थोंपर जाते समय ब्राह्मण, पंडा आदिसे बचते रहो।

२२–विदेशमें ज्याद: सामान मत लेजाओ, मत खरीदो। अधिक बोझामें रेलका किराया, तांगा, कुलीका देनेसे बहुत खर्चा होगा। अगर कुछ सामान खरीदो तो पार्सलसे सीधा घर भेज दो। मगर साथमें ज्याद: बोझ मत रखो।

२३–यात्राको जाते समय ज्याद: वर्तन, जेवर, बिस्तर मत लेजाओ।

२४–अपने पास रुपया पैसा रखो, परदेशमें सवारी मजूर, खाने-पीनेका सामान सब मिल जाता है। मगर फिजूलखर्च नहीं करना चाहिये।

२५–दिनमें १–२ वार आरामसे दाल-रोटी जीम लेना चाहिये। हरएक वस्तुको हरसमय खाना ठीक नहीं है। तीर्थयात्रामें रोग आदि होनेसे विघ्न होसकता है।

२६–अधिक भूखे मत रहो, रात्रिको अधिक मत जागो नहीं तो स्वास्थ्य खराब हो जायगा। ३–४ दिन सफर करके १ दिन आराम लेना चाहिये। ऐसा करनेसे बीमारीकी शंका नहीं रहती है। रात-दिन मुसाफिरी करनेसे हैरान होना पड़ता है।

२७–टिकट लेते समय होशयारी रखनी चाहिये। जितना रुपया लगता है उतना ही पासमें रखो। खिड़कीके पास वापिसी दाम संभाल लो।

२८–रेलमें चढ़ जानेपर अपने संघके आदमी तथा सामान संभाल लो, कोई छूट तो नहीं गया है।

२९–चलती रेलकी खिड़की खुली मत रखो। बालबच्चोंको और सामानको खिड़कीके पास मत रखो। नहीं तो गिर जांयगे।

३०—सरकारी महसुल (रेलकिराया) नहीं चुराना चाहि
जो चुराते हैं उनको जुर्माना देना पड़ता है।

३१—बड़े२ जंकशनपर उतरकर घूम लेना चाहिये। ग
बदलनेका स्थान व समय पूछते रहना चाहिये। नहीं तो कई
कहीं चला जासकता है।

३२—रेलवे कानूनसे ज्याद: सामानकी बिल्टी कटा ले
चाहिये। ऐसा नहीं करनेसे रास्तेमें बाबू लोग तंग करते हैं। उ
मुफ्तमें घूंस देनी पड़ती है।

३३—रुपया, दिन ज्याद: लग जाय, इसकी फिकर मत क
मगर हरएक कार्यको सोच विचारकर, बड़ी सावधानीसे पूछकर करें

३४—जहांपर पूजनकी सामग्री शुद्ध मिले वहींसे २–४ रं
लेकर अपने पास रखलो, खूब शोध बीन लो क्योंकि कहींपर सामग्र
नहीं मिलती है अथवा दूना, ड्योढा दाम देना पड़ता है।

३५—रेलमें सफर करते हुए किसी क्षेत्रपर किसी ग्राम
जानेकी आवश्यक्ता हो तो उतर पड़ना चाहिये।

३६—अगर कभी भूलसे रेलमें कोई कीमती सामान रह जा
तो डब्बाका नम्बर याद होनेपर मिल सकता है। जिस स्टेशन तुमकं
याद आवे, वहांके स्टेशन मास्टरको सूचना देकर तार दिला दो
अगर वहांपर वह चीज होगी तो उसको वहांके स्टेशन मास्टर य
गार्ड रख सकते हैं। पर डब्बाका नंबर याद होना चाहिये।

३७—अगर किसी तरहसे अपने संघका आदमी आगे-पीछे
रह जावे, तो तार देकर उतार देना चाहिये। फिर अपनेको दूसरे
टायममें जाकर मिलना चाहिये।

३८—किसी कारणसे टिकट न ले पाया हो तो गार्डको कहकर बैठ जाना चाहिये। आगेकी स्टेशन या गार्डसे टिकट लेलेना चाहिये।

३९—किसीके पास आगे-पीछेकी स्टेशनका टिकट हो, जहां पर उतरना हो वहांपर स्टेशन बाबूको आगेका किराया चुका देना चाहिये। इसमें कुछ भी हर्ज नहीं है।

४०—अगर अपने पास पेसीञर गाड़ीका टिकट हो। और डाक या एक्सप्रेसमें जाना हो तो बाबूसे टिकट ठीक करा लें।

४१—भूलसे या रात्रिके सोनेसे आगेकी स्टेशनपर चला जाय तो बाबूको कहकर लौटती गाड़ीसे वापिस आना चाहिये। मगर जिस स्टेशनसे लौटकर आवोगे वहांसे टिकट लेना होगा।

४२—तीर्थके मैनेजरके काममें कुछ त्रुटि माल्रम हो तो विझीटबुकमें बता देना चाहिये ताकि वह सुधार दी जासके।

४३—जहांपर पाठशाला, अनाथालय आदि हो वहांपर दान अवश्य देना चाहिये। दान देकर रसीद हरजगहसे लेलेनी चाहिये।

४४—इस पुस्तकमें दिये गये हिन्दुओंके तीर्थ अवश्य देखना चाहिये, पुण्यबंधको या धर्माभिलाषासे नहीं। व अपने बड़े तीर्थोंमें ४—६ दिन रहकर सुखसे वंदना करना चाहिये।

४५—अगर अपनी स्त्रियां रजःस्वला होजांय तो घबड़ाना नहीं चाहिये। न पापका उदय समझना चाहिये। यह उनका स्वाभाविक धर्म है। शुद्धिके बाद यात्रा करनी चाहिये।

४६—तीर्थक्षेत्रोंमें रहकर धर्मध्यानपूर्वक समय बिताना चाहिये। गप्पों या ताशमें नष्ट नहीं करना। अगर कोई काम नहीं होवे तो शास्त्रस्वाध्याय करना चाहिये।

जानने योग्य रेलवे कानून ।

१–कुछ कानून बतौर 'यात्रामें चेतावनी' के नं० ३६ से ४१ तक लिखे गये हैं उनको समझना चाहिये ।

२–सौ मीलसे अधिक दूर जानेवाला यात्री, सौ मील जाकर २४ घंटे विश्राम करके फिर उसी टिकटसे जासकता है। जैसे देहली बंबईसे ८६५ मील दूर है। यदि यात्री बीचमें बड़ौदा, सूरत, अहमदाबाद ठहरना चाहे तो इकट्ठी टिकटमें ठहर सकता है। अलग२में नहीं।

३–रेलका किराया व समय बदलता रहता है। लम्बी सफरका एक टिकट लेनेसे फायदा होता है। भिन्न२ लेनेसे किराया ज्याद: व तकलीफ भी ज्याद: होती है।

४–रेलवेमें ४ दर्जे होते हैं, फर्स्ट, सेकेण्ड, इन्टर व थर्ड। थर्डमें किराया कम लगता है व ज्यादे ठहरती है।

५–यात्रियोंको नीचे लिखे हुए लगेजसे अधिक होनेपर किराया लगता है। इन्टर क्लासमें २५ सेर (बंगाली) लेजा सकता है। और थर्ड क्लासमें भी २५ सेरका नियम है। पहले व दूसरे दर्जेमें इससे दूना तिगुना लेजा सकते हैं।

६–तीन वर्ष तकके बच्चेका किराया माफ है। बादको १२ वर्ष तक आधा लगता है। आगे पूरा लगता है।

७–एक जनाना डिब्बा रहता है उसमें मर्द नहीं बैठ सकता है। परंतु मर्दके डिब्बेमें जनानाको बैठा सकते हैं।

८–अपना संघ होनेपर डिब्बा या पूरी गाड़ी रिजर्व करा

सकते हैं। परन्तु इसमें खर्च दूना या डयोढ़ा लगता है। एक दो सीट भी इन्टर या सेकन्डमें रिज़र्व हो सकती है।

९—टिकट लेनेके बाद यदि किसी कारणसे नहीं जासकें तो उसी समय टिकटको वापिस देकर दाम वापिस लेना चाहिये। तुर्त न दें तो पीछे भी दाम वापिस मिलते हैं।

१०—गाड़ी चूकनेपर बाबूको कहना चाहिये। और दूसरी ट्रेनसे जाना चाहिये। घबड़ाओ मत।

११—कानूनसे ज्यादः समान होनेपर लगेज करालो अन्यथा रास्तेमें बाबूओंद्वारा आपत्ति उठानी होगी।

१२—अपने थर्ड क्लास पसींजरकी टिकट होनेपर टिकट बदलाकर हरएक दर्जेमें जासकते हैं।

डाकखानेके नियम।

तार।

१—तार दो तरहसे भेजा जाता है। १ ऑर्डिनरी-इसमें १२ शब्द और ॥।) लगता है। फिर फी शब्द एक आना। २—अर्जेंट-इसमें १॥) लगता है। फिर फी शब्द दो आने। "जवाबी तार" भी ॥।) या १॥) अधिक देनेपर दे सकते हैं।

२—तार सब भाषामें लिया जाता है। पर लिपि इंग्लिश होनी चाहिये।

३-जहांपर हमको तार भेजना है। अगर वहां तारघर न हो-अन्यत्र हो तो वह तार डाकसे चिट्ठियोंकी तरह फी माईल

एक आना देनेपर पहुंचा दिया जाता है। तार ओफिससे ५ मीलतक तो तार मुफ्त लेजाते हैं।

४—तारसे रुपया भी आता है। इसमें तारका ।।।) अधिक लगता है। जैसे किसीको १००) भेजना है तो ।।।) तार फीस व १) रुपया मनियार्डर फीस ऐसे १।।।) देने होंगे।

चिट्ठियाँ।

१—खुली चिट्ठी, लेखादि ५ तोलातक आधा आनाकी टिकटमें जाते हैं। व १० तोलातक एक आना लगता है।

२—बंद चिट्ठी, लिफाफा १ आनामें ढाई तोलातक जाता है।

३—आध आनेका पोष्टकार्ड सब जगह जाता है। पतेके आधे हिस्सेसे ज्यादेपर लिखनेपर बैरंग होजाता है।

४—चिट्ठी आदिका पता मुकाम, डाकखाना, जिला साफर लिखना चाहिये।

५—बैरंग पोष्टकार्ड नहीं जाता है। केवल बंद लिफाफा ही जाता है।

६—वी॰ पी॰ सभी चीजोंकी होती है। सिर्फ मनियार्डरकी फीस ज्यादः देना होती है।

७—हिफाजतसे चीज भेजनेके लिये वीमा किया जाता है। १००) तक ≈) फीस फिर प्रत्येक सौपर दो आने देने पडते हैं। रजीस्ट्री चार्ज दो आने तो देने ही पड़ते हैं।

८—डाक पार्सल ५ सेर बंगाली (४०० तोला) से ज्यादे वजनका नहीं लिया जाता है।

९–पोष्टकार्ड या लिफाफाकी रजिस्ट्री करनेसे सादीका =) और जवाबीका ≡) लगता है ।

१०–मनियार्डरकी फीस १ रुपयासे १० तक =), ११)से २५) तकका चार आना, आगे १००) पर १) लगता है ।

प्रांतोंके नाम और उनके तीर्थोंकी सूची ।

नाम प्रांत	क्षेत्र सं०	नाम प्रांत	क्षेत्र सं०
१–मेवाड़में	६	९–शोलापुर प्रांतमें	१०
२–मालवामें	१३	१०–कोल्हापुर प्रांतमें	४
३–बुन्देलखडमें	२७	११–बंगाल प्रांतमें	११
४–नागपुरमें	१२	१२–मद्रास प्रांतमें	६
५–मध्यप्रदेशमें	११	१३–जयपुर प्रांतमें	४
६–गुजरात प्रांतमें	१३	१४–मारवाड़ प्रांतमें	३
७–बंबई प्रांतमें	११	१५–देहली प्रांतमें	३
८–कर्णाटक प्रांतमें	१०	१६–आगरा प्रांतमें	५

कुल १६ प्रांतोंमें १४९ तीर्थ हैं ।

श्री सिद्धक्षेत्रोंके नाम ।

१–श्री कैलासजी

२–श्री सम्मेदशिखरजी

३–श्री गिरनारजी

४–श्री चंपापुरजी

५–श्री पावापुरजी

१२–श्री पटना गुलजार बाग

१३–श्री सिद्धवरकूटजी

१४–श्री गजपंथाजी

१५–श्री द्रोणगिरिजी

१६–श्री सोनागिरिजी

६—श्री पावागढ़जी
७—श्री बड़वानीजी
८—श्री मांगीतुंगीजी
९—श्री मुक्तागिरिजी
१०—श्री नैनागिरिजी
११—श्री कुंथलगिरिजी
१७—श्री गुणावाजी
१८—श्री खण्डगिरिजी
१९—श्री तारंगाजी
२०—श्री मथुरा-चौरासी
२१—श्री रेवातीर

इस प्रकार कुल २१ सिद्धक्षेत्र हैं।

पंचकल्याणक क्षेत्र।

सौरिपुरी, अयोध्या, बनारस, सिंहपुरी, चंद्रपुरी, सेटमेंट, रत्नपुरी, मोहावल, पटना, कुलुहा पहाड़, राजगृही, कुंभोज, द्वारिकापुरी, कंपिलाजी, प्रयागराज, कौशांबीपुरी, भरवारी, खुकुन्दा, कुंडलपुर, चंपापुरी, मिथिलापुरी, अहिक्षेत्र, हस्तिनापुर व भेलसा।

अतिशयक्षेत्रोंके नाम।

कुलपाक (माणिक्यस्वामी), करेड़ा पार्श्वनाथ, चूलेश्वर, एरोडा रोड, उखलद, अंतरीक्ष पार्श्वनाथ, रामटेक, कुंडलपुर, बालाबेट, बीनाजी, जैनबद्री, गोम्मटपुर, नेर (नागठाना), स्तवनिधि, सजौद, चमत्कारजी, झालरापाटन, बारागांव, बजरंगगढ़, बाबानगर, बेलगांव, लाडनूं, चांदनगांव, केशवजी पाटनगांव, आष्टे विघ्नेश्वर पार्श्वनाथ, भिंडरगांव, बिजोलिया पार्श्वनाथ, बनेड़ा, कचनेरा, तालनपुर, कौनी, भातकुली, खजराहा, पपौरा, सुमेरू पहाड़, राजगृही, कारकल, वेनूर, धाराशिव, दहीगांव, चंदेरी, मालथौन, सीरौंन, मूलबद्री, कुंडलक्षेत्र, महुआ, अंकलेश्वर, चांदखेड़ी, मक्सी पार्श्वनाथ, जयपुर।

वैष्णवोंके तीर्थ ।

ओंकारमहाराज, भुवनेश्वर, गिरनार, द्वारकापुरी, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी, वैजनाथ महादेव, सोमनाथ, वटेश्वर, धनुष्यकोट, पुष्कर, नाथद्वारा, जनकपुरी, गया, मथुरा, वृन्दावन, पूर्णा, पर्वणी, हरद्वार, बद्रीनाथ, सत्यनारायण, कमंख्यादेवी, कांकोरी रोड़, चार-भुजा, रूपजी, नाशिक, पंढरपुर, त्रिम्बक, काशी, प्रयाग, उज्जैन।

कौनर शहरोंमें कौनर रेल गई है।

(१) जी० आई० पी० रेलवे, G. I. P. Ry. ।

बंबई, नाशिक, मनमाड़, नांदगांव, चालीशगांव, धुलिया, जलगांव, भुषावल, मलकापुर, अकोला, सीरपुर (अंतरीक्ष पार्श्वनाथ), मनमाड़ (मांगीतुंगी), नाशिक (गजपंथा), मूर्तिजापुर (कारंजा), एलिचपुर (मुक्तागिरि), बड़नेरा–धामणगांव (कुंदनपुर), दमोह (कुंडलपुर), सागर (वंडा, नैनगिर, द्रोणगिरि), भोपाल (समसागढ़), मकसी (मक्सी पार्श्वनाथ), उज्जैन (भद्रीलापुरी), बीना ईटावा, गुना (बजरंगढ़), बारा, जाखलौन (देवगढ़), ललितपुर (टीकमगढ़, पपौरा, चंदेरी, थूबन), देलवाड़ा (सीरौन शांतिनाथ), तालवेट (पवा), झांसी (कुरगमा), हरपालपुर (छत्रपुर, खजराहा), सोनागिर सिद्धक्षेत्र, ग्वालियर (लश्कर, पनीहार), मोरेना, आगरा, पूना, शोलापुर (आष्टे विघ्नेश्वर), दौंड बारामती (दहीग्राम), होणसलगी क्षेत्र, कुर्दुवाडी (बार्सीटाऊंन, कुंथलगिरि), पेडसी (उस्मानाबाद), तेर, लातूर, देहली, हाथरस, अलीगढ़, अंबाला (अहिक्षेत्र), खुर्जा, कानपुर, इलाहाबाद ।

(२) एम० एस० एम० रेलवे, M. S. M. Ry.

मद्रास, जोलारपेट्ट, बेंगलौर, आरसीकेरी, मंदगिरि (जैनबद्री) हासन, हीरालेल्ली, तुमकुर, मैसूर, पूना, कुंडलरोड (झरीवरी-पार्श्वनाथ), मीरज, सांगली, शेडवाल, कोल्हापुर, हातकलंगड़ा (बाहुबली पहाड़), निपाणी (स्तवनिधि), बेलग्राम, बीरूर, शिवमोगा, तीर्थहल्ली (हुमंच पद्मावती), सोमेसर, वरांग, कारकल, मूलबद्री, वेणूर, मंगलूर, हुबली (आरटाल)।

(३) ई० आई० रेलवे० E. I. Ry.

पटना, बिहार (पावापुरी), बड़गांवरोड (कुंडलपुर), राजगृही क्षेत्र, नवादा (गुणावा), गया (कुलुहा पहाड़), नाथनगर, भागलपुर (मंदारगिरि), हावड़ा गिरीडी (श्री सम्मेदशिखर) कटक, भुवनेश्वर, (खंडगिरि-उदयगिरि), जगन्नाथपुरी, खुरदारोड (बैजनाथ), झांसी, सतना, (अजयगढ़, खजराहा, नागौद), छत्रपुर, माणिकपुर, शिकोहाबाद, बटेश्वर (सौरीपुर), फीरोजाबाद, आगरा, भरवारी, फफौसा, (कौशांबी), इलाहाबाद (पयाग), कानपुर, मोगलसराय (काशी), पटना (गुलजारबाग), बांकीपुर, बख्त्यारपुर, लक्खीसराय, नाथनगर, चम्पापुरी, भागलपुर सिटी, हाथरस, अलीगढ़, मथुरा, अंबाला, हजारीबाग (सम्मेदशिखर), अंबाला (अहिक्षेत्र), पानीपत, सुनपत, भिवानी, हांसी, हिसार, शिमला, जगाधरी, रोहतक, अंबाला, (छावनी), नैनपुर, पिंडरई, जबलपुर (कौनी क्षेत्र)।

(४) बी० एन० रेलवे B. N. Ry.

कलकत्ता, खड़गपुर, कटक, भुवनेश्वर (जगदीशपुरी, खंडगिरि, उदयगिरि), वालटीयर, नागपुर, कामठी, रामटेक, गोंदिया, रायपुर,

रायचुर, राजनांदगांव, झाड़ सुकड़ा सिवनी, छिंदवाड़ा, केवलारी ।

(५) एन० डब्ल्यू० रेलवे N. W. Ry.

देहली, मेरठ (हस्तिनापुर), गजीयाबाद, खेखड़ा (बड़ाग्राम), मुलतान, लाहौर, लुधियाना, फीरोजपुर, करांची, हेद्राबाद, हरद्वार (बद्रीनाथ), देहरादून आदि ।

(६) एन० जी० एस० रेलवे N. G. S. Ry.

मनमाड़, एरोलारोड, दौलताबाद, औरंगाबाद, पूर्णा, मीरखेड़ा, (पोपर उखलदजी) (अचनेरा), पर्वणी, हींगोली, सीकंदराबाद (माणिक्यस्वामी), हैद्राबाद ।

(७) जे० बी० रेल्वे J. B. Ry.

फुलेरा, मकराना, सांभर, देगाता, मेरतारोड, मेरता सिटी, नागौर, बीकानेर, जसवंतगढ़, लाडनूं, सुजानगढ़, चरु, हांसी, हिसार, रत्नगढ़, जोधपुर, पह्ली, हेद्राबाद सिंध, मारवाड़, जंकशन (खारडा), प्रान्तीज, अहमदाबाद, ईडर ।

(८) एस० आई० रेल्वे S. I. Ry. ।

तींडीवनम् (सतांबुर), आरनकम्, कांजीवरम्, आरकोनम्, पेन्नूर, तीरुमले, वेकनम्, मदुरा, त्रचनापल्ली, रामेश्वर, मंगलूर, मूलबद्री, कारकल, बरांग ।

(९) ओ० आर० रेल्वे O. R. Ry.–मोगलसराय, काशी, अयोध्या, फैजाबाद, इलाहाबाद, सोहावल, लखनऊ ।

(१०) बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे B. N. W. Ry.

लखनऊ, बाराबंकी, बीन्दौरा (त्रिलोकपुर), सरजू (अयोध्या), मनकापुर, गौडा, बलरामपुर (सेंटमेंट), गोरखपुर, नौनखार,

(खुंखुंदा, किष्कंधापुरी), भटनी (कहावगांव), छपरा, कादीपुर, (चन्द्रपुरी), सारनाथ (सिंहपुरी), बनारस, कटीहार, पारवतीपुर, बारसोई, गोलगंज, धोवड़ी, गोहाटी, तनसुखिया, डीबरूगढ़, दीकशाल (नैपाल, कैलाश, तिब्बत) परसुरामकुंड, डींगवोई, मनीपुर, दार्जिलिंग, बोगरा।

(१९) बी॰बी॰एण्ड॰सी॰आई॰ रेलवे B. B. &. C. I Ry.

अजमेर, फुलेरा, जयपुर, सीकर, बांदीकुई, आगरा, अचनेरा, कानपुर, मथुरा, खंडवा, मोरटक्का, (ओंकार, सिद्धवरकूट) बड़वाहा (महेश्वर), मऊकी छावनी (धार, कुकशी, तालनपुर, बड़वानी, धर्मपुरी, मांडु पहाड़, (राजघाट), इन्दौर (बनेडा), फतीहाबाद (उज्जैन), बड़नगर, झावरा, रतलाम, चित्तौड़गढ़, नीमच (बीजौलिया, चूलेश्वर), करेडाक्षेत्र, सनवार, कांकोरीगेड, भीडर, नाथद्वारा, रूपजी, सारभुजा, मढ़ोली, नाथद्वारा, उदयपुरसे (एकलिंग, केशरियानाथ), चित्तौड़गढ़, भीलोड़ा, हमेरगढ़, मांडल, नसीराबद, अजमेर, व्यावर, मारवाड जंकशन, आबू, अहमदावाद, वीरमगांव, बड़वान, भावनगर, पालीताना, राजकोट, द्वारिका, जामनगर, जूनागढ़, वेरावल, धोला, पोरबंदर, महेशाना, तारंगा, कछोल, अंकलेश्वर, आलंद, बड़ोदा, सूरत, बंबई, बारडोली, महुआ, जलगांव, चींचपाड़ा। साकरी, गोधरा, चांपानेर, पावागढ़, दाहोद, रतलाम, नागदा, सवाईमाधोपुर (चमत्कार), नवाई (टोंग, सागनेर, चानणगांव पटुंदा), कोटा (बूंदी), छत्रपुर (झालरापाट, नचांदखेड़ी), पंडितजीका सरोला, केसोरी पाटनआस, मथुरा, वृन्दावन, झांसी, कानपुर, ईडर, वडाली, खंभात, पेटलाद, सोजीत्रा, फरूखाबाद, कायमगंज, कंपिलाजी, हाथरस।

किस क्षेत्रकी कौनसी स्टेशन है उसकी सूची।

नं०	नाम क्षेत्र.	स्टेशन.
१	केशरियाजी	उदयपुर
	एकलिंग	हिम्मतनगर
२	भिंडर	सनवार
	काकरोली	काकरोलीरोड
	चारभुजा, रूपराजनगर	
३	करेडा (पार्श्वनाथ)	खुद
४	प्रतापगढ, शांतिनाथ, देवगढ	मन्दसौर
५	चूलेश्वर, बिजोलिया पार्श्वनाथ	नीमच, भीलवाडा, माडल
६	इन्दौर	खुद
७	बनेडा	इन्दौर
८	धार, कुक्शी, तालनपुर बडवानी, मऊ, महेश्वर	मऊ बड्वाह धूलिया
९	ओंकार, सिद्धवरकूट, नादगाव	मोरटक्का खेडीघाट, खुद
१०	मांगीतुंगी, नाशिक, गजपंथा, त्र्यम्बक महादेव	मनमाड नाशिक
११	एलोराकी गुफा	खुद (दौलताबाद)
१२	औरंगाबाद	खुद
	अचनेरा पार्श्वनाथ	चीकलठाना
१३	पर्वणी	खुद
१४	पूर्णा	खुद
१५	उखलद	मीरखेड

नं०	नाम क्षेत्र.	स्टेशन.
१६	माणिक्यस्वामी कुलपाक	अलवर सिकंदराबाद
१७	मान्यागाव, सीरपुर, अंतरीक्ष पार्श्वनाथ बासम	हींगोली अकोला
१८	मुक्तागिरि	एलिचपुर (अमरावती)
१९	कुन्दनपुर	धामनगाव
२०	कौनी	जबलपुर
२१	छत्रपुर	खजराहा, अजयगढ
२२	बाजोरी, हीरापुर, पाचोरी, द्रोणगिरि नैनागिरि	मलारा, सागर, दमोह
२३	टीकमगढ, पपौरा	ललितपुर
२४	सीरोन	देलवाडा
	बीना, चंदेरी, थोवन	मुंगावली
२५	पटेरा कुंडलपुर	दमोह
२६	भेलसा	उज्जैन
२७	पवा	तालबेट
२८	कुरगमा	झांसी
२९	अयोध्या	फैजाबाद सरयूघाट
३०	सौरिपुर (बटेश्वर)	शिकोहाबाद
३१	कपिला	कायमगज
३२	सेटमेट	बलरामपुर
३३	त्रिलोकपुर	बाराबंकी
		बीन्दौरा

नं०	नाम क्षेत्र.	स्टेशन.	नं०	नाम क्षेत्र.	स्टेशन.
३४	खुखुंदा	नौनखार	५८	बडागांव	खेखडा
३५	कहावगांव	भटनी, नौन-	५९	देलवाडा, अचल-	आबूरोड
		खार, तालवेट		गढ़	
३६	रत्नपुरी	सोहावल	६०	अहिक्षेत्र	अम्बाला
३७	कुंडलपुर	बडगांव रोड	६१	चानणगाव,	पटुदा, हींडोन
३८	पावापुरी गुणावा	नवादा, विहार		महावीर	
३९	कुलुहा पहाड़	गया	६२	बजरंगगढ़	गुना
४०	मिथलपुर	सीतामढी	६३	हस्तनापुर	मेरठ
४१	सम्मेदशिखर	इसरी, गिरीडी	६४	झालरापाटन, चां-	छत्रपुर
४२	वैजनाथ (महादेव)	[illegible]		दखेडी, पंडित-	
४३	परमरामकुंड	डीगरोड		का ग्रा०	
४४	कामाख्यादेवी	गोहाटी	६५	मसमागढ	भोपाल
४५	गोमटपुरा	म्हैसूर	६६	पुष्कर	अजमेर
४६	खंडगिरि उदय-	भुवनेश्वर	६७	बाहुरी बंधन	सलैया
	गिरि		६८	फलोमा पहाड़	भावारी
४७	अस्टाल	हुबली		गढवाय	
४८	बाबानगर	बीजापुर	६९	हरद्वार	खुद
४९	आंट होणसलगी	शोलापुर,	७०	सत्यनारायण	खुद
	आलनूर	दुधनी,		द्वारकाधीश	
		मात्वलग्राम	७१	बद्रीनाथ	खुद
५०	सोमगाव,	बार्सी टाऊन	७२	जैनबद्री	मंद गरी
	कुंथलगिरि			(श्रवणबेळगोळ)	
५१	स्तवनिधि, नीपा-	कोल्हापुर	७३	मूलबद्री, कारकल,	शिवमोगा,
	नी, कोल्हापुर,	बेलगाव		हुमच पद्मावती,	वीरूर जंक०
	बेलगांव			तीर्थली, सोमेश्वर,	मंगलूर
				वेणूर	
५२	महुवा	बारडोली			
५३	शत्रुंजय	पालीताना	७४	धाराशिव	एडसी
५४	गिरनार	जूनागढ़	७५	नागठाना, तेर	तेर
५५	सोमनाथ	वेरावल	७६	दहीगांव	बारामति, दौंड
५६	द्वारकापुरी	जामनगर खुद	७७	कलिकुंड	कुंडलरोड
५७	राणोली, रामगढ़	पोरबंदर,	७८	बाहुबली कुंभोज	हातकलंगडा
		सोनगढ, चक	७९	सजोत	अंकलेश्वर

कौन २ क्षेत्र किस लाईनमें हैं व कहांसे जाना पड़ता है ?

उदयपुर लाईनमें करेड़ा खुद स्टेशन है। करेड़ा पार्श्वनाथ सनवारसे। भींडर क्षेत्र जाकर वापिस लौट आवे। हिन्दू तीर्थ यहांसे कांकरोली, राजनगर, नव चौकिया, चतुर्भुज, रूपजी, नाथद्वारा आदि जावे। लौटकर वापिस आवे। नाथद्वारासे हिन्दुओंके तीर्थ जावे, उदयपुरसे एकलिंगजी जावे, लौटकर उदयपुर आवे। केशरियाजी लौटकर आगे पीछे जानेका रास्ता है। दुर्गपुर, अहमदावाद तरफ भी एक रास्ता है, वापिस उदयपुर होकर चितोड़गढ़ जाते हैं। चितौड़गढ़से २ लाइनोंका हाल।

नीमच-होकर तांगासे विजौलिया पार्श्वनाथ और चूलेश्वर होकर आगे पीछे जानेका रास्ता है। नीमचसे रतलाम, जावरा।

मन्दसौर-से मंदसौर, प्रतावगढ़, शांतिनाथ देवगढ़ लौटकर मंदसौर फिर रतलाम।

रतलाम-से नागदा जंकशन, गोधरा, डाकोरजी, चाम्पानेर, पावागढ़, वडोदरा।

नागदा-से उज्जैन, छत्रपुर, झालरापाटन, चांदखेरी, पंडितका सारोला। लौटकर झालरापाटन, फिर छत्रपुर स्टेशन फिर कोटा जंक०।

कोटा-तांगामें बूंदी लौटकर कोटा, फिर बाराक्षेत्र, लौटकर कोटा, फिर कोटासे केशवजी, पाटनगांव, फिर यहांसे टिकट लेकर सवाई माधोपुर चमत्कार, लौटकर माधोपुर। कोटासे १ रेलवे गुना बजरंगढ़ क्षेत्र लौटकर गुना फिर मुंगावली, मोटरसे चंदेरी, थूवन।

लौटकर फिर चन्देरी, बीना इटावा जक० तक भी जासकते हैं।

सवाई माधोपुर–से १ रेलवे लाईन नवाईसे टौंक लौटकर नवाई। आगे सांगानेर क्षेत्र, जयपुर।

मदुरा–से या हींडोनसे चांदणगांव महावीरकी यात्राको बैल-गाड़ीसे जावे। लौटकर स्टेशन आवे। फिर आगे २ लाईन भैथाना स्टेशनमे जाती हैं। १ आगरा, २ मथुरा, वृन्दावन लोटकर मथुरा आवे। मथुरासे देहली, खेखड़ा, बड़ाग्राम, लौटकर खेखड़ा। वापिस दिल्ली। देहलीसे मेरठ फिर तांगामें हस्तिनापुर, लौटकर मेरठ। आगे पंजाब फिर देहली।

चितौडगढ़–से २ लाईन भीलोड़ा, मांडलगढ़, नसीराबादसे अजमेर, फिर पुष्कर लौटकर अजमेर। आगे किशनगढ़ स्टेशन, नरा-यना। नरायनासे मौजाद क्षेत्र लौटकर नरायना, फिर फुलेरा जंक-शनमे ३ लाईन जाती हैं। १–रींजससे सीकर क्षेत्र, आगे मारवाड़, लौटकर रींजस, फिर रेवाडी, देहली आदि। २–जयपुर, बांदीकुई, अलवर होकर रेवाड़ी। ३–मकराना, सांभर, नांवा, कुचामनरोड होकर डेहगाहना जाती है। डेहगाहनासे ३ लाईन जाती हैं। १ डीडवाना, जसवंतगढ़, लाडनूं, सुजानगढ़ चरु, हांसी, हिसार, पानीपत सुनपत जाती है। १ भिवानीसे देहली जाती है। १ मेरतारोड फलोदिया पार्श्वनाथ, जोधपुर, पाली, मारवाड़ जंकशन, जाकर मिलती है। पालीसे हैद्राबाद, करांची, नागौर होकर बीका-नेर जाती है।

मारवाड़ जंकशन–से व्यावर होकर अजमेर जाती है। आबूरोड मोटरसे आबूक्षेत्र, लौटकर आबूरोड फिर महेशाना, फिर

तारंगा लौटकर मेहेशाना आवे। महेशाना जंकशनसे कलोल, अहमदाबाद, वीरमगांवसे बडवान जंकशन। बड़वान जंकशनसे ३ लाईन जाती हैं। १–बीकानेर होकर राजकोट जंकशन। १–आसाम ब्रह्मदेश। १–सीहोर, भावनगर, घोघा लौटकर सीहोर पालीतानासे शत्रुंजय। लौटकर सीहोर जंकशन।

राजकोट-से २ लाइन जाती हैं, १ जेतलसर, जूनागढ़, वेरावल, जूनागढ़से गिरनार लौटकर जूनागढ़। जामनगर, द्वारिका लौटकर राजकोट, सीहोर जंकशनसे पालीताना लौटकर सीहोर। १ धौला, पोरबंदर द्वारिका तक। धौला जंकशनसे १ जेतलसर, जूनागढ़। इधरकी सब यात्रा करके अहमदाबाद आजाय।

अहमदाबाद–से २ लाइन जाती हैं। १ प्रांतीज, ईडर, वडाली पार्श्वनाथ, लौटकर अहमदाबाद बीचमें हिम्मतनगरसे डुंगरपुर होकर केशरियाजी जाते हैं। केशरियाजीकी यात्रा करके उदयपुर आजावे। २ धौला जाती है, आगे जूनागढ़ आदि। महेशाना, आबू, मारवाड़, ब्यावर, अजमेर होकर धुलेरा जंकशन जाकर मिलती है। आनद, वडोदरा तक। अंकलेश्वर, सूरत जंकशन, बम्बई जंकशन।

आनंद–से डाकोरजीकी यात्रा करके गोधरा जाकर मिले। २ वडोदरासे चांपानेररोड़, फिर पावागढ़ स्टेशन यात्रा करके चांपानेर। आगे दाहोद, गोधरा, रतलाम, नागदा आदि। मथुरा, देहली जाकर मिलती है। अंकलेश्वर स्टेशनसे यात्रा करके वापिस आवें।

सूरत–जंकशनसे २ लाइन जाती हैं, १ बंबई, दूसरी टाप्टी लाइनमें बारडोलीसे मोटरमें महुआक्षेत्र, लौटकर बारडोली। आगे

चींचपाड़ासे मांगीतुंगी आदि। चींचपाड़ासे जलगांव आदि जाकर मिलती है।

भुसावल जंकशन-से १ रेलवे खण्डवा जाती है। १ मलकापुर, अकोलासे मोटरमें मान्यागांव, सीरपुर आगे वासिम, हींगोल पूर्णातक जाती है, रास्ता मोटरका है। सीरपुरसे लौटकर अकोला आवे।

खंडवा-से १ रेलवे सनावद, मोरटक्का (खेडीघाट) स्टेशन उतरे। फिर मोटरसे ओंकारजी, सिद्धवरकूट होकर लौटकर मोरटक्का आवें। आगे बड़वाह जावें। मोटरसे म्हेशर होकर बड़वानी तक। फिर आगे मऊमे मोटरमें धारसे १ रास्ता राजघाट जाकर मोटरसे मिलता है। धारसे १ रास्ता कुक्षी फिर वहांसे तालनपुर क्षेत्र, लौटकर सुसारी, कुक्षी फिर मोटरसे जाकर बड़वानी मिलें। राजघाटसे धर्मपुरी। आगे मांडु पहाड़ देखकर वापिस धर्मपुरी, लौटकर राजघाट फिर आगे अंजड होता हुआ बड़वानी। ये सब रास्ते मोटर या बैलगाड़ीके हैं। फिर आगे मऊसे मानपुर, गुजरी, अंजड होकर बड़वानी। बड़वानीसे चूलगिरी (बावनगजा), लौटकर बड़वानी। फिर ४ रास्ता जाता है। १-चीकलदा, कुक्षी, तालणपुर, धार, मऊ तक। २-खानदेश, धुलिया मोटर, बैलगाड़ीसे। ३-लौटकर मऊ स्टेशन या इन्दौर। ४-महेशर होकर बड़वाहा जावे। आगे इन्दौरसे बनेडा क्षेत्र लौटकर इन्दौर, आगे फतीहाबाद, चन्द्रावतीगंज स्टेशन। फतीहाबाद स्टेशनसे १ रेलवे उज्जैन जाकर मिलती है। १-बडनगर आदि होकर रतलाम जाकर मिलती है। रतलामसे १ रेलवे आनन्द, चांपानेर, पावागढ़ होकर बड़ोदरा जाकर

मिलती है। रतलामसे झावरा, मंदसौर वहांसे प्रतापगढ़, शांतिनाथ, देवगढ़ तांगासे जाकर वापिस मंदसौर। फिर आगे नीमाहेड़ा, चित्तोड़गढ़। चित्तौड़गढ़से उदयपुर, अजमेर आदि। आगे सब लिख दिया है। रतलामसे नागदा जंकशन आदि। नागदासे १ उज्जैनसे तांगामें भेलसाक्षेत्र। लौटकर उज्जैन, मक्सी पार्श्वनाथकी यात्रा करके आगे भोपाल जाकर मिले। आगे १ खंडवासे जाकर मिलती है। भोपालसे तांगामें समसागढ़की यात्रा करके लौटकर फिर भोपाल आवे। मक्सी होकर उज्जैन, बीनाइटावा जं०।

अकोला-से आगे मूर्तिजापुर उतरें। मूर्तिजापुरसे १ रेलवे कारंजा क्षेत्र जाती है। वहांसे वापिस फिर मूर्तिजापुर आवें। फिर यहांसे १ रेलवे अंजनगांव, एलिचपुर जाती है। एलिचपुरसे परतवाड़ा, खुरपी होकर मुक्तागिरी क्षेत्र जावें। लौटकर परतवाड़ा आवे। परतवाड़ासे अमरावती आवे। अमरावतीसे बैलगाड़ीमें भातकुली लौटकर अमरावती, फिर स्टेशनसे बदनेरा गाड़ी बदलकर धामणगांव। यहांसे मोटर या बैलगाडीसे कुंदनपुर क्षेत्र जावें। लौटकर धामणगांव आवें।

नागपुर-जंकशन या इतवारी स्टेशनसे कामठी, रामटेक लौटकर नागपुर, नागपुरसे छिंदवाड़ा, सिवनी, केवलारी, पिंडरई, जबलपुर।

जबलपुर-से कौनी अतिशयक्षेत्र लौटकर जबलपुर। यहांसे ४ लाईन जाती हैं। १ इलाहाबाद, इसके बीचमें कटनी जंकशन पड़ता है। आगे सतना, माणिकपुर जंकशन पड़ता है।

कटनी-से दमोह, दमोहसे कुंडलपुर क्षेत्र मोटर आदिसे

लौटकर कटनी आवें। अथवा सागर जावें। सागरसे मोटरसे बंडा दौलतपुर होकर नैनगिरी। फिर आगे द्रोणगिरिक्षेत्र। आगे-पीछे लौटकर सागर आवे। सागरसे बीना इटावा जंक्शन जाकर मिले।

सतना—से मोटरसे नागोद पंडरिया, पन्ना शहर, अजयगढ़ क्षेत्र, आगे खजराहा, फिर वहां छत्रपुर, नयागांव, छावनी होकर स्टेशन हरपालपुर चले जावें। माणिकपुरसे भी हरपालपुर जाकर मिल सकता है। यहांसे आनेवाले भाई छत्रपुर, खजराहा आदि आगे जावें। हरपालपुरसे फिर झांसी जाकर मिलें। झांसीसे आनेवाले भाई इधर आना चाहें तो माणिकपुर आदि जाकर मिलें। अब जबलपुरसे १ लाइन कटनी होकर दमोह सागर होकर बीना जंक्शन जाकर मिलती है।

बीना इटावा—से ३ लाइन जाती हैं। १ मुगावली स्टेशन। मोटरसे चन्देरीक्षेत्र, थूबनक्षेत्र लौटकर मुंगावली, फिर गुना स्टेशन तांगामें बजरंगढ़, लौटकर गुना स्टेशन आवें। गुनासे आगे जानेवाला कोटा जावे। पीछे जानेवाला बीना आवें। दूसरी लाइन भोपाल, खण्डवा, मनमाड़ आदि होकर बंबई तक जाती है। ३ लाइन यहांसे बैलगाड़ीमें देवगढ़क्षेत्र लौटकर जाखलौन स्टेशन। यहांसे मोटरमें ललितपुर शहर, फिर मोटरसे टीकमगढ़, पपौराक्षेत्र, लौटकर ललितपुर, फिर आगे स्टेशन देलवाड़ा। वहांसे बैलगाड़ीमें सिरोंनक्षेत्र, लौटकर देलवाड़ा स्टेशन। यहांसे तालवेट स्टेशनसे बैलगाड़ीमें पवाक्षेत्र लौटकर तालवेट स्टेशन, यहांसे झांसी जंक्शन। झांसीसे ४ लाइन जाती हैं। १ ललितपुर आदि २ हरपालपुर, ललितपुर आदि। ३ कानपुर जाकर मिलती है, ४ यहां सोनागिर

स्टेशन उतरना। सोनागिरकी यात्रा करके स्टेशन आवें। फिर ग्वालियर उतरें। ग्वालियरसे लश्कर। यहांसे पन्नीहारक्षेत्र, लौटकर लश्कर, फिर आगरा। आगरासे लौटकर फीरोजाबाद, आगे शिकोहाबादसे तांगामें सौरिपुर (वटेश्वर) लौटकर शिकोहाबाद स्टेशन। यहांसे फरुखाबाद, आगे कायमगंज स्टेशन, यहांसे कानपुर आदि भी जासकते हैं। लौटकर हाथरस स्टेशन आवें। हाथरससे अलीगढ़ जंकशन, यहांसे अम्बाला, अम्बालासे बैलगाड़ीमें अहिक्षेत्र। लौटकर अम्बाला स्टेशन आवें। आगे अलीगढ़, खुर्जा, देहली, मेरठ, हस्तिनापुर लौटकर देहली फिर खेखड़ा स्टेशन। तांगामें बड़ागांवकी यात्रा करके देहली, फिर चाहे जिधर चला जावे। लौटकर हाथरस स्टेशन आवें। गाड़ी बदलकर कानपुर जाना चाहिये।

कानपुरमे ४ लाईन जाती है १ झांसी, १ कलकत्ता, १ आगरा, १ लखनऊ। लखनऊसे ४ लाईन जाती हैं। १ सहारनपुर, २ अयोध्याजी। इस तरफ जानेवाले सोहावल स्टेशन उतर पड़े। फिर रत्नपुरीकी यात्रा करके सोहावल स्टेशन वापिस आवें। यहांसे फैजाबाद उतर पड़े यहांसे अयोध्या, काशीकी यात्रा करके फिर मोगलसराय जाकर मिले। ३ लाईन पंजाबमें जाती हैं। ४ लखनऊसे बाराबंकी या बिंदौरा स्टेशन उतर कर त्रिलोकपुर क्षेत्र लौटकर बिन्दौरा स्टेशन फिर आगे सरयू (लकडमंडी) उतरकर नावसे अयोध्या फैजाबाद आवे। फिर यात्रा करके अयोध्यासे बनारस आदि आगे जावे। लौटकर फैजाबाद सोहावल, रत्नपुरी क्षेत्र होकर वापिस सोहावल स्टे० आगे लखनऊ, नहीं तो लौटकर सरयू आवे।

फैजाबाद–से २ लाईन जाती हैं। १ अयोध्या घाट, १ प्रयाग। इलाहाबादसे ३ लाईन जाती हैं। १ आगरा, १ कटनी मुडवारा, १ मोगलसराय जाकर मिलती है।

अयोध्या घाट–से पार होकर सरयू स्टे० जावे। फिर आगे गौंडा बलरामपुर स्टेशन उतरकर तांगासे सेंटमेंट क्षेत्र जावें। लौटकर बलरामपुर, गोरखपुर, नौनखारसे खुखुंदा जावे। लौटकर नौनखार स्टे० आगे भटनी जंकशन, सहीमपुरसे कहावगांव क्षेत्र लौटकर फिर स्टे० आवे। आगे कादीपुरसे चंद्रपुरी जावे। लौटकर स्टे० आवें। सारनाथ स्टे०से सिंहपुरी लौटकर स्टे० फिर बनारसकी यात्रा करें।

बनारस–से ४ लाईन जाती हैं। १ छपरा, १ सारनाथ, भटनीतक, १ अयोध्या लखनऊतक, १ मोगलसराय जाकर मिलती है। मोगलसरायसे चारों तरफ रेलवे जाती हैं। १ बनारस तरफ अलाहाबाद, आरा पटना, रफीगंज होकर गया होकर शिखरजी महाराज। पटना जंकशनसे ४ लाईनें जाती हैं। गंगा पार होकर सोहनपुर। आगे सीतामंडी स्टेशनसे मिथिलापुरी लौटकर सीता-मंडी, दीकसाल, वीरगंज, नैपाल, तिब्बत, कैलाश आदि। आसाम तरफ, १ गया बखत्यारपुर, आगे लक्खीसराय कलकत्ता तक, १ रेलवे आरा, कानपूर, आगरा, देहली।

बखत्यारपुर–से बदलकर १ गाड़ी विहार। विहारसे मोटरमें पावापुरी, लौटकर विहार, फिर रेलमें बड़ग्राम स्टेशन उतरें, वहांसे राजगृहीक्षेत्र लौटकर गुणावा। आगे नवादा स्टेशन जावे।

नवादासे २ लाईन जाती हैं। १ गया, गयासे मोटर, तांगासे

कुलुहा पहाड़ लौटकर गया, फिर ईसरी-शिखरजी नावें। १ नाथ-नगर, चम्पापुर, भागलपुर।

भागलपुर—१ रेलवे आसाम जाती है। कटीहारसे लेकर डिबरूगढ़ जाती है। १ रेलवे मंदारगिरी क्षेत्र, लौटकर भागलपुर, फिर लौटकर लक्खीसरायकी उस गाड़ी बदलकर मधुपुर गिरीड़ी मोटरसे मधुवन (शिखरजी), भागलपुरसे १ लाईन हावड़ा कलकत्ता जाती है।

मधुपुर—जंक०से १ रेलवे गिरीड़ी (शिखरजी), कलकत्ता जाती हैं। गोमोहसे १ आद्रा होकर खडगपुर, १ कलकत्ता।

कलकत्ता-से आगे जानेवालोंका हाल—बोघरा, पार्वतीपुर, कटीहार, वारसोदी, दिकशाल, नैपाल, छोवड़ी गोलगंज, नलवाड़ी, गोहाटी, कमंख्या, पलासवाड़ी आदिमें जाती है। कलकत्तामे चारों तरफ रेल जाती हैं। लौटकर खड्गपुर आजावें।

खड्गपुर—से १ रेलवे नागपुर तरफ, १ कटक, भुवनेश्वरसे बैलगाड़ीमें खंडगिरी, उदयगिरी लौटकर भुवनेश्वर फिर खुर्दारोड। खडगपुरसे १ रेलवे आद्रा, गोमोहा, ईसरी, शिखरजी, गया। खुर्दारोडसे पांवर बैजनाथका मंदिर लौटकर खुर्दारोड, रेलवेसे जगदीश, लौटकर फिर खुर्दारोड। आगे जानेवाला बेजवाड़ा मद्रास शहर जावे।

मद्रास शहर—से ४ लाइनें जाती हैं। १ रायपुर, बारसी रोड़, पूना, बंबई। १ तींड़ोवनम्, सीताम्बुर, पोन्नूर, आदि। आरकोनम्। १ काटपाड़ी, आगे जौलारपेठ, बेङ्गलोर।

आरकोनम् जंकशन—से १ रेलवे कांजीवरम् लौटकर आरकोनम्, काटपाड़ी जंकशन।

काटपाड़ी–से १ लाइन माधीमंगलम्। तीरुमलेक्षेत्र लौटकर काटपाड़ी। यहांसे मदुरा, रामेश्वर, धनुष्यकोटी, लंका लौटकर त्रिचनापल्ली।

त्रिचनापल्ली–से लौटकर मदुरा, मद्रास, आगे जानेको रंगावंगा पगोड़ा जंकशन, मंगलोर मूलविद्री। मद्रासमे सीधा मंगलोर म्हैसूर। गोम्मटपुर क्षेत्रमे लौटकर म्हैसूर, मंदगिरि स्टे०से जैनबद्री, हांसन, आरसीकेरी। आरसीकेरीसे लौटकर तुमकर, टीपटूर, हीराहेल्ली, बेङ्गलोर, जोलारपेंठ, पगोडा, मंगलोर, मूलबद्री।

वीरूर जंकशन–से १ आरसीकेरी, आगे मंदगिरि स्टेशन फिर मोटरसे जैनबद्री (श्रवणबेलगला) लौटकर मंदगिरि स्टेशन। आगे म्हैसूर मोटरसे गोमट्टपुरक्षेत्र। लौटकर हीराहेल्लीसे चन्द्रप्रभ पहाड़, लौटकर फिर हीराहेल्ली, आगे तीपटूर, आरसीकेरी वीरूर जंकशन। वीरूरसे दूसरी रेलसे सीवमोगा स्टे० मोटरसे तीर्थल्ली, हुमंच पद्मावती, लौटकर तीर्थली, फिर आगे सोमेश्वर, वरांग, कारकलक्षेत्र। आगे मूलबद्रीक्षेत्र, फिर मोटरसे वेणुरक्षेत्र लौटकर मूलबद्री मंगलूर। मूलबद्रीके रास्ते दो हैं। १ सीमोगा आदिसे १ मंगलूर आदि, मंगलूरसे दोनों तरफसे लिख दिया है।

जैनबद्री–का २ रास्ता–१ मद्रास बेङ्गलोरसे, आरसीकेरी होकर मंदगिरि स्टे०से जैनबद्री, १ आरसीकेरीसे मंदगिरि होकर।

मंगलोर–का २ रास्ता, १ पुना, वीरूर, आरसीकेरी, तीपटूर, हीराहेल्ली, बेंगलोर। १ मद्राससे बेंगलोर।

म्हैसूर–गोम्मटपुराका भी २ रास्ता है। १ आरसी केरी मंदगिरि स्टे०से जैनबद्री होकर म्हैसूरशहर। २ बेंगलोरसे म्हैसूर, गोमटपुरा आदि।

मूलबद्री–से कारकल, वरांग, सोमेश्वर, तीर्थहल्ली, हुमंच पद्मावती क्षेत्र। लौटकर तीर्थहल्ली, सीमोगा, बीरूर जंकशन। बीरूर जंकशनसे आगे हुबली जंक० उतर पड़े।

हुबली–से तांगा बैलगाड़ीमें आरटार क्षेत्र, लौटकर हुबली यहांसे २ लाईन जाती हैं।

गदग जं०–से बदामी स्टे० आगे बीजापुर स्टे० तांगासे बाबानगर लौटकर बीजापुर, शेषफणामंदिर। लौटकर बीजापुर स्टेशन, आगे होणगी, शोलापुरसे कुरूडवाडी जं०। यहांसे पंढरपुर लौटकर कुरूड़वाडी, फिर बारसी टाउन स्टे०, बैलगाड़ीसे कुथलगिरि लौटकर बारसीटाऊन। फिर एडसी स्टे०से मोटरसे धाराशिव, लौटकर एडसी, आगे तेर स्टे०, पांवसे नागटाना, आगे लातूर लौटकर बारसी टा०, कुर्डुवाडी लौटकर धौड़। फिर आगे मनमाड़ पीछे पूना, बंबई। धौड़ गाड़ी बदलकर बारामती। बैलगाड़ीसे दहीगांव।

बेलगांव–से मोटरसे स्तवनिधि, आगे नीपाणी, कोल्हापुर, हातकलंगड़ा, स्टे० बैलगाड़ीमें कुंभोज बाहुबली पहाड़, लौटकर हातकलंगड़ा, आगे मीरज जंक०।

मीरज–से १ रेलवे सांगली, कुंडलरोड, फिर गांवसे कुंडलग्राम, फिर झरीवरी कलीकुंड पार्श्वनाथ। लौटकर कुंडलरोड़ आगे पूना, बम्बई, ढौड़, बारामती, दहीगांव लौटकर ढौड़। फिर पूना।

पूनासे १ रेलवे धौंड १ बंबई। धौंडसे १ बारामती। बैलगाड़ीसे दहीगांव, लौटकर बारामती फिर दौंड स्टेशन। १ मनमाड़, कुर्दुवाड़ी आदि रायचूर तक। रायचुरसे मद्रास।

बंबई-से पूना, सूरत, अकलेश्वर, बड़ोदरा, अहमदाबाद, ईडर, आबू, मारवाड़ ज०, व्यावर।

नाशिक-स्टेशनसे तांगामें नाशिकशहर फिर मशरुल, गजपंथा, लौटकर नाशिक, फिर तांगामें अंजनीग्राम लौटकर फिर नाशिक। आगे जानेवालेको सटाना, मांगीतुंगी जाना चाहिये। लौटकर फिर नाशिक, आगे मनमाड़।

मनमाड़-से मोटरमें माल्यागांव, सटाना, मांगीतुंगी। मांगीतुंगीसे लौटकर सटाना, नाशिक आदि।

मांगीतुंगी-से ३ रास्ता जाता है। बैलगाड़ी, मोटर आदिसे १ साकरी, यहांसे चींचपाड़ा स्टे०। आगे सीकरीसे पीपरनार, कुसंबा, धुलिया, चालीशगांव आदि। सटानासे नाशिक, माल्यागांव, मनमाड़।

मनमाड़ से २ रेलवे १ एरोलारोड़, एरोला ग्राम, दौलताबाद, फिर औरंगाबाद, बैलगाड़ीसे अचनेराक्षेत्र, लौटकर चीकलठाना आगे पर्वणी, मीरखेड़, पांवसे पपरीगांव, आगे पूर्णा जंकशन।

पूर्णा-जंकशनसे १ लाइन हींगोली, मोटरसे वासीम, सीरपुर (अंतरीक्ष पार्श्वनाथजी), माल्या, आकोला जाकर मिले।

सिकन्द्राबाद-से माणिकस्वामी लौटकर सिकन्दराबाद। सिकन्दराबादसे ३ रेलवे लाइन जाती हैं-१ हैद्राबाद, बेजवाड़ा। लौटकर मनमाड़ आवे।

मनमाड़–से आगे नांदगांव, जलगांव, भुसावल जंकशन।

भुसावल–से २ लाइन जाती हैं। १ खण्डवा, इन्दौर तक, ऊपर देखो। मोरटक्का स्टेशनसे मोटरसे ॐकारजी। पांवसे सिद्धवरकूट लौटकर मोरटक्का। बड़वाहेसे मोटरसे महेशर, बड़वानी तक जावे।

भोपाल–से ससमागढ़, भोपाल। आगे मक्सी पार्श्वनाथ, उज्जैन। उज्जैनसे नागदा, फिर उज्जैनसे १ रेलवे फतीयाबाद होकर इन्दौर, मोटरमें बनेड़ाक्षेत्र लौटकर इन्दौर, मऊकी छावनी। मऊकी छावनीसे मोटरमें धार, कुक्शी गांवसे तालनपुर, लौटकर कुक्शी, बड़वानी शहर। बैलगाड़ीसे चूलगिरि लौटकर बड़वानी। यहांसे १ रास्ता धुलिया, अंजड, राजघाट, राजघाटसे रास्ता धर्मपुरी, बैलगाड़ीसे मांडुपहाड़, लौटकर धर्मपुरी। फिर राजघाट, आगे मऊ छावनी। बड़वानीसे १ रास्ता सुसारी आदि जावे।

बड़वानी–से १ रास्ता महेशरक्षेत्र, बड़वाहा स्टेशन तक।

इन्दौर–से बनेड़ा लौटकर इन्दौर फतीहाबादसे उज्जैन तक, फतीहाबादसे आगे बड़नगर, रतलाम जंकशन। रतलामसे १ गाड़ी दाहोद, गोधरा, डाकोर, चांपानेर, पावागढ़, बडोदरा, जंकशन तक। नागदा आदि ऊपर लिखा है। झावरा, मंदसौर। तांगामें प्रतापगढ़, पांवसे शांतिनाथ, देवगढ़, लौटकर प्रतापगढ़, मन्दसौर। आगे नीमच स्टेशन। तांगासे बिजोलियाक्षेत्र। चूलेश्वर लौटकर नीमच आगे पीछे चित्तौड़गढ़।

ग्रन्थकारका परिचय।

इस ग्रन्थके कर्ता श्री० ब्रह्मचारी गेन्दीलालजीका जन्म भींडर (उदयपुर)में नरसिंपुरा दि० जैन जातिमें वि० सं० १९४०में हुआ था। आपके पिताका नाम नाहरजी था। १७ वर्षकी अवस्थामें आपका विवाह हुआ था। कर्मयोगसे ७ पुत्रोंकी प्राप्ति हुई थी। किन्तु ५ पुत्रोंका व आपकी धर्मपत्नीका वियोग सं० १९७० में होगया तथा अवशिष्ट दो पुत्रोंको भी प्लेगने उठा लिया! संसारकी इस असारता जान आपने ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर लिया। आपके इस कल्याणमार्गमें श्री १०८ ऐलक श्री पन्नालालजी और ब्रह्मचारी चांदमलजी मूल कारण हैं। स० १९७३में त्यागी होकर आपने ग्राम कुणमें चातुर्मास किया। वहां कुछ पढ़नेका कार्य किया। फिर सं० १९७४में उदासीन आश्रम इन्दौरमें श्री० पं० पन्नालालजी गोधा व श्री० प० अमरचदजीकी संगतिका लाभ हुआ। सं० १९७५में बड़वानी, १९७६में धुलिया, १९७७ में लाडनूं तथा १९७८में कलकत्ता, १९७९में प्रतापगढ़, १९८०में फिर बड़वानी, १९८१में मनावर, १९८२में आबूरोड़, १९८३में रखियाल (गुजरात), १९८४ में उजेड़िया (गु०), १९८५ में लाडनूं, १९८६में बेगु (मारवाड़) में फिर इस साल अर्थात् सं० १९८७में बड़वानीमें चातुर्मास किया है। शेष काल तीर्थयात्रा, प्रतिष्ठा व धर्मध्यानमें व्यतीत किया। अब आप बड़वानीमें एक त्यागीआश्रम खोलकर वहीं कुछ त्यागियोंके साथ धर्मसाधन कर रहे हैं।

प्रकाशक।

श्रीमान ब्रह्मचारी मोतीलालजी महाराज,
इस ग्रन्थके लेखक।

जन्म-सं० १९४० भींडर (मेवाड़)

जैनविजय प्रेस सूरत।

श्रीवीतरागाय नमः ॥

जैन तीर्थयात्रादर्शक।

(१) भींडर शहर ।

यह शहर खंडवा अजमेर लाईनमें बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे (B. B. & C. I. Ry.) के बीचमें चित्तौड़गढ़ जंक्शन आता है। यहांसे उदयपुर जानेवालोंको बीचमें सनवार (कांकरोली रोड) स्टेशनपर उतरकर पांव रास्ता कच्ची सड़क १० कोशपर भींडर बड़ा भारी शहर है। उदयपुर राज्यमें खास भींडर ग्राम है। यहांपर चौतरफसे कोट, ४ दरवाजे और ३ दिगम्बर जैन मंदिर

---

१ चितौरगढ़—यह जंकशन है। स्टेशनके ऊपर सरकारी धर्मशाला है। यहांसे गांव ३ मीलकी दूरी पर है। एक दिगम्बर जैन मंदिर तथा १० घर जैनियोंके हैं। यहांका किला बहुत प्राचीन और रचनासे युक्त है। उसको भी देखना चाहिये।

२ सनवार—(कांकरोली रोड) स्टेशन है। यहांसे २० मीलकी दूरी पर हिन्दुओंका बड़ा भारी तीर्थ है। वहां पर जगदीशकी मूर्ति है। कांकरोलीसे ६ मील दूर रायनगर है। यहां रायसमुद्रका बड़ा भारी तलाव है। यह तलाव कांकरोलीके मंदिरके नीचे है। रायनगरके दुर्ग ऊपर नवचोकिया नामक जैन मंदिर बड़ा भारी देखने योग्य है। यहां

तथा १ श्वेताम्बर मंदिर हैं। नागरदा, नरसिंघपुरा, हूमड़, अग्र-वाल, ओसवाल, माहेश्वरी आदि सात जातिके महाजन लोग वसते हैं। यहांकी आबादी ४०० घरकी है। उनमें २०० घर दि० जैनियोंके हैं। शहरमें कुल वस्ती १०००० घरकी है। यहांके दि० जैन मंदिरमें प्रतिमा बहुत प्राचीन कालकी अतिशयवान् हैं। जिसकी मान्यता आसपासके १०० कोशके ग्रामोंमें सब जगह होरही है। प्रतिमा बहुत मनोज्ञ होनेसे दर्शनीय है। भींडरमें घृतादिका व्यापार बहुत होता है। सब जातिके लोग प्रायः शुद्ध सामान वेचते हैं। भींडर जानेका दूसरा रास्ता भी उदयपुर चित्तौरगढ़ लाईनमें करेडा स्टेशन होकर दक्षिणकी तरफ १ मील भींडर पड़ता है।

पर समुद्रको पार बंटा है। समुद्र देखनेका भी सुभीता है। फिर यहांसे वैष्णव भाइयोंका बड़ा भारी धाम (तीर्थक्षेत्र) चार भुजा (गरुडनाथ) तथा रूपजीका धाम है। यह प्राचीनकालकी १ मूर्ति चार भुजा नाम लक्ष्मणकी है। रूपजीमें रामचन्द्र सीताकी मूर्ति है। यहां यात्रा करके फिर नाथद्वारामें हिन्दुओंकी कृष्ण महाराजकी मूर्ति है। यहां पर गुसांईजीका राज्य है। लीलकुंड, गऊशाला, मंदिर, गुसांइ-जीका महल, फौज पलटन देखने योग्य चीजें है।

१ करेडा—स्टेशनके सामने प्राचीनकालका बड़ा कीमती और नामी दि० जैन करेडा पार्श्वनाथका मंदिर है। इसकी यात्रा करनी चाहिये। मेवाड़ देशमें ४ चीजें देखने काबिल है।

करेडाको देवरो अर अटाणंका महेल।
चीनोताकी वावडी, देरणेको सहेल॥ १॥

भावार्थ—करेडाका मंदिर, अटाणा गावके राजाका महल, चिनोताकी बावडी, देरणेकी सहेल देखने योग्य है।

करोडाका मंदिर हजारों वर्ष तक दिगम्बरी रहा, परन्तु अब श्वेता-

और मेंहोली स्टेशन (नाथद्वारा रोड) से भी दक्षिणकी तरफ २० मील भींडरका रास्ता है, रास्ता सब कच्चा है।

(२) उदयपुर।

उदयपुर स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर धानमंडीमें धर्मशाला व जैन पाठशाला है। यहींपर ही यात्री लोगोंको उतरना चाहिये। यहींपर और शहरमें तथा शहरके बाहर भी अन्य मतावलंबियोंकी राजासाहिबकी धर्मशालाएं हें। जिनमें बहुतसी किराये पर भी मिलतीं हैं। शहर बहुत बड़ा तथा दरबार भी राजासाहिबका है। एक किला है। जिसके ९ दरवाजे हैं, दश दि० जैन मंदिर हैं। उनमें प्राचीन प्रतिमाएं दर्शनीय हैं। यहांका दर्शन पैदल या घोड़ा गाड़ी आदिसे करना चाहिये। एक जैन मंदिरमें शिखरजीका पहाड़ बना हुआ है। शहरमें बाजार, राजासा० महल, पानीके नीचेका महल, पीछोला नामका तालाब, स्वरूपसागर, फतेसागर आदि तालाव, पलटन फौज, अजायबघर देखने योग्य है। यहांपर सब प्रकारका खानेपीनेका सामान शुद्ध, सब देशोंका कपड़ा, जेवर आदि हरएक चीज सस्ती और शुद्ध मिलती है। उदयपुरसे १० मीलकी दूरीपर शिवधर्मियोंका एक बड़ा भारी तीर्थ है। उदयपुरसे ४०

म्बरी कर लिया गया है। यहां पर एक करोड़पति बनजारा रहता था, उसीने यह मंदिर बनाया था। यह मंदिर श्वेताम्बर होजाने पर भी देखना अवश्य चाहिये।

१ **महोली**—(नाथद्वारारोड) से श्रीनाथजी नाथद्वारा १० कोश है पक्की सड़क है। स्टेशन पर हरतरहकी सवारी मिलती है। नाथद्वाराका हाल नं० २ से जानो। उदयपुर लाइनमें हरएक स्टेशनके पास राजासाहिबकी धर्मशालाएं है। यहांसे आगे उदयपुर शहर आता है।

मीलकी दूरीपर दि० जैन अतिशय क्षेत्र, तीर्थराज, प्राचीन कालका महातप तेजवान् धुलेव-केशरियाजी तीर्थ है। यहांपर प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ स्वामीजीकी प्रतिमा विराजमान है। उदयपुरसे वहांके लिये हरएक प्रकारकी सवारी मिलती है।

(१) केशरियाजी (धुलेव)।

इस ग्रामका नाम धुलिया भीलके वसनेसे धुलेव है। यहांपर नदी, तालाव, कुआ, आदि पीने नहानेके पानीका सुभीता है। यहांपर खाने पीने और पूजाका भी सामान मिलता है। १०० घर नरसिंघपुरा जैनियोंके हैं। धर्मशाला बहुत बड़ी है। यहांकी मूर्तिका अतिशय प्राचीन कालमें बहुत रहा है। बड़े बादशाहोंको चमत्कार दिखाया था। इस तीर्थराजकी महिमा तीनों लोकमें व्याप्त है। ये तीर्थ दि० का अपूर्व स्थान है। यहांपर केशरफूल बहुत चढ़ते हैं। हजारों मुल्कके लोग मानता (बोली) मानकर चढ़ानेको आते हैं। और दर्शनोंको भी जैनी तथा अन्य लोग आते जाते हैं। केशरिया ग्राममें बारहों महिना हजारों यात्रियोंकी बड़ी भीड़ रहती है। यहांपर पूजनादिकका भी बहुत आनंद रहता है। यहांपर एक दि० जैन पाठशाला भी है। यहांपर आने जानेके दो रास्ता हैं। यह मंदिर बावन देहरीका पाव मीलके घेरेमें बहुत बड़ा लाखों रुपयोंकी कीमतका बना हुआ है। गुजरात अहमदाबाद प्रांतीज रेलवेसे हिम्मत नगरसे मोटरगाड़ी आदि सवारीमें जांबुडी, भीलोड़ा, डुंगरपुर होकर भी केशरियाजी जाते हैं। केशरियाजीकी यात्रा करके आधा मीलपर भगवानकी चरणपादुका हैं। वहां भी दर्शनोंको जाना चाहिते। यहींपर पूर्वकालमें एक धुलिया भीलको स्वप्न हुआ

था। जिससे उसे हजारों रुपयोंका धन और प्रतिमा इसी चरण-पादुकाकी जमीनसे निकलीं थीं। उस धनसे उस भीलने यह मंदिर बनवाया। और वहींसे निकली हुई उस मूर्तिकी मूलनायक केशरियाजीकी प्रतिमाको विराजमान करदी। और पीछे यह ग्राम बसाया था। इसलिये इसको धुलेव और मूर्तिको धुलेवबाबा बोलते हैं। यहांपर हर साल चैत्र मासमें मेला भरता है जिसमें हजारों लोग इकट्ठे होते हैं। यहांसे केशरियाजीकी यात्रा करके फिर वापिस उदयपुर आना चाहिये। फिर रेलसे यात्रियोंको अधिक देखने या दर्शनोंकी इच्छा हो तो रतलामके पहिले रास्तेमें चितोड़गढ़, नीमच, मन्दसौर, प्रतापगढ़, रतलाम आदि शहर पड़ते हैं सो उतर जाना चाहिये। इन्हींका हाल नीचे क्रमवार पढ़ लीजियेगा।

१—चितोड़गढ़का हाल आगे लिखा है सो देखलें।

२—नीमच—अच्छा शहर है, एक दि० जैन मंदिर है और कुछ घर जैनियोंके भी हैं। स्टेशनसे ग्राम १ मील है। नीमचमें तांगा, मोटर आदि सवारी लेकर अतिशयक्षेत्र बिजोलियाजी तथा चूलेश्वरजी जाना चाहिये और फिर लौटकर नीमच आना चाहिये। उक्त दोनों क्षेत्रोंको जानेका रास्ता एक है और इसी लाईनमें भिलवाड़ा स्टेशन चित्तौड़गढ़ सीराबादके बीच आता है। भीलवाड़ा बड़ा शहर है। दि० जैनियोंके बहुत घर हैं, ४ मंदिर भी हैं, यहांपर पक्की कलईके बर्तन ग्लासादि बहुत बिकते हैं। सो यहांसे भी जाना-आना होता है। परन्तु यहांका रास्ता कच्चा और खराब है। सवारी भी नहीं मिलती है और नीमचसे जाने-आनेसे सवारी हरवक्त कमती किरायेमें मिलती है। पक्की सड़क है, रास्तेमें हर

तरहका सुभीता है । रास्तेमें रत्नगढ़ (खेड़ी) अरसीगोली ग्राम आता है । रत्नगढ़में एक दि० जैन मंदिर तथा ८ जैनियोंके घर हैं । यहांसे बिजोलिया आदिका आगे कच्ची सड़क पहाड़ी रास्ता है सो पूछकर जाना चाहिये । यहांतक तांगा मामुली हर समय आते आते हैं ।

(४) बिजोलिया ग्राम (पार्श्वनाथ) ।

यह ग्राम छोटा है परन्तु राजासा०का होनेसे अच्छा है । २ दि० जैन मंदिर व ६० घर जैनियोंके हैं । यहांपर भाई हीरालालजी कामदार बड़े सज्जन व्यक्ति हैं । गांवसे १ मीलकी दूरीपर अतिशय क्षेत्र बिजोलिया है। अतिशयक्षेत्र बिजोलियाका पार्श्वनाथ भी नाम है । यहांपर जंगलमें १ कोट खिंचा हुआ है । जिसमें ३ क्षत्री, १ शिखरबंद, १ बहुत बड़ा कुंड और आसपासमें मैदान है। और कोटके बाहरी भागमें रमणीक सुन्दर जंगल है, तथा पासमें एक नदी भी वहती है । बड़े२ पत्थरोंकी चट्टानें रमणीक और सुन्दर मालूम पड़ती हैं । मानो यह बड़ा भारी पुण्यक्षेत्र मुनीश्वरोंके ध्यान करनेका स्थान है । इस पुण्य क्षेत्रको देखकर लौट जानेका भी भाव नहीं होता है । यहां प्राचीनकालमें बडे२ मुनीश्वर ध्यान करते थे । यहांपर एक चट्टानके ऊपर कोटके बाहर संस्कृतमें श्री शिखरमहात्म्य शास्त्र खुदा हुआ है । और भीतर एक चट्टानपर एक राजा सा०का इतिहास खुदा हुआ है । ऊपर कहे हुए क्षत्रियोंके मंदिरमेंसे १ जहाजा, १ मानस्तंभ है । जिसपर ४ प्रतिमा और कनाड़ी लिपिका शिलालेख है। यक्ष-यक्षाणीकी २ मुर्ति हैं, मंदिरमें एक छोटीसी घुमटी है, प्रतिमा नहीं है । इस

क्षेत्रकी रमणीकताकी कथनी बचनागोचर है। यहांका दर्शन करके फिर किसी जानकार आदमीको साथ लेकर चूलेश्वर जाना चाहिये।

(५) श्री चूलेश्वरजी (अतिशयक्षेत्र)।

यह अतिशयक्षेत्र है। यह ग्राम वाड़ देशके सहपुरा जिलामें है। और यहांसे ३ मील अमरगढ़, बागीदौरासे ४ मील मूलेश्वर है अमरगढ़ और बागीदौरामें एक २ जैन मंदिर तथा कुछ घर जैनियोंके हैं। यहां एक पहाड़के ऊपर बहुत प्राचीन मंदिर और एक धर्मशाला है। प्राचीन कालकी श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी मूर्ति विराजमान हैं। पहिले पुराने मंदिरमें पहाड़की तलेटी पर यह प्रतिमा विराजमान थी, फिर पहाड़ी मंदिरमें विराजमान करदी है। यह प्रतिमा खंडित है परन्तु अतिशयवान् पूर्ण है। यहां हजारों यात्री आते और मेला भरता है। यहांसे दर्शन करके लौट-कर वापिस नीमच छावणी आना चाहिये। फिर यात्रियोंको प्रता-पगढ़, शांतिनाथ, देवगढ़की यात्रा करने और शहर देखनेकी इच्छा हो तो मन्दसौर, झावरा, रतलाम उतरना चाहिये। अगर इच्छा न हो तो सीधा फतिहाबाद (चंद्रावतीगंज) उतरना चाहिये। प्रक-रणवश ऊपरके शहरोंका कुछ दिग्दर्शन कराये देता हूं।

(६) झावरा।

यहांपर नवाब (मुसलमान) का राज्य है। स्टेशनसे २ मील ग्राम व शहर है। ४० घर दि० जैनके हैं, ४ प्राचीन मंदिर और प्रतिमाएं अतिशय तेजवान हैं।

(७) मन्दसौर।

स्टेशन ऊपर डाकखाना है। सेठ मनीराम गोवर्धनदासजी जैन दि० अग्रवालकी धर्मशाला पासमें है, वहींपर ठहरना चाहिये।

स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर दि० जैन मंदिर और धर्मशाला शह-रमें है। तांगा आदि सवारी करके वहां भी ठहर सकते हैं। यह शहर अच्छा और प्राचीन है। ९ दि० जैन मंदिर और बहुत जैनि-योंके घर हैं। यहांपर जनकुपुरा आदि १२ मुहल्ले हैं। इस ग्रामका नाम पद्मपुराणमें दशांगपुर शहर है। यहांपर राजा वज्रकरण और सीहोदरका झगड़ा हुआ था। रामचंद्र आदि यहांपर पधारे थे। एक दरिद्र मनुष्यने खबर दी थी, सो यही दशपुर शहर है। यहांसे २० मीलकी दूरीपर पक्की सड़कसे तांगा प्रतापगढ़ जाता है। उसका किराया करीब ।॥) होता है।

(८) प्रतापगढ़ शहर।

यह शहर भी प्राचीन है, राजा सा०का राज्य होनेसे शहर सुन्दर है। कुल ४ दि० जैन मंदिर बड़े विशाल हैं, अनेक जगहपर दर्शन हैं। प्रतिमा भी भारी मनोज्ञ शांतमुद्रायुक्त हैं। श्वेताम्बरी १२ मंदिर हैं। दिगम्बरी और श्वेताम्बरी दोनोंकी मिलकर खासी वस्ती है। सबका आपसमें प्रेमभाव है, धर्मध्यानका ठाटबाट रहता है। शुद्ध सामान ताजा खानेपीनेका मिलता है। शहरके आसपास बाग, कुवा, बावड़ी, तालाब आदि बहुत हैं। स्थान रमणीक है यहांका दर्शन करके शांतिनाथ और देवगढ़ (देवरिया) जाना चाहिये।

(९) श्री शांतिनाथ (अतिशयक्षेत्र)।

प्रतापगढ़से २ मीलकी दूरीपर कच्ची सड़कसे चलकर जंग-लमें श्री शांतिनाथ महाराजका बड़ा भारी विशाल मंदिर है और एक धर्मशाला है। प्रतिमा बहुत ही मनोज्ञ और दर्शनीय पद्मासन है, यहांसे देवगढ़ जाना चाहिये।

(१०) देवगढ़ ।

इस गांवको ३ मील कच्ची रास्ता जाना पड़ता है, यह प्राचीन है। प्रतावगढ़की राजधानी रही है। राजाका महल बहुत बड़ा है, पहिले यह शहर बड़ा भारी था सो टूट गया है। उसके बदलेमें प्रतावगढ़ शहर बसा है। यहांपर १ प्राचीन दि० जैन मंदिर है। जिसमें कुल ६ वेदियां हैं। महामनोहर प्राचीन कालकी तरह तरहकी प्रतिमाएँ विराजमान हैं। एक सहस्रकूट चैत्यालय है, यह चैत्यालय पुराने ढंगका बना है। यहांकी यात्रा करके वापिस लौटकर प्रतावगढ़ होकर मन्दसौर आजाना चाहिये। फिर यहांसे आगेका टिकट ||≈) देकर रतलामका लेलेना चाहिये। बीचमें झावरा शहर पड़ता है। अगर शहर देखना हो तो उतर पड़ना चाहिये, झावराका हाल ऊपर लिख दिया है।

(११) रतलाम (रत्नपुरी)।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर शहर है, सवारीका किराया ≈) लगता है। मा०पा०दि०जैन बोर्डिंग चौक बाजारमें ठहरनेका इंतजाम है, वहांपर टहर जाना चाहिये। शहरमें १ मंदिर भारी हैं। जिसमें प्रतिमाएं बहुत हैं। एक मंदिरके बाहर दोनों तरफ दोहस्ती हैं। १ मंदिर शहरसे २ मीलकी दूरीपर है, तांगासे जाकर दर्शन करना चाहिये। बाजार, राजाका महल, फौज पलटन, तोपखाना, दरबार आदि चीजें देखने योग्य हैं। और बाजारसे कुछ खरीदना हो तो खरीदकर स्टेशन आजाय, यहांसे उज्जैनका रेलभाड़ा १) लगता हैं। और बीचमें नागदा जंक्शन गाड़ी बदलना पड़ती है। अब रतलामसे चार लाईन जाती हैं उनका खुलासा इसप्रकार है—

१—नागदा (उज्जैन), छत्रपुर (झालरापाटन), सवाईमाधोपुर (चमत्कारजी), कोटा (बुद्धि बांदरन), पटुन्दा (महावीर चानणगांव), केशवजी, पाटनगांव, बयाना जंकशन, आगरा, मथुरा तक ।

२—दाहोद गोधरा डाकोरजी, आनंद, अहमदाबाद, गोधरासे चांपानेर (पावागढ़) बड़ोदरा तक ।

३—बड़नगर, फतीहाबाद, इन्दौर, महुयार, बड़वानी, कुकसी, तालणपुर, मांडुपहाड़ आदि, मोरटक्का (खेडीघाट, ओंकारजी) बड़वाह, सनावद, खंडवा तक ।

४—झावरा, मन्दसौर, प्रतावगढ़ आदि, नीमच, (चूलेश्वर, बिजोलिया पार्श्वनाथ), केशरपुरा (जावद), निम्बाहेडा (चीतोड़गढ़ आदि) सबका हाल इस पुस्तकमें आगे–पीछे लिखा गया है। सो देख लेना चाहिये। अब आगे जानेवाले या पीछे जानेवाले, चाहे जिधर चले जावें। यहांसे इन्दौर तरफ जानेवालोंको बीचमें बड़नगरके आगे फतीहाबाद स्टेशन पड़ता है। वहांसे गाड़ी बदलकर उज्जैन जाना चाहिये। रतलामसे बड़नगरका रेलभाड़ा ॥) और फतीहाबादसे ।~) लगता है।

(१२) बड़नगर (उज्जैन)।

स्टेशनसे शहर एक मील है, ॥) सवारी तांगाका किराया देकर शहरमें मालवा प्रांतिक शुद्ध औषधालय व अनाथालय है, वहींपर ठहरना चाहिये। अनाथालय आदिका कार्य देखकर अपनी शक्तिके अनुसार दान देना चाहिये। ला० भगवानदासजी मंत्री अच्छा काम करते हैं। शहरमें ३ दि० जैन मंदिरके दर्शन करें। यहां जैनियोंके बहुत घर है। अपना कार्य करके स्टेशनपर आजाय।

फिर यहांसे रतलाम तरफ जानेवाले रतलाम चले जांय। और इन्दौर तरफ जानेवाला इन्दौर चले जावे। बीचमें फतीहाबाद जंकसन गाड़ी बदलकर उज्जैन भी जा सकते हैं।

(१३) फतीहाबाद (चन्द्रावतीगंज)।

इस स्टेशनका नाम चन्द्रावतीगंज है। ग्राम स्टेशनके सामने पासमें ही है। १ दि० जैन मंदिर व १० घर जैनियोंके हैं। भाई दीपचन्द्रजी यहांपर रहते हैं। यहांसे गाड़ी बदलकर उज्जैन जाना चाहिये।

(१४) उज्जैन।

यहांपर आने-जानेकी तीन लाईन हैं। एक फतीहाबादसे दूसरी भोपालसे गाड़ी आती है। सो भोपालसे आते समय उज्जैनके पहिले मकसी स्टेशनपर उतरके मकसी पार्श्वनाथकी वंदना करना चाहिये। पीछे उज्जैन आवे। उज्जैन प्राचीन बड़ा भारी तीर्थ है। जैनियोंके महापुरुष धन्यकुमार, चन्द्रगुप्त आदि हजारों यहां राजा हुए। यहांपर ही विक्रमादित्य सरीखे न्यायपरायण राजा हुए। यहां क्षिप्रा नदी है। दि० जैन ३ मन्दिर हैं। १ जिन मंदिर नमकमंडीमें है। यहांपर धर्मशालामें ठहरने आदिका आराम है। दूसरा मंदिर नयापुरा, तीसरा मंदिर जयसिंहपुरामें है। प्रतिमाएं प्राचीन हैं। जैनियोंके बहुत घर हैं, बड़े२ सेठोंकी दुकानें तथा बाजार देखने योग्य हैं। सेठ घासीराम कल्याणमलजी सज्जन तथा प्रसिद्ध पुरुष हैं। यहांसे ६ मीलकी दूरीपर भेलसा है, मोटरसे जावे।

(१५) भेलसा।

इसका दूसरा भद्रीलापुरी भी है। बहुत लोग इसको दशवें

तीर्थंकर शीतलनाथकी जन्म नगरी भी कहते हैं। पहिले यह बड़ा नगर था। यहांके जंगलमें राजा अशोकके समयके बीस२ कोशके चक्रमें बहुत ऊंचे २ मंदिर २० फुटसे लेकर ९० फुट तकके हैं। यह ग्राम बहुत ही रमणीक है, यहांपर दि० जैन घर बहुत हैं। एक जैन पाठशाला भी है। प्राचीनकालके २ मंदिर हैं, जिनमें प्रतिमाएं बहुत ही मनोज्ञ हैं, यहांका दर्शन करके फिर उज्जैन लौट आना चाहिये। फिर यहांसे रेल किराया ।||) देकर मक्सी पार्श्वनाथ जाना चाहिये।

(१६) मक्सी पार्श्वनाथ अति० क्षेत्र।

भोपालसे आते समय या उज्जैनसे जाते समय मक्सीजीका स्टेशन पड़ता है। स्टेशन पर हरवक्त नौकर रहता है। यात्रियोंको ऐसा कहना चाहिये कि "हम दिगम्बर जैन हैं" उसके साथ या किसीसे पूछकर १ फर्लांगपर दि० जैन धर्मशालामें ठहरना चाहिये। फिर यहांसे २ मीलकी दूरीपर मक्सी पार्श्वनाथ है। वहांकी यात्रा करना चाहिये। मक्सीजीकी महिमा तीनों लोकमें प्रसिद्ध है। अनेकों बादशाहों और महानुभावोंको अनेक अतिशय प्रगट हुए थे। यह पार्श्वनाथकी मूर्ति साक्षात् मनको शान्त करके पापको नाश करती है। मन दर्शनोंसे प्रफुल्लित होजाता है, परम्परया मोक्षको भी देनेवाली है। बहुत प्राचीन और सुन्दर है। यहांपर एक बड़ी धर्मशाला, तालाव, बावड़ी, बगीचा आदि वस्तुएं दर्शनीय हैं। खानेपीनेका सामान भी अच्छा मिलता है, यहांसे जाना हो तो भोपाल जावे। मक्सीजीकी यात्रा करके फिर १||) देकर टिकट लेकर भोपाल जावे।

(१७) भोपाल।

यह स्टेशन खंडवा, कानपुर, बंबई लाईनके बीचमें पड़ता है। यहांपर आने जानेका और रास्ता नजदीक नहीं है। इसीलिये मक्सीजीकी यात्रा करके जानेसे ठीक रहता है। किसीकी इच्छा हो तो जावे नहीं तो लौटकर उज्जैन आजावें। यह शहर स्टेशनसे ३ मील पड़ता है, शहरमें एक धर्मशाला, १ मंदिर तथा दो चैत्यालय हैं। प्रतिमा बहुत ही मनोज्ञ और प्राचीन है। यहांके भाई गाना बजाना अच्छा जानते हैं, यहांपर हमेशा पूजन भजनका ठाठ रहता है। यहांपर दि० जैन घर बहुत हैं, स्टेशनके ऊपर अन्यमतियोंकी धर्मशाला नजदीक है। यह शहर प्राचीन बहुत ही बढ़िया है, राजा भोजने इसको बसाया था। इसलिये इसका नाम भोजपाल था परन्तु अब अपभ्रंशमें भोपाल होगया है। यहांपर अंग्रेजी सेना रहती है। २ मील लम्बी १ मील चौड़ी एक झील है। चारों तरफ कोटसे घिरी है, विशाल किलासे शोभित है। शहरके बाहर एक तीजारा बस्ती है, दोनों तरफ दो फतेहगढ़ हैं। गढ़में बेगमसा० रहती हैं, यहां बेगमसा०का महल, जुम्मामसजिद, टकशालघर, तोपखाना, मोतीमसजीद, खुदासीया बेगमबाटीका जनाना, हिन्दी स्कूल, अंग्रेजी स्कूल आदि चीजें देखने योग्य हैं। यहां राजा भोजके समयका बहुत बड़ा तालाब है। चौतरफ पहाड़से घिरा हुआ है, इसी तालाबके होनेसे इसको ताल भोपाल भी कहते हैं। इसलिये यह तालाब भी देखना चाहिये, यहांसे १० मीलकी दूरीपर समसागढ़ है। तांगावाला १) लेता है, वहां जाना चाहिये।

(१८) श्री समसागढ़ (अति० क्षेत्र) ।

यह एक जीर्ण ग्राम है, यहां एक बहुत प्राचीन जीर्ण मंदिर है, जिसमें तीन प्रतिमाएं चतुर्थकालकी महामनोहर शांत छबि तप नेमवाम विराजमान हैं। यहांपर भगवान पार्श्वनाथका समोशरण आया था। यहांकी यात्रा करके भोपाल लौट आवे फिर भोपालसे उज्जैन आवे। भोपालसे एक लाईन बीना तरफ, एक उज्जैन, एक बंबई तक जाती है। किसीको आगे जाना हो तो चला जाय, नहीं तो लौटकर उज्जैन ही आना चाहिये। उज्जैनसे किसीको जाना हो तो इन्दौर तरफ चला जावे। इसका हाल आगे लिखा जायगा वहांसे जानना चाहिये। अब उज्जैनसे टिकटका ॥=) देकर नागदा जाना चाहिये। इधरकी यात्रा पहिले लिखता हूं सो नीचे देखलें।

(१९) नागदा जंकशन ।

यहांसे १ लाइन रतलाम, गोधरा, चांपानेर होकर बड़ौदरा जा मिलती है। इसका हाल आगे लिखा जायगा। १ लाइन रतलामसे आगे इन्दौर तक जाती है। एक लाईन नागदासे उज्जैन जाती है। १ लाईन सवाई माधोपुर होकर मथुरा जाकर मिलती है। इसका हाल देखें। नागदासे १) रुपया देकर छत्रपुर उतर पड़े।

(२०) छत्रपुर स्टेशन ।

यहांसे ।॥) सवारीमें हरवक्त मोटर या तांगा मिलता है। उसमें बैठकर झालरापाटन जावे।

(२१) झालरापाटन ।

यह शहर पुराना है, पहिले बड़ा भारी शहर था। यहां शहरमें एक दि० जैन धर्मशाला, एक सरस्वतीभवन और छोटे बड़े

११ मंदिर हैं। जिसमें एक मंदिर शांतिनाथजीका बहुत लम्बा, चौडा विशाल है। इस मंदिरके आसपास वेदी बहुत हैं, प्रतिमाएं भी बहुत हैं, बीचमें मूलनायक श्री शांतिनाथका मंदिर है। मंदिरजीके बीचमें बहुत ही प्राचीन अतिशयवान १९ हाथ ऊंची खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। यहांपर एक बगलमें चैत्यालय है। एक तरफ क्षेत्रपाल पद्मावती हैं। मंदिरमें केशर फूल बहुत चढ़ता है। घृतका दीपक जलता है। और आरती भी होती है। मंदिरके दोनों बगलमें २ हाथी बड़े२ हैं। एक जैन पाठशाला है। यहांके सब दर्शन करके तांगा भाड़ा करके यहांसे २० मील चांदखेड़ी जाना चाहिये। यहांसे जाते समय चांदखेरी पण्डितका सरोजा और सांगोद इन तीनों क्षेत्रोंका पूरा२ हाल पूछकर जाना चाहिये।

(२२) चांदखेड़ी अतिशय क्षेत्र।

यह क्षेत्र परम पूज्य है। यहांपर एक प्राचीन कीमती मंदिर है। मंदिरमें दोनों बगल दो प्रतिमाएँ शांति कुंथुनाथकी हैं। बीचमें ऋषभदेवकी है। उनकी ऊंचाई सात २ हाथ खड्गासन विराजमान हैं। और इनके सिवाय दो प्रतिमा चौबीस महाराजकी, बड़ी२ पार्श्वनाथ स्वामीजीकी दो बहुत मनोहर हैं। कुल प्रतिमाओंकी संख्या ९७७ कहते हैं। यहांका मंदिर बहुत बड़ा है। यहांका दर्शन करनेसे अत्यंत आनंद होता है। यहांपर स्पष्ट अक्षरोंमें खुदा हुआ एक शिलालेख है। जिसपर प्रतिमाजी विराजमान है। यहांकी यात्रा करके झालरापाटन लौट आवे। अगर यहांसे और स्टेशन पास पड़ता हो तो वहां चला जाना चाहिये।

चांदखेड़ीके बीचमें या आसपासमें पूछकर पण्डितजीका

सरोला और सागोद ग्राम है। यहां प्राचीन कालकी प्रतिमा हैं। सो कुछ कष्ट उठाकर यहांका भी दर्शन कर लेना चाहिये। फिर छत्रपुर स्टेशन लौट आना चाहिये। फिर १) रुपया देकर टिकट कोटा जंकसनका लेलेवें।

(२३) कोटा।

स्टेशनसे शहर एक मील है। कोटासिटीसे ९ मील पड़ता है। शहरमें एक दि० जैन धर्मशाला, पाठशाला और ११ बड़े२ कीमती मंदिर हैं। जिनमें प्राचीन और नवीन सैकड़ो प्रतिमा विराजमान हैं। दि० जैनियोंके घर बहुत संख्यामें है। शहरसे कुछ दूर नशियाजी है। वहांपर मंदिरजी और प्राचीन प्रतिमा है। सबका दर्शन करे, कोटाका नरेश छत्रधारी राजाधिराज है। शहर चौतरफ कोट खाई, परकोटासे घिरा है। प्राचीन ढंगका बहुत रमणीक है। यहांका राजमहल, फौज पलटन, बाग, तोपखाना, तालाव, अजायबघर आदि देखने योग्य हैं। यहांसे बून्दी शहरका १) सवारी मोटर तांगा लेता है। वहां अवश्य जाना चाहिये क्योंकि हर समय आना नहीं होता है।

(२४) बूंदी।

इसका हाल कहां तक लिखियेगा। यह एक बड़ा प्राचीन और प्रसिद्ध शहर है। कोटाके समान इसके चारों तरफ बड़ा भारी कोट और दरवाजे हैं। शहर राजासा०का अवश्य देखने काबिल है। यहांपर बड़े२ और विशाल बहुत मंदिर हैं। हजारो प्रतिमाएं तथा बहुत घर जैनियोंके हैं। एक पाठशाला व धर्मशाला है। यहां एक आदमीको साथ लेकर बाग, तालाव, फौज, आयुधशाला

और राजमहल, अजायबगर आदि देखना चाहिये। फिर यहांसे लौटकर कोटा आवे, कोटासे ४ रेल्वे लाईन जाती हैं। एक नागदा रतलाम, दूसरी बीना, गुना, इटावा, १ मथुरा तक व एक दूसरी लाईन जाती हैं। फिर कोटासे टिकटका ।।।) देकर स्टेशन बारां जावे।

(२५) श्री अतिशय क्षेत्र बारां।

यहींपर भगवान कुन्दकुन्द स्वामीकी समाधि भी है। शहर स्टेशनसे नजदीक है, १ प्राचीन मंदिर और धर्मशाला है। जैनियोंके घर अच्छे हैं, यहांके जन्मअरईसी जंगलमें धर्मतीर्थके कर्ता श्री कुन्दकुन्द स्वामीने समाधिमरण धारण करके देह त्यागी थी। यहांपर एक क्षत्रीय चरणपादुका है, विशेष कुन्दकुन्द चरित्रसे जानना। यहांसे यात्रा करके लौटकर कोटा आवे, फिर टिकटका ॥=) देकर आगे केशवजी पाटन स्टेशन उतर जाना चाहिये। यहांसे एक लाइन गुना बीना तक, १ रतलाम, व १ मथुरा तक जाकर मिलती है।

(२६) अतिशयक्षेत्र केशवजी पाटनगांव।

यह एक छोटा ग्राम है। यहांपर एक बहुत कीमती और प्राचीन जिन मंदिर है। मुनिसुव्रतनाथकी प्रतिमा सात हाथ ऊंची प्राचीन कालकी विराजमान है। महावीरस्वामीका समवशरण यहांपर बहुत बार आया था। इसलिये यह अतिशयक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ है। यहांकी यात्रा करके स्टेशन लौट आवे। फिर एक रुपया १) देकर टिकट सवाई माधोपुरका लेवे। वहांपर उतर जावे, स्टेशनसे २ मीलपर चमत्कारजी (आलीनपुर) जाना चाहिये।

(२७) श्री चमत्कारजी अतिशयक्षेत्र-आलीनपुर ।

यह शहर प्राचीनकालमें बहुत बड़ा था, सो टूटकर सवाई-माधोपुर वसा है । यहांपर मकानोंके खंडहर बहुत हैं । एक बड़े कोटसे घिरा हुआ है । दि० जैन धर्मशाला व कूप है । बड़ा भारी मेला भी भरता है । मंदिर भी यहांका अद्भुत रमणीक है । मंदिरमें दो वेदी और प्रतिमा बहुत हैं । एक प्रतिमा श्री आदि-नाथ चमत्कारजीकी स्फटिकमणिकी बहुत कीमती मनोज्ञ विराजमान है । यहांपर यात्री बहुत आते हैं । मानता, पूजा, भेंट चढ़ाते हैं। यहांसे सवाईमाधोपुर शहर नजदीक हैं। वहांपर भी मंदिर प्रतिमा बहुत रमणीक है । दि० जैनोंके बहुत घर हैं । सबका दर्शन करके फिर लौटकर स्टेशनपर आवे । यहांसे एक गाड़ी जयपुर जाकर मिलती है । एक आगे मथुरा देहली तक जाती है । एक अयोध्याजी, नागदा, रतलाम तरफ जाती हैं । अब यहांसे आगेका टिकट १।।।) देकर पटुन्दा (महावीर रोड़) का लेलेना चाहिये । अगर किसी भाईको जयपुरकी तरफ जाना हो तो टिकटका २) देकर जयपुर जाना चाहिये । बीचमें नवाई स्टेशनसे टोंक जाना होता है । आगे सांगानेरकी यात्रा बीचमें पड़ती है । इसका उल्लेख आगे कर देता हूं फिर पटुन्दाका करूंगा ।

(२८) नवाई (टोंक)

यहांपर ४ मीलकी दूरी पर एक बड़ा गढ़ है । भीतर शहर है । नवाब सा० का राज्य है । राजदरबार तथा और भी चीजें देखनेकी हैं । शहर बहुत प्राचीन है । जैन मंदिर भी बढ़िया २ हैं, जैन लोगोंकी वस्ती बहुत है ।

(२९) सांगानेर।

यह शहर पहिले बहुत बड़ा तथा नामी था, सो टूटकर जयपुर बसा है। स्टेशनसे १ मील है और जयपुरसे ७ मील पड़ता है। यहांपर ७ मंदिर बड़े भारी लाखोंकी कीमतके और एक भौंहरा व हजारों प्रतिमाएँ हैं। जयपुरसे आकर या माधोपुरसे आकर यहांकी यात्रा करनी चाहिये। यहांपर पहिले बड़े२ करोड़पति लोग रहते थे। पहिले यहांपर रंगाईका काम कपड़ेपर बहुत कीमती होता था। सांगानेरी पगड़ियोंका रंगीन कपड़ा नामी मशहूर था। भौंहरामें यहां बहुत प्रतिमा हैं। यहांसे जयपुर एक स्टेशन पड़ता है। अब माधोपुरके आगे पटुन्दा उतरे या आगे हींडोन स्टेशन उतरें।

(३०) श्री चानणग्राम महावीर बाबा–अतिशयक्षेत्र॥

पटुन्दासे ४ मील और हींडोनसे ७ मील चानणग्राम पड़ता है, यह एक छोटा ग्राम है। यहांपर एक नकट नामकी नदी बहती है। नदीके ऊपर भगवान महावीर बाबाके दोनों तरफ दो बगीचे हैं। आगे जाकर ग्राम आता है, ग्राममें एक बडी भारी धर्मशाला है। चौतरफ कोट है, बडे मकानोंमें लोग रहते हैं। सामानकी दो दुकानें हैं। आगे एक बडा भारी तीन शिखरों सहित, दो छत्रियों सहित मंदिरजी है। सो चारों तरफसे एक२ मीलसे दीखता है। ये मंदिर जादुराय जयपुर निवासीका बनवाया हुआ है।

यहां भी हजारों यात्री हरवक्त दर्शनोंको, बोल कबूल चढ़ानेको आते हैं। चैत्र सुदी पूर्णिमाको यहां बड़ा भारी मेला भरता है। जिसमें हजारों जैन–अजैन लोग आते हैं। बड़ा व्यापार होता है। मंदिरजीमें हजारों मन घी दीपकमें रात्रिदिन जलता रहता है।

केशर फूल आदि चढ़ते हैं । आरती होती है । जयपुर निवासी मान्यवर भट्टारकजी कभी २ यहांपर रहते हैं। मेलेमें आनंद बहुत आता है। मजूर और भील लोग भगवानकी बहुत भक्ति करते हैं। गाते बजाते हैं । रथको उठाकर नदीपर लेजाते हैं । घृत, केशर, दूध, नारियल, आदि शुद्ध द्रव्य भगवानको चढ़ाते हैं । पूजा भक्ति करते हुए अपना जन्म सफल मानते हैं । यहां एक हनुमानजीकी बड़ी भारी मूर्ति है । उसको हिन्दूलोग पूजने आते हैं । अन्यमती लोग इसीको महावीर बोलते हैं । इस स्टेशनका नाम महावीर रोड प्रसिद्ध है । अपने दि० जैन मंदिरमें ९ वेदी और बड़ी२ प्रतिमाएं मौजूद हैं। महान अतिशयवान रमणीक हैं।

किंवदन्ती है कि एक ग्वाला हमेशा जंगलमें गाय चराने जाया करता था जिसजगह ये प्रतिमाजी थी, उसी जगहपर एक गायका दूध अपने आप निकल जाता था। गाय भी रोज आकर खड़ी होजाती थी और दूध झरने लगता था । किसी दिन यह बात उस ग्वालेने देख ली । और यह बात अपने मालिक और गांववालोंसे कही । ग्रामवासी आश्चर्यमें थे कि गायका दूध क्यों झर जाता है । उसी दिन रात्रिको ग्वालेके लिये स्वप्न हुआ कि यहांपर १ मूर्ति है सो गांववालोंको बोलकर निकाल लो । सवेरे उठकर यह बात गांववालोंसे ग्वालेने कही । फिर सब लोग मिलकर वहांपर गये । और खोदना शुरू किया । थोड़ा ही खोदा था कि भीतरसे आवाज आई " मेरे चोट लगती है, धीरे २ खोदो " ! फिर लोगोंने धीरे२ खोदा और मूर्ति बाहर निकाल ली । आवाज आनेके पहिले मूर्तिको चोट लगी थी जिससे नाक खंडित हो गयी थी । वह अब भी है । फिर उस

मूर्तिको लेजाकर उस ग्वालेके घरमें रख दी। और ग्वाला नित्य-प्रति दूधका प्रछाल करदेता था। सब लोग दर्शन करने लगे। इस मूर्तिके होनेसे यह ग्राम उन्नत होगया। लोगोंको अनेक चमत्कार होने लगे। फिर कुछ दिन बाद यह बात नजदीकके शहर और ग्रामोंमें पहुंच गयी। बादको आगरा, जयपुरादि शहरोंमें पहुंची। सब लोगोंने आकर पूजन किया और आनंद मनाया। उन लोगोंने जयपुरादि शहरोंमें लेजानेका बहुत उपाय किया। कई गाड़ियां भी टूटीं, मगर प्रतिमा न गई। फिर सब उस प्रतिमाको जहांसे निकाली थी वहींपर विराजमान कर दी। वहांपर १ छत्रि १ चरणपादुका विराजमान है। फिर श्रावक लोग एक आदमीको पूजन प्रच्छालके लिये छोड़कर चले गये। फिर महावीरस्वामीकी जयध्वनि सम्पूर्ण देशोंमें फैलने लगी। बहुत लोग आनेजाने लगे।

जयपुरमें एक बाजुराय नामका कोई जागीरदार दि० जैन कामदार था। उससे राजाका कुछ अपराध बन गया था। जिससे राजाने उसका घर लुटवा लिया और उसको कैद कर लिया। इस कष्टमें बाजूराय उसी महावीरस्वामीकी प्रतिमाका ध्यान करता रहा। हृदयसे अपना दुःख सुनाता और भगवानकी स्तुति करता था। जिसके प्रभावसे राजाकी बुद्धि फिर गई, फिर राजा खुद बाजूरायके पास गया और उसको बंधनमुक्त करके छोड दिया। और प्रसन्न होकर ९००) सालकी जागीर लगादी। तब बाजूरायने आकर बड़ा भारी मंदिर बनवाया और उसके खर्चके लिये एक ग्राम लगा दिया। फिर उस मूर्तिको मंदिरमें विराजमान करदी, और जीवनपर्यंत उनकी भक्तिपूजा करता रहा।

अभीतक वही मंदिर धर्मशाला ग्राम जागीर मौजूद है। (१) यहांसे यात्रा करके लौटकर या टुक सांगानेर होता हुआ सीधा जयपुर जावे (२) अथवा नागदा रतलाम आदिकी तरफ जावे (३) आगे जाना हो तो बीचमें बयाना गाडी बदलकर आगरा जावे। (४) अगर कहीं न जाना हो तो इसी गाडीसे सीधा मथुरा जावे। टिकट प्रायः २) होगा। बीचमें भरतपुर भी पड़ता है। किसीको उतरना हो तो उतर पड़े। नहीं तो सीधा मथुरा चला जाना चाहिये।

(३१) जम्बूस्वामी-चौरासी ।

मथुरा स्टेशनसे २॥ मीलकी दूरीपर चौरासीकी धर्मशाला और मंदिर है। अगर शहरमें जाना हो तो भी १ मील शहरमें घियामंडीमें श्री जैन मंदिर और धर्मशाला है। यात्रियोंकी जहां इच्छा हो वहांपर ठहरें।

(३२) मथुरा ।

यह शहर भी प्राचीन है। शास्त्रोंमें इस नगरमें शत्रुघ्न आदि बड़े २ राजा हुए थे, ऐसा लिखा है। बड़ा भारी शहर है। यहांपर कृष्णजी तथा जमना बड़ा भारी तीर्थ है। सैकड़ों मंदिर वैष्णवोंके देखने योग्य हैं। बाजार भी अच्छा है। सर्व प्रकारकी वस्तुएं यहां मौजूद मिलती हैं। चौरासी क्षेत्रसे तीसरे केवली जम्बूस्वामी मोक्ष पधारे थे। वहांपर बड़ा भारी मंदिर है। यहांपर ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम भी है। उसके अधिष्ठाता पं० दीपचंदजी वर्णी हैं। उसमें भी दान देना चाहिये। शहरमें घियामंडीमें १ मंदिर हैं। फिर नावसे जमना पार होकर उस तरफ गोकुलमें जाते हैं। वहां भी एक चैत्यालय है। यात्रियोंकी इच्छा हो तो

जांय। इसी गोकुलमें श्री कृष्ण महाराज नवमें नारायण नंदग्वाल तथा यशोदामाताके यहां पाले गये थे। यहांपर जाना हो तो जाय। नहीं तो यहांसे सब जगहको गाड़ी जाती है सो पूछकर जहांको जाना हो वहांको जांय। मथुरामें छोटे बड़े ७ स्टेशन हैं।

(१३) वृंदावन।

वृन्दावन तांगा भी जाता है। किराया वहींपर तय करलें। रेलगाड़ीसे एक आना सवारी लगता है। मथुरासे ४ मील दूर वृन्दावन है। यहांपर सेठ तथा राजाओं द्वारा बनवाये गये बड़े २ कीमती मंदिर देखनेयोग्य हैं। जिसमें मथुरानिवासी सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी जैन अग्रवालका बनवाया मंदिर अच्छा है। ग्राम सुन्दर और बड़ा है। यहांपर १ दि० जैन मंदिर और १ घर दि० जैन अग्रवालोंके हैं। यहांकी रचना जरूर देखना चाहिये। वहांसे फिर मथुरा आना चाहिये। मथुरासे गाड़ी चौतरफ जाती है चाहे जिधर चला जावे। अब हम अजमेरकी यात्रा हाल शुरू करते हैं।

(१४) अजमेर।

यह एक बड़ा अचरजगत प्रसिद्ध (खाजा पीर) अजमेरके नामसे सर्व मूलक और विलायत तक मशहूर है। यहां खाजा पीरकी दरगाह बहुत लम्बी चौड़ी करोड़ों रुपयाके लागतकी देखने योग्य है। यहांपर सब देशोंके अंग्रेज व मुसलमान आते हैं। पर कोई १ हिन्दू लोग भी कुछ बोल चढ़ाने आते हैं! यहांपर हरवक्त मेला भरा रहता है। माल सब मिलता है। राजबाग, अनासागर तालाब, गढ़, बाजार, सेठ मूलचन्द्रजीका महल आदि देखनेकी चीजें हैं। स्टेशनसे १ मील ≈) आना सवारी देकर सेठ सा०की

धर्मशालामें उतरना चाहिये। बगलमें एक दूसरी हिन्दू धर्मशाला भी है। फिर सेठ सा० की नशियाजी नजदीक है सो वहांपर जावे। वहांपर नशिया और मंदिरजी है। मंदिरजीमें प्राचीन प्रतिमा स्फटिकमणिकी है। मंदिरके पीछे हाथी घोड़ा अनेक तैयारी ऊपर बंगलामें समवशरणजी और अयोध्याकी रचना, हजारों फौज देव देवियोंकी, भगवानको मेरुपर लेजाना, अभिषेक करना इत्यादि हैं और मंदिरजीकी दीवालोंके ऊपर शास्त्रका लेख, मुनिराजका आहारदान, धर्मोपदेश, भगवानकी पंचकल्याणककी रचना लिखी है। सबका दर्शन करें। फिर आगे नशियांजीमें ३ मंदिर हैं। उनका दर्शन करें। फिर शहरमें सेटसा०के मंदिरजीका दर्शन और शास्त्र जो दीवालोंके ऊपर लिखा है और गंधकुटीकी रचना और स्फटिकमणिकी चतुर्मुखी प्रतिमाकी छबिका दर्शन करे। शहरमें ६ मंदिर और हैं। एक भट्टारकजीका मंदिर बड़ा है। जिसमें प्राचीन बहुत प्रतिमा हैं। सबका दर्शन भाव सहित करना चाहिये। किसी हिन्दू भाईको अजमेरसे पुष्करजी जाना हो, या किसी जैनी भाईकी देखनेकी इच्छा हो तो १० मीलपर पक्की सड़कसे चला जाय। तांगा मोटर आदि १)के भाड़से जाती हैं। पुष्करजी एक ग्राम है। वैष्णवोंके बहुत मंदिर हैं। पुष्कर एक तालावका नाम है। उसके ऊपर घाट बंधा है। तटपर ही मंदिर है। आसपासमें कुंड हैं। उसमें वैष्णव लोग स्नान करके पूजा भेंट चढ़ाकर पिंड दान तर्पणादि करके कुछ पंडोंको देकर चले आते हैं! वापिस अजमेर आना चाहिये। स्टेशनपर जाकर वहांसे एक लाइन नसीराबाद खंडवा आदिको जाती है। १ ब्यावर आबूसे अहम-

-दाबाद। १ फुलेरा तक जाती है। अजमेरसे यदि इन्दौरकी तरफ जाना हो तो बीचमें नसीराबाद छावनी पड़ती है। किसीको उतरना हो तो उतर पड़े।

(३९) नसीराबाद।

स्टेशनसे २ मील दूर शहर है। ≈) आनेमें तांगावाला सवारी लेजाता है। नसियामें ठहरनेका आराम है। सो ग्रामके पश्चिमकी तरफ नजदीक नसिया है। वहांपर ठहरना चाहिये। फिर शहरमें एक बड़ा मंदिर और एक चैत्यालय, एक नसिया ग्रामके पूर्वकी तरफ है। वहांपर तीन प्रतिमा बहुत बड़ी हैं। सो सबका दर्शन करना चाहिये। और पश्चिमकी नशियामें जहां ठहरनेको धर्मशाला, कुवा, जंगल, मंदिर और ग्रामके नजदीक सब आराम है। फिर यहां केकड़ी, अमरगढ़, बागीदौरा और चूलेश्वरजी अतिशयक्षेत्र तक जानेका रास्ता है। सो पूंछकर जाना चाहिये। नसीराबादसे आगे मांडलगढ़ तथा हमेरगढ़ स्टेशन पड़ता है। उसमें भी दिगम्बरियोंकी वस्ती और मंदिर हैं। आगे चूलेश्वर बिजोलिया यहांसे भी जा सकते हैं। आगे चित्तौरगढ़, उदयपुर, रतलाम आदिका हाल उपर लिखा है वहांसे जानना चाहिये। अजमेरसे एक लाइन ब्यावर मारवाड़ जंकशन आबू, अहमदाबाद जाती है उसका हाल आगे लिखा जायगा।

तीसरी लाईन फुलेरा तरफ जाती है। उसका हाल नीचे लिखता हूं। अजमेरसे आगे किशुनगढ़ पड़ता है। यहांपर जैन मंदिर व जैन घर बहुत हैं। आगे अजमेरसे १।।) देकर नरायनाका टिकट लेलेना चाहिये।

(१६) नरायना स्टेशन ।

स्टेशनसे पूर्वकी तरफ नरायना ग्राम ठीक है। यहांपर मंदिर और प्राचीन प्रतिमा बहुत हैं। २९ घर दि० जैनियोंके हैं। यहांपर दादुरा साधुओंका बड़ा झण्डा है। बहुत प्राचीन लक्षों रुपयेका काम है। एक बड़ा भारी तालाब है। हजारों दादुरपंथी साधु मेलाके समय आजाते हैं। दादुरपंथी मनुष्य यहांपर बहुत आते हैं। दादुरामजीके जगह२ पर हजारों मुकाम हैं। चरणपादुका है। लोग यहांपर पूजा भेंट चढ़ाते हैं। नृत्यगान भी करते हैं। हजारों साधु जीमते हैं। फिर यहांसे बैल गाड़ी भाड़े करके १६ मील कच्चे रास्तेसे मौजाद जाना चाहिये। बैल गाड़ीका भाड़ा जाने आनेका ४) रुपया अंदाजा लगता है। पूछ लेना चाहिये। बीचमें एक ग्राम पड़ता है। उसमें भी १ मंदिर जैनियोंका है।

(१७) श्री मौजाद क्षेत्र ।

यह ग्राम ठीक है। १ पाठशाला, धर्मशाला और ९० के लगभग जैनियोंके घर हैं। २ मंदिर हैं। उनमेंसे १ मंदिर बहुत बड़ा ३ शिखरवाला, १ भौंहरा, चौक मंडप, दालान सहित है। इसमें बड़ी२ विशाल ९ प्रतिमा विराजमान हैं। यहांका दर्शन करके नरायना स्टेशन लौट आना चाहिये। फिर टिकट ≈) देकर फुलेराका लेवे। बीचमें गाड़ी बदले। फुलेरासे ३ लाईन जाती हैं। १ रींगस जंकशन होकर रेवाड़ी तक जाती है।

फुलेरासे टिकट १) अंदाजा लगता है। सो रींगस गाड़ी बदलकर सीकर शहर जाना हो तो जावे।

(३८) रींगस।

स्टेशनपर एक धर्मशाला है। गांव २ मील है। १ मंदिर व कुछ घर जैनियोंके हैं। गाड़ी बदलकर सीखर शहर जावे।

(३९) सीकर शहर।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर दीवानजीकी नशियांमें उतर जाना चाहिये। यहांपर मंदिर, कुआ, बाजार नजदीक है। शहर अच्छा साफ है। त्यागी पं० महाचंदजी नामी धर्मात्मा यहींपर होगये हैं। उनके बनाये हुए सामायिक पाठ आदि अनेक ग्रन्थ उनकी कीर्तिको दर्शा रहे हैं। पंडितजी बड़े तपस्वी और विद्वान थे।

यहांपर एक चैत्यालय और १ नशियां है। एक बड़ा मंदिर है। जिसमें २ प्रतिमा चांदीकी, २ स्फटिकमणिकी, १ मूंगा लाल वर्णकी छोटी विराजमान हैं। यहांपर राजाका महल बाग देखने योग्य है। आगे यहांसे रास्ता रामगढ़ आदि मारवाड़को जाता है। लौटकर रींगच आनेमें बीचमें श्रीमधुपुर पड़ता है। ये भी अच्छा कस्बा है। जैन मंदिर और दि० जैन वस्ती अच्छी है। रींगचसे रेल रेवाड़ी होकर देहली जाती है।

(४०) रेवाड़ी।

स्टेशनसे २ मील शहर है। ४ मंदिर नसियामें है। दि० जैन घर बहुत हैं। यहांसे एक रेल बांदीकुई होकर जयपुर होकर फुलेरामें जाकर मिलती है। एक देहली जाकर मिलती है। अब फुलेरासे बांदीकुई होकर जयपुर जाती है।

(४१) जयपुर।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर दिवान सा०की धर्मशाला है।

यहांपर कूपादि सब हैं ! दूसरो धर्मशाला सेठ नथमल ओसवालकी भी है । आठआना सवारीमें तांगावाला लेजाता है । तीसरी धर्मशाला शहरमें है । जहांपर इच्छा हो वहांपर ठहरना चाहिये । हरएक बातका आराम है । फिर एक आदमीको साथ लेकर शहरकी वंदनाको जाना चाहिये । यहांपर कुल १४ मंदिर ९० व चैत्यालय हैं । उनमें हजारों प्रतिमा रंगविरंगी विराजमान हैं । दिवानजीका मंदिर जमीनके भीतर है जिसमें ७२ प्रतिमा तीन चौवीसीकी पद्मासन विराजमान हैं जो बड़ी विशाल और शांत छवि हैं । यहांका सब दर्शन दो दिनमें हो सकता है । फिर तांगासे ।) सवारी देकर घाटके मंदिरोंकी वंदनाको जाना चाहिये । वहां ७ मंदिर बड़े २ विशाल हैं । जिनमें सैकड़ों प्रतिमाएं हैं । दर्शन करके जयपुर लौट आना चाहिये । फिर सिलवटके बाजारमें जावें । वहां सैकड़ों प्रतिमा धातु-पाषाण स्फटिककी देखना चाहिये । अगर प्रतिमाजी खरीदना हो तो जानकार आदमीको लेकर प्रतिमा निर्दोष देखकर खरीद लेवे । परंतु देखने अवश्य जावे । यहांपर एक भट्टारक महाराज रहते हैं उनसे भी मिलना चाहिये । यहां सब देशका हर किस्मका कपड़ा जेवरादि सामान मिलता है । फिर शहरका चौपट बाजार, राजदरबार, फौज, हाथी, घोड़ा, कचहरी, बाग, अजायबघर, आदि देखना चाहिये । इसका नाम जैनपुर होगा सो जयपुर होगया है । सांगानेर शहर टूटकर यह जयपुर बसा है । पहिले यहांपर राजा प्रजा आदि हजारों जैन थे । हालमें भी यहांपर दि० जैन घर बहुत बड़ी संख्यामें हैं । बड़े २ भाषाकार पंडित यहांपर होगये हैं जैसे—१ टोटरमल्ल, रायमल्ल,

कुन्दास, जिनदास, पार्श्वदास, सदासुख, दौलतराम, पन्नालाल, टेकचंद्र, रत्नचंद्र, जयचंद्र, जवाहरलालजी आदि बहुत विद्वान हुए हैं। जिन्होंने जैन धर्मके संस्कृत और प्राकृतके ग्रन्थोंकी भाषा वचनिका की। और कुछ संग्रहरूप ग्रंथ भी रचे हैं। पूजा, भजनकी भी पोथियां बनाई हैं। इन्होंने जैन धर्मकी बड़ी सेवा की है। इन सज्जनोंको धन्यवाद है! यहांकी यात्रा करके यहांसे एक रेलवे ट्रंक होकर सवाई माधोपुर होकर सांगानेर जाती है। सांगानेरका हाल ऊपर लिखा गया है वहांसे देखना। सांगानेरका दर्शन अवश्य करें। फिर आगे सवाई माधोपुर जाकर मिल जावें। या लौटकर फिर जयपुर आजाना चाहिये। फिर यहांसे फुलेरा तरफ जावे। फुलेरासे आगे जिधर जाना हो उधर जावे। इसका हाल भी ऊपर लिखा है। फिर आगे लिखेंगे सो देख लेना चाहिये। एक लाइन बांदीकुई होकर जाती है।

(४२) बांदीकुई।

यहां शहर अच्छा है। दि० जैन मंदिर और जैन घर अच्छे हैं। यहांसे १ रेलवे अचनेरा होकर आगरा फोर्ट जाती है। एक रेवाड़ी देहली जाती है।

(४३) अचनेरा।

यहांसे एक रेलवे मथुरा हाथरस होकर कानपुर जाती है।

(४४) आगरा फोर्ट।

आगराका हाल आगे लिखा है वहांसे देखना। अब फिर एक रेलवे फुलेरा जंकशन होकर मारवाडकी तरफ जाती है। फुलेरासे रेल किराया २।।) देकर लाडनूं, कावा, जसवंतगढ़, सुजानगढ़

कहींका टिकट ले लेना चाहिये । अगर किसी भाईको रास्तामें उतरना हो तो उतर पड़े । घर जाना हो तो नीचेका हाल देखकर चला जाय । बीचमें मकराना पड़ता है । पत्थर बहुत अच्छा होता है । सब देशोंमें जाता है । रास्तेमें टेरका ढेर पड़ता है सो देखने जाना चाहिये ।

(४५) सांभर ।

स्टेशनसे ग्राम १ मील दूर है । २ दि० जैन मंदिर और बहुत घर जैनियोंके हैं । यहांके पहाड़से नमक बहुत निकलता है । और दिशावरोंको भेजा जाता है । इस नमकसे १ करोड़की आमदनी अंग्रेजोंको है !

(४६) नांवा (कुचामन रोड)

नांवा स्टेशनसे २ मील दूर है । यहांपर ४ दि० जैन मंदिर और बहुत घर दि० जैनियोंके हैं । स्टेशनसे हरवक्त मोटर, ऊंट, बैलगाड़ीकी सवारी मिलती हैं । यहांसे कुचामन २० मील दूर है ।

(४७) कुचामन शहर ।

यह शहर मारवाड़में श्रेष्ठ है । यहांपर बड़े २ चार दि० जैन मंदिर हैं । प्रतिमा बहुत हैं । जैनियोंके भी बहुत घर हैं । बड़े २ मकान विशाल और कीमती हैं । कलकत्ता निवासी सेठ चैनसुख गम्भीरमलजी यहींपर रहते हैं । इन्हींकी पाठशाला, कन्याशाला व औषधालय हैं । भाई सेठ मदनचन्द्र प्रभुदयालजी भी यहींपर रहते हैं ।

(४८) जसवंतगढ़ ।

यहांसे एक गाड़ी सुजानगढ़ और एक लाडनूंको जाती है ।

सो उधर जानेवालेको लाडनूं जाकर फिर सुजानगढ़ जाना चाहिये। और उधरसे आनेवालोंको सुजानगढ़ उतरना चाहिये, फिर लौटकर लाडनूं आना चाहिये।

(४९) लाडनू।

स्टेशनसे गांव लगा हुआ है, शहर अच्छा है, श्वेतांबर मंदिर और ओसवालोंकी वस्ती बहुत है। साधुमार्गी तेरापंथी है, नव श्वेतांबर मंदिर, २ उपाश्रय हैं। दि० जैन सरावगियोंने यहांपर २३ वार प्रतिष्ठा कराई थी। एक मंदिर जमीनके भीतर बहुत कीमती बना हुआ है, वहां प्रतिमा बहुत प्राचीन मनोहर विराजमान है। पूजा शास्त्रका अच्छा ठाटपाट रहता है। एक पाठशाला है। जोधपुर स्टेटमें ठाकुर सा०का ग्राम है, कोई भाई यहांकी वंदना पाव रास्तासे भी १० मील सुजानगढ़ जासकता है, नहीं तो फिर रेलमें बैठकर सुजानगढ़ उतरना चाहिये। अगर कोई भाई हांसी, हींसार, चरु, रत्नगढ़, इस लाईनसे आवे तो पहिले सुजानगढ़ उतरे। फिर वहांका दर्शन करके लाडनूं आवे और फुलेराके पहिले जसवंतगढ़ होकर लाडनूंका दर्शन करके सुजानगढ़ जावे।

(५०) सुजानगढ़।

बीकानेर राज्यमें एक अच्छा नगर है स्टेशनसे १ मील दूर शहर है, शहरसे १ मंदिर व एक नसियाजी है। १०० के लगभग दि० जैनियोंके घर हैं, शहरमें साधुमार्गी ओसवाल, श्वेतांबर बहुत हैं, एक बढ़िया श्वेतांबर मंदिर भी देखने योग्य है। यहांसे आगे जानेवाला भाई हांसी, हिसार जाकर रेलका मेल करे और लौटनेवाले भाई वापिस लौटकर डेडमाहना आवे। सुजानगढ़से

बड़ी पाठशाला व दवाखाना है । यहांपर भी धर्मध्यान अच्छा है, पं० पन्नालालजी बाकलीवाल यहींके वासी हैं । यहांसे आगे जाने-वाले रतनगढ़ चरू होकर ही हांसी, हिसार मिल जावे । फिर सुजानगढ़से लौटकर डेहगाहना जावे ।

(५१) रतनगढ़ ।

यहां दि० जैन कुछ घर हैं। एक दि० जैन मंदिर भी है । यहांसे एक रेल्वे बीकानेर जाती है । उसका हाल आगे लिखेंगे वहांसे जाना चाहिये ।

(५२) चरू ।

स्टेशनपर एक हिन्दू धर्मशाला है, गांव २ मील है, १ मंदिर कुछ घर दि० जैन अग्रवालोंके हैं, एक रास्ता रामगढ़ आदि सीकर तक चारों तरफ मारवाड़के ग्रामोंमें जाता है ।

(५३) हांसी हिसार ।

स्टेशनसे १॥ मील दूर शहर है, दि० जैन अग्रवालोंकी बस्ती बहुत है, बड़े२ दि० मंदिर हैं, स्टेशनपर अन्यमतियोंकी धर्मशाला है । कवि बाबू न्यामतसिंहजी यहांके निवासी हैं, जिन्होंने नाटक, भजन आदि बहुत बनाये है, यहींपर भी कुछ चीजें देखने काबिल हैं। यहांसे एक लाइन भिवानी होकर देहली जा मिली है।

(५४) भिवानी ।

यहांपर १०० घर दि० जैनोंके हैं । एक मंदिर, पाठशाला, धर्मशाला भी है । हांसीसे एक रेल्वे पानीपत, सुनपत आदि पंजाबमें जाती है। इधर आगे जाना-आना पड़े तो यहीं हाल जानकर आना-जाना चाहिये, नहीं जाना हो तो डेहगाहना जंक्शन आजावें।

(५५) डेह गाहना जंकशन।

डेह गाहनासे २ लाइन जाती हैं, अगर कोई भाई जाना चाहे तो १ नागौर जाती है, सो जावे, नहीं जाना हो तो जोधपुर पाली होकर मारवाड़ जंकशन खारडा जाकर मिल सकता है, और बीचमें मेरतारोड पड़ता है, वहां भी उतर सकता है, नहीं तो जोधपुर उतरे। जोधपुरसे सीधी पाली होकर हैद्राबाद करांचीको गाड़ी जाती है, परन्तु पालीमें गाड़ी बदलना चाहिये।

(५६) नागौर।

स्टेशनसे एक मील दि० जैन नशिया, धर्मशाला और २ मंदिर हैं, यहांपर ठहरना चाहिये। नशियासे २ मीलकी दूरीपर शहरमें पाठशाला है, वहांपर भी ठहर सकता है। यहांपर एक भट्टारककी गद्दी है, वहींपर बड़ा भारी मंदिर है, वहांकी भव्यमूर्तियोंका दर्शन करें। यहां एक बहुत बड़ा प्राचीन शास्त्र भण्डार है, वहांका शास्त्र बंद रहता है। इससे शास्त्र भीतर ही सड़ते रहते हैं, एक तेरापंथी है उसका भी दर्शन करें, एक पाठशाला भी है। दि० जैनियोंके ५०–६० घर हैं, यहांपर प्राचीन खण्डहर हैं। यह पुराने ढंगका शहर है, इससे देखने योग्य है। यहांका किला भी देखने योग्य है, यहांकी नशियामें २ मंदिर बड़े भव्य दर्शनीय हैं। फिर लौटकर स्टेशन आजाना चाहिये, आगे जाना हो तो बीकानेर होकर....पंजाबमें जावे। अगर लौटे तो सीधा मेरतारोड़ फलोदी जावे। कोईको फुलेरा, कुचामण जाना हो तो डेगाना गाड़ी बदल कर सांभर आदि जाना चाहिये।

(५७) बीकानेर ।

स्टेशनसे एक मीलपर १ दि० जैन चैत्यालय व १ घर श्रावक सुखदेव गोपीलालका है, १ घर दि० जैन ओसवालका भी है। ओसवाल श्वेतांबरोंके घर बहुत हैं। श्वेतांबर साधु-साध्वी बहुत रहते हैं। शहरका बाजार, राजा सा०का महल, शीस महल, मोती भवन, तोपखाना, किला, नया महल, देखने योग्य है। बड़े बढ़िया ३६ कीमती मंदिर हैं। उनमें कुछ मंदिर देखने काबिल हैं, एक मंदिरमें आदीश्वरस्वामीकी बहुत बड़ी पद्मासन मूर्ति है। एक बंद भोहरेमें हजारों प्रतिमाएं हैं। परन्तु दर्शन नहीं होते हैं। "रोग और कोई उपद्रव आवे तब इस भोहरेका खोलकर पूजन-भजन करें तो सब शांति होती है!" ऐसा श्वेताम्बर लोग कहते हैं। आगे जाना हो तो पंजाबमें जावें, नहीं तो लौटकर फलोदी आजाना चाहिये।

(५८) फलोदी ।

स्टेशनसे ग्राम नजदीक है। दश घर दि० जैनियोंके हैं। गांवके कुछ फासलेपर प्राचीन कोटका दरवाजा, धर्मशाला सहित मंदिरमें पार्श्वनाथकी प्रतिमा बालू रेतीकी महामनोज्ञ है। मंदिर वगैरह पहिले दिगम्बरी था, अब दि०की मोह निद्रासे कुछ कालसे कुछ हक श्वेताम्बरोंका भी है। परन्तु मंदिरमें प्रतिमाएं दोनोंकी हैं। यहांके दिगम्बरी हमेशा दर्शन-पूजन करते हैं। कार्तिक सुदी १५ को यहांपर मेला भरता है, आसपासके दि० श्वे० दोनों यात्री आते हैं। प्रतिपदाके दिन दोनों लोग अपने२ मंडप बनाकर भगवानको विराजमान करके अपनी २ पूजा प्रभावना करके चले जाते हैं। यहांसे एक रेल मेरता जाती है। मेरता गांव व मंदिर अच्छा है,

दि० जैन घर बहुत हैं। लौटकर फलोदी फिर जोधपुरका रेलभाड़ा ॥|-) लगता है।

(५९.) जोधपुर।

स्टेशनके पास १ दि०जैन धर्मशाला और मंदिर है। सरकारी धर्मशाला भी नजदीक है। बाजार नजदीक है। खारे पानीका कुआ है, शहर अच्छा है। कोटका दरवाजा, बाजार, घण्टाघर, कचहरी, राजमहल, तालाव, राजाकी छत्री ये सब ३ मील दूरीपर हैं। यहांका अनार (दाड़िम) प्रसिद्ध है।

(६०) पाद्री।

शहर बढ़िया है, श्वेतांबर पर धर्म मंदिर बढ़िया है, यहींकी सूंघनेकी तमाखू देशोंमें प्रसिद्ध है, आगे मारवाड़रोड़ गाड़ी बदल कर आबूरोड़ जावे और इधर होकर ब्यावरसे अजमेर जावे।

(६१) ब्यावर (नयानगर)।

स्टेशनसे १ मीलपर सेठ चम्पालालजी राणीवालोंकी धर्मशा-लामें ठहरनेसे पानी आदिका सुभीता होता है। महाविद्यालय, बंगला, कुआ, मंदिर आदि देखनेका आराम है। यह बड़ा भारी शहर है। यहांपर बंबई जैसा व्यापार होता है। २ मंदिर शहरमें व २ नशियाजीमें हैं और जैनियोंके घर बहुत हैं। यहांसे आगे अजमेर शहर आता है।

(६२) आबूरोड़।

स्टेशनसे धर्मशाला थोड़ी दुर है, वहींपर ठहरे। यहां एक मंदिर है। नदी, कुआ, तालाब नजदीक है, १० दि०जैन अग्रवा-लोंके घर हैं, सामान सब शुद्ध मिलता है, आब हवा यहांकी अच्छी

है । यहांसे मुनीमजीकी मार्फत पैदल, बैलगाड़ी, मोटर अथवा जैसी जिसकी शक्ति हो उस माफिकसे पहाड़पर जावे । पगसे १८ मील पक्की सड़क लगी है । रात-दिन चल सकते हैं, कोई डर नहीं है । प्रत्येक सवारीका जाने-आनेका २।।) लगता है । बैलगाड़ी रातभर चलकर ८ बजे सुबह पहुंचा देती है, और लेकर भी आती है । मोटरका आने जानेका किराया १।।।) लगता है । टिकटमें ८ दिनकी म्याद रहती है, सिर्फ आनेका या जानेका ही लेनेसे ५) पड़ता है । आने जानेका सामिल लेनेसे ४ दिनकी म्याद लेकर काम करें । विशेष हाल मुनीमसे पूछकर यात्री अपने सुभीतासे काम करें । यात्रियोंको पूजन तथा खानेका सामान लेकर पहाड़ ऊपर जाना चाहिये ।

(६३) अतिशयक्षेत्र आबूजी ।

तलेटीसे २० मीलपर धर्मशाला है, जिसमें उतरे । एक प्राचीन मंदिर और प्राचीन प्रतिमा हैं । मूलनायक शंभवनाथजी हैं, एक मंदिर दि०-श्वे०का मिला हुआ है, सब पूजनादि करें । बाद यात्रियोंकी इच्छा हो तो श्वेतांबर मंदिर देखें, नहीं तो फिर अचलगढ़को जावें । अगर इच्छा न हो तो तलेटी लौटकर आजावें । टिकिट १।।) देकर महेशानाका ले लेवे ।

(६४) आबूका श्वेताम्बर मंदिर ।

यहांपर एक भारी धर्मशाला है, जिसमें बहुतसे मंदिर हैं । बिलोरी पत्थर खुदाई काम खूब किया गया है, ये मंदिर प्रसिद्ध है, इसकी बनाई १८ करोड़ रुपया है, जिसमें एक मन्दिर साधु बनद, एक देवरानी जेठानीका है और बड़ा मन्दिर ५१ देहरिया

हाथी, घोड़ा आदि सेठ तेजपाल वसंतपालका बनाया हुआ है। ऐसा लोग कहते हैं वे सेठ किसी नगरके निवासी हैं। राजाका उसपर खजाना होगया था, सो वह आकर इस जंगलमें ग्राम बसाकर रहने लगा। कुछ दिन बाद देवी प्रसन्न हुई बहुत द्रव्य हो गया। तभी यह मन्दिर बनवाया और अचलगढ़की भारी प्रतिष्ठा कराई। फिर राजा भी उसपर प्रसन्न होगया था। ये आबूका मन्दिर देखनेयोग्य एक चीज है। इस मन्दिरमें मूलनायककी एक बड़ी भारी श्वेत प्रतिमा है और भी प्रतिमा बहुत हैं। मन्दिरके सामने एक मकान हाथी, घोड़ा, पाषाणमई बड़े २ देखने काबिल हैं। इस मन्दिरको देखनेके लिये दूर देशके बड़े२ लोग आते हैं। मन्दिरके देखनेसे मालूम पड़ता है कि पृथ्वीपर ऐसे बड़े२ आदमी होगये जिनका अब निशान भी नहीं, अनेकों मन्दिर उसके नामको बता रहे हैं। आज उन मन्दिरोंकी कीमत न जाने कितनी होगी। इस मन्दिरको देखकर आश्चर्य होता है कि ये मन्दिर कितने वर्षोंका बना होगा। यहांसे ४ मील पक्की सड़कपर अचलगढ़ ग्राम आता है।

(६५) अचलगढ़।

यहां अचलगढ़के नीचे एक कोटके बीचमें महादेवजीका बहुत बड़ा मन्दिर है, बड़ा तालाव और श्वेतांबर एक मन्दिर है। जिसके चौतरफ कोट है। विशाल प्रतिमा भी हैं और बहुत खंडहर मकान है। यहांसे आगे एक दरवाजा आता है, वहांसे अचलगढ़ तक पक्की पत्थरकी सड़क लगी है। आध मीलके बाद अचलगढ़का मन्दिर आता है, बीचमें तालाव वावड़ी ग्राम पड़ता है।

अचलगढ़के जिनालय ।

यहांपर दो श्वेतांबरी धर्मशाला और २ मन्दिर हैं। एक मन्दिर बड़ा भारी ३ मंजिलका है, जिसमें १२ प्रतिमा धातुकी बड़ी शांत मुद्रा वीतरागरूप हैं। १ मन्दिरोंमें २ प्रतिमा हैं, कुल १४ प्रतिमा ये लोग मोनेकी बोलते हैं। प्राचीनकालके कच्ची तौल १२ भर सेरके हिसावसे १४ प्रतिमा १४४४) मन वजनकी बोलते हैं। यहांसे दर्शन करके वापिस आबूकी धर्मशालामें जावे। अगर किसीकी इच्छा हो तो बीचमें आबू-छावनी देखे नहीं तो बाहरसे देखले जाना चाहिये।

(६६) आबू छावणी ।

धर्मशालासे १ मील है। यहां बाजार है, सामान खाने पीनेका मिलता है। आसपासमें तालाव, बगीचा, बड़े रईसोंके बंगले हैं, बाहरसे ही देखना चाहिये। अगर भीतरसे देखनेकी इच्छा हो तो -) का टिकट लेकर कुछ भेट चपरासीको देकर सब भीतरका हाल देखना चाहिये। फिर आबूरोडमें आकर महेसाना जंकशन जावे, टिकट १॥) के लगभग है।

(६७) महेसाना ।

स्टेशनके नजदीक एक हिन्दुओंकी धर्मशाला है, बाजार भी है। एक श्वेताम्बर मंदिर बड़ा है, कुल श्वे० मंदिर १७ हैं। और श्वेताम्बर वस्ती बहुत है, दि० वस्ती कोई नहीं है। यहांसे ६ रेलवे लाईन जाती हैं। १-वीरमगांव तक, २ अहमदावाद तक, ३ पाट्टन, ४ वीसनगर, बड़नगर, तारंगा पहाड़ तक, ६ आबूरोड़ अजमेर देहली तक। यहांसे ॥≈) का टिकट लेकर तारंगा हील

जावे। बीचमें बड़नगर वीसनगर पड़ता है। किसीको उतरना हो तो उतर पड़े, दोनों ही शहर अच्छे हैं। श्वेताम्बरोंके घर व मंदिर हैं, दि०जैन कुछ भी नहीं हैं, आगेके ग्रामोंमें दि०जैन व मंदिर भी हैं।

(६८) तारंगा हिल।

स्टेशनके पास दि० जैन धर्मशालामें ठहरे। यहांसे ।) आना सवारीमें बैलगाड़ीसे ३ मील पहाड़की तलेटीमें जावे। फिर वहांसे मजूर करके सामान पहाड़की धर्मशालामें लेजावे। गाड़ीके रास्तेसे धर्मशाला एक मील है, डोलीकी जरूरत हो तो कर लेवें।

(६९) श्री सिद्धक्षेत्र तारंगा।

इसका दूसरा नाम तारंगावन मुनीहुंटकोड भी कहते हैं। पहिले एक बड़ा दरवाजा आता है। फिर कुछ दूर बाद कुण्ड और दिगम्बर-श्वेतांबर दोनोंकी धर्मशाला आती है। सो दिगम्बर धर्मशालामें उतरे। फिर धर्मशालाके १३ मन्दिरोंका दर्शन करे। यह स्थान परम पवित्र और रमणीक है, मन्दिर और प्रतिमा प्राचीन है। यहांकी पूजा वंदना करके श्वे० मन्दिर जरूर देखे। फिर पहाड़की वन्दनाको जावे। पहिले ये सब मन्दिर तथा प्रतिमाएं दिगम्बरी थीं, पर अब श्वेतांबरी करली गई हैं। अजितनाथकी प्रतिमा बहुत बड़ी श्वेतवर्णकी है, फिर सामने छोटे मन्दिरमें नन्दीश्वरद्वीप ५२ चैत्यालय, सहस्रकूट चैत्यालय, १ सहस्रचरण, १ चतुर्मुखी चौवीसी, १ चतुर्मुखी प्रतिमा आदि बहुत रचना है। दोनों तरफ उत्तर-दक्षिणमें दो पहाड़ हैं। दोनों पहाड़ोंके बीचमें एक२ गुफा आती हैं। पहाड़की चढ़ाई एक मील है, पहाड़के ऊपर २ देहरिया (गुमठी) प्रतिमा चरणपादुका है। सो भावपूर्वक दर्शन

पूजन करे और मनुष्य जन्मको धन्य माने । इस वनसे वरदत्त, सागरदत्त आदि ३५०० हजार मुनि मोक्षको गये हैं । यहीं यात्रा करके वापिस लौटकर स्टेशन जावे । यहांसे गिरनारजी जानेवाले ५॥) देकर जूनागढ़की टिकिट ले लेवे और अहमदावादवाले १॥।) रुपया देकर वहांका टिकिट लेवें । और आबू जानेवाले २) देकर आबूरोड़का टिकिट ले लेवे और पालीतानावालोंको उधरका टिकिट लेना चाहिये । सब तरफका हाल नीचे देखें ।

(१) महेसाणा गाड़ी बदलती है । आबूरोड़, अजमेर आदि जानेवालोंको ऊपर हाल देखना चाहिये ! (२) महेसाणा गाड़ी बदलकर पाटन जानेवाला पाटन जावे, पाटन भी अच्छा शहर है । श्वेतांबर मंदिर वस्ती बहुत है, दि० कुछ नहीं है । (३) गिरनार पालीताना जानेवालोंको वीरमगांव जाना चाहिये । वीरमगांव छोटासा है, स्टेशनके सामने धर्मशाला है, यहांसे एक रेलवे काठियावाड़ तरफ जाती है, ॥) टिकटका लगता है । वढ़वान, भावनगर, जूनागढ़ जाती हैं । बीचमें बढ़वान जंकशन पड़ता है यहांपर रेल बदलती है, सो कुली वगैरहसे पूछ लेना चाहिये । यहांसे १ रेलवे ब्रह्मपुत्र तक जाती है, एक वांकानेर मोरवी जाती है, एक सिहोर, भावनगर जाती है, एक राजकोटसे जेतलसर जंकशन होकर जूनागढ़, वेरावल तक जाती है । अगर यात्रिगण पहिले गिरनारजी जाना हो तो राजकोट होकर जेतलसर होता हुआ सीधा जूनागढ़ जावें । फिर यात्रियोंको पालीताना (शत्रुंजय), सीहोर, भावनगर, घोघा जाना हो तो बढ़वानसे भावनगरको गाडीमें लींबड़ी होता हुआ भावनगर जावे । यात्रियोंको हरवक्त रास्तामें कोई आदमीको

पहुंचाता रहना चाहिए। पूछनेसे बहुत फायदा होता है। अब मैं पहिले गिरनार तरफका हाल लिखता हूं।

वढ़वान-

से राजकोट जाय, राजकोट पुराना शहर है, श्वे० मन्दिर वस्ती बहुत है। दि० कुछ भी नहीं है, राजा सा०का राज्य बाग, अजायबघर आदि देखने योग्य हैं, स्टेशनपर ब्राह्मणोंकी धर्मशाला है। शहर १ मीलपर है, राजकोट जानेका ≈) सवारी है। राजकोटमें २ स्टेशन हैं-(१) राजकोट पुरा, (२) राजकोट जंकशन। यहां उतरना हो तो उतरें नहीं तो सीधा जूनागढ़ उतरे।

(७८) राजकोट जंकसन।

इसका हाल ऊपर पहिलेकी लाइनमें लिख दिया है। यहांसे १ रेलवे जामनगर जाती है। जामनगरसे १ रेल गोमती और बेटद्वारका तक चली गई है। पहिले द्वारिका जानेवालोंको जामनगरसे समुद्रके रास्ते नावमें जाना पड़ता है। अब नावका रास्ता भी चलता है। टिकट ।।।) हैं और रेल गई है। टिकट १।) लगता है। चाहे जिधरसे जावें।

(७९) जामनगर जंकसन।

स्टेशनके पास वैष्णव लोगोंकी ४ धर्मशाला हैं। शहरमें भी २ बड़ी धर्मशाला हैं। मगर तांगावाला ।) आना सवारीमें ले जाता है। शहर २ मील दूर है, यह मुसलमान बादशाहका है, इसकी सड़कके बाजार, राजाका महल, बड़ी रौनकदार और साफ है। यहां भी श्वेताम्बरोंकी वस्ती है। कुछ बहुत बढ़ियां और साधारण १३ श्वे० मंदिर हैं। समुद्र पासमें ही है। दि० यहां

कुछ भी नहीं है, यहांसे एक रेल द्वारका जाती है । टिकट १।) है द्वारका जानेका दूसरा रास्ता राजकोटसे जेतलसर गाड़ी बदलकर पौरबंदर स्टेशन जावे । टिकिट पौरबंदरका १॥) है, यह भी शहर बढ़िया है । समुद्रके बीचमें है, यहांसे सिर्फ नाव या बोटमें जानेसे ।) सवारी लगती है ।

(७२) गोमती द्वारका ।

समुद्रके बीच टापू ऊपर स्टेशनसे एक मील द्वारका शहर छोटा कस्बा है । बड़ौदाका राज्य है, पहिले ये नगर श्री नेमिनाथके जन्म समय कुबेरने रचा था । अब छोटासा रह गया है । यहां समुद्र देखनेकी शोभा शिवजीका बड़ा भारी मन्दिर सुना जाता है । पहिले यहां एक नेमिनाथका मन्दिर और प्रतिमा थी, हजारों जैनी जाते थे। कुछ दिनोंसे जैनियोंने जाना बंद कर दिया। इससे वैष्णवोंने उस मूर्तिको समुद्रमें डालकर महादेवकी पिण्डी रख दी। खेद ! ये ग्राम फिर भी ठीक है, अब रेलका स्टेशन होनेसे सुधर गया है। हजारों यात्री (वैष्णव लोगोंके) यहांपर हर समय आते हैं । यहांसे बैटद्वारका जानेके २ रास्ता हैं। १ बैलगाड़ीका ॥) सवारी लगती है, ८ मील जाकर धर्मशालामें ठहरे । फिर नांवमें जाकर ≈) सवारीसे बैडद्वारका जावे या ॥) सवारी देकर बैटद्वारका जावे । बैलगाड़ीके रास्तेके बीचमें एक गोपीतालाव आता है ।

(७३) गोपीतालाव ।

यह सडकसे नजदीक है । १ गऊशाला, १ धर्मशाला, बगीचा, बावड़ी, मंदिर है, यहां भी वैष्णवोंके यात्री बहुत आते हैं । यहांसे २ मील पर समुद्र और धर्मशाला है ।

(७४) बैट द्वारका ।

बराबर यह स्थान समुद्रके मध्य टापू पर है । यह ग्राम ठीक है । १ मीठा पानीका कुआ है, बहुत धर्मशाला हैं, हजारों वैष्णव यात्री आते हैं, यहां जैनीकी कोई भी चीज नहीं है । यहां १ बड़ा मंदिर है, चारों तरफ कोट है, बाजार नजदीक है । मंदिरमें प्रसाद बहुत चढ़ता है, सो बाजारमें बिकता है ! मंदिरके दरवाके पर कोट बहुत बढ़िया मजबूत है । यहां पर प्रत्येक आदमीसे १) लेकर पीछे दर्शन करने देते हैं, विना रुपया लिये दर्शन नहीं करने देते हैं । यहां कृष्ण महाराजकी मूर्ति बहुत बढ़िया है । दिनमें समयसे ५–६ बार दर्शन कराते हैं । ग्राममें और भी मंदिर हैं । मगर बड़ा मंदिर वही द्वारकानाथका है । हरएक और साधु-ओंको हाथ, भुजा, पेटके ऊपर छाप लगाते हैं । उसका भी टिकिट लगता है ! यह यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है, जबरदस्ती नहीं की जाती है । वहांसे लौटकर रेल या नावके रास्तेसे जामनगर फिर राजकोट आवे ।

(७५) जेतलसर ।

यह जूनागढ़के बीचमें जंकशन है । यहांसे एक गाड़ी पोरबंदर जाती है, उसका हाल ऊपर लिख दिया है । बीचमें फिर धौला स्टेशन गाड़ी बदलनी पड़ती है । फिर सीहोरारोड़ जाती है । यात्रि-योंको लौटकर अगर पालीताना जाना [illegible] गा[illegible] जावे । पालीतानासे जूनागढ़ जानेवालोंको धौला, जेतलसर गाड़ी बदलना चाहिये ।

(७६) स्टेशन जूनागढ़।

यहां स्टेशनसे यात्रियोंको सीधा पहाडकी तलेटीकी धर्मशालामें जाना हो तो स्टेशनसे तलेटी ४ मील है, तांगावाला ।।) सवारी लेकर सीधा तलेटी पहुंचाता है। अगर यात्रियोंको जूनागढ़की धर्मशालामें ठहरना हो तो १ मीलका =) आना सवारी लेकर तांगावाला जल्दी पहुंचा देता है।

(७७) जूनागढ़।

यहांपर दि० धर्मशाला, कुआ, मन्दिर है, तीर्थराजका भंडार लेनेवाले मुनीम यहांपर रहते हैं। यह राज्य बहुत रोनकदार है, सामान यहां सब मिलता है। यहांपर किसीको कुछ देखना हो तो कचहरीसे फार्म मिलता है सो राजा सा०का महल, बगीचा, जूनागढ़ देखे। जूनागढ़में बहुत लम्बा चौडा मजबूत किला है, इसमें ४ तालाव, बगीचा, मकान बडी २ तोपे देखने योग्य हैं। फार्म फ्री (विना पैसेके) मिलता है। फिर तलेटी यहांसे सामान आदि लेकर जावे। रास्तेमें वैष्णवोंका मंदिर, सडक, बगीचा, नदी आदि देखने योग्य हैं। सो रास्तेसे ही देखता जाय। फिर गिरनार सिद्धक्षेत्रकी धर्मशाला है। यहांपर दि०श्वे० दोनोंकी अलग२ धर्मशाला व मंदिर है। यहां कुआ, तालाव, जंगल, महाजनोंकी दुकानें हैं। यहांपर मुनीम, पुजारी, नौकर सब रहते हैं। पहाडके ऊपर जानेके लिये डोली ७)-८) रुपयामें मिलती है। गोदीवाला मजूर भी मिलता है। यहांसे सवेरे ४-५ वजे शौचादि नित्य क्रियासे निमटकर शुद्ध द्रव्य सामग्री, कुछ रुपया, पैसे, पाई लेकर जय२ करते हुए पहाडपर चढ़ें। यहांसे पहाडकी कुल चढ़ाई ३।। मील

है। ७०२० सीढ़ियाँ लगी हुई हैं। ये सीढ़ियां गिरनारके नामसे सब देशोंसे रुपया इकट्ठा करके बनवाई गई हैं। रास्तेमें वैष्णव साधुओंके बहुत आश्रम हैं। देव-देवी-गाय-भैंस आदि देखने जाना चाहिये। किसीर आश्रममें चना और पानीकी दानशाला है किसी भाईको जरूरत हो तो ले लेना चाहिये।

(७८) गिरनार पहाड़का वर्णन।

२॥ मील ऊपर जाने पर सोरठका महल मिलता है, यहां सामानकी २ दुकान है। और बहुत श्वेताम्बर मंदिर हैं। यहांके बड़े मंदिरमें श्रीनेमिनाथकी श्याम मूर्ति है। और आगे बड़े२ मंदिर तथा श्वेताम्बरी प्रतिमा व तालाब है। यहांसे रास्तेमें जाते समय पहाड़के ऊपर श्वेताम्बर और वैष्णवोंके मंदिर बहुत हैं। यहां सोरठका महल धर्मशाला है। यात्रियोंकी इच्छा हो तो देखले। नहीं तो आगे चला जावे। थोड़ी दूर जानेपर दक्षिणकी तरफ राजुलकी गुफा है। भीतर जाने-आने समय बैठकर घुसना चाहिये। ये छोटीसी गुफा है। वहांपर उजेला करनेसे १ मूर्ति सती राजुल-देवीकी है। सो वहांका दर्शन करके उसी जगहसे ऊपरके दिगम्बर जैन मंदिरमें जावे। यहां एक कोटमें २ जिन मंदिर बहुत मनोज्ञ हैं। जिसमें प्रतिमा पद्मासन खड्गासन दोनों विराजमान हैं। एक गुम्मटमें बड़ी खड्गासन प्रतिमाजी अलग विराजमान है यहां पुजारी रहता है। बुलाकर भगवानका दर्शनपूजन करे। फिर आगे चला जाय। श्री गिरनारजीके बाबत दिगम्बर श्वेताम्बरोंका झगड़ा चलता था जिसमें तन मन धनसे पूर्ण सहायता करके धर्मात्मा दानी सज्जन धनाढ्य एक हूमड़ ज्ञाति वंडी लाला कस्तूरचंदजीने इस

मुकद्दमेंको साफ कराया और धर्मशाला, मंदिर उन्हींकी कोशिशसे बना है। इन सब कामोंमें लखों रुपया खर्च हुआ है। हाल तक ये क्षेत्र प्रतापगढ़ राजपूताना (मालवा) के पंचोंकी कमेटीके सुपुर्द है। देखना करना सब कमेटीके ही सुपुर्द है। ऐसे धर्मात्मा पुरुषोंको धन्यवाद है। यहांसे दर्शन पूजन करके फिर आगे जाना चाहिये। आध मील जानेके बाद दूसरी टोंक और १ मील जानेके बाद तीसरी टोंक भगवानके तप कल्याणककी आती है। जिसपर भगवान नेमिनाथने तप किया था। यहांपर चरणपादुका है। १ गुसाईंजीका मकान है। बीचमें एक शासनदेवी अंबिका देवी है। जिसको दिगम्बर-श्वेताम्बर मतके झगड़ेमें श्री स्वामी कुन्दकुन्द महाराजने आराधना करके उसके मुंहसे यह बुलवाया था कि "दिगम्बर मत सच्चा है" मगर देव एक वक्त बोलते हैं, सो देवीके बोलनेको बहुत लोगोंने नहीं सुना था। इसलिये फिर दि० श्वे० दोनोंका हक्क ठहरा। यह कथा स्वामी कुन्दकुन्दजीके चारित्रसे जानना चाहिये। यथा—

संघसहित श्री कुन्दकुन्द मुनि, वंदन हेत गये गिरनार।
वाद पड्यो जहां संशय मतसे, साक्षी रची अम्बिका सार॥
सतपथ है निर्ग्रन्थ दिगम्बर, प्रगट सूरि तहां कहें पुकार।
सो गुरुदेव वसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार॥१॥

यहांपर एक साधुकी धूनी और मकान है। अंबिका देवीका मंदिर देखकर तीसरी टोंककी वंदना करके आगे चलकर १ मीलकी दूरीपर चौथी टोंक है। यहां जानेका मार्ग कठिन है। सामर्थ्य होवें तो जावे अन्यथा नीचेसे ही वंदना करके पांचवीं टोंकपर जावे। चौथी टोंकपर एक प्रतिमाजी है। पांचवीं टोंकका रास्ता

थोड़ा कठिन है। सो धीरे २ संभल २ कर चढ़ना चाहिये। फिर पांचवी टोंकके कुछ नीचे तक डोलीवाला लेजाता है। फिर ऊपर पांव २ जाना पड़ता है। यहां भगवान नेमिनाथका मोक्ष-कल्याणक हुआ था। यहांपर २ चरणपादुका व नीचे एक प्रतिमा पहाड़के पाषाणमें खुदी हुई है। ये तीर्थराज वृत्तान्त तथा आदमबावा श्री नेमनाथ आदि नामसे जगत प्रसिद्ध है। यहांपर जैन-वैष्णव (हिन्दू), मुसलमान आदि सब जातिके लोग तीर्थ करनेको आते हैं। इसकी टोंक २ पर गुसांई बावा रहते हैं। सो सब चढ़ी हुई सामग्री वे ही लोग लेते हैं। और जातिके लोग यात्राको आते हैं उनसे कुछ रुपया-पैसा लेकर " तेरी यात्रा सफल हुई " इस प्रकारका आशीर्वाद देते हैं। जैनी भाई भी जो कुछ रुपयादि चढ़ाते हैं वह भी यही लेलेते हैं! यहांकी वंदना करके लौटते समय वैष्णव लोगोंकी गोमुखी आती है। करीब २ मील होगी। वहांसे रास्ता ऊपर सीढ़ियोंसे लगा हुआ है। उधर रास्तेमें उन्हीं लोगोंका लालाकुंड, हनुमान धारा, देखता हुआ १॥ मील नीचे तक चला आना चाहिये। फिर शेषावन आता है। शेषावनमें १ कोट १ छत्री २ चरणपादुका हैं। यह बन बहुत रमणीक है। देखने ही चित्त खुश होजाता है। यहां श्री नेमिनाथका तपकल्याणक हुआ था। और सब गिरनार पर्वतसे संबु प्रद्युम्न, अनिरुद्धकुमारको आदि ले भगवान पर्यंत ७२ करोड़ ७ सौ मुनि कर्म काट मोक्षको पधारे हैं। और पांचवी टौंकसे श्री० नेमिनाथ मोक्ष पधारे हैं। और राजुल अपनी गुफासे स्वर्ग गई हैं। भगवान् नेमिनाथके तप-ज्ञान-निर्वाण इसी परम पवित्र स्थानपर हुए थे।

उसको हमारा मन वचन काय, कृत कारित अनुमोदनासे नमस्कार हो । चौथी टोंक ज्ञान कल्याणकका स्थान है । यहांकी यात्रा करके तलेटी-जूनागढ़ आवे । फिर यहांसे आगे वेरावल स्टेशन आता है । कोईकी जानेकी इच्छा हो तो जावे नहीं तो वापिस पालीताना आना चाहिये । टिकटका २॥) देकर बीचमें जेतलसर जंक०, या धौला रेल बदलकर फिर शत्रुंजय जावे । अगर कोई भाईको आगे राजकोट, जामनगर, द्वारका, बढ़वान, वीरमगांव, मेसाणा, अहमदाबाद, जिधर जाना हो उधर जावे । इनका वर्णन ऊपर किया है वहांसे जानना । जूनागढ़से वेरावलका १॥) टिकट है ।

(७९) वेरावल ।

स्टेशनसे नजदीक ग्राम है । कसबा अच्छा है । यहांसे आगे जानेको रास्ता नहीं है । चारों तरफ समुद्र लगा है । अग्निबोट, जहाजोंसे यहांसे बहुत माल बंबई, मेंगलूर, कलकत्ता आदि शहरोंमें जाता है । बोट—जहाजसे आगे जानेका रास्ता है । समुद्रके बीचमें यह टापू है । समुद्र देखने योग्य है । गांवमें ४ वैष्णव धर्मशाला हैं । वैष्णवयात्री बहुत आते हैं । ग्रामसे पूर्वकी तरफ समुद्रके किनारे सोमनाथका मंदिर और मूर्ति है ।

(८०) सोमनाथ ।

हिन्दुस्थानमें यह एक प्रसिद्ध तीर्थ हिन्दुओंका था । अब बिगड़ गया है । हजारों यात्री आते हैं । सूर्य-चन्द्र ग्रहणमें १० लाख तक हिन्दू यात्री इकट्ठे होते थे ! पहिले यहांपर सोमनाथका बड़ा मंदिर मूर्ति व नादिया थे । मूर्तियों और नादियोंमें करोड़ोंका जवाहरात लगा था । विक्रम सं० १०२६ में बादशाह

मुहम्मद उद्दीन इस मंदिरपर चढ़ाई करके मंदिर-मूर्ति नादिया तुड़वाकर अरबों रुपयोंका जवाहरात ऊंटोंमें लादकर लेगया था। हालमें मामूली मंदिर है। प्राचीन मंदिर टूट गया है। यहांसे जूनागढ़ आवे। फिर जिधर जाना हो जावे। पालीताना जानेवाले जेतलसर, धौला, गाड़ी बदलकर सीहोगरोड़ उतरें।

(८१) सीहोरा।

यहांसे गाड़ी बदलकर पालीताना जावे। यहांसे जाते आते भावनगर जरूर उतरे। सीहोरमें राजाका राज्य, परकोटा, दरवाजा आदि रौनकदार है। ग्राममे स्टेशन २ मील है।

(८२) भावनगर।

यह शहर भी समुद्रके एक टापूपर बसा है। यहांपर भावनगर जंक्शन, भावनगर सिटी ये दो स्टेशन हैं। सो यात्रियोंको सिटी उतर कर दिगम्बर जैन धर्मशाला पूछ लेना चाहिये। एक धर्मशाला स्टेशनके सामने बहुत नजदीक है। १ धर्मशाला तथा दि० जैन मंदिर और मंदिरके ऊंचे नीचे भी बहुत प्राचीन प्रतिमा हैं। स्टेशनसे १ मील दि० जैनियोंकी वस्ती है। =) सवारीमें तांगा जाता है। भावनगर शहर अच्छा है। राजा सा०का राज्य है। बाग, बगीचा, राजमहल, बाजार आदि देखनेयोग्य हैं। यहांकी दि० प्रतिमा बहुत दर्शनीय है। श्वेताम्बर मंदिर बहुत हैं। मगर दो-चार मंदिर कीमती देखने योग्य हैं। किसी भाईकी इच्छा हो तो भावनगरसे ॥) सवारीमें तांगा जाता है। पक्की सड़कके ऊपर ८ मीलपर घोघा शहर पड़ता है, भावनगरमें १ दि० जैन पाठशाला भी है।

(८३) घोघा ।

यह भी प्राचीन कालका बड़ा भारी शहर है। टापू समुद्रके बीचमें है। प्राचीन खण्डर, महल, मकान, तालाव, बाजार इत्यादि देखनेके काबिल हैं। कोट दरवाजा है। २-३ घर दि० जैन हूमड़ भाईयोंके रहे हैं। ३ मंदिर बहुत बढ़िया हैं। बहुत प्राचीन प्रतिमा स्फटिकमणिकी २ छोटीं हैं। एक सहस्रकूट चैत्यालय और १ धर्मशाला हैं। यहांसे लौटकर भावनगर सीहोरा गाड़ी बदल कर पालीताना आवे।

(८४) पालीताना।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर १ दि० जैन धर्मशाला है। पासमें नदी भी बहती है। तांगाका किराया =) सवारी लगता है। सो यात्रियोंको यहां ही ठहरना चाहिये। नदीके उस तरफ शहर, बाजार, राजस्थान, बाग-बगीचा देखने योग्य है। आगे एक दि० मंदिर और कारखाना है। वहां जाकर मंदिरका दर्शन करे। शहर देखकर कुछ सामान खरीद लेना चाहिये। दि० मंदिर बहुत सुन्दर रमणीक है। जिसमें १ वेदीमें धातु-पाषाण, चांदी-स्वर्ण, की बड़ी छबिदार प्रतिमा विराजमान हैं। १ शास्त्र भंडार और सम्मेदशिखरजीके पहाड़की भी रचना है। फिर सवेरे ४ बजे उठकर नित्य क्रियाओंसे निबटकर कुछ कंगालोंके दानके लिये पाई वगैरह लेकर एक आदमीको साथ लेकर रास्तेमें अनेक श्वे० धर्मशाला देखता हुआ पहाड़की तलेटीमें जावे। दि० धर्मशालासे तलेटी १॥ मील पड़ती है। पक्की सड़क है। हजारों लोग आते जाते रहते हैं। पहाड़की तलेटीके पास बंगला, वृक्षकी छाया,

पानीका कुंड और प्याऊ है। यहां खाने पीनेका भी सामान मिलता है। यहांसे पहाड़के ऊपर जानेको ३) रुपयामें डोली मिलती हैं। गोदी मजूर भी मिलता है। धर्मशालासे यहांतक आने-जानेका तांगा बैलगाड़ीका किराया सिर्फ =) है। यहांपर पाई, पैसा, भूना चना आदि सामान भी मिलता है। कंगालोंको बांटना चाहिये। फल, मिठाई, मेवा, पुडी आदि सब मिलता है। फिर यहांसे पहाड़ ऊपर जावे।

(८५) शत्रुंजय पर्वतका वर्णन।

इस पर्वतका चढ़ाव २॥ मीलका है। चढ़नेके लिये पत्थरकी सड़क बनी है। कहीं२पर सीढ़ियां भी है। पहाड़का चढ़ाव सरल है। रास्तेमें कुंड, मंदिर, छत्रि आदि बने हैं। आगे जाकर दो रास्ता फूटते हैं। पश्चिमकी तरफ श्वेताम्बरको रास्ता गया है। दूसरा सीधा रास्ता जाता है, सो सीधे रास्ते जाना चाहिये। आगेके रास्तेमें यात्रियोंके गिरनेके भयसे कोट खिचा हुआ है। इसके आगे बड़ा भारी गढ़, धर्मशाला, पक्की सड़क, कुंड, तालाब, भोजनशाला और छोटे बड़े ३५०० साढ़ेतीन हजार मंदिर श्वेताम्बरके बने हैं। उनके मंदिर और प्रतिमा भी दि० भाइयोंको देखना चाहिये। आगे जाकर १ मंदिर आता है। वह मंदिर और प्रतिमा मनोहर है। यहांसे अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर ये तीन पाण्डव और आठ करोड़ मुनि मोक्षको गये हैं। आगे वो रास्ता फूटकर गया था वहां भी एक बड़ा दूसरा गढ़ है। मंदिर है। मगर दोनों ही गढ़ ऊपर जाकर एक होगये हैं। रास्ता दोनों तरफ आने-जानेका खुला हुआ है। वहांके दि० मंदिरमें मूल नायक प्रतिमा शांतिनाथ महाराजकी है। और धातु, पाषाणकी प्रतिमा

बहुत हैं । यहांकी जितनी यात्रा करनेकी इच्छा हो उतनी ह करके स्टेशनपर आजावे । मीहोरारोड गाड़ी बदलकर फिर भाव नगर, गिरनार या वढवान वीरमगांम जिधर जाना हो उधर जावे

(८६) अहमदाबाद ।

यह एक बड़ा शहर है । यहांसे रेलवे बहुत जाती हैं । यह जंकशन भी बड़ा है । (१) आबू, अजमेर, फुलेरा, जयपुर, बांदी कुई, भरतपुर, रेवाड़ी देहली तक । (२) सूरत–बम्बई तक । (३ वीरमगांव, ईडर प्रांतीज, धौलका । और भी बहुत जगह गाड़ी जाती हैं । यहांपर स्टेशनके सामने हिंदू धर्मशाला है । वहींपर ठहरना चाहिये । पाव मीलकी दूरीपर साकर बाजारमें चैनसुख गंभीरमलजी श्रावगीकी कोठी है । वहांपर पानीकी बावड़ी, शौचस्नान, चैत्यालय आदिका सुभीता है । इसी चैत्यालयमें एक बड़ी मनोज्ञ प्रतिमा बाहरसे लाकर विराजमान की है । प्रतिमा प्राचीन दर्शनीय है । स्टेशनसे २मीलकी दूरीपर शलापोसरोडपर शहरमें प्रे० मो० दि०जैन बोर्डिंगमें भी ठहरनेको धर्मशाला है । यहां भी चैत्यालय और पानीका आराम है, ~) आना सवारीमें मोटरवाला लेजाता है । अतः इसी बोर्डिंगमें ठहरना चाहिये । आगे इच्छा यात्रियोंकी । फिर एक आदमी साथ लेकर दर्शनको जावे । एक मन्दिर पतासीकी पोल, २ मंदिर भौंहिरा और बहुत प्रतिमा मांडवीकी पोलमें हैं । १ चैत्यालय माधुपुरामें सेठ मनीराम गोवर्धनदास मन्दसौरवालोंकी दुकानके ऊपर, १ छीपापोलमें जयसिंहभाईका चैत्यालय है । इत्यादिका दर्शन करे । यहां कपड़ा, कांच, लोहाका कारखाना है । गांधीजीका आश्रम और माणिकचौक आदि बाजार देखना चाहिये । यहां सब

तरहका सामान मिलता है। कुछ लेना हो तो लेलेवे। यहां श्वेताम्बर भाइयोंके सात हजार घर हैं व २९० मन्दिर हैं। जिनमें कुछ देखने काबिल हैं। फिर यहांसे स्टेशन आकर ईडरका टिकट १) देकर लेना चाहिये। बीचमें रखियाल, तलोद, प्रान्तीज, हिम्मतपुर नगर पड़ते हैं। हिम्मतनगरसे मोटरमें भीलोड़ा, डुंगरपुरका दर्शन करते हुए केशरियानाथकी यात्रा करके फिर उदयपुर जावें। सब दि० जैन मन्दिर और घर हैं। (यह हाल गिरनारसे केशरियानाथकी यात्राका लिखा है।)

(८७) ईडर।

स्टेशनसे ग्राम १ मीलकी दूरीपर है। मोटर, कुली आदि मिलते हैं। यह ग्राम राजाका होनेसे बड़ा रोनकदार है। यहां १ दि० धर्मशाला, १ बोर्डिंग, १ कन्याशाला और अनुमान ६०-७०घर जैनियोंके हैं। ३ मंदिर बड़े२ आलीमान बने हुए हैं। चौतरफ प्राचीन प्रतिमा पाषाण, धातु, चांदी आदिकी मनोहर हैं। १४ प्रतिमा चांदीकी और १४ प्रतिमा सहस्रफण युक्त सर्पवाली पार्श्वनाथकी हैं। २ प्रतिमा बहुत विशाल हैं। एक मीलकी दूरीपर गढ़पर बहुत प्राचीन मंदिर है। सब दर्शन करें। यहांपर लकड़ीका खिलौना, चक्र, वेलन, पहिरनेका गहना आदि बहुत चीजें तैयार होती हैं। और फिर दिशावरोंको भेजी जातीं हैं। यहांका मंदिर पहिले भट्टारकजीका प्राचीन ढंगका बनाया हुआ है। पहिले यहांपर स्थिरस्थायी भट्टारककी गद्दी २७ पीढ़ी तक चलती रही थी। जिसमें बहुतसे महाराज विद्वान्, तपस्वी, कांतिवान हुए। उनके उत्साहसे यहांपर हस्तलिखित शास्त्रोंका बड़ा

अच्छा संग्रह है । छोटे बड़े पांच हजार धर्मशास्त्र, वैद्यक, ज्योतिष, छंद, व्याकरण, गायन, मंत्र, यंत्रादिक अनेक चित्रकारी सहित बहुत सुन्दर अक्षरोंमें लिखे हुए शास्त्र विराजमान हैं । उनका दर्शन करके लौटकर स्टेशन आवे । फिर २) टिकटका देकर वडालीका टिकट लेवे । ईडरमें श्वेताम्बर घर और मंदिर भी हैं ।

(८८) वडाली ।

स्टेशनसे १ मील ग्राम है । पहिले यह ग्राम बहुत बड़ा शहर था । अब छोटा रह गया है । पहिले यहांपर १०० घर दि० जैनके थे । अब कुछ नहीं है ! मंदिरका कार्य एक श्वेतांबर भाईके हाथमें है, मंदिर बहुत बड़ा चौवीस देहरीका है। १ बावड़ी १ धर्मशाला है । पहिले यहां भगवान् पार्श्वनाथके शरीरसे अमृत (मीठा पानी) निकलता था । और अनेक प्रकारके अतिशय होते थे । हालमें भी इन पार्श्वनाथका बहुत अतिशय है । हजारों यात्री लोग रोल कबोल चढ़ाने व यात्रा करनेको आते हैं। यहांपर मेला भरता है । मंदिरमें और प्रतिमा हैं । ग्राममें पूजा, खानेका सामान सब मिलता है । ग्राम ठीक है । श्वेतांबर घर बहुत हैं । यहाँकी यात्रा करके स्टेशन आवे, फिर १।) देकर अहमदाबादका टिकट लेना चाहिये । अहमदाबादसे पावागढ़ या चांपानेरका १॥) लगता है । बीचमें गाड़ी बड़ौदामें व चांपानेर रोडपर बदलती है ।

(८९) बड़ौदा शहर ।

स्टेशनसे २ मीलपर वाडीकी दि० धर्मशालामें उतरे । इक्कावाला ।) सवारी लेकर उतार देता है, यहां दि० का कुछ घर व मंदिर हैं । पावागढ़का भंडार आदि कारखाना यहांपर नबी पोलमें है।

श्वेताम्बर मंदिर व घर बहुत हैं, शहर बहुत बड़ा है, सामान सभी तरहका मिलता है। यहां दूसरी धर्मशाला भाड़ेवालोंकी, तीसरी धर्मशाला कुंवा हिन्दू लोगोंके ठहरनेको विना भाड़ेकी पासमें है, बाजार भी नजदीक है। स्टेशनके पास बहुत लंबा चौड़ा राजाका राणीबाग है, उसमें हजारों रचना देखने योग्य हैं। कचहरी बाग, राजमहल, बाजारादि बहुत बढ़िया चीजें देखनी चाहिये। बड़ौदासे अहमदाबादका १) टिकटका, पावागढ़ चांपानेर रोडका ।≈) टिकटका लगता है। चाहे जिधर चले जाओ। आगे चाम्पानेर गाड़ी बदलनी पड़ती है। पावागढ़को छोटी लाइनकी गाड़ी जाती है।

(९०) पावागढ़ सिद्धक्षेत्र।

स्टेशनसे आध मील दि० जैन धर्मशाला व मंदिर है। बाजार डाकखाना नजदीक है। वहांपर उतरे। स्टेशन ऊपर कोठीका एक जमादार गाड़ीके समयपर खड़ा रहता है। सो यात्रियोंको पूछ लेना चाहिये। और मजदूर भी मिलते हैं। पावागढ़ जमीनसे लगाकर ३ मील पहाड़तक बड़ा भारी शहर बसा था जो कोट, परकोटा, राजदरबार, तोपखाना, भोंहरा, तालाब, कुवा आदि चीजोंसे सुशोभित था। जिसका वर्णन कहांतक किया जाय। प्रत्यक्ष देखनेसे वही आनन्द आसकता है। कुछ पहिले यहां मुसलमान बादशाहका राज्य रहा था सो मसजिद भी देखने योग्य हैं। फिर पहाड़, सड़क, गढ़, दरवाजा, देखते हुए २॥ मील पर्वतके ऊपर जावे। यहांकी चढ़ाई बहुत सरल है। पहाड़के अन्तमें एक दिगम्बर जैन मंदिर खण्डित है। प्रतिमा विराजमान है। यहां एक छत्रीमें रामचंद्रजीके पुत्र लवणांकुशकी चरण पादुका

हैं। लवणांकुशादि साढ़े पांच करोड़ मुनि मुक्तिको गये हैं। एक कूआ व तालाव है। पहिले पहाड़ पर हजारों दि० मन्दिर थे। आज वही सब खंडहर हैं। मंदिरके पत्थरोंमें हजारों जैन मूर्तियां खुदी हुई हैं। यहांके पत्थरोंसे पहाड़पर एक अंबिका देवीका मंदिर बना हुआ है। ऊपर बहुत बड़ी यात्रा है। हजारों अजैनी देवीको भेंट पूजा लेकर जाते हैं। जैनियोंकी कोशिशसे यहां देवीको नारियल, केशर, फूल, मिठाई, चूरमाका लड्डू, चढ़ता है। परन्तु जीवघात नहीं होता है। यहांकी वंदना करके लौट आना चाहिये। यात्रियोंको चांपानेर स्टेशन जाना चाहिये। अगर यात्रियोंको आगे जाना हो तो गोधरा, दाहोद होता हुआ रतलाम जावे। और पीछे जाना हो तो लौटकर बड़ोदरा जावे। बीचमें रतलाम लाइनमें १ डाकौरजीनाथ वैष्णव भाई-योंका तीर्थ भी है।

(९१) गोधरा।

स्टेशनके नजदीक अच्छा शहर है। मुसलमानोंकी वस्ती अच्छी है। श्वेताम्बरोंके घर और वस्ती भी ठीक है। दि० कुछ नहीं है।

(९२) डाकौरजी।

यह वैष्णवोंका तीर्थ है। आणंद गोधराके बीचमें डाकौर स्टेशन पड़ता है। गोधरासे ।।) और आणंदसे ।-)का टिकट है। स्टेशनपर तांगावालोंको ठहराके ग्राममें चला जाय, प्रत्येक सवारीका =) लेते हैं। ग्राम अच्छा है, सामान सब मिलता है। यहां वैष्णव धर्मशाला तथा बहुत लोगोंकी धर्मशाला हैं। डाकौरजी मंदिर

सोनेका किवाड़ कलशा सहित है, और थंभ चांदीके हैं। डाकौर-जीकी मूर्ति बहुत बढ़िया है। ४ तालाब हैं, हमेशा यात्री आते रहते हैं। लौटकर बड़ोदरा आवें फिर यहांसे अंकलेश्वर आवे। टिकट १) है, किसीको अहमदाबाद जाना हो तो चला जाय।

(९३) अंकलेश्वर।

स्टेशन १ मील दूरीपर दि० धर्मशालामें उतरे। ४ मन्दिर और बहुत प्रतिमा हैं। भोंहरामें एक प्राचीन अतिशयवान् प्रतिमा श्री पार्श्वनाथकी चिंतामणीके नामसे जगत्प्रसिद्ध है, सबका दर्शन करके लौट आवे। इसी अंकलेश्वरमें पुष्पदंत भुजवली आचार्य महाराज गिरनारके वनमेंसे जयधवल महाधवल शास्त्र ताड़पत्रोंपर वृक्षके रसकी स्याहीसे लिखकर यहांपर पधारे थे। सो जेष्ठ सुदी ५को श्रुतपंचमीका उत्सव करके शास्त्रजी यहांपर विराजमान कर गये थे। वही सिद्धांत शास्त्रजी यहांपर बहुत काल विराजमान रहे। फिर यहांसे सोलापुर, कोल्हापुर होते हुए वही शास्त्र मूलबद्री पहुंच गये हैं। आज वहींपर विराजमान हैं। यह अंकलेश्वर जैनियोंका प्राचीन स्थान है। यहांपर श्वेतांबर घर और मंदिर भी हैं। यहांसे लौटकर सूरत उतरे, टिकट ।=) है।

(९४) सूरत जंकशन।

स्टेशनके पास तासवाला सेठकी छोटी दि० धर्मशाला व चैत्यालय है। यहींपर उतरें। एक दूसरी धर्मशाला १ मीलकी दूरीपर चन्दावाड़ी भी है, ।।) सवारी तांगावाला लेता है। यहांपर सब बातका आराम है। पासमें सेठ मूलचन्द किसनदासजी कापड़िया रहते हैं। उन्हींका जैनविजय प्रेस है

और उसके सामने आपका कापड़िया भवन तथा बड़ा भारी दि० जैन पुस्तकालय है। यहींसे जैनमित्र, दिगंबर जैन और जैन महिलादर्श निकलता है। इनका ऑफिस वगैरह भी देखना चाहिये। तरह२के चित्र और पुस्तकें मिलतीं हैं। २ विशाल मंदिर भी पासमें हैं। जिसमें अत्यन्त मनोज्ञ प्रतिमा है और एक मंदिर गोपीपुरामें है। यहां दोनों जगहपर एक काष्ठासंघ, नरसिंहपुराकी गद्दी, दूसरे मुलसंघ हूमडोंकी गद्दीके दो भट्टारकजी रहते थे। यहांसे फिर नवापुरामें ४ मंदिर हैं, उनका भी दर्शन करना चाहिये। यहांपर एक पाठशाला और श्राविकाशाला चलती है। सुरत शहर बहुत बड़ा है। प्राचीन दिगम्बरियोंकी वस्तीमें अब तो करीब ८९ ही घर हैं। परन्तु श्वेतांबर घर ७०० हैं और ४० बड़े२ मंदिर भी हैं। जिनमें कुछ मंदिर, बाजार देखने योग्य हैं। यहांपर माल हर किस्मका मिलता है। यहांसे एक रेल्वे जलगांव, अमलनेरकी तरफ सुरत ताप्ती लाईन जाती है। एक बंबईको, १ अहमदाबादको जिसमें पहिली जलगांव लाईनका किराया ।≈) टिकट देकर बारडोली उतर पड़ना चाहिये।

(९५) बारडोली।

स्टेशनसे ग्राम आध मील है। दो आना सवारीमें तांगावाला जाता है। शहरमें श्वे० घर और मंदिर बहुत हैं। सो शहरमें जाना चाहिये। फिर वहांसे बैलगाडी व तांगा या मोटर करके महुवा जावे। बारडोलीमें दि० कुछ भी नहीं है। एक नदी है। ग्राम अच्छा है। महुवा तक पक्की सडक है।

(९६) महुवा (विघ्नेश्वर अतिशयक्षेत्र)

महुवा ग्राम ठीक है। नदीके किनारे धर्मशाला, मंदिर, कुआ, बगीचा है। मंदिरमें एक भौंहरा और ४ वेदीजी हैं। जिसमें अनेक प्रतिमा प्राचीन अतिशययुक्त पार्श्वनाथकी विराजमान हैं। इसका भी बहुत अतिशय है। जैन-अजैन, पारसी, मुसलमान आदि सभी लोग बोली चढ़ानेको यहांपर आते हैं। मुसलमान-पारसीलोग जीवित मुर्गा विघ्नहर पार्श्वनाथके नामपर चढ़ाते हैं। यहांकी यात्रा करके वापिस स्टेशन बारडोली आवे। फिर वहांसे जलगांव भुसावल आदि जाना हो तो इधर जावे। बीचमें एक चींचपाड़ा स्टेशन पड़ता है। वहांसे मोटर तांगासे पीपलनेर होकर श्री मांगी-तुंगीजीको पक्का रास्ता जाता है। सो सिर्फ बहुत ही नजदीक ३९ मील पड़ता है। और नासिक मनमाडसे मांगीतुंगीजी ९४ मील पड़ता है। पीपलनेरमें भी दि० जैनवस्ती है। और १ मंदिर भी है। यहांसे साकरी कुमवा होकर पक्की सड़कसे धुलिया जावे। और मांगीतुंगीसे १ सड़क सटाना, माल्यागांव होकर मनमाड जाती है। और वही रेलसे भी मिलजाती है। अब हम जलगांवका हाल लिखते हैं। फिर ये ही रेल नागपुर जाकर मिलती है। एक जलगांवसे बंबई तक जाती है। बारडोलीसे जलगांवका किराया १।।।) लगता है।

(९७) जलगांव।

भुसावल गाडी बदलकर अकोला जाते समय रास्तेमें जलगांव, भुसावल, मलकापुर आदि सब जगह दि० जैन वस्ती है और मंदिर भी हैं। भुसावलमें रेलवेका कारखाना देखने योग्य है।

(९८) अकोला।

स्टेशनसे १ मीलपर जयकुमारदेवीदासजी चवरे वकीलकी धर्मशाला है। तांगावाला =) सवारी लेता है। वहीं मंदिर, कुवा, बोर्डिंग, जंगल आदि सबका सुभीता है। फिर शहरमें एक मंदिर है सो दर्शन करके शहर देखनेको निकले। यह बढ़िया है। हरएक वस्तु मिलती है। यहां ४० घरके लगभग दि० जैन हैं। यहांसे सवा रुपया सवारीमें सिरपुर तक मोटर जाती है। बीचमें माल्यागांव पड़ता है। इच्छा हो तो उतर जाना चाहिये।

(९९) माल्यागांव।

यह अकोला वासीमके बीचमें अच्छा शहर है। एक चैत्यालय और ४० घर दि० जैनियोंका है। यहां भी एक नांदिया देखने योग्य है। यहांसे रास्ता मुड़कर सिरपुर जाना है। और यहांसे एक रास्ता सीधा सड़कसे १२ मील मोटरसे बासीमगांवको जाता है। बासीमसे १॥) सवारीमें हिंगोली तक मोटर जाती है। हिंगोलीसे रेलवे जाती है। सो रेलवे पूना जंकशन बदलकर १ औरंगाबाद होकर मनमाड़ जाती है। एक लाईन सिकन्दराबाद हैदराबाद निजाम होती हुई वाड़ीतक जाती है। बेझवाड़ा जाकर मिलती है। इस लाईनमें एक माणिकस्वामी (सिकन्दराबाद), १ उखदलजी, १ औरंगाबाद, एरोलारोड़ ये ४ यात्रा पड़ती हैं। उनको आगे लिखेंगे।

(१००) सिरपुर-श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ अति०क्षेत्र।

सिरपुर ग्राम मामूली अच्छा है। यहां दि० घर ४० हैं। एक बहुत मजबूत धर्मशाला और तोप लगानेकी सीन्ही, ढोगे,

ऐसा १ चार मंजिलका मंदिर जमीनमें बना हुआ है। इस मंदिरका बाहरी दरवाजा छोटासा है। भीतरी बड़ा है। २ खंड जमीनमें और २ ऊपर हैं। भोंहराके भीतर एक मंजिलमें क्षेत्रपालकी स्थापना है। बीचके मंजिलमें श्री पार्श्वनाथकी प्रतिमा बहुत प्राचीन हैं। पहिले कुछ जमीनसे ऊंचे रहती थी, अब कुछ नीचे है। इसलिये अंतरीक्षजी कहते हैं। और अतिशयवान होनेसे अतिशयक्षेत्र भी कहते हैं। यहां हजारों यात्री घनी पूजा लेकर आते हैं। दर्शन करके शिवपुर जाते हैं। यहां दो दालानमें ३ वेदियां और हैं, जिनमें बहुत प्रतिमा विराजमान हैं। यहां केशर फूल दुग्धादि बहुत चढ़ता है। घीका दीपक दिन रात हमेशा जलता रहता है। यहां खाने पीने व पूजाका सामान सब मिलता है। यहांसे आधमील एक बगीचा है। वहींसे ये भगवान प्रगट होकर पधारे हैं। वहां मंदिर, बगीचा, चरण पादुका है। सब दर्शन करना चाहिये। फिर यहांसे एक कच्चो रास्ता १० मील बासीमको जाती है। परन्तु यात्रियोंको लौटकर फिर आकोला आना चाहिये।

(१०१) बगीचा सिरपुर।

पहिले यहीं पार्श्वनाथ स्वामीकी मूर्ति इस बगीचेमें बहुत काल तक जमीनके भीतर विराजमान रही। फिर एक आदमीको स्वप्न दिया, उसीसे प्रतिमा बाहर निकाली गई। जिस स्थानपरसे प्रतिमा निकली थी वहांपर एक चबूतरा बनवाकर चरणपादुका स्थापित करदी थीं। पहले वहांपर सिरपुर बड़ा शहर था। सो बगीचेके पास ही मंदिर बनवाकर प्रतिमा विराजमान कर दी थी। फिर हमेशा लोग दर्शन पूजन करते रहे। नया२ चमत्कार दिख-

नेसे लोग हजारोंकी संख्यामें दर्शनोंको आने लगे। फिर इसी प्रतिमाके प्रभावसे शहरके बीचमें मंदिर आगया। फिर कालदोषके प्रभावसे वस्ती घट गई, मंदिर जीर्ण होगया। इस कारणसे प्रतिमाको यहांके मंदिरमें विराजमान कर दिया। सो यह मंदिर भी बहुत जीर्ण होगया है। दर्शन करके फिर आकोला आना चाहिये। टिकट ।।) का लेकर फिर मूर्तिजापुर आवे।

(१०२) मूर्तिजापुर।

स्टेशनसे २ मील शहर है। तांगावाला ।) सवारीमें लेजाता है। यहांपर १ दि० जैन मंदिर व जैनियोंके २० घर हैं। शहर ठीक है। यहांसे ३ रेल्वे लाईन जाती है। १ अजनग्राम एलिचपुर, २ नागपुर, ३ कारंजा। अगर किसीको पहिले कारंजा जाना हो तो जावे। वहांसे लौटकर मूर्तिजापुर आवे। एलेचपुर जावे। और कारंजा नहीं जाना हो तो परतवाड़ा एलेचपुर जाना चाहिये।

(१०३) कारंजा (अतिशय क्षेत्र)।

स्टेशनके सामने महावीर ब्रह्मचर्याश्रम बना हुआ है। जो यात्रियोंकी इच्छा हो तो यहींपर ठहर जावें, अगर इच्छा नहीं हो तो शहरकी धर्मशालाओंमें ठहरें। ≈) सवारीमें तांगावाला लेजाता है। शहरकी धर्मशालामें कुआ आदिका आराम है। वहीं पर ३ मंदिर भी हैं। जहांपर इच्छा हो वहींपर ठहर जावें। कारंजा शहर बहुत बढ़िया है। यहांपर व्यापार बहुत होता है। ३०० घर दि० जैनियोंके हैं। वे लोग भी धनाढ्य हैं। १ काष्ठासंघ, २ सेनगणगच्छ, ३ मूलसंघ इन तीन संघोंके तीनों भट्टारककी ३ गद्दियां प्राचीन हैं। और ३ मंदिर भी बड़े विशाल हैं। जिन्होंमें

प्राचीन प्रतिमाएं बहुत मनोज्ञ हैं। २ सहसकूट चैत्यालय, १ नंदीश्वर द्वीप, बहुत यंत्र और पंचमेरु हैं। यहांकी प्रतिमा अपूर्व दर्शनीय हैं। एक मंदिरके भंडारमें बहुत प्रतिमा स्फटिकमणि, मुंगा-मोती, चांदी आदिकी हैं। सो यात्रियोंको भंडारके सेठको बुलाकर दर्शन अवश्य करना चाहिये। एक वयोवृद्ध सेनगणकी गादीमें भट्टारक श्री वीरसेन स्वामी अध्यात्म शास्त्रके ज्ञाता, वेदशास्त्रके मर्मी हैं। उनसे मिलना चाहिये। बड़े२ जैन अजैन विद्वान इनसे मिलने आते हैं। फिर ब्रह्मचर्याश्रम देखना चाहिये। फिर लौट-कर १॥=) देकर ऐलेचपुर जाना चाहिये। बीचमें मूर्तिजापुर गाड़ी बदलना चाहिये। रास्तेमें अजनगांव पडता है। यहांपर ३ मंदिर और सेठ मोतीसाव आदि दि० जैन रहते हैं।

(१०४) एलेचपुर।

स्टेशनसे पहिले =) सवारीमें परतवाडा जाना चाहिये।

(१०५) एलीचपुरकी छावणी।

यहांपर १ दि० धर्मशाला, १ मंदिर और २० गृह दि० जैनके हैं। पांच मील उपर सेठ किशुनलाल मोतीलालजीका बगीचा है। यहांपर जंगल, कुआ, मंदिर सब हैं। यह स्थान स्टेशनसे परतवाडा जाते समय रास्तेमें पड़ता है। यात्रियोंको तांगावालेसे कहकर जहां चाहे ठहर जाना चाहिये। यहांसे =) सवारीमें मोटर एलेचपुर जाती है। सो पहिले वहां जाकर दर्शन करें।

(१०६) एलेचपुर शहर।

यह शहर पुराना है, यहां १ स्थानमें ४ मंदिर हैं, सो छकर दर्शन करना चाहिये। एक मंदिर शुक्लानपुरामें है। यहां

सेठ नत्थुसा पासुसा बड़े धनाढ्य हैं । सो इनके मकानके ऊपर १ प्रतिमा ३ अंगुलकी कायोत्सर्गासन लाल मूंगाकी, १ प्रतिमा मोतीकी, १ चांदीकी हैं उनका दर्शन करना चाहिये। फिर लौटकर परतवाड़ा, बगीचा इन दोनों स्थानोंका दर्शन करें। तांगा, बैलगाड़ी मोटर अथवा पैदल श्री मुक्तागिरिजी जाना चाहिये । यहांसे ९ मील दूर है । ४ मील खुरपी तक पक्की सड़क है । ५ मील तक कच्ची सड़क है । खुरपीमें रास्तेपर एक बढ़िया मंदिर है । यहांका जाते या आते समय दर्शन करना चाहिये। यहांपर रात्रिमें रहनेका भी सुभीता है ।

(१०७) श्री मुक्तागिरि (सिद्धक्षेत्र) ।

यहांपर पहाड़की तलेटीमें १ मंदिर, १ दि० धर्मशाला, कुआ नदी, कोठीका कारखाना है । मुनीम, पुजारी, नौकर, चाकर यहां पर रहते हैं । यहांसे यात्रियोंको निवट कर शुद्ध द्रव्य लेकर पहाड़की वंदनाको जाना चाहिये। पहाड़की चढ़ाई आध मीलकी सीधी है । पहाड़पर ३५ मंदिर, देहरा चरणपादुका है । पहाड़ बहुत रमणीक है । यहांसे साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। पहाड़पर हमेशा रात्रिमें केशरकी वृष्टि होती है । कभी२ कुछ बाजे भी सुनाई पड़ते हैं, पहाड़ ऊपर नदी वहती है, पानी वहता हुआ नीचे तक आता है । यहांपर पहाड़की गुफामें बड़ा२ भौंहरा, परकोटा, प्राचीन मंदिर प्रतिमा बहुत बढ़िया हैं । पहाड़पर २ देहरिया हैं । जहांपर पानी पड़ता है । कई मंदिरोंमें बड़ी विशाल प्रतिमाएं हैं । एक पार्श्वनाथस्वामीका बड़ा मंदिर है । एक भौंहरामें दीपकसे दर्शन करना पड़ता है । यह पहाड़ मेढ़ेके सींघ सरीखा

टेढ़ा है । यहां एक मेढ़ेके जीवको मरनेके समय मुनिराजने धर्मध्यान सुनाया था। वह मरकर देव हुआ। सो वह इसी पहाड़का रक्षक शासनदेवता हुआ था। इसलिये उक्त दोनों कारणोंसे इसको मेढ़ागिर कहते हैं। प्राचीनकालमें बहुत मुनिगण ध्यान करते थे। पहिले समयमें यहां मोतियोंकी वृष्टि हुई थी। इस कारण मुक्तागिरि भी कहते हैं। यहांकी वंदना करके फिर परतवाड़ा आजाना चाहिये। यहांसे ।||) सवारीमें मोटरसे अमरावतीको जाना चाहिये। अमरावतीको रेलका रास्ता बदनेरा होकर आता है। मगर इसमें चक्कर बहुत है। और किराया भी २) लगता है। इसलिये परतवाड़ासे मोटरमें सवार होकर अमरावती आना चाहिये। परतवाड़ा और अमरावतीका रास्ता १९ मील पड़ता है। रेलसे जानेसे रुपया भी ज्याद: और चक्कर भी पड़ता है।

(१०८) अमरावती शहर ।

नागपुर वर्धाके आगे बदनेरा स्टेशनसे आगे =) टिकट लगता है। स्टेशनसे शहर लगा हुआ है। यहांकी दि० जैन धर्मशाला १ मील पड़ती है। =) सवारीमें तांगावाला परवारके मंदिरमें लेजाता है। सो धर्मशालामें ठहर जाना चाहिये। यह परवारोंका ही बड़ा खुबसूरत मंदिर है। यहांपर ८ वेदी हैं। जिसमें धातु पाषाणकी बहुत मनोज्ञ अनेक प्रकारकी प्रतिमा हैं। यहां एक अलमारीमें १९ प्रतिमा स्फटिकमणि, १ मूंगा, १ मोती, २ चांदी, १ हीराकी हैं सो सबका दर्शन करें। बादमें एक आदमीको साथ लेकर ४ मंदिर बुधवारी, ४ शुक्रवारीमें हैं। और घर२ कुछ चैत्यालय हैं। एक मंदिरके भोंहरेमें भीतर बहुत प्रतिमा हैं। सबका

दर्शन करके आनन्द होता है । अमरावती शहर पुराना है । कुछ देखना, खरीदना हो तो देखे, खरीदें । चारों तरफ कोट और दरवाजे हैं । यहांसे बैलगाड़ी भाड़ा करके श्री भातकुलीजी जावे। रास्ता केवल ८ मील ही पड़ता है । भाड़ा ॥) ही लगता है ।

(१०९) अतिशयक्षेत्र भातकुलीजी ।

मूर्तिजापुरसे दो स्टेशन कुरम हैं वहांसे भी भातकुली आते-जाते हैं । परन्तु रास्ता १० मील पड़ता है । सवारी भी मिलती है । यहां एक धर्मशाला, ३ मंदिर हैं । जिनमें ६ वेदियां हैं । प्रतिमा मनोज्ञ और विशाल हैं । मूलनायक प्रतिमा श्री आदिनाथ स्वामीकी चतुर्थ कालकी दर्शनीय है । जमीनमेंसे एक आदमीको स्वप्न देकर निकली थी । यहां भी बहुत यात्री आते हैं । घृतका दीपक जलता है । दुग्धसे प्रच्छाल होता है और केशर, फूल चढ़ता है । एक मंदिरजीमें १ लालवर्ण, १ श्वेतवर्ण, १ श्यामवर्ण ये तीन प्रतिमा पद्मासन बहुत बड़ी हैं, और प्रतिमा भी अधिक हैं । यहांपर १० घर दि० जैनोंके हैं, धर्मशाला प्राचीनकालकी बनी है । यहांकी यात्रा करके कुरम या अमरावती आवे । फिर रेलमें बैठकर नागपुर जाना चाहिये । टिकिटका दाम १।।।) लगता है, बीचमें धामणगांव स्टेशन पड़ता है । अगर यात्राकी इच्छा हो तो उतर पड़े, फिर बीचमें वर्धा पड़ता है। यहां १ धर्मशाला और १ पाठ-शाला, मन्दिर भी है । जैनियोंकी वस्ती बहुत है, फिर नागपुर जावे । स्टेशन नागपुर जंकशन है, दीतवारे बाजारमें २ धर्मशाला हैं, सो जंकशन उतरना चाहिये वहासे २ मील धर्मशाला पड़ती है, और दीतवारी उतरनेसे आध मील पड़ती है, चाहे जहांपर

उतर पड़े। धामणगांवसे गाड़ी आदि सवारी लेकर कुँदनपुर जावे, १२ मीलकी दूरीपर है।

(११०) कुन्दनपुर अतिशयक्षेत्र।

यह अतिशयक्षेत्र अमरावतीसे वर्धा नदीके किनारेपर है। यहांपर राजा भीष्मकी पुत्री रुक्मिणीका विवाह श्रीकृष्णजीके साथ हुआ था। यह वही कुँदनपुर है। यहांपर बहुत विशाल तीन मंदिर हैं। तीनों दि० मंदिरोंके बीच एक मन्दिर बहुत ही बढ़िया है। एक मन्दिर वैष्णवोंका है, उसमें श्रीकृष्ण और रुक्मिणीकी मूर्ति हैं, यह मन्दिर भी कीमती है। इसमें ३ सुरंग बहुत दूर तक हैं, यहांका दि० जैन मन्दिर बहुत बढ़िया और प्राचीन है। उसमें प्रतिमाजी रमणीक सुन्दर है। यहां एक बड़ी धर्मशाला है जिसमें बड़ी दालान है, यहां बहुतसी रचना प्राचीन देखने काबिल है। यहां तीनों मन्दिर पहिले जैनियोंके थे जिसमें नेमिनाथ राजुलकी मूर्ति थी। जिसको काल दोषसे वैष्णव लोग विट्ठा वा रखीमाई कहके पूजते हैं और जैनियोंकी निद्रासे २ मंदिर वैष्णवोंका होगया। सिर्फ १ मन्दिर जैनियोंका हट गया है। यहां हजारों यात्री वैष्णवोंके आते हैं, फिर दि० भाई बहुत कम आते हैं, यह एक नामी और प्रसिद्ध क्षेत्र है। यहांकी यात्रा भाइयोंको अवश्य करना चाहिये, फिर लौटकर नागपुर आना चाहिये।

(१११) नागपुर शहर।

स्टेशनसे १ मीलपर दि० जैन धर्मशाला है. यहांपर ठहरना चाहिये। यहींपर एक बड़ा मंदिर है, जिसमें ५-६ वेदी हैं, हजारों प्रतिमा हैं। यहां पानीका कुआ, जंगल, बाजार नजदीक है, एक,

पाठशाला है, इस मन्दिरमें १ भोंहरा है, यहां दि०जैन घर बहुत हैं, पूरे शहरमें १० मन्दिर हैं, पूछकर सबका दर्शन करना चाहिये। एक मन्दिरजीमें ४ मन्दिर शामिल होनेसे कुल १३ मन्दिर कहे जाते हैं। यह शहर बहुत बड़ा है, सब माल विकता है। बाजार, गढ़, पलटन, तालाव, अजायब घर, देखने योग्य हैं। अजायब-घरमें बहुत दि० जैन प्रतिमा बहुत हैं, मन्दिरका ठिकाना दीतवा-रीमें ८, मुन्दरसाका नवीन शुक्रवारीमें, १ पुरानी शुक्रवारीमें, १ दूनवाड़ामें। यहांसे फिर दीतवारी स्टेशन जावे। टिकिट ।≈) देकर रामटेक जावे, बीचमें कामठी जंकशन पड़ता है। यहां भी शहर ठीक है, बड़े मन्दिर, भोंहरा, प्रतिमा है। जैनियोंके घर बहुत हैं, स्टेशनके नजदीक धर्मशाला कुआ है, यात्रियोंकी इच्छा हो तो उतर जावे। नागपुरसे १ रेलवे रामटेक, १ गोंदिया, छिंदवाड़ा, सिवनी होती हुई नैनपुर जा मिलती है। १ वर्धा, भुसावल, मन-माड़, नाशिक, बम्बई तक जाती है, चाहे जिधर जावे। कामठीसे एक रेल गोंदिया, दुर्ग, राजनांदगांव, रायपुर, अकलतरा, विलाश-पुर, जाड़सुकड़ा, खड़गपुर होती हुई कलकत्ता जाती है। इन सब ग्रामोंमें दि० जैन वस्ती बहुत है, बीच२ में बहुत जंकशन पड़ता है। वहां रेलवे दूसरी २ तरफ जाती हैं। रायपुरमें दि०जैन मंदि-रमें पाषाणकी बहुत प्राचीन प्रतिमा हैं, २ स्फटिकमणिकी २ छोटी प्रतिमा हैं। इस तरफ जानेवाले भाई रायपुर दर्शन करके आगे जांय।

(११२) रामटेक।

स्टेशनसे ।) आना सवारीमें बैलगाड़ीवाला श्री शांतिनाथके मन्दिरमें ले जाता है। बीचमें ३ मील पक्की सड़क है, रामटेक

शहर पुराना ठीक रास्तेमें पड़ता है। फिर दि० जैन धर्मशालामें जावे, यहांपर २ धर्मशाला, २ कुआ, २ बावड़ी, १ तालाव, २ बगीचा और पहाड़ जंगलादि सब चीजें हैं। यहांके कारखानेमें मुनीम, पुजारी, जमादार, नौकर आदि रहने हैं। यहांपर कुल ८ मन्दिर और १३ वेदी हैं, जिसमें ३ मन्दिरकी खुदाईका काम बहुत ही बढ़िया और कीमती है।

यहां पर १९ हाथ ऊंची खड़गासन तप तेजमान, अतिशयवान, लाल पत्थरकी शांतिनाथ भगवानकी प्रतिमा है। इनके बगलमें २ छोटी प्रतिमा है। और भी प्रतिमा हैं। पहाड़का नाम रामटेक है। यहां पर रामचन्द्र, लक्ष्मण, सीताने बहुत दिनों तक निवास किया था। इसलिये इस पहाड़ और ग्रामका नाम रामटेक पड़ा है। पहाड़ पर एक तरफ बड़ा तालाव है। एक बड़ा कोट एक तरफ खिंचा हुआ है। उसके भीतर कुण्ड और मंदिर बहुत बहुत हैं। यही मंदिर पहिले दि० जैन था। और वहीं नीचेकी मूर्ति पहाड़ ऊपर, और ऊपरकी नीचे विराजमान कर दीं। परन्तु कालके प्रभावसे वैष्णवोंका यह पर्वत होगया, केवल नीचेका मंदिर जैनियोंका रह गया। पहाड़ भी देखना चाहिये। यहां पर भी हजारों वैष्णव यात्री आते हैं। और यह स्थान बहुत रमणीय शोभायमान है, यहांकी यात्रा करके लौट आना चाहिये। कामठी आकर गाड़ी बदलकर यहांसे १।) का टिकट लेकर रायपुर होता हुआ खड्गपुर जंकशन जाकर उतरें। अगर किसीको छोटी लाइनसे जाना हो तो नागपुर इतवारीसे गाड़ी बदलकर छिंदवाड़ा, सिवनी, केवलारी, नैनपुर, पिंठरई होता हुआ जबलपुर तक जावे। अगर

कामठीसे गोंदिया गाड़ी बदलकर भी छिंदवाड़ा, सिवनी आदि होकर जबलपुर तक जाती है, यात्रियोंकी इच्छा होय जिधर जासकते हैं। सबका हाल नीचे देखो।

(११३) छिंदवाड़ा।

स्टेशनसे २ मील दूर है, शहर अच्छा है, दि० जैन घर बहुत हैं। ८ मंदिर बड़े २ कीमती हैं जिनमें मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहांसे छ घंटा बाद सिवनीकी गाड़ी मिलती है। बीचमें शहर सैरकर आना चाहिये।

(११४) सिवनी।

स्टेशनसे ९ मीलकी दूरी पर शहर है। ३ सवारीमें तांगावाला बराबर दि० जैन धर्मशालामें लेजाता है। यहांपर रायबहादुर सेठ पूरनशाहजी, चैनसुखदास छावड़ा आदि बहुत घर दि० जैनियोंके हैं। शहर अच्छा है, साक्षात्स्वर्गपुरीके समान बहुत रमणीक है, राजमहलसे भी अधिक शोभावाले २ जिन मंदिर हैं। जिनमें १९ वेदियां और बड़ी २ विशाल प्रतिमा हैं। २ स्फटिकमणिकी विशाल प्रतिमा हैं। ये मंदिर भी अवश्य दर्शन करने योग्य हैं। जड़ाईका काम अच्छा है।

(११५) केवलारी।

यह छोटासा गांव स्टेशनसे १ मील है, २ जिन मंदिर और कुछ घर जैनियोंके हैं।

(११६) पिंडरई।

स्टेशनसे ग्राम १ मील दूर है, ग्राम ठीक है, १ नदी ३ मंदिर व बहुत घर दि० जैनोंके हैं।

(११७) जबलपुर शहर।

यह शहर बहुत बड़ा है। अनुमान ३०० घर दि० जैनोंके हैं। और १२ मंदिर बड़े२ हैं, स्टेशनसे शहर तीन मील है, रेल चारों तरफ जाती है। १ इलाहाबाद कटनी, १ बीना सागर, १ गोंदिया, १ नैनपुर सिवनी छिंदवाड़ा, १ इटारसी खण्डवा इत्यादि लाइनें जाती हैं। दमोह आदिकी तरफ मोटर बहुत कम किरायेमें जाती हैं। सो यात्रियोंको हरसमय हरएक जगह पूछ लेना चाहिये। स्टेशनसे २ मीलके फासलापर लाटगंजकी धर्मशाला— १ धर्मशाला लाटगंजमें, २ मिलोनीगंजमें है। यहां दोनों जगह बड़े कीमती मंदिर हैं। फिर तालका मंदिर पाव मीलके चक्करमें बहुत सुन्दर २ मंजलका बना हुआ है। रंगविरंगी वेदियां तरह२की प्रतिमा विराजमान हैं। और लाटगंजका मंदिर भी ऐसा ही बढ़िया है। उसमें भी १६ वेदीजी हैं। और शहरमें कुल १० मंदिर अलग२ हैं, एक आदमीको साथ लेकर दर्शन करना चाहिये। यहांसे एक आदमीको संग लेकर ४ मीलकी दूरीपर जंगलमें पहाड़ी ऊपर २ जैन मंदिर हैं इसे मढ़ियाजी कहते हैं। यहांपर दर्शनके लिये जाना चाहिये। इस पहाड़ीके पास धर्मशाला, कुआ, तलाव, बगीचा है। पहाड़ीके पास रास्तेमें १ छोटासा ग्राम पड़ता है। वहांपर इस पहाड़ीका पुजारी और माली रहता है। सो यहांसे मालीको साथ ले जाना चाहिये और इस ग्राममें भी प्राचीन दो मंदिर हैं उनका भी दर्शन करना चाहिये। फिर लौटकर जबलपुर आवे, बाजार आदि देखलें, व्यापार भी अच्छा है। लाटगंजकी धर्मशालाके पास मंदिर, कुवा, पाठशाला, दवाखाना आदि सब

बातका सुभीता है। इसलिये लाटगंज ही उतरना चाहिये। यहांसे आध मीलकी दूरीपर दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस गोल-बाजारमें है, यह एक विशाल इमारत है। फिर यात्रियोंको पूंछकर जबलपुरसे बैलगाड़ी, मोटर आदिसे २१ मील कौनीक्षेत्र जाना चाहिये। यह क्षेत्र पाटनसे ३ मीलकी दूरी पर है। यह एक छोटासा गांव है, यहांपर बहुत बढ़िया ११ ग्यारह जिन मंदिर हैं, प्रतिमा भी प्राचीन हैं, दि० जैनियोंके ८ घर हैं। यहांकी यात्रा करके जबलपुर लौट आवे। फिर कटनी मुडवारा होकर दमोह जाना चाहिये। जबलपुरसे मोटरमें जानेसे कम खर्च पड़ता है परन्तु कटनी बीचमें नहीं पड़ता है। रेलसे जानेसे थोड़ा खर्चा ज्यादः लगता है पर बीचमें कटनीका दर्शन होजाता है यह फायदा है।

(११८) कटनी-मुडवारा।

मुडवारा नामका शहर है, कटनी नदीका नाम है, इसलिये इसको कटनी मुडवारा कहते हैं। यह शहर अच्छा है। एक दि० जैन धर्मशाला. २ बड़े मंदिर और पाठशाला है। दि० जैनियोंके घर बहुत हैं, स्टेशनके पास ही हिन्दू धर्मशाला है। स्टेशनसे आध मील जैन पाठशालामें भी ठहरनेका स्थान है। जो यहांसे कुंडलपुर जानेका सुभीता पड़ जावे तो यहींसे चला जावे अगर नहीं पड़े तो रेलवेसे दमोह जाकर कुंडलपुरकी यात्रा करे। कटनीसे १ लाईन सागर बीना दमोह होकर जाती है, दूसरी लाईन जबलपुर, तीसरी लाईन सतना इलाहाबाद जाती है तथा बिलासपुर भी जाती है।

(११९) दमोह शहर।

स्टेशनके पास पाव मील पर एक दिगम्बरी धर्मशाला है। यहां चैत्यालय, कुआ, जंगल और बाजार पासमें है, सो यहांपर ठहरनेसे सब आराम रहता है। यहांसे शहर १ मील है, शहर अच्छा है, बड़े २-३ मंदिर हैं, वेदियां भी बहुत हैं, श्री जिन बिम्ब भी अधिक हैं, दि० जैनियोंकी संख्या बहुत है, पाठशाला है। यहांसे जबलपुर, सागर, ललितपुर आदि स्थानोंको रेल व मोटर आती जाती है। यहांसे यात्रियोंको बैलगाड़ी आदि किराये करके कुंडलपुर अतिशय क्षेत्र जाना चाहिये। बीचमें पोष्ट पटेरा पड़ता है, यहांसे ४ मील कुण्डलपुर है। दमोहमें बाबू गोकुलचंद्र वकील अच्छे सज्जन पुरुष हैं, राज्यमान्य भी हैं।

(१२०) पटेरा।

यह ग्राम अच्छा है, ३ जिनमंदिर और बहुत घर दि० जैनोंके हैं। कुण्डलपुर जानेका एक रास्ता दमोहसे १ स्टेशन आगे बांदकपुरसे जाता है। यहांसे एक मील और दमोहसे १६ मील कुण्डलपुर पड़ता है। बांदकपुरमें एक दि० जैन मंदिर और १९ घर दि० जैनियोंके हैं, यहां एक वैष्णवोंका मंदिर बहुत बड़ा है, यात्राको अन्य लोग बहुत आते हैं, मेला भरता है, ग्राम स्टेशनसे १ मील पड़ता है। यह बीना कटनी लाईनमें पड़ता है।

(१२१) अतिशयक्षेत्र कुण्डलपुर महावीरजी।

यह शहर पहिले बहुत बड़ा था। यहांपर ६-६ महिनाका मेला लगता था। हजारों व्यापारी विदेश व द्वीपांतरोंसे आते थे।

कास्तोंका व्यापार होता था। हीरा, मोती, माणिकका व्यापार यहां बहुत बढ़िया होता था। इस शहरमें बड़े२ धनाढ्य लोग रहते थे। कोई कारण पाकर किसी बादशाहने हमला किया था। सो ग्राम लुटने लगा। मनुष्योंको मारने लगे। फिर पहाड़ ऊपर महावीर स्वामीके मंदिरपर भी हमला किया। मंदिर लुटने लगा। भगवान महावीर स्वामीकी प्रतिमाको फोड़ने लगे। सो पांवके अंगूठेमें टांकी लगाते ही दूधकी धारा लग गई! मंदिर दूधसे भर गया। मधु-मक्खियां उड़कर राजाकी फौजको काटने लगी। हजारों लोग अंधे होगये! पत्थर बरसने लगे। लोग हाहाकार करते हुए भागने लगे। बादशाह हाथ जोड़कर भगवानकी शरणमें गया और बोला कि जैनोंका देव सच्चा है। सब माल छोड़कर और अपने प्राण लेकर भागे। ऐसा यहांका बहुत अतिशय प्रसिद्ध है। अब भी लोग मनोमानता करने और दर्शन करनेको आते-जाते हैं। यह ग्राम वर्त्तमानमें छोटासा है। यहां एक बड़ी धर्मशाला, १ तालाब आदि है। पहा-ड़के ऊपर और नीचे सब मिलाकर कुल ६४ मंदिरजी हैं। पहा-ड़के ऊपर जानेको सीढ़ियां, कोट, दरवाजा, परकोटा और पत्थरकी सड़क सब जगह बनी हुई है। इसमें मूलनायक महावीर स्वामीका बहुत बड़ा मंदिर बना हुआ है। चारों तरफ परकोटा आदिसे शोभायमान है। ऊपर लिखे हुए अतिशय युक्त महावीरस्वामीकी प्रतिमा पद्मासन विराजमान है। और भी यहांकी सब प्रतिमा बहुत अच्छी हैं। यहांकी रचना वगैरह सुन्दर है, यहांकी यात्रा करके लौटकर दमोह आवे। और दमोहसे सागरकी टिकट १) देकर लेना चाहिये।

(१२२) सागर।

स्टेशनसे शहर पास है। १ मीलपर सत्तर्कसुधातरंगणी पाठशाला तालावके पास है। कटरा बाजारमें धर्मशाला है। तांगावाला =) सवारीमें लेजाता है। सो यहांपर उतर पड़े। कुँवा, जंगल, चैत्यालय आदि सबका सुभीता है। यहांपर कुल १३ मंदिर हैं। अंदाजा ५० वेदी हैं, हजारों प्रतिमा महामनोज्ञ हैं। एक जानकार आदमीको साथ लेकर सबका दर्शन करे। यहांपर एक बड़ा तालाब है। इससे इसका नाम सागर है। यह शहर बड़ा है। दि० जैनियोंकी बस्ती बहुत है। यहांसे मोटर या बैलगाड़ीसे बंड़ा, दौलतपुर होता हुआ श्रीसिद्धक्षेत्र नैनागिरजी जावे। बीचमें बड़ा शहर पड़ता है। १) रुपया सवारीका रेट है। सागरमें न्यायाचार्य पं० गणेशप्रसादजी वर्णी रहते हैं। पाठशाला जाकर देखे और उनके भी दर्शन करे। आप बड़े विद्वान और सरल प्रकृतिके भव्य पुरुष हैं।

(१२३) बंड़ा।

यह खुद जिला है। यहां दि०के बहुत घर हैं। एक बड़ा भारी मंदिर है। जिसमें ६ वेदी और प्रतिमा बहुत हैं। यहांपर कन्हैयालाल सा० और दौलतराम चौधरी अच्छे आदमी हैं।

(१२४) दौलतपुर।

ये ग्राम ठीक है। १ मंदिर और जैनियोंके घर बहुत हैं। यहांतक तो मोटर हमेशा आती जाती है। बंड़ामें बहुत मोटर हर समय मिलती हैं। दौलतपुरसे बैलगाड़ी किराया करके १० मील पर नैनागिरजी जाना चाहिये। नैनागिरजीका एक रास्ता द्रोणगिरजी तक आता-जाता है। बीचमें अमरगढ़, बामोरी, हीरापुर पड़ता

है। पक्की सड़क है। बांदा, क्षत्रपपुर, सागर लाईनमें सेघपा मलारा गांवसे रास्ता फूटकर सिद्धक्षेत्रको जाता है सो पूछते जाना चाहिये। बीचके उपरोक्त गांवोंमें दि०जैन घर और मंदिर हैं। नैनापुर सेंदपा ३० मील दूर पड़ता है।

(१२५) नैनागिर सिद्धक्षेत्र ।

समवशरण श्री पार्श्वजिनन्द, रेसंदीगिर नैनानन्द ।
वर दत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौ नित धरम जिहाज ॥१॥

यहांपर एक धर्मशाला है, पहाड छोटा जमीन बराबर है, १ तालाव है, तालावके बीचमें १ मंदिर है, २ कुआ, जंगला है, कुल ४० मंदिर हैं, परकोटा–दरवाजा है, यहांसे दर्शन करके एक आदमी साथ लेकर सेघपा सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरजी जावे। इसका हाल ऊपर लिख दिया है।

(१२६) द्रोणगिर सिद्धक्षेत्र ।

फलहोड़ी वड़गांव अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप ।
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहां, मुक्ति गये वंदौ नित तहां ॥१॥

यह एक छोटासा गांव है, नदी वहती है, २ दि० धर्मशाला और १ मंदिर ग्राममें है, थोड़ी दूर पहाड़ है, आधमीलका सरल चढाव है, सीढ़ी वनी हुई हैं, पहाड़पर २२ मंदिर और १ गुफा है। यहांकी यात्रा करके एक मोटर, बैलगाड़ी या पांवसे सागर आजावे। यहांसे ४९ मील छत्रपुर भी जाना होता है, बीचमें मलारा गांव पड़ता है, फिर भगवा हटापुर आदि होता हुआ ३० मील जंगलके रास्ते अतिशयक्षेत्र पपौराजी होकर टीकमगढ़ महरौनी होकर ललितपुर तक। मोटरसे टीकमगढ़से ॥।) सवारीमें

पपौराजी जासकते हैं। यात्रियोंकी इच्छा हो जिधरसे जावे। बहुधा लौटकर सागर आवे। फिर रेलगाड़ीसे बीना इटावा जंकसन उतरे। यहांसे गाड़ी बदलकर बीना बारन लाईनसे।) टिकट देकर मुंगावली जावे। अगर कोई भाई बीना इटावा उतरें तो वहांका हाल नीचे देखें।

(१२७) बीना-इटावा।

स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर धर्मशाला है, ।) सवारीमें तांगा-वाला लेजाता है। यहां एक मंदिरमें ७ वेदी हैं। १ पाठशाला भी है। जैनियोंके बहुत घर हैं। शहर ठीक है। लौटकर स्टेशन आवे। फिर यहांसे १ बंबई, २ ललितपुर, झांसी, सोनागिर, आगरा, ग्वालियर होती हुई देहलीतक जाती है। १ मुंगावली गुना होकर कोटा बारन तक जाती है। १ सागर दमोह तरफ जाती हैं। सो चारों तरफ जैन तीर्थ हैं। अब मुंगावली तरफका विवरण लिखता हूं।

(१२८) मुंगावली।

स्टेशनसे १ मील ग्राममें दि० धर्मशाला है, उसका किराया -) है। ग्राम अच्छा है। ४ मंदिर हैं। और दि० जैन घर बहुत हैं। यहांसे चन्देरी १६ मील है। मोटरवाला ।।।) सवारी लेकर पहुंचा देता है।

(१२९) चंदेरी शहर।

यह राजा शिशुपाल जोरासिंधुके समयका अच्छा शहर है। यहांका कोट, सड़क, दरवाजा, मकानात बड़े ही कीमती और मज-बूत हैं। यहांपर ३ जिनमंदिर १ धर्मशाला है। एक मंदिरजीमें

रंगरंगकी २४ महाराजकी मनोहर और भव्य प्रतिमा विराजमान हैं। और भी बहुत प्रतिमा हैं। यहां दि० जैनियोंकी संख्या अच्छी है। यहांकी यात्रा करके बैलगाड़ी, मोटरसे ११ मील श्री थोवनजी जाना चाहिये। ।।) सवारीसे २ मील जंगलमें पहाड़ ऊपर तथा नीचे प्राचीन प्रतिमा, चबूतरा ऊपर चरणपादुका आदिका दर्शन करना चाहिये।

(१३०) अतिशयक्षेत्र थोवनजी।

यह ग्राम छोटासा है, एक नदी है, एक पहाड़पर एक पहाड़पर एक जंगलमें १ धर्मशाला १ बावड़ी, कुल २२ मंदिर हैं। जिसमें बहुत प्राचीन बड़ी२ प्रतिमा हैं। उनमेंसे दश प्रतिमाएं ७-८-१०-१० हाथ ऊँची खड्गासन हैं। वे प्रतिमाएं महा मनोहर शांत छवि हैं। यह जैनियोंका स्थान एक करोड़ रुपयेकी कीमतका है। यहांसे लौटकर चन्देरी आवे। चन्देरीसे मुंगावली आवे, मुंगावलीसे १८ मील अतिशयक्षेत्र श्री बीनाजी जावे।

(१३१) बीना अतिशयक्षेत्र।

बीना जानेका रास्ता दूसरा रास्ता सागरसे करेली जानेवाली सड़कके किनारे देवरी है। उससे ४ मीलकी दूरीपर बीनाजी पड़ता है। यहांपर तीन मंदिर बड़े विशाल और कीमती प्राचीन बने हुए हैं। उसमें १ प्रतिमा ९ गज ऊंची श्री शांतिनाथ भगवानकी व एक प्रतिमा ४ गज ऊँची महावीरस्वामीकी विराजमान है। और भी बहुत प्रतिमा प्राचीनकालकी तप तेजवान अतिशय युक्त विराजमान हैं। एक भौंहरा भी है। जिसमें प्रतिमा हैं, और भी कई चीजें देखने योग्य हैं। यहांकी यात्रा करके मुंगावली

जावे। किसीको सागर जाना हो तो चल जाय। मोटर सुबह शाम आती है। किराया भी १) लगता है। चन्देरीसे एक रास्ता ललितपुर भी जाता है। २२ मील करीब पड़ता है। फिर मुंगावलीसे ।।) टिकट देकर गुना आजावे।

(१३२) गुणा छावनी।

स्टेशनसे बंजरगढ़ जानेको ।।) सवारीमें तांगा हर समय तैयार मिलता है। सो यहांसे पहिले बंजरगढ़ जाना चाहिये। अगर गुना शहरमें जाना है तो ।।) सवारीमें शहरमें चला जाय। व्यापारी कस्बा अच्छा है। सो यहां २ मंदिर ४ वेदी, बहुत प्रतिमा, पाठशाला, और बहुत घर जैनियोंके है। यहांसे ११ मील बंजरगढ़ है, पक्की सड़कका रास्ता है।

(१३३) अतिशयक्षेत्र श्री बंजरगढ़जी।

यह ग्राम अच्छा है, एक दि० जैन धर्मशाला, पाठशाला, मन्दिर, बहुत घर जैनियोंके हैं। यहांसे १ फर्लांग २ मन्दिर हैं। एक तीसरा मन्दिर २ फर्लांग दूरीपर है। लक्षों रुपयाकी लागतका है। जिसमें १ प्रतिमा २० हाथ ऊंची और प्रतिमा बगलमें १६ हाथ ऊँची मनोहर खड्गासन तप तेजवान अतिशय युक्त शांत, कुन्थु, अरहनाथजीकी प्रतिमा विराजमान हैं। यहांका दर्शन करके सब बात स्वयं मालूम कर लेना चाहिये। यहांकी यात्रा करके लौटकर गुना आजावे। फिर गुनासे इटावा चला आवे, यहांसे किसीको आगे जाना हो तो यह गाड़ी कोटा बारनबारा तक जाती है। इस लाइनमें भी बहुत यात्रा है, सो पहिले लिखी जाचुकी है, सो बागदा उज्जैन आदिकी तरफ देख लेना चाहिये।

(१३४) बंजरगढ़का अतिशय ।

यहांपर कभी उत्सव हुआ था, सो मुसलमान लोगोंने हमला करके उत्सवमें विघ्न किया था। मगर उसी समय यहांके मन्दिरसे भौंर उड़कर सबपर टूट पड़ी। पत्थर और अग्निकी वर्षा आकाशसे होने लगी, सब जगह धुवां अन्धकार छागया, लोग सब डरकर भाग गये। फिर शांति होगई थी। फिर बीना इटावासे ।।) टिकिटका देकर (श्री चांदपुरक्षेत्र) धवला स्टेशन उतर पड़े। फिर यहांसे चांदपुरक्षेत्रकी वंदना कर लेनी चाहिये। ललितपुरसे आनेवाले भाई पहिले जाखलौन स्टेशन उतर कर देवगढ़की यात्रा करें फिर लौटती समय धवला स्टेशन उतरकर चांदपुरक्षेत्रकी वंदना करें।

(१३५) चांदपुरक्षेत्र ।

यह स्थान जंगलमें जीर्ण और बे मरम्मत पड़ा हुआ है, यहां मरम्मत करना धर्मात्मा पुरुषोंका परम कर्तव्य है। जीर्णोद्धार बराबर पुण्य नये मकानमें नहीं होसकता है। देवगढ़की यात्रा करके भी लौटकर ८ मीलपर आ जासकते हैं। ललितपुर और जाखलौनसे आगे या बीनासे जाखलौन पहिले इसी धवला स्टेशन उतर कर और किसी जानकार आदमीको संग लेकर इस स्थानके दर्शन जरूर करना चाहिये। स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर हैं। ऐसे २ स्थानोंपर जैनी भाई नहीं जाते हैं, और मरम्मत भी नहीं कराते हैं, इसका भी बड़ा दुःख है। यहांपर रेलवेकी चौकीसे थोड़ी दूरपर एक बड़े भारी विशाल कोटसे घिरा हुआ मन्दिर है, बीचमें १ प्रतिमा, बगलमें १४ प्रतिमा। १ प्रतिमा ७ गज लम्बी, खड्गासन अखण्डित विराजमान हैं। इनके सिवाय मन्दिरकी दीवालमें २४ प्रतिमा,

२४ भगवानकी विराजमान हैं। बाहर बहुत प्रतिमा खण्डहर दशामें गिरी हुई हैं, यहांकी प्राचीनता देखकर चित्तमें जैनधर्मका बड़ा भारी गौरव पैदा होता है। यहांसे थोड़ी दूर एक कोट है। भीतर एक महादेवका मन्दिर फूटा-टूटा पड़ा है, २ नांदिया बड़े२ हैं। १ कुण्ड, १ तालाव है, यह रचना भी देखने काबिल है, फिर लौटकर स्टेशन आवे।

(१३६) जाखलौन स्टेशन।

यह स्टेशन ललितपुर बीनाके बीचमें पड़ता है। यहांपर पूछनेपर देवगढ़ जानेको बैलगाड़ी ।) सवारीमें मिल जाती है। अगर नहीं भी मिले तो जाखलौन गांवमें जावे। यह ग्राम स्टेशनसे २ मील दूर है। पक्की सड़क है। फिर यहांसे किराये बैलगाड़ी करके ६ मील देवगढ़ जाना चाहिये। देवगढ़ स्टेशनसे भी ६ मील पड़ता है। और गांवसे भी ६ मील पड़ता है।

(१३७) देवगढ़ क्षेत्र।

यह अतिशयक्षेत्र जैनियोंका भारी पुण्यस्थान है। पहिले यह देवगढ़ बड़ा भारी नगर था। अब छोटासा ग्राम है। यहांपर एक धर्मशाला है। एक बड़ा भारी पहाड़ है। उसका चढ़ाव १ मीलका है। पत्थरकी बनी हुई सड़क है। एक कोट चारों तरफ २ मील तक खिंचा हुआ है। जिसमें तीन तरफ ३ दरवाजा और एक तरफ मुनीश्वरोंके ध्यान करनेकी गुफा है। इस गुफामें २०० आदमी बैठ सकते हैं। इसके नीचे नदी वहती है। नदी यहांपर बहुत गहरी है। यात्रियोंको एक आदमीको साथ लेकर इस पवित्र स्थानको जरूर देखना चाहिये। एक दरवाजा गांवकी तरफ है। एक

दरवाजा जोकि पूर्व तरफ है, वहांपर घाट बंधा हुआ है। एक तालाव और जंगल है। यहां कोटके बीच करोंड़ो रुपयोंकी लागतके बड़े२, ४९ मंदिर बने हुए हैं। एक बड़ा कीमती मानस्तंभ है। एक मंदिरमें १ सहस्रकूट चैत्यालय है। १०-१९ हाथ तथा ७-८ हाथकी ऊंची खडगासन प्रतिमा बहुत हैं। और कुल प्रतिमा अनुमानसे ९ हजार प्राचीनकालकी बनी हुई मनोहर हैं। यहां एक मंदिर बहुत बड़ा है। यहांपर शिलालेख बहुत हैं। पहिले वहांपर मुनि, आचार्य, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी बहुत काल तक ध्यान करते रहे थे, ऐसा शिलालेखसे मालूम हुआ है। और ये मंदिर भी विक्रम संवत् पांचसे लेकर बारह तकके बने हुए हैं।

यहांके विषयमें ऐसी किंवदंती है कि दो भाइयोंने जोकि अपनी गरीबी हालतमें सेठके साथ सम्मेदशिखरजीकी वंदनाको गये थे। सो अपनी गरीबी पर पश्चाताप करते हुए चुपचाप संघके पहले पहाड पर वंदनाको गये। और महान करुणाजनक भावोंसे उआरके दाने टोंकर पर चढ़ाकर वंदना की। वो ही दाने गजमोती हो गये! उनही दोनों महात्मा भाईयोंके पुण्योदय आया। सम्पत्तिके स्वामी होकर इस पहाड़के जिनालय निर्माण कराये। यहां पर कितना धन खर्च किया होगा, कैसे काम कराया होगा, एकबारके दर्शनोंसे मालूम होजायगा। ज्यादः कहांतक लिखा जाय। यह स्थान अत्यन्त जीर्ण अवस्थामें पड़ा है। अगर कोई धर्मात्मा पुरुष जीर्णोद्धार करादें तो उसको और उसकी लक्ष्मीको धन्यवाद है। जीर्णोद्धारके समान कोई पुण्य नहीं है। यहांकी यात्रा करके

फिर लौटकर स्टेशन आवे। ≈) देकर ललितपुरकी टिकट कटाकर वहांपर उतरे। स्टेशन धवला जाकर चांदपुरकी यात्रा करके फिर टिकट।≈) देकर ललितपुर आवे।

(१३८) ललितपुर शहर।

स्टेशनसे आधमील क्षेत्रपालपर तांगावाला -) सवारीमें लेजाता है। यहांपर बहुत बड़ी दि० जैन धर्मशाला है। पानीका कुआ, जंगल, पाठशाला पास ही है। यहांका स्थान बड़ा ही हवादार और रमणीक है। यहां एक बड़ा भारी ऊंचा गढ़ है। जिसमें ७ मंदिर हैं। प्राचीन प्रतिमा बहुत अतिशयवान हैं। शास्त्र भंडार है। यहां एक मंदिरमें अभिनन्दन स्वामीकी प्रतिमा श्याम वर्ण सुन्दराकार है। उसके नीचे क्षेत्रपालकी मूर्ति जमीनपर । इस-लिये इसका नाम क्षेत्रपाल प्रसिद्ध पड़ गया है। यहांके सेठ मथ-रादास पन्नालालजी टंडैया धर्मात्मा परोप... । यहांसे १ मील शहर पड़ता है। सो ललितपुर शहर... जाइये। शहर अच्छा है। दि० जैन भाईयोंके घर ४... पर बहुत रंगदार तीन दि० मंदिर बहुत खूबसूरत ... मंडित बने हुए हैं। एक चैत्यालय भी है। वेदी... बहुत हैं। यहांका दर्शन अवश्य करना चाहिये। ... ॥) सवारीमें मोटर आदि सवारी करके २६ मील ... जाहिये। बीचमें महरौनी गांव भी पड़ता है र... जैनियोंके घर अंदाजा ८० होंगे। फिर टीकमगढ़

(१३९) टी...

यह एक अच्छा कस्बा है। राज... अच्छा है।

यहां दि० जैन घर बहुत हैं। १ धर्मशाला है। यहांपर फिर तांगा मोटरसे या पांवर चलकर ३ मील पक्की सड़क आदमीको साथ लेकर पपौराजी जावे ।

(१४०) श्री पपौराजी अतिशय क्षेत्र ।

यहां जंगलके बीचमें रमणीक मैदानमें चारों तरफ कोटसे घिरे हुए कुल ७६ मंदिर हैं। और बड़ी मनोज्ञ मूर्तियां हैं। यहां एक धर्मशाला, पाठशाला, कुवा, ८ मंदिर १ भौंहरा आदि चीजे हैं। यहां पहिले बहुत अतिशय होता था। यहांका दर्शन करके टीकमगढ़ होता हुआ ललितपुर आवे। देलवाड़ा पपौरासे एक और रास्ता हटा हीरापुर भगवा होता हुआ ३० मील द्रोणगिरिजी जाता है। सो यहांसे भी सवारी आदिका प्रबंध कर जासक्ते हैं। परन्तु रास्ता जंगली ठीकर है।

(१४१) देलवाड़ा स्टेशन ।

स्टेशनसे २ मील ग्राम है। ग्राम छोटा होनेसे कुछ घर दि० जैनियोंके और १ मंदिर भी है। यहांसे किसी आदमीको साथ लेकर सिरोन जाना चाहिये।

(१४२) अतिशयक्षेत्र सिरोनजी-(शांतिनाथजी)

यह एक छोटासा ग्राम है। ४ घर दि० जैनियोंके हैं। यहांके जंगलमें एक बड़ा भारी कोट था। जिसके भीतर न जाने कितने मंदिर थे। जिन्होंकी हजारों प्रतिमा खंडित १ मीलके चक्करमें जहांतहां पड़ी हुई हैं! जिसको देखकर छाती फटती है! एक दिन यह स्थान भी परमपवित्र था। जिसको किसी सौभाग्य-शालनीके पुत्रने कराया होगा। कितना धन खर्च किया होगा।

इस दुष्ट कालकी करालता देखो। हालमें यहां कोई एक जैन नहीं है। एक दूसरे कोटमें बावड़ी, धर्मशाला और १ शिलालेख बहुत प्राचीन लिपिका खुदा हुआ स्पष्ट अक्षरोंमें है। पांच मंदिरजी हैं। उनके चौकमें चारों तरफ खंडित अखंडित प्रतिमा विराजमान हैं। एक मंदिरमें १ कुछ अंग खंडित १९ हाथ ऊंची खड्गासन शांतिनाथकी प्रतिमा विराजमान है। यहांकी यात्रा करके स्टेशन वापिस आना चाहिये। फिर टिकटका ।=) देकर तालवेट उतरना चाहिये।

(१४३) तालवेट शहर ।

स्टेशनसे १॥ मील दूर ग्राम है। यह भी प्राचीनकालका शहर है। यहां एक मंदिर और ३० घर दि० जैनियोंके हैं। यहांपर ताल=तालाव और वेट-गढ़ बड़ा है इसलिये तालवेट इसका सार्थक नाम है। यहांका तालाव और गढ़ अवश्य देखना चाहिये। यहांसे किसी सवारी या आदमीको साथ लेकर पवा छह मील जाना चाहिये। बीचमें २ तालाव और १ गांव पड़ता है। पवा जाने-आनेका दूसरा रास्ता सुगम है। तालवेटसे १ स्टेशन आगे =) टिकट देकर बसई उतरकर फिर यहांसे भी पक्की सड़कसे ६ मील पवाजी आने-जाते हैं। तालवेट उतरनेसे तालवेट शहरका तालाव गढ़ देखनेको मिलता है। इसलिये तालवेटसे ही आना-जाना ठीक रहता है।

(१४४) श्री पवाजी अतिशय क्षेत्र ।

यह ग्राम छोटासा है। कुछ दि० जैन व १ चैत्यालय है। यहांसे १ मील जंगलमें एक पहाडके नीचे कोट खिंचा हुआ है। भीतर एक धर्मशाला है, एक नवीन मंदिर है। भोंहरा प्राचीनका-

लका जमीनके भीतर है। जिसमें विक्रम संवत् १३४२ सालकी ७ प्रतिमा हैं। पहिले यहां बहुत अतिशय हुआ था। यहां भी लोग बोल कबूल चढ़ानेको आते हैं। १ मंडप, १ धर्मशाला और बाहर कुआ है। यहांकी यात्रा करके फिर वापिस तालवेट आवे। टिकट किराया ।।।) देकर झांसी उतर पड़े।

(१४५) झांसी शहर।

स्टेशनसे २ मील शहर पड़ता है। ≈) आनामें तांगा करके दि० जैन धर्मशालामें जावे। यह जिला और अच्छा शहर है। शहरमें ३ जिन मंदिर १ चैत्यालय है। एक मंदिरमें पांच वेदी और सहस्रकूट चैत्यालय है। यहांका गढ़ बड़ा भारी है। शहरमें कोट और ४ दरवाजे हैं। बहुत घर दि० जैनियोंके हैं। सब माल मिलता है। यहांका दर्शन करके ३ मीलपर एक बगीचा है। उसका नाम कुरंगमा है। एक आदमीको साथ लेकर जावे। यहांपर कोटसे घिरा हुआ एक बगीचा है। कुवा, जंगल पासमें है। बगीचाकी जमीनमें एक भोंहरा है। जिसमें वि० सं० १२ की प्रतिमा तपयुक्त पद्मासन विराजमान हैं। यहांका दर्शन करके वापिस झांसी आवे। झांसीसे ३ रेलवे जाती हैं। १ सोनागिर–आगरा तक, १ कानपुरको, १ माणिकपुर, इसी लाईनकी टिकट किराया १≈) देकर हरपालपुर चला जावे।

(१४६) हरपालपुर।

इलाहाबाद–जबलपुरके बीचमें माणिकपुर जंकसन पडता है। सो इस लाईनसे आनेवाले भाई माणिकपुर गाड़ी बदलकर हरपालपुर जावे। टिकट २।) लगता है। हरपालपुर छोटासा ग्राम है।

१ चैत्यालय और १० घर दि० जैनियोंके हैं। यहांसे छत्रपुर जानेको हर समय मोटर मिलती है। छत्रपुर यहांसे २८ मील है। टिकट मोटरका १।।) लगता है। बीचमें नयागांव छावनी पड़ती है।

(१४७) नयागांव छावनी।

यह ग्राम भी अच्छा है। एक मंदिर और कुछ घर जैनियोंके हैं। यहांसे छत्रपुर १० मील पड़ता है।

(१४८) छत्रपुर शहर।

यह शहर राजासा०का अच्छा और साफ है। यहांपर ३० घर दि० जैन, ४ मंदिर और २ धर्मशाला भी हैं। मंदिरजीमें कुल वेदी १९ हैं। प्रचीन मनोज्ञ प्रतिमा हैं। शिखिर महात्मके रचियता पं० जवाहरलाल यहींके वासी थे। यहांका दर्शन करके मोटर, बैलगाडी या तांगामे पक्की सड़क २८ मीलकी दुरीपर खजराहा जाना चाहिये। खजरा जानेवालोंको दूसरा रास्ता राजनगर होकर सीधा जाता है। इस रास्तेमें बैलगाड़ी, घोड़ा, ऊट आदि सवारी जासकती है। रास्ता साफ है। चोर वगैरहका डर नहीं है। रास्तेमें ४ गांव छोटे२ पड़ते हैं। फिर राजनगर यहांसे १२ मीलपर पड़ता है। राजनगर भी अच्छा शहर है। पोष्ट घर भी है। दि०जैन मंदिर और १९ घर दि० जैनियोंके हैं। बाजार, तालाव, पुराना मकान आदि रमणीक हैं। यहांसे १ मील खजहरा है। खजहरा जानेका एक और भी रास्ता है–इसी जबलपुर इलाहाबाद लाईनमें सतना स्टेशन पड़ता है।

(१४९) सतना शहर।

स्टेशनसे पाव मील दूर दि० जैन धर्मशाला है। यहींपर

एक पाठशाला, बड़ा मंदिर, कुआ वगैरह नजदीक है। बाजार, तालाव, जंगल भी है। मंदिरजीमें पांच वेदी पर प्रतिमाएं हैं। यहांपर ५० के करीव दि० जैन घर हैं। बाजार अच्छा, सामान सब मिलता है। यहांसे ४) सवारीमें खजहरा तक मोटर, तांगा, बैलगाड़ी जाती है। पक्की सड़कका रास्ता है। सतनासे खजहरा कुल ३० मील है। रास्तेमें नागोद, पड़रिया, दो ग्राम जैनियोंके पड़ने हैं।

(१५०) नगोद।

यह ग्राम राजासा०का अच्छा है। २ मंदिर और ४० घर दि० जैनके हैं। डाक-तारघर, राजदरबार, तालाव धर्मशाला, बाजार आदि सब हैं। फिर आगे सडकपर पड़रिया ग्राम है।

(१५१) पड़रिया।

यहां कुछ घर दि० जैनोंके और १ मंदिर पाठशाला है।

(१५२) पन्ना रियासत।

यह राजा सा० का अच्छा साफ ग्राम है। सड़क, बाजार, विजली, तारघर, २ तालाव, राजमहल आदि सब इस शहरमें हैं। यहां दि० जैन घर बहुत हैं। दो मंदिरोंमेंसे एक मंदिरमें स्फटिकमणिकी प्रतिमा विराजमान है। दो मंदिर वैष्णवोंके भी हैं। उन्हीं लोगोंका माघ-फाल्गुनमें बडा भारी मेला भरता है। आगे जाते हुए रास्तेमें पश्चिमकी ओर एक सड़क फटकर दश मीलकी दूरीपर अजयगढ़ जाती है। मोटरवालेको १) सवारी ज्यादः देकर वहांपर अवश्य जाना चाहिये।

(१५३) अतिशयक्षेत्र अजयगढ़।

यह स्थान एक पहाड़ीपर चौतरफ खाईपर कोटसे घिरा है।

दरवाजा, तालाव, बाग, बगीचा, राजमहल आदिसे सुशोभित है। जमना, गंगा नामक दो प्राचीन कुंड हैं। अजयगढ़के दरवाजेमें प्रवेश करते ही एक पत्थरमें उकेरी हुई ५० प्रतिमाका दर्शन होता है। आगे थोड़ी दूर बड़ा गहरा तालाव है। तालावकी दीवालोंमें बहुत खण्डहर प्रतिमाओंके हैं। जिसमें १ प्रतिमा १५ फीट दूसरी १० फीट उंची अखंडित कायोत्सर्गासन विराजमान हैं। एक बड़ा मानस्तंभ भी है। उसमें हजारों प्रतिमा बनी हुई हैं। यहांसे १॥ मील उपर जंगलमें एक स्थान रमणीक है। वहां भी हजारों प्रतिमा विराजमान हे। उनको देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। प्राचीनकालमें कैसे धर्मानुरागी धनाढ्य थे। उनकी बनवाई हुई ये प्राचीन प्रतिमा हैं। ग्राममें और भी मंदिर हैं, उनका भी दर्शन करना चाहिये। फिर लौटकर खजहरा जाना चाहिये। बीचमें एक सड़क फूटकर छतरपुर जाती है। सो पूछकर खजहरा जावे। ऊपरका सब हाल देखकर तीनोंही रास्तोंसे खजहरा जाना चाहिये।

(१७४) अतिशयक्षेत्र खजहरा।

अभी यह ग्राम छोटासा है। ग्रामके पूर्वकी तरफ जंगलमें चारों तरफ कोट लगा हुआ है। भीतर धर्मशाला, बावड़ी, कुवा है। और कोटके चारों तरफ बहुत खंडित प्रतिमा हैं। एक बड़ा भारी मंदिर है। बीचके मंदिरजीमें कायोत्सर्गासन मूलनायक श्री शांतिनाथकी प्रतिमा २० हाथ ऊंची हैं। और गढ़के चारों ओर भी बहुत प्रतिमा हैं। बाहर मैदानमें लाखों रुपयाकी कीमतके प्राचीन ढंगके छत्र, चमर, सिंहासन, भामण्डल और जिनसेवी शासनदेवताओंसे युक्त हजारों प्रतिमाएं उन १४ मंदिरोंमें विराजमान

हैं। एक छोटी प्रतिमाकी रचना बहुत ही अच्छी है। आजकल लाखों रुपया खर्च करनेपर भी वैसी प्रतिमा नहीं बन सकती हैं। यह स्थान भी पुण्यवर्द्धक और बड़ा रमणीक है। जैनियोंको यहांका दर्शन अवश्य करना चाहिये। ग्रामकी पूर्व दिशाका हाल—

ग्रामसे १ मील दूर राजाका महल, बड़ा तालाव, १धर्मशाला है। १ मीलके चक्रमें वैष्णवोंके २२ मंदिर हैं। दो बड़ी२ नदियां हैं। एक शूकर अवतार भगवान (!) बीचमें पत्थरमें बने हुए हैं। उनके साथ ३३ करोड़ देवताओंका भी आकार बना है। एक सर्कारी लायब्रेरी है। उसमें हजारों प्रतिमाएं जैन अजैनोंकी पड़ी हैं। और मंदिरोंके भी खंडहर हजारोंकी संख्यामें हैं। फाल्गुन वदी १३से वैशाख सुदी १५ तक २॥ महिनेका बड़ा भारी मेला भरता है। हजारों लोग आते हैं। और लाखोंका व्यापार होता है। मेलाके समयमें राजा सा०, पुलिस, तारघर, डाकखाना आदि सब यहीं पर रहता है। इस समय आनेवाले यात्रियोंको बहुत कमतीमें सवारी मिल जाती है। और सब बातका आराम रहता है। खजराह जानेवाले भाइयोंको ये मंदिर भी देख लेना चाहिये। फिर लौटकर छत्रपुर, नयगांव होता हुआ हरपालपुर आकर झांसीका टिकट लेवे, और झांसी उतर पड़े। यहांका हाल ऊपर लिखा गया है, ॥) देकर टिकट सोनागिर स्टेशनका ले लेवे। कटनीसे सीधे आनेवाले भाइयोंको ऊपर लिखे तीर्थ रास्तेमें होनेसे करते आना चाहिये। झांसीसे सतना आदि जानेमें खर्च ज्यादः पड़ेगा। अथवा सोनागिर, आगरा झांसी लौटकर उन तीर्थोंको करना चाहिये। झांसी आकर फिर लौटकर सतना जावे

फिर लौटकर झांसी आवे यह ठीक नहीं है। झांसीसे सोनागिर वगैरह करके फिर लौटती वार उन तीर्थोंको करना चाहिये।

(१५५) सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी।

स्टेशनके पास ही एक दि० जैन धर्मशाला है। यहींपर ठहरे। सोनागिर जानेसे यहांपर सामान भी रख सकते हैं। जिम्मेवार माली रहता है। कुछ घर भी हैं। यहांसे =) सवारीमें ३ मील सोनागिरजी जाना चाहिये। ग्राम छोटासा है। यहांपर बहुत धर्मशाला, कुआ, जंगल, बाजार सब कुछ हैं। एक भट्टारकजी महाराजका यहां स्थान है। नीचे कुल तेरा, वीसपन्थी मिलाकर २२ मंदिर हैं। उनमेंसे एक मंदिर लश्करवालोंका बहुत ऊंचा, बहुत चक्करमें मोटा है। और भी अच्छे२ मंदिर हैं। पहाड़ जमीन बराबर ही नजदीक है। पहाड़पर २ मीलके चक्करमें ९४ मंदिर कीमती मनोहर हैं। जिनमें हजारों प्राचीनकालकी प्रतिमा हैं। यहांके मूलनायक चन्द्रप्रभु स्वामीका बहुत बड़ा मंदिर है। यहांसे अनंगकुमारादि साढ़ेपांच क्रोड मुनि मोक्षको गये हैं। वंदना करके स्टेशनपर आजावे। टिकट ।।।) देकर ग्वालियर जंकशन उतर पड़े।

(१५६) ग्वालियर।

स्टेशनसे २ मील दूरीपर लश्कर चम्पाबागकी धर्मशालामें उतरे, ।) सवारी लगता है। यहांपर ठहरनेसे सब बातका सुभीता रहता है। फिर किसी एक आदमीको साथ लेकर लश्कर जावे।

(१५७) लश्कर।

यहांपर कुल २२ मंदिर हैं। उनकी वंदना करे। फिर बाजारकी शैर करना चाहिये। कुछ लेना-देना हो लेना-देना चाहिये।

चम्पाबागकी एक ओर बाजारके दो मंदिर बड़े कीमती हैं । यहांसे तांगा करके ग्वालियर जाना चाहिये। किलाके बाहर हजारों प्रतिमा पहाड़में उकेरी हुई बड़ी विशाल हैं । खंडहर भी हैं । सो किसी जानकार आदमीको साथ ले जाकर सबका दर्शन करना चाहिये । यह रचना पहाड़में गढ़के नीचे उकेरी हुई गुफामें है । फिर शहरमें ११ मंदिर और रंगरकी प्रतिमा हैं। उनका भी दर्शन करना योग्य है । फिर राजाका टिकट लेकर गढ़ देखने जावे । यहांपर राजकर्मचारीको कुछ देकर साथ लेलेवे । वह गढ़, तालाव, राजमहल इत्यादि सब अच्छी तरहसे बतला देगा । किलेके भीतर बड़ीर विशाल प्रतिमा हैं । उनका वह दर्शन करा देगा । गढ़की लंबाई–चौड़ाई बहुत है। हजारों तोपें हैं । एक प्रतिमा यहांपर ३० गज ऊंची खडगासन विराजमान है । यह प्रतिमा शांतिनाथ स्वामीकी है । यह प्रतिमा ३९ वर्षमें बनकर तैयार हुई थी। कीमती बहुत है । प्राचीनकालमें यहांका राजा न्यायपरायण धर्मात्मा दि० जैन था । उन्होंने यह सब रचना कराई थी। लेखनीके बाहर उसकी रचना है। अब भी ग्वालियरका राज्य बडा है। नव करोड़की वार्षिक आय है। इन्होंके राज्यमें रेल, तार-पोष्ट ऑफिस, अस्पताल, गुरुकुल, पाठशाला, हिजरी हक्क सब राजा सा०का है । यहांसे सब दर्शन करके स्टेशन आजावे । फिर टिकट ।) का देकर ग्वालियर सीप्री लाईन (छोटी गाड़ी) से पन्नीयार जाना चाहिये ।

(१५८) पन्नीयार ।

स्टेशनसे १ मील दूर यह गांव है । यहांपर १ छोटा किला

है। यहांपर राजासा०के नौकर रहते हैं। १ दि० जैन मंदिर और ४ घर दि० जैनके हैं। थोड़ी दूरपर कोटसे घिरा हुआ १ दि० जैन मंदिर है। बाहर एक जंगल है। कोटके बाहर भीतर बहुत प्रतिमा हैं। यहांपर दो मकान हैं। एकके पश्चिम तरफ कोटगेमें नीचे भोंइरा है। रास्ता सकरा है। बैठकर भीतर जाना होता है। कोई प्रकाश लेकर भीतर जाना चाहिये। कारण कि भीतर अंधेरा रहता है। भोंइरामें ४२ प्रतिमा हैं। यहांका अपूर्व दर्शन करके बाहर आवे। यहांसे १ मीलकी दूरीपर लाल पत्थरसे बना हुआ चारों तरफ मुखवाला बड़ा भारी मंदिर है। उसमें ३ प्रतिमा खड्गासन २२ हाथ ऊंची अखंडित महान शांतमुद्रा लालवर्णकी विराजमान हैं। मंदिरके बाहर मंडप जगल है। यहांकी रचना देखनेके लिये एक आदमीको साथ लेजाना चाहिये। फिर जाकर खूब रचना देखना चाहिये। यहांका दर्शन करके बहुत आनंद होता है। मगर कुछ रोना पडता है। उन महात्माओंको धन्य है जिन्होंने अपना बहुत धन खर्च करके यह मंदिर बनवाया। परन्तु आज उसका जीर्णोद्धार और दर्शन करनेवाला भी कोई आदमी नहीं है! कोई दि० जैन नहीं आता है। यहांसे लौटकर लश्कर स्टेशन आवे। स्टेशनसे १ मील चंपाबागमेंसे अपना सामान लेकर ग्वालियर जंकशन जावे। यहांसे १।) टिकटका देकर आगरा उतरे। यहांसे किसीको आगे जाना हो तो यहांसे लाइनें जाती हैं। १ सोनागिर झांसी, बंबई तक। २ सिप्री पन्नीहार, ३ आगरा, ४ भिंड, ५ शिवपुर चाहे जहां जावे। अगर आगरा जाना हो तो बीचमें मोरेना

पड़ता है। किसीको उतरना हो तो उतर पड़े। यहांपर विद्वद्वर्य स्व० पं० गोपालदासजीका विद्यालय है, और मुनि अनंतकीर्तिजी महाराजका समाधि स्थान है। इसके आगे धौलपुर स्टेशन पड़ता है, यहांका पुल बडा नामी और कीमती है। देखनेकी इच्छा हो तो उतर पड़े। नहीं तो आगरा जाकर उतरना चाहिये।

(१५९) आगरा।

इस शहरमें कुल ७ स्टेशन हैं। गाड़ी चारों तरफ जाती हैं। चाहे किसी स्टेशन उतरो परन्तु तांगावालेसे किराया पहिले तय करलेना चाहिये। मोतीकटराकी धर्मशालामें उतरना चाहिये। यहांपर कुआ, बाजार, मंदिर आदि सब बातका सुभीता है। शहरमें २२ मंदिर हैं। सो किसी जानकार आदमीको साथ लेकर इन सब मंदिरोंका दर्शन करें। लौटने समय दर्शन करता चला आवे। नाईकी मंडीमें श्वेताम्बर मंदिरमें बहुत प्राचीन शीतलनाथकी प्रतिमा है। यहांपर ताजबीबीका रोजा, सिकन्दर मसजिद, लाल किला, तोपखाना, शीस महल, मच्छीभवन, पुल, जमनाके घाट, जुम्मामसजिद, दौलतका मकबरा, अजायबघर आदि देखने योग्य चीजें हैं। यहांसे फीरोजाबाद उतरे। आगराकी स्टेशनोंके नाम-१ आगराफोर्ट, २ जंकशन, ३ आगरा किला, ४ बेलनगंज आगरा, ५ नाईकी मंडी, ६ आगरा कैंट, ७ राजाकी मंडी। आगरासे १ लाईन झांसी बंबई तक। बांदीकुई जालना, जयपुर, फुलेरा तक। अचनेरा मथुरा कानपुर; लुपलाईन, टूंडला, कलकत्ता तक, देहली तक। आदि बहुत गाड़ी जाती हैं सो पूछकर इच्छानुसार चला जावे। आगरामें ३०० वर्षोंमें कवि रूपचंदजी, भगवानदासजी,

कुंवरपालजी, चतुरभुजजी, तुलसीदास, भूधरदासजी आदि पण्डित यहींके थे।

(१६०) फीरोजाबाद।

स्टेशनसे १ मील दूर असरके कटरामें दि० जैन धर्मशाला है। तांगावाला ≈) सवारीमें ले जाता है। यहांपर ठहर जाना चाहिये। यहांपर बाजार, पाठशाला, मंदिर, कुआ इत्यादि सबका आराम है। शहरमें मंदिर ५ हैं जो बहुत मनोज्ञ हैं। एक मंदिरमें ३ अगुल ऊंची खड्गासन पार्श्वनाथकी हीराकी प्रतिमा है। उसका दर्शन सुबह ८ बजेतक होता है। सो पूछकर दर्शन करे। भंडारीको कहनेसे अन्य समयमें भी दर्शन होता है। यहां दि० जैनियोंके घर बहुत है। न्यायदिवाकर प० पन्नालालजी यहींके निवासी थे। प० जवाहिरलालकी दुकानमें मंडल-त्रिलोक, ढाईद्वीप, तेरहद्वीप आदिके नक्शे मिलते है, सो खरीदना चाहिये। फिर बाजार देखकर स्टेशनपर आना चाहिये। टिकट ।) देकर शिको-हाबाद जाना चाहिये। यहांसे १ लाईन कलकत्ता तक जाती है, एक आगरा, १ देहली तक जाती है।

(१६१) शिकोहाबाद।

स्टेशनसे २ मील शहर है। यहांपर १ मंदिर और ७० घर दि० जैनोंके है। किसीको शहरमें जाना हो तो जावे। नहीं तो स्टेशनसे सीधा ॥ में इक्का करके बटेश्वर जाना चाहिये। १० मील पड़ता है।

(१६२) श्री सौरीपुरी-(बटेश्वर)।

बटेश्वर ग्राम है। यहांपर जमना नदी बहती है। जमनाका

बड़ा घाट और बहुत मंदिर महादेवजीका है । यहांपर अन्यमती लोग मुर्देकी राख हाड़ लेकर जमना नदीमें फेंकने आते हैं, श्राद्ध भी करते हैं । पिंडदान भी देते हैं । मेला भी भरता है । हजारों लोग आते जाते हैं । गांव अच्छा है । ब्राह्मणके बहुत घर हैं ।

इन्हीं लोगोंका जोर बहुत है । ग्राममें बड़े२ मजबूत गढ़ और मकान हैं । एक धर्मशाला और १ दि० मंदिर है । यहांपर एक भट्टारकजी रहते थे, सो ब्राह्मण लोगोंको चतुराई दिखाकर वादविवादमें जीतकर जमनाजीमें शीशा तांबा डालकर जमनाजीके पार जैन मंदिर बनाया गया । श्री नेमनाथ स्वामीकी पद्मासन श्यामवर्ण बड़ी विशाल प्रतिमा है । फिर यहांसे १ मील जंगलमें सौरीपुर जाना चाहिये ।

(१६३) शौरीपुर ।

यहां नेमिनाथ भगवानका गर्भ-जन्म कल्याणक हुआ था । किसी शास्त्रमें द्वारकामें हुआ था भी लिखते हैं । सो इसका निर्णय केवलज्ञानी करेगा । हमको दोनों जगह पूज्य मानना चाहिये । यह शहर पहिले १२ योजन लम्बा ९ योजन चौड़ा था । कालके प्रभावसे आज जंगल है, यहांपर दिगम्बर, श्वेतांबर दोनोंके मंदिर चबूतरा चरणपादुका हैं । सो पुण्य क्षेत्रकी वंदना करके बटेश्वर फिर लौटकर शिकोहाबाद लौट आना चाहिये । फिर यहांसे टिकट १।) देकर फरुखाबाद जावे । यहांसे १ रेल टूंडला जाती है । १ फरुखाबाद, १ दिल्ली जाती है । अगर किसीको देखना हो तो फरुखाबाद चला जाय । नहीं तो वहांसे टिकटका ।≈) देकर कायमगंज जाना चाहिये ।

(१६४) फर्रुखाबाद जंकशन ।

स्टेशनके पास २ धर्मशाला वैष्णवोंकी हैं, शहर १ मील दूर है, ३) सवारीमें तांगा जाता है। ३ मन्दिर हैं, १ सदरबाजार, २ हकीम पुत्तुलालजीके पास, ≈) जैन मुहल्लामें बनारसीका मन्दिर है। यहांपर दि० जैनियोंके घर बहुत हैं, टिकट ।) देकर कायमगंज उतरे ।

(१६५) कायमगंज ।

स्टेशनसे १ मील ग्राम है, १ मन्दिर कुछ घर दि० जैनियोंके हैं। यहांसे ॥) सवारीमें ६ मील कम्पिलाजी तांगा, मोटर जाती है। यहांसे १ रेल अचनेरा मथुरा होकर कानपुर चली जाती है, छोटी लाइन भी है।

(१६६) कम्पिलाजी क्षेत्र ।

१३ वें तीर्थंकर विमलनाथ भगवानके गर्भादिक ४ कल्याणक यहांपर हुए थे। यह भी बड़ा भारी नगर था, परन्तु आज छोटासा ग्राम है। १ मन्दिर और ३ प्रतिमा विमलनाथस्वामीकी प्राचीन विराजमान हैं। यहांपर एक धर्मशाला श्वेतांबर, दूसरी वैष्णवोंकी है और दोनों ही मन्दिर हैं। यहांसे लौटकर कायमगंज आवे। फिर यहांसे किसीको जाना हो तो हाथरस मथुरा होकर कानपुर जावे। टिकिट अन्दाजा २) होगा, नहीं तो टिकट सीधा देहलीका लेना चाहिये। ३) टिकटका लगता है, बीचमें हाथरस जंकशन गाड़ी बदल कर देहली जावे, पर रास्तेमें हाथरस, अलीगढ़, खुर्जा शहर पड़ते हैं। उन सबमें दि० जैन बड़े २ मन्दिर और जैनियोंकी बस्ती बहुत है, किसीको उतरना हो तो उतरे।

(१६७) हाथरस ।

गांव स्टेशनसे नजदीक है, शहर अच्छा है, धर्मशाला स्टेशनसे पाव मील है। यहांपर सुनहरी हलकी चित्रकारी और जड़ाईके काम संयुक्त २ बड़े२ मन्दिर हैं, प्रतिमा बहुत रमणीक हैं। शहर बिलकुल साफ देखने योग्य है। दि० जैनियोंके घर बहुत हैं। यहांसे एक रेलवे मथुरा, आगरा, कासगंज, देहलीतक जाती है।

(१६८) अलीगढ़ जंकशन ।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर सेठ सोनपाल ठाकुरदासजीकी धर्मशालामें ठहरना चाहिये। यहांपर सब बातका आराम है। यहांपर १ मंदिर, १ लश्करीरायमें, शहरमें ४ मंदिर हैं। सब मंदिर कीमती और बढ़िया हैं। सब दर्शन करना चाहिये। बाजार भी देख लेना चाहिये। यहांपर पं० प्यारेलालजी थे। जैनियोंके घर बहुत हैं। यहांसे श्री अहिक्षेत्रजीको जानेके बारेमें ठीक२ पूछ लेना चाहिये। फिर अलीगढ़ बरेली लाईनमें अंवालाका टिकट लेवे। किराया १॥-) लगता है।

(१६९) अंवाला ।

यहांसे ६ मीलकी दूरीपर रामनगर है। इसको राजनगर अहिक्षेत्र भी कहते हैं। बैलगाड़ीमें जाना होता है। यह एक छोटासा ग्राम है। १ धर्मशाला है। यहांपर प्रति वर्ष चैत्रवदी ८ से १२ तक मेला भरता है। यहांपर एक मंदिर और प्रतिमा है। श्री पार्श्वनाथ भगवानकी सातिशय चरणपादुका हैं। पार्श्वनाथ स्वामी यहांपर तपस्या करते थे सो कमठके जीव देवने घोर उपसर्ग किया था। धरणेन्द्र और पद्मावतीने उपसर्ग दूर किया था। भगवानको

केवलज्ञान होनेसे देवोंने समवशरण रचा था। दिव्यध्वनि द्वारा धर्मोपदेश हुआ था। शेष हाल पार्श्वपुराणसे जानो। यहांपर एक पाठशाला, कुवा, बावड़ी, बगीचा इत्यादि हैं। चरणपादुका खेत जोतनेमें एक मालीको मिली थी। बहुत दिनतक मालीके पास ही रही। फिर मंदिरमें विराजमान करदी गई है। यह बड़ा ही पवित्र स्थान है। लौटकर अलीगढ़ जावे। फिर बादको देहली जावे। यहांसे आगे फिर खुरजा पड़ता है। अगर बरेली जाना हो तो इसी लाईनसे चला आवे। इस लाईनमें बरेली होकर लखनऊ चली जाती है।

(१७०) खुर्जा।

यह भी बड़ा अच्छा शहर है। धर्मशाला है। बड़े२ मंदिर और सुन्दर प्रतिमा हैं। जैनियोंके घर बहुत हैं। रानीवाले सेठ मेवाराम चंपालाल ब्यावरवाले आदि तीन भाई यहांपर रहते हैं। यहांसे एक रेल हापुड़ जाती है, मथुराका हाल ऊपर लिखा है।

(१७१) देहली शहर।

यहांपर छोटी बड़ी रेलवे सभी तरफसे आती जाती है। जहां तहां यात्री जा सकते हैं। देहली शहर एक नामी प्राचीन शहर है। बादशाही समयमें हिन्दुस्थानकी राजधानी रही थी। चारों तरफ कोट व कई दरवाजाओंसे शोभित है। अंग्रेजी राज्यमें भी हिन्दुस्थानकी राजधानीका शहर है। राजाका तख्त यहींपर है। शहर बहुत लम्बा चौड़ा है। यहां करोड़ोंका व्यापार होता है, हर तरहका माल मिलता है. कारीगरीका काम यहांपर बढ़ियासे बढ़िया होता है। सेठका कूचा अनारगलीमें धर्मशाला है, वहांपर

सब बातका आराम है। फिर इसी मुहल्लेमें बड़े२ मंदिर कीमती चैत्यालय हैं। किलाके पास १ मंदिर, धीरज पहाड़ी पर एक मंदिर और भी बहुत जगह मंदिर चैत्यालय हैं। सो किसी जानकार आदमीको साथ लेकर इच्छानुसार दर्शन करना चाहिये। यहां दि० जैनियोंके घर बहुत हैं। बड़े पण्डित धनाढ्य सज्जन रहते हैं। शास्त्रोंकी भाषा और कविता करनेवाले बड़े२ पंडित द्यानतरायादि होगये हैं। बड़ा बाजार, चांदनी चौक, सदरमंडी, हुमायुंका मकबरा, कम्पनीबाग, अजायबघर, जुम्मामसजिद, जनरलबाग, जंगलका मकबरा, काली मसजिद, किला, बादशाही मकान, टंकशाल इत्यादि चीजें देखने योग्य हैं। समंतभद्राश्रम जो करौलबागमें है देख लेना चाहिये। यहांपर दि० जैन महिलाश्रम, अनाथालय, कन्याशाला, पाठशाला आदिका निरीक्षण करें। लौटकर स्टेशन आवे, फिर टिकिटका =) देकर खेखड़ा स्टेशन जावे, देहलीमें ट्राम गाड़ी हर जगह जाती हैं किराया भी कम लगता है। इसीसे शहर घूम लेना चाहिये।

(१७२) खेखड़ा।

स्टेशनपर १ अन्य मतियोंकी धर्मशाला है, ठहरना हो तो ठहर जावे, नहीं तो ।) तांगा करके ४ मीलपर स्टेशनसे सीधा बड़ागांव चला जाय, रास्ता सड़का है।

(१७३) बड़गांव अतिशयक्षेत्र।

हाल ही ९ वर्षोंमें यह नया तीर्थ प्रगट हुआ है, यहांपर १ आदमीको स्वप्न हुआ था। जमीन खोदनेपर ४ धातुकी प्रतिमा निकली। जमीनके खोदनेसे प्रतिमाओंके नीचे महापवित्र रोग-

व्याधिको मेटनेवाला मीठा पानी निकला। वहांपर गहरा कुआ बनवा दिया गया है। १ धर्मशाला है और प्रतिमाओंके साथ २ सिंहासन, छत्र, रकेबी आदि कुछ उपकरण निकले थे। यहांपर भी मेला भरना शुरू होगया है। सामानकी दुकान है, रमणीक जंगल है, यात्री आने जाने रहते हैं, लौटकर फिर स्टेशन आजावे, टिकिट =) से पीछे देहली आजावे। २) का टिकिट लेकर और गाड़ी बदल कर मेरठ चला जाय। किसीको खेखड़ा गांव देखना हो तो देखे। खेखड़ामें २ मन्दिर और बहुत घर दि० जैनियोंके हैं। लौटकर स्टेशन आकर मेरठ चला जाय।

(१७४) मेरठ शहर।

स्टेशनसे १ मील दूर कंपोज दरवाजाके पास केशरगंजमें दि० जैन धर्मशाला है। शहरमें कुल ६ धर्मशाला हैं, चाहे जहां उतर जाना चाहिये। तोपखाना, छावनी सदरबाजार और शहरमें ऐसे ४ मन्दिर हैं, चाहे जितनेका दर्शन करे। यहां दि० जैनियोंकी अच्छी संख्या है। महादेवका मंदिर, महल, सूरजकुंड, बाजार आदि देखना चाहिये। यहांसे १) में तांगा करके हस्तिनागपुर जाना चाहिये। २० मील पड़ता है। बीचमें दो मोहाना पड़ते हैं। एक बड़ा मोहानामें रास्तापर १ दि० जैन धर्मशाला है। जाते-आते ठहरना हो तो ठहर जाय।

(१७५) श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्र।

यहांपर भगवान आदिनाथका प्रथम पारणा राजा सोमसेन श्रीसेणके यहां हुआ था। देवोंने पंचाश्चर्य किये थे। फिर तीर्थंकर, चक्रवर्ती, कामदेव इन तीनों पदोंके धारक शांति, कुंथु, अरहनाथके

गर्भ-जन्म कल्याणक हुए थे । मल्लिनाथ और पार्श्वनाथ भगवानका समोशरण यहांपर आया था । राजा जयकुमार अकंपनादि बड़े२ मोक्षगामी जीव जन्मे थे । यह महान पवित्र पुण्य क्षेत्र है। यहांपर एक बड़ा भारी जंगल है । एक गढ़ और दरवाजा है। भीतर धर्मशाला है । एक मंदिर कुआ है । बाहर एक बगीचा है । एक बंगला है । यहांसे एक मील दूर ४ चबूतरा हैं। चरण पादुका भी हैं। यहांकी यात्रा करके लौटकर टिकट हाथरसका लेवे १।।) लगता है । फिर गाजियाबाद गाड़ी बदलकर हाथरस उतर जावे । यहांसे किसीको आगे-पीछे जाना हो तो छोटी लाईन कानपुर-मथुरा जाती है ।

(१७६) भरवारी ।

स्टेशनसे ग्राम पास है। २ जैनियोंकी दुकान हैं। फिर यहां अलीगढ़, खुर्जा आदि पड़ता है । यहांका हाल ऊपर लिखा है, सो देख लेना चाहिये । हाथरससे टिकिट कानपुरका लेवे, ३।।) लगता है । छोटी बड़ी लाइनका किराया बराबर लगता है। कानपुर उतरे ।

(१७७) कानपुर शहर ।

स्टेशनसे १ मील शहरमें दि० जैन धर्मशाला है, यहांपर कुआ, टट्टी, बाजार पास है। वैद्यराज कन्हैयालालजीका बड़ा भारी दवाखाना है । शहरमें व्यापार बहुत है, कलकत्ता, बम्बई जैसा होता है। यहांपर सब दिशावरका माल आता है, सब देशके मनुष्य आते जाते हैं । यहांपर दि० जैनियोंके घर बहुत हैं । यहांपर मन्दिर ४ बड़े कीमती हैं। यहां कांचका मन्दिर श्वेताम्बर बहुत बड़

है अवश्य देखना चाहिये। यहांसे एक रेलवे झांसी, १ छोटी लाइन मथुरा अचनेरा तक, १ कलकत्ता तक, एक इलाहाबाद। कानपुरसे आनेवाले भाइयोंको इलाहाबादके पहिले भरवारी स्टेशन उतरना चाहिये। टिकिटका दाम १॥) लगता है।

(१७८) भरवारी।

स्टेशनसे ग्राम नजदीक है, २ जैनियोंकी दुकान हैं। फिर यहांसे तांगा करके पफोसा पहाड़ जाना चाहिये। यहांसे सवारी बैलगाड़ी, तांगा की जाती है। १२ मील पड़ता है, पक्की सड़क और कच्ची दोनों हैं।

(१७९) पफोसा पहाड़।

यहांपर जंगलमें १ धर्मशाला, कुआ है, मुनीम भी रहता है। इसके पास पफोसा नामका पहाड़ है। सीढ़ी लगी है, कुछ चढ़ाव है। ऊपर मन्दिर है, पहाड़में गुफाएं हैं, प्राचीन प्रतिमा हैं। छठवें श्री पद्मप्रभु स्वामीका यहांपर तप ज्ञान कल्याणक हुआ था। यह स्थान बड़ा पवित्र और रमणीक है। यहांपर मेला भराता है, यात्री आते जाते रहते हैं। यहांकी यात्रा करके एक जानकार आदमीको साथ लेकर २ मील दूर गढ़वायके मंदिर जाना चाहिये। पहिलेकी यह कौशांबी नगरी है। आज जंगल है! जमना नदी नजदीक वहती है। १ धर्मशाला है, भीतरमें दो मंदिर हैं—१ चतुर्मुख मंदिरमें चतुर्मुख प्रतिमा पद्मप्रभुकी है, एक मंदिर बहुत ही प्राचीन है जिसमें प्राचीन प्रतिमा और चरणपादुका हैं। यात्रा करके स्टेशन भरवारी लौट आना चाहिये। यहांसे फिर टिकट ।~)॥ देकर इलाहाबाद उतर पड़े।

(१८०) इलाहाबाद शहर।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर चौकबाजारमें दि० जैन धर्मशाला है। तांगावाला ≈) सवारी लेता है, वहींपर ठहर जाना चाहिये। पासमें ४ बड़े बड़े मंदिर ३ चैत्यालय हैं। एक मंदिरमें ४ वेदी हैं। प्राचीन श्यामवर्ण प्रतिमा विराजमान हैं। दो मंदिरमें गंधकुटीकी रचना बहुत कीमती और रमणीक है। चैत्यालयमें खड्गासन चन्द्रप्रभु भगवानकी प्रतिमा विराजमान है। शहर बहुत बड़ा है। बाजार देखने योग्य हैं। यहांसे तांगामें प्रयागकी यात्रा करके इलाहाबाद लौट आवे। आगे मोगलसराय जावे। जिसको जिधर जाना हो चला जावे। अब लखनऊकी ओर की यात्रा लिखते हैं। कानपुर से ।॥) टिकटका देकर छोटी लाईनसे लखनऊ आवे। कानपुरमें शहरमें हरवक्त ट्रामगाड़ी स्टेशनको घूमा करती हैं। इसकी सवारीमें आराम बहुत और दाम कम लगता है।

(१८१) लखनऊ।

शहर बहुत लम्बा चौड़ा प्राचीन है। दि० जैन घर बहुत हैं। यहांपर कुल ९ स्टेशन हैं। उनमें एक स्टेशन जंक्शन बहुत बड़ा और रमणीक है। एक बड़ा स्टेशन और है। और पांच स्टेशन छोटे हैं। सबसे बड़ा भारी स्टेशन नौबागका है। यहांसे २ मील दूर चौक बाजार चूड़ीगलीमें धर्मशाला, और एक पंचायती मंदिर बहुत कीमती है। उसमें छह वेदी और हजारों प्रतिमा हैं। एक मंदिर यहांसे नजदीक गलीमें है। फिर थोड़ी दूर फरंगी महलके पास नई सड़कके किनारे एक चैत्यालय है और चौक बाजार, सड़क यहांसे पाव मील ईमामबाड़ा, हुसेनवाड़ा देखनेयोग्य

है। यहां तांगा बहुत खड़े रहते हैं माल सब मिलता है। लख-नऊ सिटीसे १ मील दूर स्वाहागंजमें दि० जैन धर्मशाला, पाठ-शाला है। १ मन्दिर बड़ा भारी हैं, जिसमें ३ वेदी और प्राचीन मनोज्ञ प्रतिमा हैं. छोटी लाइनसे इस बाग स्टेशन है। वहांसे नजदीक डालीगंजमें बड़ा भारी बगीचा है। कुआ, धर्मशाला, मन्दिर, बाजार, नजदीक है। यहां माघ सुदी ९ को प्रतिवर्ष मेला भरता है। उसमें ४ दिन तक यात्रा होती है, श्रीजीका रथ निक-लता है, पूजा आदिका बड़ा आनन्द रहता है। यहांका स्थान बड़ा सुन्दर और हवादार है, यहांसे एक मन्दिर खण्डेलवालका २ मील पड़ता है। यहांार शहरमें जैनियोंकी बहुत बस्ती है। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी यहींके निवासी हैं, जिन्होंने समाजका बड़ा उपकार धर्मो देश द्वारा किया है और अनेक उपयोगी ग्रन्थ लिखे हैं।

यहां गार्ट दरवाजा, तस्वीर घर, घण्टाघर, आसफुद्दौलाका महल, अजायब घर आदि देखना हो तो तांगा किराया करके जावे। आते समय हर जगह तांगा मिलता है। दूसरा तांगा करके चला आवे, ऐसा करनेसे दाम कम लगता है और आकुलता भी नहीं बढ़ती है। लखनऊमें एक और स्टेशन है। दलीलगंज इत्यादि। यहांसे एक रेलवे कानपुर, एक बड़ी लाईन फैजाबाद, अयोध्या, काशी, मोगलसराय जाकर मिलजाती है। अब हम लखनऊसे भटनी लाइनकी यात्रा लिखते हैं। यह रेलवे कानपुरसे लखनऊ, बाराबंकी, गौंड़ा, गोरखपुर, भटनी पारा होती हुई जंवी कटीहार तक चली जाती है। १ गाड़ी बरेली जाती है। एक लाईन सहा-

रनपुर पंजाब तक जाती है। अब यहांसे टिकटका ॥) देकर बिन्दोरा तक लेलेवे। बीचमें बारावंकीमें उतर पड़े।

(१८२) बारावंकी।

शहर अच्छा है। स्टेशनसे १॥ मील पर दि० धर्मशाला ३ मंदिर २ और ६० घर दि० जैनियोंके हैं। यहांसे भी त्रिलोकपुर जाते हैं। पर यहांसे १२ मील पड़ता है। सो तांगा किराया बहुत है। विन्दौरसे ४ मील पड़ता है।

(१८३) बिन्दौर।

यह ग्राम ठीक है। कुछ दि० जैनोंके घर हैं। और एक मंदिर है। यहांसे ४ मील तांगासे त्रिलोकपुर जाना चाहिये।

(१८४) त्रिलोकपुर।

यह १ छोटासा ग्राम है, कुछ घर दि० जैनियोंके हैं, पासमें १ मन्दिर वैष्णवोंका है। धर्मशाला, कुआ, बगीचा है, धर्मशालामें बड़ी दालान है, दालानके पास एक कोटरीमें १॥ हाथ ऊँची बड़ी प्राचीन नेमिनाथकी प्रतिमा है। यह प्रतिमा वैरागी साधुके हाथमें है ! ॥) लेकर दर्शन कराता है। कोठरीमें अन्धेरा रहता है, इससे दीया जलाकर दर्शन करना चाहिये। यहांके दर्शनोंसे आनंद होता है। फिर स्टेशन लौटकर टिकिट ।=) देकर सरजू स्टेशनका ले लेवे। सरयूको लकड़मण्डी स्टेशन भी कहते हैं।

(१८५) सरयू (लकड़मण्डी)।

यहां उतर कर १ मील सरयू नदीके किनारे जाना होता है, फिर टिकिट सरकारी नावका -) लेकर अयोध्या घाटका लेना चाहिये।

(१८६) सरयू नदी घाट।

यहांसे १ रेलवे फैजाबाद जाती है, ६ मीलका =) लगता है। १ रास्ता आध मील अयोध्याजी जाता है।

(१८७) अयोध्या नगरी।

कौशल्या, साकेता, अपराजिता, विदेहा इत्यादि नाम भी हैं, यहां आनेका रास्ता मोगलसराय, लखनऊ बड़ी लाइनसे है। एक मोगलसराय बनारससे लखनऊ आते समय अयोध्या पडती है। पहिले अयोध्या पड़ती है सो अयोध्याकी यात्रा करे। बादको फैजाबाद। आगे सोहाबल जाना चाहिये। और लखनऊसे आनेवालोंको सोहाबलकी यात्रा करके पीछे फैजाबाद अयोध्या जाना चाहिये। दूसरा रास्ता लखनऊ बाराबकीसे सरजू उतरकर नावसे अयोध्या घाट उतर कर अयोध्या जाना चाहिये। तीसरा रास्ता मनकापुरसे आनेवाले अयोध्या घाट उतर कर अयोध्याकी यात्रा करें। फिर फैजाबाद सोहावल जाना चाहिये फैजाबाद भी उतरकर =) सवारीमें अयोध्या जाना होता है। अयोध्या स्टेशन उतरकर =) सवारीमें दि० जैन धर्मशालामें आना चाहिये। अयोध्या नगरी जिनागमके अनुसार अनादि कालसे अनंतानत तीर्थंकरोंकी उत्पन्न करनेवाली पवित्र भूमि है। परन्तु इस हुंडावसर्पिणीके प्रभावसे हालमें अयोध्यामें ऋषभादि पांच तीर्थंकर और राम लक्ष्मणने ही जन्म धारण किया। भरत आदि चक्रवर्तीयोंकी भी यही मातृभूमि है। अनादि कालसे यही रीति है २४ चौवीस तीर्थंकर अयोध्यामें जन्मे और सम्मेदशिखरसे मोक्ष गये, पर इस कलिकालके चक्रसे भगवानोंका अन्य२ स्थानमें जन्म हुआ। अन्य१ स्थानसे मोक्ष गये।

यह शहर हालमें बड़ा है, मगर पुराना है । एक धर्मशाला कुल ७ मंदिर और देहरिया चरण पादुका हैं । वैष्णवोंके राम लक्ष्मणके सैकड़ों मंदिर हैं । उनमें बहुत मंदिर देखनेके काबिल हैं । यहां लाल बंदर बहुत हैं । हरएक समानको उठाकर लेजाने और नुकसान करदेने हैं । इसलिये सामान संभालकर रखना चाहिये । कोई लोग बंदरोंको चना, जलेबी आदि खिलाते हैं । यात्रियोंकी इच्छा हो तो कुछ खिला देना चाहिये । यहांकी यात्रा करके ≈) सवारीमें फैजाबाद शहर देखना हुआ स्टेशनपर आजाय । अयोध्यासे फैजाबादका ।-) लगता है और फैजाबाद देखनेको भी नहीं मिलता है । इसलिये तांगासे आना चाहिये ।

(१८८) फैजाबाद ।

स्टेशन बड़ा भारी है । अयोध्या, बनारस, मुगलसरायको रेल जाती है । १ मोहावल, लखनउ, प्रयाग, इलाहाबाद जाती है टिकट १।।।) है ।

(१८९) प्रयाग ।

स्टेशनसे ३ मील दूर है, ।।) सवारीमें तांगावाला ले जाता है । यहांपर १ किला है, भीतर जमीनमें भोहरा है, भोंहरामें बड़ी मूर्तियां शैव लोगोंकी हैं । एक आलेमें २ प्राचीन प्रतिमा आदीश्वर भगवानकी हैं । एक वड़वृक्ष है, जिसको प्रयाग वरवृक्ष कहते हैं । इसी स्थानपर भगवान ऋषभदेवका तप-कल्याणक हुआ था । इसलिये यह स्थान परमपवित्र तीर्थराज कहाया है । किला बहुत बड़ा है, बहुतसी चीजें हैं । सो एक आदमी साथ लेकर सब देखना चाहिये । किलेके बाहर गङ्गा, जमना, सरस्वती ये तीन नदियां

हैं। यहांपर हजारों अन्यमती यात्री दान स्नान तर्पणादिक करने आते हैं। फिर यहांसे ।।) सवारीमें इक्का करके इलाहाबाद आना चाहिये। यहांपर अनेक ब्राह्मण पण्डे हैं उनसे बचना चाहिये। इलाहाबादमें जैनियोंके २० घर ४ मन्दिर और ३ चैत्यालय है। यहांका दर्शन करके चाहे जिस तरफ चला जावे। फैजाबादसे १ मील स्टेशन पड़ता है। शहर बादशाही समयका देखने काबिल हैं। बाजार अच्छा है। १ दि० जैन मन्दिर और कुछ घर जैनियोंके हैं। यहांसे अयोध्या आदि जानेको तांगा सस्ता मिलता है, फिर स्टेशन आवे। ≡) देकर लखनऊ लेनमें सोहावल उतर पड़े।

(१२०) अयोध्या स्टेशन।

स्टेशनपर १ धर्मशाला है, फिर यहांसे =) सवारीमें बैल-गाड़ी, हाथगाड़ीसे दि० जैन धर्मशालामें जाना चाहिये। १॥ मीलके करीब पड़ती है। यहांपर ब्राह्मण पण्डा बहुत रहते हैं। सो यात्रियोंको 'हम जैन हैं' कह देना चाहिये। अयोध्याजीकी यात्रा करके फिर स्टेशन आवे। वहींसे एक रेल बनारस, मोगलसराय जाती है। एक फैजाबाद, सोहावल लखनऊ जाती है। यहांसे टिकटका ।) देकर सोहावलका लेवें। और लखनऊका १।।।) लगता है। बनारसका २) और मोगलसरायका २=) है। फैजाबादसे प्रयागका १॥=) टिकट, इलाहाबादका १।।।) टिकट किराया लगता है।

(१२१) सोहावल।

स्टेशनसे १ मील उत्तर दिशामें सड़क है। एक मील कच्चा रास्ता है। सो पूछकर नौराई जावे।

(१९२) नौराई (रत्नपुरी)

यहांपर एक श्वेताम्बरी दिगम्बरी सामिल धर्मशाला है। धर्मशालामें २ मंदिर श्वेताम्बरी हैं। फिर यहां ठहरकर एक आदमीको साथ लेकर ग्राममें चला जावे। ग्राममें ३ मंदिर दिगम्बरियोंका है सो दर्शन करके लौट आवे। धर्मनाथ तीर्थंकरका इसी नगरीमें गर्भ जन्म हुआ था। देखो कालकी कुटिलता कि आज श्वेताम्बर भाई हैं। दिगम्बरियोंका तीर्थ जिसपर कुछ भी इंतजाम नहीं है। इस क्षेत्रका दर्शन ही करोड़ों भवका पाप दूर करता है। लौटकर स्टेशन आजावे। किसीको घर जाना हो तो चला जाय। सोहावलसे ।) का टिकट खरीद कर अयोध्या घाट आवे। अयोध्या घाट उतर कर -) नावका देकर सरजू किनारे उतर जावे। फिर १ मीलपर लकड़मंडी स्टेशन चला जावे। टिकटका ।=) देकर गौंड़ा जंकशन उतर पड़े।

(१९३) गौंडा जंकशन।

यह शहर बड़ा भारी देखने योग्य है। प्राचीन मंदिर और दि० जैन घर बहुत हैं। यहांपर शक्कर गुड़का कारखाना बहुत है। साटा-ऊखका रस पीने सस्ता मिलता है, यहांपर हजारों मन गुड़, सक्कर बनकर दिशावरोंको जाता है। फिर लौटकर स्टेशन आजावे टिकिट किराया ||) देकर बलरामपुरका ले लेना चाहिये। गौंड़ासे ये ही लाइन बलरामपुर होकर गोरखपुर जाती है, एक गौड़ासे नैपालपुर जाती है। १ लखनऊ तक जाती है।

(१९४) बलरामपुर।

यह ग्राम राजा सा० का ठीक है। जैन लोग कुछ नहीं हैं।

स्टेशनसे १ मील ग्राम है। वैष्णवोंकी धर्मशाला है। यहांपर १ छत्री, २ तालाव, १ बाग, राजमहल देखने योग्य है। यहांसे तांगाभाड़ा करके गांवसे पश्चिमकी तरफ १० मीलपर सेटमेट क्षेत्र जाना चाहिये।

(१९५) श्री सेटमेटक्षेत्र।

सड़ककी उत्तरकी तरफ जंगल है। जंगलके आगे १ छोटासा ग्राम है। कुआ भी है। यहां एक बौद्धोंका आदमी नौकर रहता है। बौद्धोंके साधु भी रहते हैं। उनके मकान भी हैं। यहांपर जाना चाहिये। फिर यहां १ मील जंगलमें एक आदमीको साथ लेकर सौमनाथके मंदिर जाना चाहिये। यहांपर पहिले कच्चा मंदिर था। उसमें प्राचीन प्रतिमा थी, सो लखनऊ लायब्रेरीमें लेगये! अब कुछ नहीं है। मंदिर गिर गया है। अब भी कोसों तक मकानोंके खण्डहर है जैन-बौद्ध दोनों इस क्षेत्रको मानते हैं। मगर जैनियोंकी दशा देखकर बड़ा दुःख होता है। ऐसा पवित्र क्षेत्र इन जैनियोंने छोड़ दिया। यहांपर प्रतिवर्ष केवल जैन २-४ ही आते होंगे! पर बौद्धोंने यहांका प्रबंध कर रक्खा है। जैनियोंका नाम निशान भी नहीं है। यह वही नगरी है जहांपर संभवनाथके गर्भ-जन्म, तप ये तीन कल्याणक हुए थे।

इसका नाम श्रावस्ती नगरी है। अभी सेटमेट नामसे प्रसिद्ध है। यहांपर ब्रह्म, चीन बौद्ध आकर रहते हैं। ब्रह्मकी धर्मशाला पूछ लेना चाहिये। यहांपर ग्रामके थोड़ी दूर बौद्ध लोगोंके खंडहर, कुंड, चबूतरा, और चरण पादुका हैं। सो आने-जाने समय देख लेना चाहिये। इस महानपुरीका दर्शन करके जन्म पवित्र कर लेना

चाहिये । इस पवित्र क्षेत्रपर मन पवित्र रहता है । यहां बैठकर संभवनाथका ध्यान, स्मरण पूजा बड़े शुद्ध भावोंसे करना चाहिये । लौटकर बलरामपुर आना चाहिये । फिर १।।) देकर गोरखपुर उतरना चाहिये । जाने आनेमें सेटमेटका भाड़ा ३) लगता है ।

(१९६) गोरखपुर ।

यह शहर अच्छा है । यहांपर अन्यमतियोंका गोरखनाथका बड़ा प्राचीन मंदिर है लोग आते जाते हैं । स्टेशनसे १ मील दि० जैन धर्मशाला है । और मंदिर भी है । यहांका दर्शन करके फिर तांगा किराया करके २ मील शहरमें बाबू अभिनंदनप्रसादजीके मकानपर जावे । आप बड़े सज्जन धर्मात्मा पुरुष हैं । गोरखपुरके नामी हाकिम हैं, वहांपर चैत्यालय है । उसका दर्शन करें । एक मकानमें जमीनसे निकली हुई ३ प्रतिमा वैष्णवोंकी हैं, सो देखकर लौट आवे । फिर यहांसे टिकट ।।=) देकर नैनखार स्टेशनका लेलेना चाहिये । गोरखपुरसे १ रेलवे गोंड़ा, १ भटनी, १ लखनऊ, १ दूसरी लाईन जाती है ।

(१९७) नौनखार ।

स्टेशनसे किसी एक जानकार आदमीको साथ लेकर ३ मील जंगलमें खुकुन्दा ग्रामके दक्षिण तरफ कोटसे घिरा हुआ १ धर्म-शाला १ मंदिर, कुआ, चौपट जंगल मैदान है । यहांपर ३ मंदिर प्राचीन हैं । चरणपादुका है इसका पुजारी ग्राममें रहता है । ग्राम छोटासा है । मंदिर नजदीक है । बड़ा खेद है कि यहां भी जैनी नहीं आते हैं । कुछ इंतजाम नहीं है । गोरखपुरकी पंचा-यतीकी तरफसे यहांपर पुजारी रहता है । भाईयो ! यहकी पुष्प-

दंतका गर्भ–जन्म–तप कल्याणका पवित्र स्थान है। इसका नाम किष्कंदापुरी है। यहांपर भी शांत भावोंसे पुष्पदंतका गुणानुवाद करना चाहिये। स्टेशन ऊपर टिकटका ≈) देकर भटनीका टिकिट ले लेना चाहिये।

(१९८) भटनी जंकशन।

यह स्टेशन बड़ा भारी है। ग्राम १ मील दूर है। शहरमें जैन मंदिर और जैनिओंके घर बहुत हैं। शहर व्यापारमें कानपुर सरीखा है। ग्राममें जाकर अतिशय क्षेत्र कहावा गांव जानेके लिये किसीको पूछकर टीक कर लेना चाहिये। भटनी जंकशनसे रेलवे १ लखनऊ, कानपुर तक। १ कटीहार तक। १ लेन बनारस जाकर मिलती है। इसी बनारस लाईनमें भटनीसे ≈) देकर सलीमपुरका टिकट ले लेना चाहिये।

(१९९) सलीमपुर।

स्टेशनसे किसी आदमीको साथ लेकर २ मील पूर्वकी तरफ कहावा गांव जावे। यह स्थान लट्टाका दर्शनके नामसे प्रसिद्ध है।

(२००) श्री कहावागांव अतिशयक्षेत्र।

भटनी आदिमें भी " लट्टाका दर्शन " इस नामके पूछनेसे जल्दी पता लगता है। कहावा गांव एक छोटा ग्राम है। ग्रामसे दक्षिणकी तरफ भटनीसे भी दक्षिणकी तरफ थोड़ी दूर जंगलमें एक प्राचीन मानस्तंभ, उसके नीचे ऊपर ६ प्रतिमा मनोहर, और कनाड़ी भाषाका बड़ा शिलालेख है। यहांका दर्शन करके बड़ा आनन्द होता है; स्तम्भको देखकर यह सिद्ध होता है कि पहिले यहांपर बहुत बड़ा मंदिर था। किसीने नष्ट भ्रष्ट कर दिया है।

अब केवल १० हाथ ऊँचा मानस्तंभ रह गया है। यहांकी यात्रा करके स्टेशन लौट आना चाहिये। फिर बनारसकी तरफ जानेसे पहिले टिकट कादीपुरका १।।) देकर लेलेना चाहिये।

(२०१) चन्द्रपुरी।

सामान स्टेशनपर छोड़कर किसी एक आदमीको साथ लेकर ४ मील दूर पूर्वकी तरफ चन्द्रपुरी जाना चाहिये। चंद्रपुरीको चंद्रावटी कहते हैं। २ मील पक्की, और २ मील कच्ची सड़क है। बनारससे मोटर भी १) सवारीमें चन्द्रपुरी आती है। १४ मील पडता है। रेलसे १९ मील और भाड़ा भी ≈) लगता है। चाहे जिस रास्ते आना जाना चाहिये। मोटरमें पैदल नहीं चलना पड़ता है। रेलमें बहुत पैदल चलना होता है। इससे मोटरसे ही यात्रा करना योग्य है। यहांपर चंद्रप्रभुका जन्म हुआ था। यह ग्राम छोटासा है। ग्राममें पुजारी माली रहता है, ग्रामसे थोड़ी दूर गंगाजी वहती है, उसके किनारे दिगम्बरी-श्वेतांबरी दो धर्मशाला और २ मन्दिर हैं। इस क्षेत्रपर चन्द्रप्रभुकी आराधना करना चाहिये। फिर कुछ दान मन्दिरको देवें कुछ इनाम पुजारी, मालीको भी देवें। फिर लौटकर स्टेशनपर आवे। यह मन्दिर आरा निवासी बाबू देवकुमारजीका बनवाया है, बड़ा ही मनोहर है। २ चरण-पादुका और ९ प्रतिबिम्ब हैं, भण्डार पुजारीको दे देना चाहिये। ≈) का टिकिट लेकर सारनाथ उतरें।

(२०२) सारनाथ।

यहां भी बनारससे रेल मोटरमें आते जाते हैं, स्टेशनसे १।। मील दूर धर्मशाला-मन्दिर है। मन्दिरके पीछे जमीनसे निकली

हुई मूर्तियां रखी हैं। सब दर्शन पूजन करना चाहिये। भंडार देना चाहिये। इस स्थानपर श्रेयांसनाथके गर्भ-जन्म-तप तीनों कल्याणक हुए थे। सिंहपुरी है। लौटकर स्टेशन आवे, टिकटका -) देकर काशीका टिकट ले लेवे। और काशी अलईयपुर उतर पड़े। वहांसे तांगा करके बिहारीलाल धर्मशाला भेदागनीमें जावे।

(२०३) काशी बनारस क्षेत्र।

यहांपर तीन स्टेशन हैं। १ राजघाट, बनारस केन्ट, काशी शहर। यहांसे १ रेल भटनी, १ मोगलसराय, १ लखनऊ तक जाती है। काशी शहरकी स्टेशन उतरना चाहिये, और =) सवारीमें तांगा बिहारीलालजी धर्मशाला भेदागनीमें पहुंचा देता है। यहीं कुआ, नल, टट्टी, मंदिर, बाजारका सुभीता है। यहांसे मंदिर-बाजार पास हैं इसलिये यहींपर ठहरना चाहिये। स्टेशन भी पास है, सब बातका आराम है। भेदुपुरमें भी धर्मशाला है। यहां भी जंगल कुआ आदि सबका आराम है। यहांपर दो मंदिर और ८ वेदी हैं। प्रतिमा बहुत मनोज्ञ हैं। मंदिर सब ही कीमती हैं। यहांपर श्वेतांबर मंदिर व चरणपादुका, छत्री है। एक श्वेतांबरी दिगम्बरी मंदिर सामिल है।

भदैनीघाटपर श्री स्या० महाविद्यालय है। धर्मशालाभी पाठशाला है। इससे ठहरनेमें तकलीफ रहती है। पासमें गंगाजी वहती है, शोभा भी अपार है। भदैनीमें ३ मंदिर हैं। २ पाठशालामें, १ कुछ दूर है। यह स्थान दानी श्री० ब० देवकुमारजीका है। जहांपर इच्छा हो वहांपर ठहरना चाहिये। भेदागिनीमें बहुत सुभीता रहता है। फिर किसी आदमीको साथ लेकर शहरकी

वंदनाको जावे। पूर्वोक्त मंदिरोंके सिवाय १ पंचायती बहुत बड़ा मंदिर है। उसमें स्फटिक मूङ्गाकी प्रतिमा है। एक उदयराज खड्गराजका चैत्यालय दालकी मण्डीमें है। इसमें भी १ स्फटिकमणिकी बड़ी प्रतिमा है, एक भाटके मुहल्लेमें जौहरीका चैत्यालय है, उसमें श्री पार्श्वनाथकी हीरेकी प्रतिमा है। इसका दर्शन ८ बजे सुबह ही होता है, जल्दी जाना चाहिये। विश्वनाथका मंदिर सोना चांदीकी जड़ाईका है। इसके सिवाय वैष्णवोंके हजारों मंदिर हैं। गंगाके घाटपरके मकान, भैरवनाथ, दुर्गाका मंदिर, औरंगजेबकी मसजिद, राजाओंके ठहरनेके मकान, अस्सी संगम, अगस्त अमृत और नाग ये तीन कुण्ड, हिन्दू विश्वविद्यालय, मान मंदिर इत्यादि देखना चाहिये। यहांपर जैनियोंके २९ घर हैं। भदैनी घाटपर तो श्री सुपार्श्वनाथ और भेलूपुरमें पार्श्वनाथके गर्भ-जन्म-तप ये तीन कल्याणक हुए हैं। यहांपर महापुरुषोंने जन्म लिया था। हिन्दू लोग भी इसको महा तीर्थ मानते हैं। यह विद्याका भी केन्द्र है। बड़े२ विद्वान् पढ़कर यहांसे जाते हैं, एक हिन्दू विश्वविद्यालय है। उसमें कई हजार विद्यार्थी पढ़ते हैं। स्याद्वाद वि०को देखकर उसमें अच्छी सहायता देना चाहिये। यह संस्था विद्वानोंको उत्पन्न करनेवाली है। विद्यादान समान दूसरा दान नहीं है। फिर कुछ खरीदना हो तो खरीद लेना चाहिये। यहांपर सोने चांदीका हाथका काम बहुत अच्छा और कीमती होता है। यहांके मकान भी कीमती हैं। साहूकारोंका व्यापार बाजारमें नहीं होता है, घर ही घरमें होता [illegible] ठठेरी बाजारमें हरतरहके बर्तन मिलते हैं। यहांकी यात्रा करके [illegible] अगर किसीको आगे चंद्रपुरी, सिंहपुरी, भटनी,

अयोध्या, फैजाबाद, लखनऊ, मोगलसराय आदि जाना हो, उधर चला जावे। इनका हाल ऊपर लिखा है सो देख लेना चाहिये। काशीसे मोगलसराय =) देकर जाना चाहिये। मोगलसराय गाड़ी बदलकर २) टिकटका देकर आरा जाना चाहिये।

(२०३) मोगलसराय।

यहांसे १ गाड़ी लखनऊ, १ सहारनपुर, १ आरा पटना होकर कलकत्ता तक जाती है। इलाहाबाद होकर जबलपुर जाती है। रफीगंज गया होकर शिखरजी जाती है। आरा पटना वाली गाड़ी मधुपुर बदलकर गिरेडी जाती है। फिर शिखरजी जाती है। गया होकर भी सीधी शिखरजी जाती है।

(२०४) आरा।

स्टेशनसे १ मील =) सवारीमें तांगा शहरमें जाता है। सो बा० हरप्रसादजी जैनकी धर्मशालामें उतर जाना चाहिये। इसी धर्मशालामें १ चैत्यालय और शिखरजीके पहाड़की रचना है। १ प्रतिमा स्वर्ण, २ चांदी, १ स्फटिकमणिकी है। फिर किसी जानकार आदमीको साथ लेकर शहरके चरियार मंदिरोंकी वंदना करे। मंदिर और चैत्यालयोंकी संख्या ३४ है। इनमें रंगरकी प्रतिमा विराजमान हैं। जैनसिद्धांतभवन भी है। फिर शहरके बाहर २ मीलकी दूरीपर २ नसियां हैं। वहांका दर्शन करे। धनूपुरामें पं० चन्दाबाई द्वारा संवर्द्धित जैनबालाविश्राम है। उसको देखना चाहिये व कुछ सहायता भी देनी चाहिये। फिर लौटकर शहरमें आवे। बाबू निर्मलकुमारजी, बा० चक्रेश्वरकुमारजी व ब्र० धरणेन्द्रकुमारजी यहीं रहते हैं। यहांपर जैन अग्रवालोंकी संख्या ८०के अंदाजा होगी।

गुड़ यहांका प्रसिद्ध है। लौटकर स्टेशन आवे। फिर ॥=) देकर पटना गुलजारबागका टिकट लेवे।

(२०५) पटना-गुलजारबाग।

स्टेशनके पास १ दि० जैन धर्मशाला है। १ मंदिर और पासमें ही सेठ सुदर्शनका मोक्षस्थान है। वहांपर चरणपादुका भी हैं। यहांकी पूजा करके शहरमें जाना चाहिये। शहर प्राचीन बहुत लंबा चौड़ा है। कारीगरीका काम बहुत होता है। शहरमें कुल पांच मंदिर हैं। १ तमोली गली, २ कचौड़ी गली, ३ बूढ़ाबाबा, ४ गरुड़ा ऊपर, ५ बाजारमें है। सबका दर्शन करना चाहिये। लौटते समय बाजार देखता हुआ गुलजार बाग आजावे। १ पटना सिटी, २ गुलजार बाग, ३ बांकीपुर (पटना जंकशन), ४ सोहनपुर। नदीके उत्तर पार ये ४ स्टेशन पटनामें हैं। सोहनपुरसे १ गाड़ी हाजीपुर होकर कटीहार जंकशन जाकर मिलती है। इधर भी मिथिलापुरी, आसाम, नैपाल, कैलाश पर्वतकी यात्रा है। इसका वर्णन आगे करेंगे। पटनासे टिकट विहार शहरका लेलेवे। ॥|) लगता है। बीचमें बखित्यारपुर गाड़ी बदलकर विहार उतर पड़े। १ गाड़ी यहांसे आरा-आगरा जाती है। एक गयाजी जाती है।

(२०६) विहार शहर।

स्टेशनसे नजदीक १ गलीमें दि० जैन धर्मशाला और मंदिर है। फिर मालीको साथ लेकर १ मील दूरी शहरमें दि० श्वे० दोनोंकी शामिल धर्मशाला है। वहां भी दोनोंके शामिल मंदिर हैं। ३ प्रतिमा महा मनोहर हैं। यहांका दर्शन करना चाहिये। यहांसे पावापुर जाना चाहिये। तांगा, मोटर, बैलगाड़ी आदि भाड़े करके

१० मील पावापुर चला जावे। फिर पावापुरसे लौटकर विहार जावे। विहारसे एक रुपया सवारीमें नवादा तक हमेशा मोटर, तांगा जाते हैं। बीचमें पावापुरजी पड़ता है, ||) सवारी लगता है।

(२०७) सिद्धक्षेत्र पावापुर।

श्री महावीरस्वामीका यहांपर निर्वाण कल्याणक हुआ था। पद्म सरोवरके बीचसे कार्तिक वदी ३०को पिछली रात्रिके २ घडी रहनेपर ७२ मुनियों सहित भगवान मोक्ष पधार गये। तालावमें बड़ा भारी मंदिर और चरणपादुका है। वहांका दर्शन करनेमे ऐसा मालूम होता है कि मानों साक्षात् मोक्षशाली ही है। पानी और फूले हुए कमलोंसे सरोवर सदा प्रफुल्लित रहता है। कार्तिक वदी अमावस्याके दिन यहा बड़ा भारी मेला भरता है। यहांपर दि० श्वे० २-३ बड़ी २ धर्मशाला हैं। कुल ऊपर नीचे ८ मंदिर हैं। बगीचा और कुआ है। थोड़ी दूर पावापुर ग्राम है। यहांपर एक दोनोंकी शामिल धर्मशाला है। १ मंदिर दिगम्बरी है। १ श्वे० भी है। यहांका दर्शन करके जानेके तीन रास्ते हैं—१ गुणावा होकर नवादा जाती है। १ मील दूर गाड़ीका रास्ता कुण्डलपुर जाता है। चाहे जिधरसे चला जावे। अब हम विहारसे कुंडलपुरका वर्णन करते हैं।

(२०८) वड़ग्राम रोड़

स्टेशनसे १ मील ग्राम है। रास्ता सड़कका है। ग्रामसे उत्तरकी तरफ १ मील ऊपर कुंडलपुर ग्राम है। यहांपर एक धर्मशाला और १ मंदिर है। वहांपर सामान रखकर १ आदमीको साथ लेकर जमीनकी खुदाई देखने जाना चाहिये। जमीन खोद-

नेसे कुंडलपुर ग्राम निकला है। जिसमें बड़े२ मकान, कुआ, बौद्धमतियोंके मंदिर बहुत मूर्तियां निकली हैं। इससे निश्चय होता है कि यह बड़ी भारी नगरी थी। सो नगरी दब गई है। जैन शास्त्रकी आज्ञा प्रमाण है। फिर लौटकर मंदिरजीको आवे। फिर ग्रामसे उत्तरकी तरफ आध मील ऊपर धर्मशाला है। यहांपर १ धर्मशाला १ मंदिर है। दर्शन करके स्टेशन आजावे। यहांसे १ रास्ता विहारको व १ रास्ता पावापुरीको जाता है। कच्चा-पक्का रास्ता है। ८-८ मील दोनों ग्राम पड़ते हैं। किसीको घर जाना हो तो चला जावे। नहीं तो वापिस बड़गांव रोड आवे। टिकट ॥=) देकर राजगृहीका ले लेवे।

(२८९) राजगृही अतिशयक्षेत्र।

प्यारे सज्जनो! यह वही पवित्र भूमि है जिसपर जगसिंधु, धन्यकुमार, शालीभद्र, सुकुमाल, मुनिसुव्रत आदि महान पुरुषने जन्म धारण किया था। इसका नाम कुशाग्रनगर भी है। सुभद्रा चेलना आदि महासती यहींपर हुई थीं। पांचों पहाड़ोंपर २३ तीर्थंकरोंका समवशरण आया, वर्द्धमान स्वामीका तो कई वार आया। यहांपर जाना-आना और वंदनाका चक्र १८ मीलका पड़ता है। कुल पांच पहाड़ हैं। १ विपुलाचल, २ वैभारगिरि, ३ सोनागिर, ४ उदयगिर, ५ रत्नागिर ये पांच पहाड़ हैं। इन पहाड़ोंपर कुल १८ मंदिर हैं। जिसमें वैभारगिरपर बहुत मंदिर हैं। मंदिरके दक्षिण तरफ एक प्राचीन मंदिर, एक प्राचीन गढ़ व मोहरा है। इसका पता लगाकर दर्शन करना चाहिये। सब पहाड़ोंसे अधिक इस पहाड़पर बहुत मंदिर हैं। बहुत प्राचीन चरण पादुका हैं।

विपुलाचल पर्वतपर ७ मंदिर हैं। खोज२ कर शांतभावसे दर्शन करना चाहिये।

वैभारगिरिपर श्रेणिक गुफा है। पहाड़ ऊपर थोड़ी दूर भद्रकुमार शालिभद्रका छोटासा मंदिर व श्रेणिककी गुफा ऊपर है। सबकी पूजा वंदना करें। इन पहाड़ोंसे कोई२ मुनि स्वर्ग भी गये हैं। २ मुनि मोक्ष भी गये हैं। ऐसा शास्त्रोंमें लेख है। इसलिये जैनियोंका तो पूज्यस्थान, अतिशयक्षेत्र सिद्धक्षेत्र और महावीर तीर्थराज भी है। पहाड़के नीचे वैष्णवोंके बड़े मंदिर, नदी व कुंड हैं। सो सब मतके लोग वंदनाको आते हैं। थोड़ी दूर एक मुसलमानकी कबर है। वहांपर मुसलमान भी आते जाते हैं। कुंडोंमें पानी बहुत गरम, थोड़ा गरम, बहुत ठंडा तीनों तरहका रहता है। इनमें स्नान करनेसे रोग, व्याधि, शरीरमल, परिश्रम नष्ट होजाते हैं। इसलिये इस क्षेत्र, कुंडोंकी महिमा जगतमें प्रसिद्ध है। स्टेशनके पास राजगृही नगर ठीक है। पहिले बहुत प्रसिद्ध नगरी थी। सो अब बिल्कुल छोटी रह गई है। यहांपर २ दि० धर्मशाला, २ कुआ, मंदिर, मैदानका सुभीता है। एक मंदिर देहलीवाले भाईका और एक गिरीडीवालेका बहुत बढ़िया बनाया हुआ है। इसके आगे एक श्वे० धर्मशाला व श्वे० मंदिर है। श्वेताम्बरीय मंदिरमें २ प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। सबका दर्शन करके स्टेशन लौट आवे। यहां मेला भी बड़ा भारी भरता है। टिकटका १) देकर रेलसे विहार आवे। दूसरे बैलगाड़ीके रास्तेसे पावापुरी, गुणावा, नवादा, कुंडलपुर भी आना-जाना होता है। यह रास्ता यात्रियोंके सुभीतेपर निर्भर है। इनका ऊपर उल्लेख

कर दिया है । बिहार लौटकर रेलसे आनेसे फिर मोटर, तांगासे नवादा तक जासकते हैं । बीचमें पावापुरी–नवादा पड़ता है ।

(२१०) सिद्धक्षेत्र गुणावाजी ।

पावापुर, राजगृही, कुंडलपुर, बिहारके आते-जाते समय बीचमें यह तीर्थराज पड़ता है । यहां १ श्वेताम्बर, १ दिगम्बर दोनों धर्मशाला हैं । दोनों मंदिर हैं । दोनों कारखाना हैं । यहांसे श्री गौतम गणधर भगवान मोक्ष पधारे थे । चरणपादुका और प्रतिमा है । यहांसे दर्शन करके नवादा आवे । और नवादासे आनेवाले यहांकी यात्रा करके पावापुर आदि आगे जायं ।

(२११) नवादा शहर ।

यह नवादा किऊल गयाके बीचमें पड़ता है । यहांसे एक रेल गयाजी जाकर मिलती है । एक रेल किऊल-लक्खीसराय होकर भागलपुर नाथनगर होकर लूप लाईनसे वर्द्धमान होती हुई कलकत्ता जाती है । गयाका हाल आगे लिखता हूं । पीछे नाथ-नगरका । पहिलेसे ही पुस्तकको ध्यानसे पढ़कर विचारकर जिधर जाना हो उधर चला जाय । हर जगह पूछना चाहिये ।

(२१२) गया ।

चाहे जिधरसे आनेवाले भाई मोगलसराय गाड़ी बदलकर बीचमें चंद्रवती नदीको देखता हुआ रफीगंज होकर गया आना चाहिये ।

(२१३) रफीगंज ।

स्टेशनसे नजदीक १ कस्बा है । २० घर दि० जैनियोंके हैं । एक मंदिर और प्राचीन प्रतिमा, १ पाठशाला है । यहांसे गयाका किराया ।।) लगता है । पटनासे भी सीधा गया आसकते

हैं। टिकट १।।) लगता है। लूप लाईन कलकत्ता, दिल्ली, कालका लाईनसे किऊल (लक्खीसराय) गाड़ी बदलकर नवादा होकर पटना तककी यात्रा करके पटनासे गया आजावे। या नवादासे गया आजावे। एक रेल आसनशोल बनारस लाईनमें गोमोह, ईसरी, हजारीबाग होती हुई गया आती है। चाहे जिधरसे आने जाते समय गयाजी उतर जावे। गयाजी हिन्दुओंका बड़ा भारी तीर्थ है। हजारों लोग यहांपर रातदिन आते-जाते रहते हैं। रेलगाड़ी स्टेशन धर्मशालामें बड़ी भीड़ रहती है। कभी२ इतनी भीड़ रहती है कि गाड़ी चूक जाती है। टिकट नहीं मिलती है। सो कुछ खर्च करके टिकट खरीद लेना चाहिये। स्टेशन पर वैष्णवोंकी बड़ी भारी धर्मशाला है। नदीके किनारे चौक बाजारमें दि० जैन धर्मशाला है। वहींपर २ दि० जैन मंदिर और प्राचीन तथा नवीन बहुत प्रतिमा हैं। अंदाजा ६० घर दि० जैन, १ पाठशाला, कन्याशाला है। फिर शहरमें १ मील दूर बहुत बढ़िया १ मंदिर है। यहां भी १ धर्मशाला है। स्टेशनसे दोनों मंदिर, धर्मशाला बराबर पड़ते हैं। शहरमें ही जाकर ठहरना चाहिये। शहरमें हजारों मंदिर वैष्णवोंके हैं। बाजार, मूर्ति, फल्गु नदी बहती है। नदीमें पिंड दान करते हैं। नदीके किनारे घाट, मंदिर इत्यादि चीजें देखना चाहिये। फिर यहांसे मोटर या तांगा करके तीर्थराज कुलुहा पहाड़पर जाना चाहिये। गयाजीमें सेठ रिषभदास, सेठ केशरीमल लल्लूमल सेठी सज्जन पुरुष हैं।

(२१४) अतिशयक्षेत्र कुलुहा पहाड़।

गयाजीसे ३८ मील दूर कुलुहा पहाड़ है जो इस देशमें प्रसिद्ध

पहाड़ है। गयासे जीदापुर ढोबीग्राम तक पक्की सड़क है। ढोबी ग्राम तकसे बांई तरफ रास्ता मुड़कर ९ मीलपर हटरगंज थाना है। यहांतक मोटर तांगा आते-जाते हैं। आगे बीचमें फल्गु-नीलांजना दो नदी उतरना पड़ती है। तांगावाला यहींपर ठहर जाता है। यहांसे ६ मील दूरीपर हतवरिया ग्राम पड़ता है। वहांतक मोटर, तांगा ज्याद: किराया देनेसे चले जाते हैं। रास्ता अच्छा है। नदी भी गहरी नहीं है। कभी नदी नहीं उतरनेपर नदीके उसी तरफ हटीरगंज तक तांगा अच्छी तरह आता है। हटरगंजमें बहुत तांगे हर समय मिलते हैं। नदीसे सिर्फ २ मील दूर हतवरिया ग्राम है। यहां बाबू बद्रीनाथ जोहरी कलकत्तावालोंकी कच्ची धर्मशाला है। एक आदमी रहता है। यहांसे आध मील पहाड़की तलेटी है। नीचे कुआ और बगीचा अच्छा है। एक मकान भी है। यह पहाड़ पहले जैनके नामसे प्रसिद्ध था। पहाड़पर एक जिन शासन-देवी थी, उसमें विराजमान करके उसको कुलेश्वरीके नामसे प्रसिद्ध करदी। पहाड़का नाम भी कुलुहा कहने लगे। और हजारों पापी जीव वरदानकी इच्छासे बोल-कबोल कर भैंसा, मुर्गे, बकरे जिन देवी और जिन प्रतिमाके आगे मारकर चढ़ाने लगे। उस हत्याका पार नहीं है। उसको कुलदेवीका मंदिर बोलते हैं। वहांपर जाते हुए दि० जैन मंदिर शुरूमें पडता है। इस मंदिरमें पहिले बहुत प्रतिमा और एक सहस्रकूट चैत्यालय था। और बाहरकी दालानमें शासनदेवी विराजमान थी।

बड़े दुःखकी बात है कि जैनियोंकी गल्तीसे उन दुष्टोंने प्रतिमा और सहस्रकूट चैत्यालयको बाहर निकालकर एक झाड़के

नीचे डाल दिया। और मंदिरमें देवीको विराजमान करदी। जिन प्रतिमाको भैरव आदि बोल कर उनके ऊपर तेल सिंदूर चढ़ाते हैं। और सामने हजारों जीवोंका वध करते हैं। प्रतिमापर रक्त और मांस पिंडका ढेर कर देते हैं। बहुतसे लोग नारियल, फल, फूल, मिठाई आदि भी चढ़ाते हैं। पहाड़की दुर्दशा और मोह निद्रा दिगंबरियोंकी देखकर कलकत्ता निवासी बाबू बद्रीदासजी जौहरी श्वेताम्बर जैनने अपना बहुतसा धन खर्च करके इस पहाड़को ग्राम सहित खरीद लिया है। और अपने आधीन कर लिया है व पक्की धर्मशाला बनवाकर एक अपना आदमी रख दिया है। पहाड़पर जीव-वध न हो, इसलिये बाबूसा०ने बहुत मुकद्दमा लड़ा, परन्तु बंगाली लोगोंने जीव मारना बंद नहीं किया। मगर पहिलेसे कुछ कम जीव मरते हैं। यह सब कलिकालकी माया है। पहाड़की चढ़ाई आध मीलकी सरल है। पहिले वही मंदिर, प्रतिमा और सहस्रकूट चैत्यालयका खंडहर मिलता है जिसका उल्लेख ऊपर किया जाचुका है। फिर पहाड़ ऊपर थोड़ी दूर जानेसे एक पत्थरके नीचे बड़ी भारी गुफा है। इसमें अखण्डित २ प्रतिमा विराजमान हैं। एक बड़ा भारी चबूतरा मंडप आता है। यहांपर पहिले बड़ा मंदिर और धर्मशाला थी, सो टूट गई ऐसा मालूम होता है।

फिर आगे जानेसे एक पहाड़के पत्थरमें १० प्रतिमा अखंडित लेकर शीतलनाथ तकको हैं। और आसपासमें छोटी२ प्रतिमा हैं। वृषभनाथसे एक पत्थरमें शिलालेख भी है। पर पढ़नेमें नहीं आता है। शीतलनाथके तप कल्याणकका यह स्थान है। यहींपर भगवानको केवलज्ञान हुआ था। यहांसे थोड़ी दूरपर १ भद्दलग्राम है। उसमें

भी एक प्राचीन शीतलनाथका मंदिर है। इसलिये इसीका नाम सच्चा भद्रलापुरी है। जहांपर कि भगवानके गर्भ, जन्म, कल्याणक हुए थे, यह वही तीर्थ और वही नगरी है। यह दुष्ट कलिकालका प्रभाव है। यहांकी हजारों वर्षोंसे मुनि, आर्यिका, धर्मात्मा लोग वंदना करते आये, उसीकी आज यह दशा है! ऊपरकी दश प्रतिमाओंको बंगाली लोग दशावतार मानते हैं। यहांकी वंदनाके लिये हम (ब्र० गेंदीलाल) और गयाके बहुतसे लोग आये थे। बड़े आनंदके साथ पूजा वंदना की थी। गयावालोंसे बहुत कहा कि आप लोग यात्रियोंको आनेजानेका प्रबंध करदो। जानेके लिये प्रेरणा किया करो। परन्तु किसीने भी ध्यान नहीं दिया। यात्री सिर्फ प्रसिद्ध नामी२ तीर्थोंपर ही जाते हैं। यहांपर नहीं आते हैं। यह बहुत ही रमणीक पुण्यक्षेत्र है। रेल वगैरह पासमें है। दौड़कर भी चले जासकते हैं। हमने ऐसे२ गुप्त स्थानोंके दर्शन बड़े कष्टसे करके इस पुस्तकके लिखनेका साहस किया है। यहांकी यात्रा करके लौटकर गयाजी आवे। अब गयाजीसे पीछे नवादा, भागलपुर, मधुपुर, गिरीडो होकर शिखरजी जासकते हैं। गयासे सीधे हजारीबाग-ईसरी होकर शिखरजी जासकते हैं। बीचमें कोडरमा, हजारीबाग रोड़ पडता है। वहांपर दि० जैन मंदिर और जैनियोंके घर बहुत हैं। फिर ईसरी स्टेशन उतर पडे। गयासे टिकट १॥) लगता है।

(११५) ईसरी।

स्टेशनके पास २ दि० जैन धर्मशाला हैं। एक मंदिर और कुआ भी है। यहांसे मोटर-बैलगाड़ी या पैदल ही १४ मील

मधुवन चला जावे। ईसरीसे १ रेल गोमोह जंकशन होकर आसन-शोल, कलकत्ता तक जाती है। टिकट ३।) लगता है। गो गोमोह जंकशनसे गाड़ी बदलकर आद्रा जंकशन जाती है। आद्रा जंक्शनसे एक गाड़ी पुरलिया होकर नागपुर तरफ जाती है। एक गाड़ी आद्रासे खडगपुर जंकशन जाकर मिलती है। पुरुलियासे १ रेल रांची जाती है। खडगपुरसे १ रेलवे कटक भुवनेश्वर होकर खुरदा रोड जाती है। एक रेलवे कलकत्ता जाती है। एक खडगपुरसे जाड़ सुकड़ा झालीमाटी होकर सीनो जाकर मिलती है। फिर नागपुर होकर बंबई तक जाती है। खुरदासे एक रेल जगदीशपुरी जाती है। एक रेलवे बेजवाडा होकर मद्रास तक जाती है। इत्यादि समझ लेना चाहिये। अब हम नवादा तरफका हाल लिखते हैं। नवादासे टिकट १।।।) देकर नाथनगरका ले लेवे या भागलपुरका ले लेवे।

(२१६) नाथनगर।

स्टेशनसे पाव मील दि० जैन धर्मशालामें जाना चाहिये। यहांपर दो धर्मशाला सामनेर हैं। उनमेंसे १ तेरापंथी, दूसरी वीसपंथीकी है। दोनोंमें ही मंदिर, कुआ, कारखाना, भंडार अलगर हैं। यहांकी वंदना करके पावसे १ मील दूर नाथनगर देखता हुआ चम्पानाला-(चंपापुरी) जावे।

(२१७) चंपापुरी।

यहांपर पहिले दि० श्वे०की धर्मशाला शामिल थी। और दोनोंका नीचे ऊपर भंडार था। सो अब श्वेताम्बरियोंने जुम्मे करली है। परन्तु यहांपर दि० जैन मंदिर, प्राचीन प्रतिमा, दो चर-

णपादुका हैं । यह स्थान बहुत प्राचीन पूज्यनीक है । धर्मशालाके बाहर एक तरफ शहर है । पीछे गंगा नदी वहती है । गंगा नाला कहते हैं । यहांका दर्शन करके नाथनगर आजावे । फिर यहांसे =) सवारीमें भागलपुर आने-जाते हैं । और रेलमें सिर्फ -) ही लगता है ।

(२१८) भागलपुर ।

स्टेशनसे थोड़ी दूर गाड़ीके सामने आधी मीलके फासलेपर दि० जैन धर्मशाला, कुआ, और एक मंदिरमें तीन मंदिर सामिल हैं । प्रतिमा वासुपूज्य भगवानकी विराजमान है । यह प्रतिमा बहुत प्राचीन है । यहांका भंडार भी अलहदा है । भागलपुर उतरनेसे भी नाथनगर तथा चंपानालाकी यात्रा करके लौटकर भागलपुर आजावे । अगर उधर उतरें तो इधरकी यात्रा करके उधरको लौट जावे । भागलपुर शहर अच्छा है । १० घर दि० जैनियोंके हैं । बाजार अच्छा है । माल वगैरह सब मिलता है ।

यहांसे एक लाईन (लूप) जाकर कलकत्ता मिलती है । एक लाईन कटीहार जाकर मिलती है । एक लाईन नवादा होकर गयाजी जाकर मिलती है । सो इसी लाईनसे लक्खीसराय गाड़ी बदलकर मधुपुर जावे । यहांसे गाड़ी बदलकर गिरीड़ी उतर पड़े । फिर शिखरजी जाना चाहिये । सम्मेदशिखरजीसे नाथनगर, भागलपुर आनेका दूसरा रास्ता भी है । बीचमें कीउल या लक्खीसराय गाड़ी वदलकर भागलपुर आवे । अगर किसीको भागलपुरसे सीधा कलकत्ता जाना हो तो भागलपुरसे सीधा कलकत्ता चला जावे । वहांसे लौटकर, मधुपुर, गिरीडी, या गोमोह,

ईसरी होकर शिखरजी जावे। टिकट भागलपुरसे नवादाका १॥=), गयाका ३), गिरीडीका २॥।), कलकत्तेका ५) भाड़ाका लगता है। भागलपुरसे एक रेल मंदारगिरजी जाती है। टिकट ॥।) लगता है। सो पहिले मंदारगिरजी जाना चाहिये। बैलगाड़ीका किराया ४), बग्गीका किराया १०), लगता है। और मोटरका किराया २) सवारी लगता है। चाहे जिससे चला जावे।

(२१९) स्टेशन मंदारगिर-(सिद्धक्षेत्र मंदारगिरजी)

भागलपुरसे ३० मील दूर ग्राम है। स्टेशनसे १ मील दूर दि० जैन धर्मशाला व चैत्यालय है। यहांका भंडार पुजारी अलग है। यहांसे सड़क २ मील तक लगी है। १२वें तीर्थंकरका गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक तो भागलपुर-नाथनगर चंपापुरमें हुआ था। सो एक ही बड़ा शहर चम्पापुर था। उसकी सीमामें तीन खंड होगये। मगर सब चंपापुरमें ही गर्भित हैं। परन्तु मोक्ष कल्याणकका स्थान यही मंदारगिरिका पर्वत है। पहाड़ ऊपर १ तालाव, २ मंदिर और चरणपादुका हैं। पहाड़के नीचे १ बड़ा तालाव, जंगल, १ छत्री, कुआ आदि है। पहाड़पर एक गुफामें १ नरसिंघकी मूर्ति, गंगा जमना कुंड व १ तालाव हैं। यह सब वैष्णवोंके तीर्थ हैं। वहींपर १ साधु रहता है। हजारों अन्यमतके यात्री यात्राको आते हैं। यहांकी यात्रा करके भागलपुर आवे। फिर २॥) देकर गिरीडीका टिकट लेलेवे। बीचमें लक्खीसराय, मधुपुर गाड़ी बदलकर गिरीडी उतर पड़े। पहाड़पर २ दि० जैन मंदिर हैं। ये दोनों ही प्राचीन मंदिर हैं। एक मंदिरमें चरणपादुका हैं। और दूसरे मंदिरमें कुछ भी नहीं है।

(२२०) गिरीडी स्टेशन।

स्टेशनसे थोड़ी दूर शहर है। शहर अच्छा है। १० दि० जैनियोंके घर हैं। बीसपंथी, तेरापन्थी, श्वेताम्बरी इन्हीं तीनोंकी ३ धर्मशाला व ३ मंदिर अलग२ हैं। यहांसे मधुवन १८ मील पड़ता है। रास्ता पक्का है। तांगा, मोटर, बैलगाड़ी आदि सभी सवारी मिलती हैं। बीचमें ग्राम, भोडलकी खानि कोयलेका बड़ा भारी कारखाना देखता हुआ चला जावे। बीचमें बड़ागर नदी पड़ती है। नदीपर एक श्वेताम्बर मंदिर व धर्मशाला हैं। अगर यहांपर किसीको ठहरना होय तो ठहर जावे।

(२२१) मधुवन (श्री सम्मेदशिखरजी) की कोठियां।

यहांपर तीन कोठियां, बड़ी२ धर्मशालाएं, कुआ, बाजार, बगीचा तथा अनेक मंदिर जिनमें हजारों प्रतिमाएं विराजमान हैं। यहांपर आनेजानेके मुख्य दो ही रास्ता हैं। १ ईसरी स्टेशनसे, दूसरा गिरीडी स्टेशनसे, इनका हाल ऊपर लिख दिया है। दि० जैनोंकी बीसपंथी व तेरापंथी २ कोठियां व श्वेतांबरीकी एक कोठी है। इन तीनोंके कार्य जुदे२ हैं। मुनीम, पुजारी, नौकर-चाकर, तांगा, हाथी, घोड़ा सब जुदा२ काम है। यहांसे पहाड़की चढ़ाई ६ मील जाने पड़ता है। बीचमें ऊपर २॥ मील गंधर्व नाला पड़ता है। यहांपर दि०, श्वे० दोनों ही धर्मशाला बनी हैं। आने-जाने समय यहीं मलमूत्रादि करके पहाड़पर जाना-आना चाहिये। पहाड़पर तो हर्गिज न करना चाहिये। प्रथम रात्रिमें २ बजे उठकर शौच स्नानादिसे निवृत्त होकर साफ शुद्ध कपड़ा पहनकर, गरीबोंको बांटनेके लिये रुपया पैसा, पाई वगैरह लेकर, खानेपीनेको द्रव्य लेकर, गोदीवाला,

डोलीवालेको करके आनंदके साथ जय २ शब्द करता पर्वतकी वंदनाको चला जावे। ऐसा करनेसे कोई बातकी तकलीफ नहीं होगी। अगर निवटना हो तो गंधर्व नालेपर ही निवट लेना चाहिये।

(२२२) श्री सम्मेदशिखरजी पहाड़।

फिर यहांसे १ मील सीता नाला पड़ता है। यहांपर द्रव्य धोकर प्रक्षालके लिये जल भी लेलेना चाहिये। यहांसे १ मीलतक सीढ़ियां लगी हुई हैं। बाकी रास्ता कच्चा साफ सड़क सरीखा बना हुआ है। पहिले पहल श्री गौतम स्वामी और फिर कुंथनाथ भगवानकी टोंक पड़ती है। सो वहांपर कुछ दिन निकलनेके पहिले पहुंच जाना चाहिये। फिर पूर्व दिशाकी तरफ कुल १९ टोंकोंकी वंदना करके फिर जल मंदिर आवे। क्रमसे नेमिनाथ, अरःनाथ, मल्लिनाथ, श्रेयांसनाथ, पुष्पदंत, पद्मप्रभु, मुनिसुव्रत और चंद्रप्रभ इन टोंकोंकी वंदना करना चाहिये। ये टोंके बहुत ऊंची और दूर हैं। फिर वहांसे आदिनाथ, शीतलनाथ, अनन्तनाथ, सम्भवनाथ, वासुपूज्य, अभिनन्दननाथ इन टोंकोंकी वंदना करके जलमंदिरमें आजावे। यहांपर बड़ा भारी मंदिर और शेशफण पार्श्वनाथ आदिकी सैकड़ों प्रतिमाएं हैं। पहिले यह दिगम्बरी था, पर श्वेताम्बरोंने झगड़ा करके लेलिया है। यहांपर कुछ विश्राम तथा बाधा मेटकर फिर पश्चिमकी तरफ ८ टोंकोंकी वंदना करें। कुल टोंकें २९ हैं। सबमें चरण हैं उन्हींकी वंदना भावसहित करना चाहिये। पार्श्वनाथ और चंद्रप्रभकी टोंकका चढ़ाव बहुत कठिन है। यहांपर अनंतानन्त कालसे अनन्तानन्त मुनि मोक्षको पधारे हैं। एक टोंकके दर्शनका फल कोड़ाकोड़ी उपवासका फल लिखा है। एकवार ही

शुद्ध भावोंसे वंदना करनेपर तिर्यंच और नरकगति नहीं होती है। और वह जीव ज्यादःसे ज्यादः ४९ भवमें मोक्ष चला जाता है।

जिस जीवको नरक तिर्यंचगति बंध गई होगी उसको दर्शन नहीं होगा। इसमें रावण और श्रेणिक दृष्टांत बताया जाता है। पहाड़ परके एकेन्द्रियादि जीव भव्य हैं। एक२ टोंकसे १-१ तीर्थंकर अनन्तानन्त मुनि मोक्षको पधारे हैं। इसी भरतक्षेत्रके २४ तीर्थंकर अयोध्यामें जन्में और शिखरजीसे मोक्ष जांय। परन्तु हुंडावर्पिणी कालके प्रभावसे अन्य२ जगह जन्म व मोक्ष हुआ है। यह नियम अटल है। इत्यादि पर्वतका महात्म्य शिखर महात्म्यसे जानना। कुल पर्वतकी यात्राका चक्कर १८ मील पड़ता है। इस तीर्थराजकी महिमा अपरम्पार है। बालकसे लेकर वृद्ध तक सभी वंदना करके पर्वतके नीचे आते हैं। और आनन्दसे खाने-पीने, डोलने-फिरने हैं। कुछ भी खेद वा परिश्रम मालूम नहीं पड़ता है। इस तीर्थराजको धन्य है, जहां देवलोक दुंदभी बजाते हैं पानी वरसता है, मंद सुगंध हवा चलती है। सब वंदना करके पार्श्वनाथकी टोंकसे आते समय इकदम उतारका रस्ता है। बीचमें प्राचीनकालका मकान है। उसमें बहुत कम यात्री आते जाते हैं। और इसी पहाड़की धर्मशालामें रहते थे। यहांपर पालगंजके राजाका राज्य था। यहींपर रहते थे। कुछ राजाको देकर यात्रा सफल बुलाया करते थे। फिर गंधर्व नालेपर आजाय। यहांपर विश्राम कर लेना चाहिये। अगर कुछ खाना-पीना हो तो कोठियोंकी तरफसे बंटता है वह लेकर खा-पीलेना चाहिये। बाल-बच्चोंको भी कुछ खिला पिला कर नीचे कोठीमें आजाय।

कोठियोंके थोड़ी दूर जंगलमें चबूतरा है। जहांपर श्रीजीका रथ विराजमान होता है। वहांसे भी सब पहाड़का दर्शन पूजा अच्छी तरहसे कर सकते हैं। मधुवनमें कुछ दिन ठहरकर २-३ वंदना करनी चाहिये। फिर १ आदमीको तथा १ दिनके खाने-पीनेका सामान साथ लेकर पर्वतकी परिक्रमा देवे। परिक्रमाके बीचमें १ भागी तालाब, २ गांव वगैरह पड़ते हैं। फिर अच्छी तरहसे दिल खोलकर गरीब तथा लूला, लंगड़ोंको दान देना चाहिये। यहांपर कोठीमें खर्चा बहुत रहता है। सो अपनी शक्तिके माफिक भंडार भराना चाहिये। फिर लौटकर गिरीडी या ईसरी आजावे। घर जाना हो तो घर चला जावे। इसका हाल ऊपर लिख दिया है वहांसे देख लेना। ईसरीसे या गिरीडीसे एक बार कलकत्ता अवश्य देखना चाहिये। फिर खड़गपुर होकर खंडगिरि, उदयगिरि जाना चाहिये। इसका हाल नीचे लिखता हूं। जिस मनुष्यने मनुष्य जन्म पाकर तीर्थयात्रा नहीं की वह मुर्देके समान है। और लक्ष्मी मिट्टीके बराबर है। कुटुम्बी जन कौवाके समान हैं। साधु पुरुष चाहे तीर्थ करें, या न करें वह तो स्वयं शुद्ध होजाता है, परन्तु गृहस्थोंको तो तीर्थ अवश्य करना चाहिये।

घरबारीने तीर्थ करना, साधुजनने ध्यान।
ये दोनों नहीं करें, ते हैं पशु समान ॥ १ ॥
काल करंता आज कर, आज करंता अब्ब।
छिनमें परलय होयगा, फेरि करेगा कब्ब ॥ २ ॥
आजकलको छोड़कर, करले जो कुछ अब्ब।
आग जरंता झोंपड़ा, सोया सो ही लब्ब ॥ ३ ॥

पाव पलकी खबर नहीं, करे कालकी बात।
कुण जाने क्या होयगा, कब ऊगे परभात ॥ ४ ॥
धर्म कार्यमें ढील नहीं, करियो मेरे भ्रात।
पाव पलककी खबर नहीं, कब होवे प्रभात ॥ ५ ॥

परमपूज्य शिखरजीकी यात्रा करके ईसरी, गिरीडी जाना चाहिये। फिर ३=) रेलकिराया देकर कलकत्ता जाना चाहिये। जिस भाईने पहिले चंपापुरकी वंदना न की हो वह यहांसे भागलपुर जा सकता है।

(२२३) कलकत्ता शहर।

स्टेशनपर हर प्रकारकी सवारी मिलती है। यात्रियोंकी इच्छा हो उसीमें बैठ जांय। स्टेशन आध मील हरीसन रोड बाजार है। यहांपर १ बाबू सूरजमलजी, २ बाबू रामकृष्णदासजी, ३ बा० बद्रीदासजी जौहरीकी ऐसी ३ धर्मशाला हैं। ये तीनों धर्मशाला बहुत बड़ी हैं। हिन्दू यात्रियोंको भी इनमें उतरनेकी आज्ञा है। पानीका कल, टट्टी, रसोईका कमरा, बाजार, मंदिर आदिका सुभीता है। बेलगछिया स्टेशनसे ४ मील है। वहांपर भी बहुत ही यात्रियोंको आराम मिलेगा। अपनी इच्छानुसार ठहर सकते हैं। अपना सामान हिफाजितसे रखना चाहिये। हर तरहके आदमी आते हैं। बेलगछियाका स्थान खास जैनियोंके लिये है। अच्छी आब-हवा और रमणीक है। शहर कुछ दूर पड़ता है। सिर्फ यही कष्ट है। ट्राम गाड़ी चलती है सो १५ मिनटमें ही पहुंचा देती है। टिकट आनेजानेका सिर्फ =) लगता है। ट्राम गाड़ी रात दिन, हर जगहको जाती है। इसीमें बैठकर शहर अच्छी तरहसे देख लेना चाहिये।

अपने दि० जैन मंदिर बहुत कीमती बने हुए हैं। १ बेलगछिया, २ चांवलपट्टीमें, ३ पुरानी वाडी, ४ हरीसन रोडके पास चितपुर रोड नं० ८१ में हैं। सबका दर्शन करना चाहिये। एक चैत्यालय जैन अग्रवालोंका चांवलपट्टीमें है। मंदिरोंमें घातु पाषाणकी प्रतिमा रमणीक हैं। कलकत्ता एक नम्बरका शहर है। शहरकी गली२ दुकान२ देखने योग्य हैं। इस शहरको जिसने नहीं देखा उसने कुछ नहीं देखा। इस शहरके देखनेसे और शहरके देखनेकी इच्छा नहीं होती है। यहांपर ४-५ दिन ठहरकर कुछ खर्च करके शहरको देखना चाहिये। दि० जैन भाईयोंके २००-३०० घर हैं। फुटकर व्यापार करनेवाले प्रायः ५०० मनुष्य होंगे। देखनेयोग्य ये चीजे हैं—

हरीसनरोड, बाजार, कोठियां, बाबू बद्रीदासजी जौहरीका बगीचा, मंदिर, यहींपर श्वेताम्बर ४ मंदिर हैं, वे देखनेयोग्य हैं। टंकसाल, हाफपा०का बाजार, अजायबघर, तार घर, बड़ा डाकखाना, बिजलीघर, गंगाका पुल, जहाज, अग्निबोट, अलीपुर चिड़ियाघर, हावड़ा स्टेशन इत्यादि चीजें देखना चाहिये। कलकत्तेमें हावड़ा और स्यादला ये दो स्टेशन हैं। रेलवे लाईन चारों तरफ जाती हैं। अगर अग्निबोटकी यात्रा करनी होय तो कलकत्तेसे ॥)का टिकट लेकर बाली और उत्तरपाड़के दर्शन करके कलकत्ता लौट आजावे। अगर किसीको आगबोट जहाजमें किधरको जाना हो तो ब्रह्मपुत्र और समुद्रमें होकर पोरबंदर, बंबई, मंगलूर, बेंगलूर, आसाम, ब्रह्मपुत्र, विलायत तक जासकते हैं।

अब मैं कलकत्तेके आगे आसामका उल्लेख कर देता हूं। कल-

कत्तेके ललवे स्टेशनसे टिकट ३॥) देकर वोघराका लेलेना चाहिये। बीचमें संतार गाड़ी बदलकर एक गाड़ी पार्वतीपुर जाकर कटीहार जाती है। एक गाड़ी वोघरा जाकर कौनिया जाकर मिलती है।

(२२४) वोगरा।

यह ग्राम अच्छा है। १ मंदिर और २० घर दि० जैनियोंके हैं। यह गाड़ी कौनिया जाकर मिलती है।

(२२५) कौनिया जंक०।

एक गाड़ी संतार और वोगरा होकर यहां मिलती है। पार्वतीपुरमें एक गाड़ी परतावगंज जाकर मिलती है। एक नरकटियागंज जाकर मिलती है। एक लाईन दरभंगा जाकर मिलती है। दरभंगा शहर बड़ा है। देखने योग्य शहर है। दरभंगासे एक रेलवे जयनगर जाकर मिलती है। जयनगरके पास बहुत मारवाडी जैनोंके मकान हैं। जयनगर भी अच्छा शहर है। १ मंदिर और कुछ घर जैनियोंके हैं। पार्वतीपुरसे १ रेलवे मनीहारघाट जाकर मिलती है। बीचमें वारसोही पड़ता है। वारसोहीके आसपास बहुत दि० जैन मारवाड़ियोंके घर हैं। यहांपर वारसोईघाट, वारसोईहाट ऐसे दो मुकाम हैं। दोनों जगहपर २ मंदिर और २५ घर दि० जैनियोंके हैं। पार्वतीपुरसे गोहाटी गाड़ी जाती है। बीचमें कौनी जंकशन जाकर मिलती है। कौनी और गोहाटीके बीचका उल्लेख करता हूं। बीचमें लालमनीहार पड़ता है। यहां भी १ मंदिर और कुछ घर दि० जैनियोंके हैं। यहांके आसपास दि० जैन मारवाड़ियोके बहुत घर हैं। आगे गोलगंज जंकशन पड़ता है। वहांसे एक रेलवे घोवड़ी जाती है। घोवड़ीसे नदी पार होकर ४ मील

पर जमादारहाट जाती है। यहांपर १ मंदिर और २० घर जैन मारवाडियोंके हैं। इसके आसपास भी बहुत जैन मारवाड़ी हैं। धोवडीमें कुछ जैन नौकर भी हैं। मंदिर नहीं है। धोवड़ीसे गोलगंज लौट आवे। फिर आगे नरवाड़ी पड़ती है।

(२२६) नरवाड़ी।

यहांपर १ मंदिर और १९ घर दि० जैनियोंके हैं। यहांसे ८ मील दूर चीनीका कारखाना है। आसपासमें बहुत घर दि० मारवाड़ीके हैं। आगे गोहाटीगंज स्टेशन पड़ता है। बीचमें ब्रह्मपुत्र नदी पड़ती है। नावमें बैठकर उस पार होजाने पर दूसरी रेल मिलती है। उसमें बैठकर गोहाटी जाना चाहिये।

(२२७) गोहाटी शहर।

जंगलको [illegible] अंग्रजने यह शहर बसाया है। शहर अच्छा है। १ चैत्यालय व ३ घर दि० जैनियोंके हैं। यहांसे १ मील दूर नीलांजना नामक पहाड़ है। पहाड़के नीचे स्टेशन है। सो गोहोटी जाते समय बीचमें पड़ता है। गोहाटीके आगेके हिस्सेको कामरू देश बोलते हैं। कुछ हिस्सेको आसाम कहते हैं। उससे आगेके हिस्सेको ब्रह्मदेश कहते हैं।

(२२८) नीलांजना पहाड़-(कामरूदेश कमंख्या देवी)

यहांपर एक छोटासा ग्राम है। उसमें दुष्ट ब्राह्मण लोग मांसभक्षण करते हैं। १२ धूनी गोरखनाथ आदि सिद्धोंकी बोल कर लगाते हैं। यहांपर एक तालाव, अनेक मंदिर, कमंख्या देवीके हैं। जिसमें कटा हुआ शिर चढ़ाते हैं। एक देवी जमीनके नीचे गड़ी है। वहांपर तलवार, छुरी आदि लगा रखी हैं। पंडा लोग हर

समय हजारों पशुओंका वध करते हैं। आधा मांस देवीको चढ़ाते हैं और यह प्रसाद है ऐसा कहके लोगोंको बांटते हैं ! खूनका तिलक लगाते हैं। और जजमानोंसे रुपया पैसा वगैरह दक्षिणामें लेते हैं। यहांका दृश्य बड़ा भयानक है। गोहाटीसे मोटर पलासवाडी जाती है।

(२२९) पलासवाडी ।

यहांपर १ मंदिर, २० घर दि० जैन व पाठशाला है। यहां पर बढ़ियासे बढ़िया रेशम-एरंडीका लाखोंका व्यापार होता है। जिसमें जीवघातका कुछ ठिकाना नहीं है। इस हिंसक व्यापारके व्यापारी मारवाड़ी ही हैं। यहांसे २० मीलके चक्रमें बहुत मारवाड़ियोंकी वस्ती है। यहांसे गोहाटी आवे। टिकट २) लगता है। डिम्मापुर उतर पड़े।

(२३०) डीम्मापुर (मनीपुररोड)।

यहांपर १ मंदिर व कुछ घर दि० जैनके हैं। यहांसे मोटर, बैलगाड़ीमें ९२ मील मनीपुर शहर जाना होता है। बीचमें बड़ा भारी शहर है। बहुत ग्राम पड़ते हैं।

(२३१) मनीपुर शहर ।

यह शहर बहुत अच्छा है। १ दि० जैन मंदिर व बहुत घर दि० जैनके हैं। कपड़ा आदिका व्यापार खूब होता है। देशमें बहुत माल जाता है। यहांसे आगे बड़े भयानक जंगल और पहाड़ मिलते हैं। उसमें भील लोग बहुत रहते हैं। इसको तिब्बत देश बोलते हैं। तिब्बतके पहाड़ोंपर कभी कैलाश भी दीख पड़ता है। आगे नैपाल आता है। इसका उल्लेख आगे करेंगे वहांसे जानना। लौटकर डिम्मापुर आवे। टिकट तनसुखियाका लेवे।

(२१२) तनसुखिया।

यहांपर कुछ दुकानें जैनियोंकी हैं। मंदिर नहीं है। चायके कारखाने हजारोंकी संख्यामें यहांपर हैं। मजूरोंकी संख्या हजारोंकी है। यहांसे १ रेलवे डिब्रूगढ़ जाती है।

(२१३) डिब्रूगढ़।

शहर अच्छा है। १ मंदिर और ४० घर दि० जैनोंके हैं। रायबहादुर सेठ सालगराम चुन्नीलालजी यहांपर रहते हैं। गवर्नमेंटकी ४ कंपनियोंका काम करते हैं। इस देशमें सब ग्रामोंमें इन्हींकी दूकानें हैं। तेल, शक्कर, लोहा, लक्कड़, चांवल, चायकी कंपनीके मालिक हैं। अंग्रेजी राज्यमें इसकी अच्छा मान्यता है। इनके मुख्य मुनीम छगनमलजी हैं। इनकी आज्ञा खूब चलती है। ३००) माहवार कंपनियोंसे और १५०) माहवार सेठ सा० की तरफसे मिलता है। फिर यहांसे तनसुखिया आना चाहिये। तनसुखियासे आगे रेलवे डीगबोई जाती है। टिकट ॥) लगता है।

(२१४) डिगबोई।

यहां पर पूर्वोक्त रायबहादुर सा० की दूकान है। जमीनमेंसे कुआ खोदकर १००-१५० हाथ नीचेसे नलके द्वारा काले रंगकी मिट्टी निकालते हैं। काली मिट्टीको उबालकर मशाला देनेसे मिट्टी, पानी, तेल अलग २ होजाते हैं। यह मिट्टी १० यंत्रोंमें भरी जाती है। तीन भाग दूर होजाता है। तेल ४ नंबर पर अलग होजाता है। पहिला नंबर मोटरका श्वेत तेल, दूसरा नंबर हल्का, तीसरा नंबर हल्का पीला तेल, इसमें पानी और माटीका कुछ संबंध रहता है। इससे उसमें धुवां बहुत निकलता है।

माटीको साफ करके मोम बनाया जाता है । वह विलायत जाकर खिलौना रूपमें यहांपर आता है । मोमबत्तीके कारखानें यहीं भी बहुत हैं । चौथा नंबरका तेल लकड़ियों वगैरहमें लगता है । यहांपर कनस्टर आदिका कारखाना है । केला नारंगी यहां पर बहुत पैदा होते हैं । इस देशमें बड़े २ पहाड़ हैं । उनके बीच-मेंसे अंग्रेजोंने रेल निकाली तथा ग्राम भी बसाये हैं । जगह२ पर गोरा लोगोंके बंगले बने हुए हैं । सिंहादि पशु यहां पर बहुत रहते हैं । यहांसे १ रेलवे परशुराम कुंड जाती है । एक रेलवे आगे जाती है ।

(२८५) परशुरामकुंड ।

डीगबोईसे कुछ दूर पर रेल जाती है । फिर ६ मील पहाड़ीमें पैदलका रास्ता है । बड़े२ पहाड़ और जंगलकी बीचमें ३ कुंड हैं । उनमें क्रमसे उष्ण, अति उष्ण, अति शीतल पानी रहता है । यहांपर महादेवजीकी मूर्ति है । छोटी२ तीन देहरी हैं । पहाड़से पानी बहुत पडता है । यहांसे एक नदी निकली है । फिर लौटकर रेलमें चढ़कर डीगबोई उतर पड़े ! आगे डीगबोईसे रेल जाती है । काष्टगाड़ी स्टेशन पड़ता है ! यहांपर लकड़ीका बहुत बड़ा कारखाना है । हजारों चीजें बनकर दिशावर जाती हैं । पर्वतमेंसे माटी निकलती है । उसको गला करके लोहा बनाते हैं । हजारों चीजें बनती हैं । यहांके दोनों कारखाने देखने योग्य हैं । यहांपर मंदिर नहीं है । ४ घर जैनियोंके हैं । रायबहादुरकी दूकान और नौकर हैं । यहांसे ।=) देकर ४ स्टेशन आगे एकई स्टेशन है । वहींतक ही रेल जाती है । वहां ग्राम है । साहब

लोगोंके बंगले हैं । यहांपर बड़े२ पहाड़ हैं । उनमें छोटीसी रेल जाती है । पहाड़ भी भीतर १०-१० मील तक खुदे हुए हैं । यहांपर हरएक पहाड़में तेल मिले हुए पत्थर निकलते हैं उनको पत्थरका कोयला कहते हैं । यहांसे लाखों-करोड़ों मन कोयला निकलकर सर्व देशोंमें जाता है । इसीसे रेल, कारखाने वगैरह चलते हैं । हर किस्मके कारखाने कोशोंतक देखने योग्य हैं । यहांके जंगलमें केला, संतरा, चाय, बहुत ही पैदा होते हैं । यहांकी रेल तो यहांतक ही है । आगे ब्रह्मदेश आगया है । सो वहांसे रेल आकर पहाड़में १० मीलपर उतर जाती है । यहांसे लौट आना चाहिये । लौटनेपर बीचमें सीलीगुरी स्टेशनसे पूछकर १) टिकटका देकर दार्जिलिंग भी जासकते हैं ।

(२३८) दार्जिलिंग पहाड़ ।

पहाड़ ऊपर भी रेल जाती है । शहर बहुत अच्छा है । अंग्रेजलोग रहते हैं । नाहर और सुअरके बच्चे (पले हुए) लोगोंके साथ २ घूमते हैं । यहांकी रचना देखने योग्य है । अजब२ रचना है । भागलपुर, बनारस, पारवतीपुर, भटनीसे भी कटीहार गाड़ी जाती है ।

पटना-बांकीपुरसे-नदी उतरकर सोनपुर जंकशनसे हाजीपुर आदि होकर (मुकामा, सोनपुर लाईन) दलसिंह सराई होकर या उतरकर मुजफ्फरपुर आदि स्टेशनोंसे इन लाईनमें गाड़ी जाती हैं । सब हाल पूछकर सीतामंडी स्टेशन उतरकर मिथिलापुरी जाना चाहिये । इस जगह पर हजारों वैष्णव लोग यात्राको आते हैं । पूछनेपर जल्दी पता लगता जाता है । यहांपर मैं खुद नहीं

गया हूं इसलिये पूरा२ हाल नहीं बता सकता हूं। रेलवे उतरने चढ़नेवालोंसे पूछा था। वे कहते थे कि जनकपुरीकी यात्राको जाते हैं। सो धर्मात्मा भाइयोंको इस पवित्र स्थानकी यात्रा अवश्य करना चाहिये। स्टेशन सीतामंडी उतरकर जनकपुरी तांगामें जाना चाहिये।

(२३७) जनकपुरी।

यह राजा जनक-कनक, सीता-भामंडल, श्री मल्लीनाथ तीर्थंकरकी जन्म नगरी आदि अतिशयोंसे शोभायमान पवित्र नगरी है। अन्य मती तो यहांपर हजारो आते हैं, पर जैनियोंने यह तीर्थ छोड़ दिया है। इसी लाइनमें मुजफ्फर गाड़ी बदलकर बागहा ब्रांच लाईनमें गोली उतरे। वहांसे गाड़ी बदलकर (सेगोली) रकशोल लाईनमें रक्शौल उतर पड़े। टिकट पटना सोनपुरसे रकशौल तकके २) रुपया लगता है। परन्तु यहांपर काम हजारों रुपयोंका होता है।

(२३८) रकशौल।

स्टेशनसे ग्राम नजदीक है। यहांसे वीरगंज २ मील दूर है।

(२३९) वीरगंज (नैपाल)।

यह शहर अच्छा है। मारवाड़ी-वैष्णव भाईयोंकी दुकाने हैं। यहां शिवरात्रीका फाल्गुण वदी १० से १३ तक बड़ा भारी मेला भरता है। उन दिनोंमें राजा सा०के हुक्मसे नैपालका रास्ता खुला रहता है। यहांपर तार, डाकधर, सड़क, कानून सब नैपाल राज्यकी तरफके हैं। किसी दूसरेकी आज्ञा नहीं चलती है। राजा बड़ा जबरदस्त है। वीरगंजमें कचहरीसे आज्ञा पानेपर नैपाल जासकते

हैं। २ दिन वीरगंजमें रहकर नैपालसे हुकुम मंगाना चाहिये। खुद राजा सा०के हाथ मुहर रहती है। ।) टिकट देना पड़ता है। विना हुकुम कोई परदेशी आदमी नैपालके भीतर नहीं जासकता है! मगर मेलेपर आम समाजको आज्ञा है। यहांसे २८ मील नैपाल है। २० मीलतक बैलगाड़ी जासकती है। आगे ८ मीलका विकट रास्ता है। पांव, घोड़ा या बैलसे जाना होता है। बीचमें ३ मील अत्यन्त सकरा चढ़ावका रास्ता है। यहांके नैपाली मजूर लोग असमर्थ लोगोंको २) लेकर ' टोकरीमें बिठाकर पहाड़ उतार देते हैं। बड़ा विकट स्थान नैपाल है।

(२४०) नैपाल शहर।

शहरके चारों तरफ पहाड़का गढ़ आगया है। फिर गढ़, दरवाजा, वापिका, तालाव, उपवनादि हैं। नगर राजा सा०का अत्यन्त सुन्दर मालूम होता है। यहांपर एक पशुपति (पार्श्वनाथ या महादेव)का बड़ा भारी मंदिर है। उस मूर्तिमें फण हैं इसलिये साक्षात् पार्श्वनाथकी मालूम होती है। उसके शरीरका पता नहीं है। केवल फण सहित मस्तक है। इस शरीरका नाम लोगोंने पशुपति रख लिया है! यह मूर्ति पार्श्व पाषाणकी है। इसीके लिये लोग हजारोंकी संख्यामें शिवरात्रिपर इकट्ठे होते है। इस मंदिरका दरवाजा खुद राजा साहिब आकर खोलते हैं। तभी सब लोग दर्शन करते हैं। लोहेकी सुई लगानेसे सोनेकी होजाती है! यह नैपालके राजा चंद्रगुप्त-भद्रबाहुके समयमें जैन थे। उसी समयका यह मंदिर है। इससे इसी मूर्तिके लिये राजा सा० पूरा बंदोबस्त रखते हैं। आज इसकी ऐसी दशा है कि एक-दो रात्रिसे

ज्याद: कोई ठहर नहीं सकता है । नेपालके पासके पहाड़पर चढ़कर देखनेसे कुछ कैलाश पहाड़ दीखता है । ऐसा कोई २ लोग बोलते हैं । उसको हिमाचल पहाड़ भी कहने हैं । यहांसे आगे तिब्बत मुल्क आता है । तिब्बतके आगे मनीपुर आदि आसाम देश आता है । उसका लेख ऊपर कर दिया है ।

(२४१) तिब्बत मुल्क ।

यह बहुत ऊंचा पहाड़ी देश है । यहांपर बड़े२ पहाड़ है । म्लेच्छ लोगोंका निवास ज्याद: है । ये लोग काले निष्ठुर क्रूर परिणामी होते हैं । इनको किसीका डर नहीं। मौका पाकर मनुष्य पर भी धावा मार देते हैं । यहांके पहाड़परसे कैलाश दिखता है। यहांपर दार्जिलिंग रेलवेका आगे स्टेशन है। एक नदी कैलाश पर्वतके दक्षिण तरफ बहती है। सो नगर चक्रवर्तीके ६० हजार पुत्रोंने कैला-शके चारों तरफ खाई खोदकर पर्वतराजकी रक्षाके लिये नदी बहाई थी । इस नदीका नाम भी ब्रह्मपुत्र नदी कहने हैं । इसके बीचमें बड़ी२ भँवर पड़ती हैं। इसी कारणसे कोई आदमी उस पार अनेक यत्न करनेपर भी नहीं जासकता है । अंग्रेजने हवाई जहाज द्वारा कैलाशपर जानेका प्रयत्न किया पर सब निष्फल हुआ । ऐसी ही देवी माया है ।

(२४२) सिद्धक्षेत्र कैलाश पर्वत ।

यह पर्वत बहुत ऊंचा है । आठ सीढ़िया होनेसे अष्टापद कहते हैं । श्री आदिनाथ, नागकुमार, व्याल महाव्यालादि सिद्ध-पदको प्राप्त भये हैं। पूर्वकालमें भूमिगोचरी रावण, भरत, बालमुनि आदिको यात्रा सहजहीमें होती थी। हमारे अभाग्यसे हमारा वहांपर

पहुंचना नहीं होता है। हम लोग दूरसे ही प्रभुका ध्यान कर पुण्य-बंध कर सकते हैं। भरत महाराजने बड़े २ मंदिरोंमें भूत, भविष्यत वर्तमान, सम्बन्धी तीनों चौबीसी विराजमान की थी। कलिकालमें वहांका दर्शन नहीं होता है। वहांकी रक्षा देवों द्वारा होती रहती है।

(२४३) बंगालके देश।

इस प्रांतमें रेशम, अरंडी आदिका व्यापार बहुत होता है। यहां मांसभक्षी लोग बहुत रहते हैं। जीवोंकी हिंसाका कार्य बहुत होता है। दूसरी लाईन कलकत्तेसे जाती है। बीचमें बहुत ग्राम हैं उनमें बहुतसे मारवाड़ी जैनी रहते हैं। मंदिर भी कहीं२पर हैं। अब आसामका लेख पूर्ण करता हूं। कलकत्तेसे आगेका लिखता हूं।

कलकत्तेसे खड़गपुर जावे। टिकट १=) है। ईसरीसे गोमोह, तथा आद्रा गाड़ी बदलकर खड़गपुर जावे।

(२४४) खड़गपुर।

स्टेशनसे शहर पास है। पासमें १ वैष्णवोंकी धर्मशाला तथा मंदिर है। हीरालाल सरावगी आदि तीन घर दि० जैनियोंके हैं। यहांपर रेलवेके नौकर अंग्रेज रहते हैं। शहर अच्छा है। सामान सब मिलता है। यहांसे १ लाईन सिवनी, नागपुर, कामठी आदि जाती है। ऊपर देखो। एक लाईन कटक, भुवनेश्वर होकर खुर्दा-रोड जाती है। १।।) देकर टिकट कटकका लेलेना चाहिये।

(२४५) कटक।

स्टेशनसे।) सवारी देकर बैलगाड़ीमें ५ मील शहरमें जाना चाहिये। भाजीबाजारमें दि० जैन धर्मशाला, मंदिर व कुआ है। मंदिर व चैत्यालयोंमें मूर्ति बहुत हैं। सबका दर्शन करना चाहिये।

पासमें बड़ी भारी नदी है। आसपास कटक है। हजारों प्रतिमा ग्रामों व शहरोंमें हैं। इस देशमें हजारों जैनियोंके मंदिर थे। यहांसे स्टेशन लौट आवे। टिकट ।) देकर भुवनेश्वरका लेवे।

(२४६) भुवनेश्वर।

स्टेशनपर १ धर्मशाला, १ मुसाफिरखाना, कुछ दुकानें हैं उनमें २ दि० जैन हलवाईकी दुकानें हैं। शहरमें जानेको ।) सवारीमें बैलगाड़ी मिलती है। जानेवाले चले जावें। नहीं तो सीधा उदयगिरि, खंडगिरि चला जावे। यहांपर महादेवके बहुत मंदिर हैं। स्टेशनसे गांवकी तरफ जाते समय जंगलमें बहुत प्राचीन महादेवका मंदिर है। लोकमें यह प्रसिद्धि है कि ये मंदिर राजा शिवकोटिने बनवाये थे। पहिले यहांपर १ लाख मंदिर शिवजीके थे। राजा शिवकोटि "स्वामी समन्तभद्राचार्य" का शिष्य होकर एक नेलीको एक खलीके टुकड़ेमें देकर, आप जैनी होगया। शिवकोटिने मुनिधर्मका प्रवर्त्तक "भगवती आराधना" बनाया था। अब भी आसपास हजारों मंदिर हैं। गांवमें १ तालाब है। यहांकी रचना देखने योग्य है। इच्छा हो तो देख लेवे।

(२४७) श्री खंडगिरि-उदयगिरि (सिद्धक्षेत्र)

जसरथ राजाके सुत कहे, देस कलंग पांचसौ लहे।

यही कलिंग देश पांचसौ मुनियोंके मोक्षका स्थान है। अनेक मुनि, तपस्वी, त्यागियोंके ध्यानका महा पवित्र स्थान है। नीचे एक बंगला, धर्मशाला, कारखाना, कुवा, जंगल इत्यादि है। दोनों तरफ छोटासा उदयगिरि-खंडगिरि नामका पहाड़ है। दोनों पहाड़ोंमें मुनियोंके ध्यान करनेकी बड़ी २ गुफा हैं। बहुत

प्रतिमा हैं। २ मंदिर हैं। सब पूछ कर दर्शन करना चाहिये। फिर स्टेशन लौट आवे। ॥।) देकर टिकट पुरीका लेलेवे। खुरदारोड़ गाड़ी बदलकर पुरी जाना होता है।

(२४८) जगन्नाथपुरी।

यह वैष्णवोंका बड़ा भारी तीर्थ है। मात्र-देखनेकी इच्छासे ही यहांपर आना चाहिये। जगदीशका मंदिर पहिले नेमनाथका मंदिर था, परंतु अपनी भूलसे जगन्नाथका होगया है। यहांपर यात्री सब मतवाले हजारों आते रहते हैं। यह बड़ा भारी प्रसिद्ध तीर्थ है। स्टेशनसे २ मील दूर शहर है। एक ब्राह्मण पंडाको साथ लेना चाहिये। उससे पहिले ठहराव कर लेना चाहिये "हम लोग जैन हैं, ज्यादा कुछ नहीं देंगे" इत्यादि। पंडे को साथ लेनेसे सब चीजें देखनेमें सुभीता रहता है। शहरमें २ बड़ी धर्मशाला हैं। जहांपर पंडा उतारे वहांपर उतर जाना चाहिये। यहांपर अपना सामान-जेवर वगैरह साव-धानीसे रखना चाहिये। मंदिरमें भी सावधानीसे जाना चाहिये। हजारों परदेशी यात्री व हर किस्मके लोग मौजूद रहते हैं। भीड़के मारे मंदिरमें जाना-आना कठिन होता है। यहांपर जैनि-योंका कुछ भी नहीं है। इसी मंदिरमें कृष्ण, बलदेव, रुक्मणी, यशोदाकी ऐसी चार मूर्ति हैं, वे काठकी हैं। इस मंदिरके चारों तरफ तेतीस कोटि देवता बने हैं। एक गणेशजीकी बहुत बड़ी मूर्ति है। यह मंदिर भी इसीमें सामिल है। इसकी बनवाई तीन करोड़ हैं। सब देखना चाहिये। यहां 'जगदीशका भात, जगत पसारे हाथ' यह प्रसिद्धि है। भात एक लोहेकी कढ़ाईमें बनता है।

फिर मिट्टीके मटकेमें भर देते हैं किसीको कुछ देकर देख लेना चाहिये। जगन्नाथपुरी समुद्रके नीचे टापूपर वसा है। समुद्र, नाव, जहाज, देखें। फिर कुछ खरीदना हो तो खरीदे। नहीं तो ॥) देकर खुरदा रोड उतर पड़े।

(२४९) खुरदा रोड (जंकशन)।

स्टेशनसे १ मीलपर १ बड़ा भारी मंदिर वैष्णवोंका है। उसमें चांदी सोनेके जड़ावका काम होरहा है। अगर किसीको देखना हो तो देख आना चाहिये।

यहांसे १ रेलवे पुरी, १ खड्गपुर व १ वालटेर वेझवाड़ा होती हुई मद्रास जाती है।

विशेष–जिन भाइयोंको मद्रास, रामेश्वर, कांजीवरम्, जैनबद्री मूलबद्री जाना हो तो पहिले मद्रास चला जावे। टिकट १७) के लगभग लगत है। यह रास्ता सीधा और कम खर्चेका है। अगर किसीको नहीं जाना हो तो लौटकर खड्गपुर आजावे। आगे जाना हो जिधर चला जावे। इसका हाल ऊपर देखो। मद्रास जाने-वालोंको सीधा मद्रास चला जाना चाहिये। डाक गाड़ीमें जानेसे केवल १॥) ज्यादः लगता है। परन्तु शीघ्र विना किसी तकलीफके पहुंच जाते हैं। (बीचमें वेजवाड़ा उतरना हो तो उतर पड़े।

(२५०) बेजवाड़ा।

यह शहर अच्छा है। कपड़ेके कारखाने बहुत हैं। बढ़िया बढ़िया स्वदेशी कपड़े बनते हैं।

(२५१) मद्रास शहर।

यह भी दक्षिण प्रांतमें एक बड़ा भारी शहर है। अंग्रेजी

राज्यमें पहिले नंबर कलकत्ता, २ बंबई, ३ देहली, ४ मद्रास है। यहांसे १ रेलवे रायचुर होकर पुना बम्बई तक, १ कलकत्ता, १ देहली, इत्यादि सब दिशाओंको जाती है। एक बड़ी लाईन, छोटी लाईन ऐसे दो स्टेशन हैं। बड़ी स्टेशनके सामने हिन्दु धर्मशाला है। वहांपर ठहर जाना चाहिये। सामान रखकर शहरको ट्राम गाड़ीमें जाना अच्छा है। पैसे भी कम लगते हैं। शहरमें दि० जैनियोंकी एक धर्मशाला व मंदिर हैं। संपादक अंग्रेजी जैनगजटका मकान नं० ४३६ मिन्ट स्ट्रीटमें है। मोतीबाजारमें श्वेताम्बरी २ मंदिर हैं। एक मंदिर बाबू ओंकान्ट सा० के मकान पर श्वेतांबरी बगीचाके पास है। पर शहरसे २ मील पड़ता है। शहर देखकर स्टेशनपर आवे। टिकिटका ।॥=) देकर आरकोनम्‌का लेलेना चाहिये। यहांसे १ गाड़ी रायचुर जाकर मिलती है।

(२५२) रायचुर शहर।

स्टेशनके पास हिन्दुओंकी धर्मशाला है। पासमें कुछ बाजार, कुआ व जंगल है। शहर २ मील दूर कोटसे घिरा हुआ है। शहर बहुत बड़ा है। १ मंदिर व कुछ घर दि० जैनियोंके हैं, सामान सब मिलता है, एक तालाब, १ गढ़ है। यहांसे एक रेलवे मद्रास जाकर मिलती है। टिकट ५) है। एक रेलवे "कुर्दुवाड़ी" (बारसी रोड) शोलापुर घोंड होकर पुना-बम्बई तक जाती है।

(२५३) आरकोनम जं०।

यह स्टेशन रायचुर-मद्रास लाईन व मद्रास बेंगलौर लाईनके बीचमें पड़ता है। यहांसे गाड़ी बदलकर टिकटका ।॥) देकर

छोटी लाईनसे कांचीवरम् जाना चाहिये।

(२५४) कांचीवरम।

स्टेशनसे १ मील दूर शहर है। यहांपर शहरके ३ भाग होगये हैं। १ शिव कांची, २ वैष्णव कांची, ३ जैन कांची—

१, शिव कांची—यहांपर एक धर्मशाला व बड़ा लम्बा चौड़ा शिवका मंदिर है। बीचके मंदिरमें सोने चांदीके काम सहित महादेवकी बड़ी भारी पिंडी है। मंदिरके चारों तरफ हजारों महादेवकी पिंडी हैं। एक बड़ा तालाव व दरवाजा है। इसके बाहर भंडारमें पीतलके बड़े२ हाथी, घोडा, सर्प्प, विमान आदि देखनेयोग्य हैं। इस मंदिरके आस–पास १ मील तक मकान व सैकड़ों मंदिर, छोटे बड़े हाथी–घोड़ा, गाडी, ऊंट व बड़े२ नादियां हैं। इस स्थानका नाम शिव कांची कहते हैं। यहां शिवजीका राज्य है। याने शिव मूर्तियां खूब हैं। यहांसे १ मील वैष्णव कांची है।

२, वैष्णव कांची—यहांपर १ बड़ा भारी दरवाजा है। बाजार भी है। आध मील तक वैष्णव भगवानके मंदिर हैं। हाथी–घोडादिकी रचना बहुत है। आगे १ बड़ा भारी मंदिर है। जिसमें स्वर्ण–चांदीका काम खूब है। उसमें मूर्ति विष्णु भगवानकी है। आसपासमें बहुत मूर्तियां हैं। यह मंदिर ऊंचा व पूर्व–पश्चिम द्वारवाला है। मंदिर कीमती है। उक्त दोनों जगहकी यात्रा करके रामेश्वर भी आ जासकते हैं। यहांसे २ मील जैन कांची है।

३, जैनकांची—यहांपर कोटसे घिरा हुआ मंदिर है। उसके भी ठहरनेको मकान है। दोनों तरफ दरवाजा है। भीतर एक बड़ा भारी मंदिर है। यहांपर बड़ी भारी मूर्तियां हैं। यहांपर

बड़े२ विद्वान आचार्योंने ब्राह्मण कुलमें जन्म लिया था। पहिले यहांका राजा जैन न्याय प्रिय था। यह पूरा शहर बडा भारी है, अब खण्डर२ होगया है। मिथ्या धर्मकी मान्यता होगई। समन्तभद्राचार्यने यहांपर कई वर्षों तक शास्त्रार्थ करके अन्य मतियोंको पराजित किया था। काल दोषसे अन्य लोगोंकी मान्यता है। यहांपर सिर्फ जैन ब्राह्मणोंके ८ घर रह गये है। यहांसे लौटकर आरकोम लौटकर आना चाहिये, फिर टिकट काटपाडीका लेवे। ॥≈) लगाता है।

विशेष-पहिलेकी पुस्तकमें पोनूर, आरपाकम, मनारगुण्डी, सीताम्बुरकी यात्रा लिखी गई है। मैं उस विषयमें विशेष नहीं जानता हूं। इसलिये यात्रियोंके व्यर्थ तकलीफके लिये नहीं लिखा है। अगर जाना हो तो नीचे देखो! कांजीवरमसे ।≈) टिकिट देकर दूसरी स्टेशन विल्लुकम उतर पड़े। विल्लुकम शहर अच्छा है, १ वैष्णव धर्मशाला है। यहासे बैलगाडी ६ मील आरापाकम गांव जावे। ग्राम अच्छा है, १ धर्मशाला, १ दिगम्बर जैन मंदिर है। भट्टारकजीकी गद्दी भी है, वैष्णव लोगोंके यहांपर बहुत कीमती २ मन्दिर हैं। हजारों मूर्तियां हैं, दर्शनोंको हजारों लोग आते हैं। फिर यहांसे बैलगाड़ीमें १८ मील पोनूर ग्राम पडता है। यह ग्राम भी अच्छा है। जैनियोंकी वस्ती अच्छी है, १ मन्दिर और प्राचीन प्रतिमा है। यहांसे ७ मील दूरीपर एक पहाड़ है। बैलगाड़ीमें जाना होता है। पहाड़पर जानेको सड़क है। पहाड़पर एक वृक्षके नीचे चबूतरापर १॥ हाथ लम्बी चरणपादुका है। कुन्दकुन्दस्वामीने यहांपर बहुत कालतक तपस्या की थी। यह क्षेत्र इस प्रांतमें

प्रसिद्ध है। हजारों लोग यात्राको आते-जाते हैं। यहांसे फिर ३ मील दूरीपर १ ग्राम पड़ता है। वहांपर मंदिर व जैन घर हैं। फिर आगे १४ मील दूर सीताम्बुर ग्राम है। यहां भट्टारकजीका मकान ३ मंदिर और बहुत प्रतिमा हैं। यहांसे पूर्वदिशामें १ पीसुम ग्राम है। १ मील दूर पड़ता है। यहांपर श्री आत्मानुशासनके रचयिता गुणभद्राचार्यका जन्म हुआ था। बहुत काल वीत गया है। एक वावड़ी पर १ छत्री और चरणपादुका है। लौटकर सीताम्बुर आवे। यहांसे मोटरसे १४ मील तींडीवनम जावे। यह शहर अच्छा है। १ दि० जैन धर्मशाला, १ मंदिर, २ तालाव और बहुत घर दि० जैनियोंके हैं। यहांसे आध मील तीड़ींवनम स्टेशन है। १।=) देकर मद्रास चला जाना चाहिये। फिर चाहे जिधर चला जासकता है। आराकोनमसे १ गाड़ी तींडीवनम जाती है। टिकिटका ।।।=) लगता है।

(२५५) कटपाड़ी स्टेशन।

यहांसे टिकिट १।।) देकर माधीमंगलम्‌का लेलेना चाहिये। फिर गाड़ी बदल कर माधीमंगलम् जावे।

(२५६) माधी मंगलम्।

स्टेशनसे १ मील ग्राम है। ग्रामसे किसी आदमीको साथ लेकर २ मील दूर तीरुमले ग्राम जावे। इसी नामका पहाड़ सामने दिखता है।

(२५७) तीरुमले पहाड़।

यह छोटा ग्राम है, आचार्य श्री वादीभसिंहका यह जन्म स्थान है। यहांपर जैन बहुत रहते थे। मुनिराज पहाड़की गुफा-

ओंमें ध्यान करते थे। पहाड़की तलेटीमें २ मन्दिर हैं। पहाड़के नीचे एक मन्दिर है। उसके ऊपर रंगदार बड़ी२ गुफाएं हैं। जिन प्रतिमाएं रमणीक हैं। यहांका दर्शन करके दूसरा रास्ता पहाड़ ऊपर जानेका है। फिर ऊपर जानेकी सीढ़ियां बन्धी हैं। पाव मीलका चढ़ाव है, ऊपर दरवाजा है, भीतरी पहाड़में उकेरी हुई शांतमुद्रा बहुत प्राचीन १९ हाथ ऊंची खड्गासन श्री नेमिनाथ स्वामीकी प्रतिमा विराजमान है। एक देहरीमें पार्श्वनाथकी प्रतिमा विराजमान है। उसीके पास वादीभसूरिकी १ बालिस्त चरणपादुका हैं। यहांका स्थान रमणीक है। यहांकी यात्रा करके नीचे आवे। फिर माधीमंगलमसे आगे रेल जैनबद्रीकी तरफ जाती है। सो पहिले पूछ लेना चाहिये। हम यहांसे आगे नहीं गये। सो बराबर याद नहीं है। अगर आगे नहीं जाना हो तो लौटकर काटपाड़ी आ जावे। फिर यहांसे किसी भाईको मद्रास जाना हो तो मद्रास जावे। अगर किसीको मूलबद्री जाना हो तो वहांको जावे। रामेश्वर जाकर भी मूलबद्री जा सकते हैं। टिकट ७) रुपया ज्यादः लगता है। मूलबद्रीसे आते हुए रामेश्वर जानेमें भी ७) का फरक पड़ता है। आगे दो लाईनोंका रास्ता लिखता हूं। पहिले रामेश्वर होकर मूलबद्रीका रास्ताका उल्लेख करता हूं। काटपाडीसे टिकट ९) देकर मदुराका लेवे। बीचमें बील्लुमपुर गाडी बदलकर मदुरा जंकशन उतर पडे।

(२५८) मदुरा जंकशन।

यह शहर बहुत बड़ा भारी तालावके बीचमें बसा हुआ है। यहांपर १ बड़ा लम्बा-चौड़ा कुंड है। उसकी दीवालोंपर जैन

मुनि, मंदिर व जिनधर्मियोंकी बड़ी रौद्रदशा दिखलाई गई है। यहां पर कोई कालमें दुष्ट राजा हुआ था। उसने जैन मुनियोंकी बड़ी बुरी दशा की थी। जैनियोंकी मूर्तियां तुडवा डालीं। उनका दर्शन कुंडमें उकेरकर दिखाया है। यह दृश्य देखनेसे परिणाम एकदम दुःखरूप होजाते हैं। परन्तु ऐसे घोर उपसर्ग होनेपर भी जिनधर्मी महात्मा जरा भी नहीं विचलित हुए। यहांका दर्शन किये विना दृढ़ विश्वास नहीं हो सकता है। यहांका ज्यादः हाल कहांतक लिखूं। देखनेसे ही मालूम होगा। टिकट सीधा धनुष्यकोटीका लेना चाहिये। २) लगता है। पहिले बीचमें रामेश्वर पड़ता है। धनुष्यकोटी पहिले जाकर लौट आवे।

(२५९) धनुष्यकोटी।

रामेश्वरके आगे समुद्रके बीचके मंदिरमें राम-लक्ष्मण-सीताकी मूर्तियां हैं। सागरवर्तादि दोनों धनुष्य पथमें खुदे हुए हैं। रामचंद्रजी यहां तक सीताके लिये पुल बांधकर आये थे। फिर देव आकर रामचंद्रादिको लंकामें लेगया। ऐसी कथा वैष्णव पुराणमें है। जैनियोंको अपने अनुसार मानना चाहिये। यहांसे आगे लंकापुरी बहुत दूर है। समुद्र होनेसे उस लंकामें गमन नहीं है पर अंग्रेजी लंकामें अग्निबोट द्वारा जासकते हैं। इसका विशेष हाल ज्ञात नहीं है।

(२६०) कृत्रिम लंका।

आजकल यही अंग्रेजी राज्यमें अच्छा शहर है। अग्निबोट जहाज जाते हैं। कोट–दरवाजा मजबूत और भारी २ बाजार हैं। बड़े देशोंके व्यापारी रहते हैं। जैनियोंका पता नहीं है। धनुष्य-

कोटीसे अग्निबोट द्वारा बंगलोर, मंगलोर, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास भी जासकते हैं। धनुष्यकोटीसे लौटकर ≡) की टिकट लेकर रामेश्वर आजावे।

(२६१) सेतुबन्ध रामेश्वर।

समुद्रके बीच टापुपर यह स्थान है। स्टेशनके पास ग्राम अच्छा है। लाखों यात्री हर समय आते-जाते रहते हैं। धर्म-शाला और १९० घर ब्राह्मण पंडोंके हैं। एक बड़ा विशाल मंदिर है जिसके पूर्व-पश्चिममें दरवाजे हैं। भीतर बहुत मंदिर हैं। मूल नायक रामेश्वर महादेव हैं। लाखों रुपयोंके सोने-चांदीका काम है। बड़े२ नादियां हैं। पीतलके हाथी, घोड़ा, रथ, मनुष्य, बैल, सर्प इत्यादि चीजें देखने योग्य हैं। यहांपर कौड़ी, शंख, तसवीरें आदि चीजें बेचनेवाले मंदिरमें रहते हैं। ग्राममें खाने-पीने, पूजनका सामान मिलता है। यह मूर्ति रामचन्द्रकी बनाई हुई है। इसलिये इसका नाम रामेश्वर है। रामचन्द्रजी जलके बीचमें सड़क बांधकर आये थे। इसलिये सेतुबन्ध भी कहते हैं, लौटकर स्टेशन आजावे। अगर किसीको धनुष्यकोट जाना हो तो चला जावे, हाल ऊपर देखो। ३॥) देकर टिकिट त्रिचिनापल्लीका लेवे। बीचमें मदुरा गाड़ी बदलकर त्रिचिनापल्ली उतर जाना चाहिये। फिर स्टेशनपर दूसरे लोगोंसे पूछकर रंगाबंगास्वामी चला जावे। त्रिचिनापल्लीसे -) का टिकिट लेकर श्री रंगारोड़ उतर पड़े।

(२६२) रंगाबंगास्वामी।

स्टेशनसे ४ मील दूरीपर ≥) सवारीमें बैलगाड़ी जाती है। यहांपर लकड़ियोंकी बड़ी भारी २ मूर्तियां रंगदार बनी हैं, अन्य-

मती लोग जो रामेश्वर जानें आने हैं वे लोग यहां भी आने हैं। यहांसे १॥) देकर एरोड़ा जं०का टिकिट लेवे।

नोट—अगर किसीको रंगावंगास्वामी नहीं जाना हो तो त्रिचिनापल्लीसे सीधा टिकिट एरोडाका लेलेना चाहिये। त्रिचिनापल्लीसे १ रेल मद्रास जाकर मिलती है। एरोड़ा गाडी बदलकर टिकटका ५॥) देकर मंगलोर जावे। यह हाल आगे देखना चाहिये।

(२९३) एरोडा जंक०।

रामेश्वर जाकर त्रिचिनापल्ली गाड़ी बदलकर यहां आकर मिल जावे। अगर कोई भाई मूलबद्रीसे लौटकर इसी रास्ते आवे, तो रामेश्वर जानेवालोंको एरोडा गाड़ी बदलकर, ५॥) देकर रामेश्वरका टिकट लेवे। फिर बीचमें रंगावंगा स्वामी देखकर, त्रिचनापल्ली गाड़ी बदलकर मदुरा उतर पड़े। मदुरा देखकर और गाड़ीमें सवारी होकर रामेश्वर जावे। फिर लौटते समय मदुरा गाड़ी बदले। फिर विल्लुपुरम गाड़ी बदलें। काटपाडी गाड़ी बदलकर माघीमंगलम् (तीरुवल्लम्) स्टेशन आजावे। तीरुमल्लाकी यात्रा करके पीछे स्टेशन आवे। काटपाडी गाड़ी बदलकर आरकोनम स्टेशन जावे। टिकटका ।≈) देकर कांचीवरमकी यात्रा करें। वापिस आरकोनम आवे। आरकोनमसे किसी भाईको मद्रास देखनेकी इच्छा हो तो ।॥) देकर मद्रास चला जावे। मद्राससे चारों तरफ जासकते हैं। जहां मन हो वहां चला जावे। मद्राससे १ लाईन रायचूर जाती है। इधर भी आजाना चाहिये। टिकट ५।) लगता है। अगर किसीको मद्रास नहीं देखना हो तो आरकोनमसे सीधा रायचूर जाना चाहिये। टिकट ५॥) लगता है। रायचूर या

कालकासे मद्रासकी यात्रा करता हुआ रामेश्वर, एरोडा, मंगलोर होता हुआ मूलबद्री जावे। मद्रासमे आगेकी यात्रा नहीं करना हो तो सीधा मंगलूर मूलबद्री जावे। १०) देकर टिकट मंगलूरकी लेवे। काटपाडी, आरकोनम पड़ता है। यह गाड़ी जोरालपेठ जं० बदलती है। बीचमें एरोड़ा पड़ता है। मंगलूर होकर मूलबद्री जावे, रामेश्वर न जाकर सीधा मंगलूर जावे। ऊपर देखो।

(२६४) मंगलूर शहर।

यह शहर अच्छा है, समुद्रके किनारे है, स्टेशनसे १ मील दूर कमाई गलीमें १ दि० जैन मन्दिर व ठहरनेका प्रबन्ध है। दि० जैन बोर्डिंगमें भी ठहरनेका इन्तजाम है। चैत्यालय है, शहर देखने योग्य है, आगबोट चारों तरफ जाती है। जहां चाहे जा सकते हैं। १ रास्ता रेलका भी आता है, फिर यहांसे ॥।) सवारीमें २१ मील पक्की सड़कसे मोटर मूडबिद्री जाती है।

सूचना–रायचूर, मूडबद्री, सीरज, सीमोगा, सीकेरी, बेंगलूर, मेसूर, जैनबद्री तरफ नारियल, फनस, केला बहुत मिलते हैं। इनका व्यापार भी खूब होता है। यहांकी भाषा "कनाड़ी" और "तामिल" है, लोग हिन्दी बहुत कम समझते हैं। इंग्लिशसे काम चलता है। कई लोग इशारे या उस पदार्थको छू कर काम चलाते हैं। इस देशमें चांवल बहुत पैदा होता है, चांवलोंकी ही पकवान्न, पुवा, पुरी, लड्डू बनते हैं। नारियलका तेल निकल कर बिकता है, गेहूं, घृत बहुत कम मिलता है। कम खाते हैं, मंदिरोंको जैन बस्ती बोलते हैं, प्रत्येक यात्रीको इसका ध्यान रखना चाहिये। इस देशमें मन्दिरको कुछ भेट देना हो तो वहींपर चढ़ावे, भंडार

नहीं है । इसी देशमें दो तीन मंजलपर दर्शन रहता है, पूजाका अधिकार उपाध्याय लोगोंके आधीन है । वीसपंथी आम्नायके लोग यहांपर हैं । श्वेतांबरोंका झगड़ा नहीं है । केला, फल, फूल, लड्डू, पुरी, कपूर, घृत, तेल, दीपक-आरती हमेशा चढ़ती है । पञ्चामृत अभिषेक होता है । चावल, रोटी, पुरी आदि भी चढ़ाते हैं । कोई जैनी त्यागी कोई २ फल, नैवेद्य आप पवित्र जानकर खाते हैं ! मूलबद्रीकी दूसरी लाईनसे रास्ता लिखता हूं । काटपाडीसे सीधा रास्ता मूलबद्रीका है टिकट ।||) देकर जोलारपेठका लेलेवे ।

(२६५) जोलारपेठ जं० ।

यहासे अगर किसीको बेंगलोर जाना हो तो १||) रुपया टिकटका देकर पहिले बेंगलोर चला जावे । फिर लौटकर जोलारपेठ आजावे । यहांसे टिकट मंगलोरका ५||) देकर लेलेवे । एरोडा जंकशन पड़ता है । फिर बेंगलोर और मूलबद्री आती हैं। जोलारपेठसे एक२ रेलवे काटपाडी होकर मद्रास व बेंगलोर जाती है ।

(२६६) बेंगलोर ।

यह शहर अच्छा है । लाखोंका व्यापार होता है। चीकपेठ बाजारमें दि० जैन मंदिर और धर्मशाला है। मंदिरमें बड़ी प्राचीन खड्गासन धातुकी प्रतिमा है । यहांसे १ रेलवे मीरज होकर पूना जाकर मिलती है । १ म्हैसूर होकर मंदगिरी जाती है । और सीकेरी जाकर मिलती है ।

(२६७) म्हैसूर ।

यह शहर बड़ा भारी राजा सा० का साफ स्वच्छ रमणीक है । म्हैसूरका राज्य बड़ा है । राजमहल, बाजार आदि देखनेयोग्य

हैं। स्टेशनसे १ मील दि० जैन बोर्डिंग व धर्मशाला है। यहींपर १ मंदिर, बगीचा आदि सबका आराम है। आदिराया अनंतराया धर्मशालाके पास मोतीखानामें रहते हैं। यहांपर घर१ मंदिर हैं। उन सबमें मूंगा-मोती स्फटिकमणिकी प्रतिमा है। एक मंदिर राजवाडामें है। किसीको साथ लेकर दर्शन करना चाहिये। यहांका बाजार बड़ा है। सामान सब मिलता है। फिर यहांपर पूछकर मोटर या तांगामें १२ मीलकी दूरीपर जंगलमें म्हैसूरकी पश्चिम दिशामें २) सवारी देकर गोमटपुराका दर्शन करना चाहिये।

(२६८) गोम्मटपुरा।

बिलकुल जंगलमें १ पहाड़ है। उसपर एक प्राचीन मंदिर है। बिजली गिरनेसे पहाड़ फटकर मंदिर भी टूट गया है। मगर प्रतिमाको चोट नहीं आई। प्रतिमा गोम्मट स्वामीकी प्राचीन १५ हाथ ऊंची खड्गासन विराजमान है। सुना जाता है कि पहिले यहांका राजा जैनधर्मी था। घरमें चैत्यालय था। जैन साधुओंकी सेवा करता था। इस गोम्मटस्वामीकी प्रतिमाका गंधोदक, वंदना करके पीछे भोजन करता था। आज तो इस तीर्थराजका जीर्णोद्धार करानेवाला भी कोई नहीं है। जैन जातिकी दशापर बड़ा दुःख होता है! लौटकर म्हैसूर आवे। म्हैसूरके आगे मंदगिरिका १) रु० टिकिट लगता है।

(२६९) मन्दगिरि।

आरसी केरीसे रेल बदलकर हासन होकर मंदगिरि जाती है। फिर जैनबद्री (श्रवणबेलगोला) जाते हैं। फिर म्हैसूर, बेंगलूर, मंगलूर होकर मूलबद्री आदि जाते हैं।

(२७०) जैनबद्री तीर्थराज (श्रवणबेलगोला)

मंदगिरि स्टेशनपर सेठ गुरुमुखराय सुखानन्दजी बम्बईकी धर्मशाला है, ऊपर छतपरसे देखनेसे गोम्मटस्वामीका दर्शन होता है। यहांपर एक नदी है, उतरकर उस पार जाना चाहिये। वहांसे बैलगाड़ी या मोटरमें १२ मील गोम्मटस्वामी जाना चाहिये।

(२७१) गोम्मटस्वामी।

यह ग्राम अच्छा रमणीक है। २ धर्मशाला हैं। तालाब, जङ्गल, पहाड़ आदि शोभायमान हैं। नीचे गांवमें घर२ में १४ चैत्यालय, ७ मन्दिर हैं। प्रतिमा बड़ी रंग-बिरंगी हैं, एक मंदिर बड़ा भारी मानस्थंभ युक्त चौवीस महाराजका है। उसमें ठहरनेकी जगह भी खूब है। इसीके पास श्री चारुकीर्ति महाराज भट्टारकका मंदिर व मठ है। मंदिरमें धातु—पाषाणकी प्राचीन प्रतिमाएँ हैं। भट्टारकजीके भंडारमें ताड़ पत्रपर लिखे हुए शास्त्र व मूंगा मोती, लीलम, स्फटिकमणिकी छोटी-बड़ी १४ प्रतिमा हैं। महाराजसे कहकर दर्शन करना चाहिये। नीचेके सब मंदिरोंका दर्शन करके फिर पहाड़पर जाना चाहिये। विंध्याचल पहाड़की तलेटीमें दरवाजा, और एक मंदिर है। मंदिरमें रंग२ की प्रतिमा हैं। यहींसे पहाड़ पर जाना होता है। आध मीलकी चढ़ाई है। सीढ़ियाँ लगी हैं। बीचमें एक दरवाजा और तोरण है। आगे फिर पहाड़के चारों तरफ कोटसे घिरा हुआ एक दरवाजा है। भीतर तीन मंदिर, १ मानस्तंभ व तालाब हैं। फिर सीढ़ियाँ लगी हैं। ऊपर १ गढ़ और दरवाजा है। दरवाजेके दोनों तरफ देहरी और प्रतिमा है। सीढ़ियोंके बाद कोट, स्तंभ, हैं। स्तंभके दरवाजेके नीचे प्रतिमा

है। फिर आगे सीढ़ियां हैं। ऊपर १ भारी गढ़ है। जिसमें होकर ऊपर जानेको दरवाजा है। गढ़के भीतरकी दीवालोंपर प्रतिमा है। एक नेमिनाथका मंदिर है। मंदिरके ऊपर प्रतिमा है। सामने मानस्तंभ है। ऊपर-नीचे जिन शासन देवी-देवता हैं। बाहर प्रतिमा हैं। पहाड़पर बड़े२ शिलालेख हैं। दर्वाजेपर बड़े२ गढ़ हैं। चारों तरफ परिक्रमामें बहुत प्रतिमा हैं। २ मंदिर हैं। श्री गोम्मट (बाहुबलि) स्वामीकी बत्तीस गज ऊंची खड्गासन प्रतिमा है। बड़ी शांत मुद्रा संयुक्त, देखने ही आनंद होता है। सब दर्शन करके नीचे आवे। फिर दूसरे पहाड़पर वंदनाको जाना चाहिये। चंद्रगिरि पहाड़ बिलकुल सरल है। ऊपर २ तालाव हैं। चारों तरफ कोटसे घिरा हुआ है। एक दरवाजा जानेका है। भीतर १ मानस्तंभ है। ऊपर जिन शासन देवता है। आगे छोटे बड़े कुल १८ मंदिर हैं। उनमें महामनोज्ञ पद्मासन, खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं। बीचमें १ प्रतिमा खंडित खड़ी है। यहांपर ४ छत्रियां हैं। जिसमें श्री प्रतिमा सहित बड़े २ शिलालेख हैं। मंदिरके शिखर, दीवाल, ऊपर दालानमें भी प्रतिमा हैं। उनमें बड़ी२ कीमती शासन देवताओंकी प्रतिमा है। सबका दर्शन-पूजन करें। वहांपर बाहरके कोटकी पूर्वकी तरफ एक गुफा है। वहांपर भद्रबाहुस्वामीका तपस्थान है। राजा चंद्रगुप्तको आचार्य पद देकर आप स्वर्गधाम पधार गये थे। जिस समय १२ वर्षका अकाल पड़ा था, उस समय १२ हजार मुनि इनके साथ थे। आपने निमित्त ज्ञानसे अकाल जानकर मुनियोंको दक्षिणकी तरफ भेजा था। आपने अपनी आयु थोड़ी जानकर जानेवाले

मुनियोंको शिक्षा देकर वहींपर ठहर प्राणान्त किया था। वहींपर इनकी समाधि बनी है। कईने भ्रष्टाचारी होकर श्वेताम्बर मत चलाया था। पूर्ण कथा भद्रबाहु चरित्रसे जानो। इनका दर्शन-पूजन करके कोटके भीतर होकर उत्तर दिशाके छोटे द्वारसे बाहर जावे। बाहर १ मंदिर, १ तालाव है। फिर पहाड़से नीचे उतरकर ग्राममें आवे।

(२७२) श्रवणवेलगोला ग्राम।

इसीका प्राचीन नाम श्रवणवेलगोला है। यहांपर १ बड़ा भारी कीमती पत्थर स्तंभ, कोट, मंदिरके ऊपर खुदाईके काम सहित टूटा मंदिर है। उसमें बड़ी भारी विशाल प्रतिमा है। दर्शन करके लौटकर ग्रामके बाहर आवे। १ तालाव पर विशाल मंदिर और बहुत प्रतिमा है। उनमें एक श्वेत वर्णकी पार्श्वनाथकी प्रतिमा मनोज्ञ हैं। दर्शन करके चला आवे। आगे फिर एक तालाव बीचमें पड़ता है। १ मील आनेपर कोटसे घिरे हुए २ मंदिर व बहुत प्रतिमा हैं। शिखरमें यक्ष यक्षणीकी तथा और भी बहुत प्रतिमा हैं। यह मंदिर कीमती है। फिर भी बीचमें ४ मंदिर और १ घरमें चैत्यालय है, उनका दर्शन करके धर्मशालामें आजाय। फिर वहांसे चलकर मंदगिरि स्टेशन आवे। म्हैसूर तरफ आगे जानेवाले आगे चले जायं। हाल ऊपर देखो। और नीचे जानेवाले १।) देकर टिकट हासनका लेवे। वहांका भी दर्शन करके १ टायमके वास्ते आरसीकेरी चला जाय। जैनबद्रीमें नेमचंद्रादि आचार्योंका समूह विराजमान रहा था। उन्हींके उपदेशसे मूर्तियोंका निर्माण हुआ है।

(२७२) हासन।

स्टेशनसे २ मील शहर है। १ दि० जैन धर्मशाला, २ मंदिर हैं। प्रतिमा प्राचीन एवं रमणीक हैं। दि० जैनियोंके घर बहुत हैं।

(२७४) आरसीकेरी।

स्टेशनके पास १ वैष्णव धर्मशाला है। १ मील दूर एक सहस्रकूट चैत्यालय, १ मंदिर और बहुत प्रतिमा हैं। मंदिरोंका नाम " जैन वस्ती " है। जैन वस्ती बोलनेसे पता जल्दी लगता है। मंदिर कहनेपर कोई नहीं समझता है।

वहांसे १ रेलवे लाईन बीरूर जंकशन होकर सीमोगा जाती है। जंकशनपर गाड़ी बदले। वहांसे मोटरमें तीर्थली जावे। तीर्थलीसे हुमच पद्मावती जाते हैं। लौटकर फिर यहीं आवे। फिर वहांसे रामेश्वर, वरांटा, कारकल, मूलबद्री आवे। मूलबद्रीकी यात्रा करके वेणूर मोटरमें जावे। लौटकर मूलबद्री आकर मंगलूर, इरोडा, त्रिचनापल्ली, मदुरा, रामेश्वर होता हुआ काटपाडीकी तरफ यात्रा करके मद्रास जाकर मिले। इसका हाल ऊपर देखो।

(१) आरसीकेरीसे १ गाड़ी बेंगलूर जाकर मिलती है। बीचमें टीपटूर, नीटूर, टीमकूर, हीराहल्ली पड़ता है। किसीकी खुशी हो तो उतर पड़े नहीं तो बेंगलोर जावे। इसका हाल मूल-बद्रीसे लौटकर लिखा जायगा, (२) आरसीकेरीसे बीरूर, मीरज, कोलापुर, सांगली, हुबली, जलगांव होकर पूना तक रेल जाती है। सीमोगासे बैलगाड़ीमें हुमच पद्मावती जाना होता है, वहांसे ७ लाइन जाती हैं।

आपसी फूट विसंवाद यहांपर नहीं है, षोड्श संस्कारविधि

यहांपर हैं। यज्ञोपवीत, मुनिदान, स्त्री पूजा भी आगमानुसार कर सकते हैं, बड़े२ आचार्य इस देशमें हुए हैं। इसीसे धर्मपरायणता यहांपर चली आती है, बड़ी कीमती अपूर्व प्रतिमाएं यहांपर हैं। इस प्रकार मूलबद्री तीर्थराजके दोनों रास्तोंका उल्लेख किया। अपनी इच्छानुसार रास्तेसे आ जासकते हैं।

(२७२) श्री मूलबद्री (मूडबिद्री) तीर्थराज।

यह शहर अच्छा है, ४ धर्मशाला और भट्टारकजीका मठ है। कुल २२ मंदिर हैं, उनमें ३ मंदिरोंका हाल—

१—श्री चन्द्रप्रभुस्वामीका बड़ा भारी करोड़ोंकी लागतका, मंदिर है, चारों तरफ दो कोट, मानस्तम्भ, २ हस्ती और स्वर्णकी प्रतिमा चन्द्रप्रभु स्वामीकी है। ऊपरके मंजलमें सहस्रकूट चैत्यालय, व साधारण चैत्यालय है, तीसरे मंजिलमें हरी, पीली, लाल, श्वेत नाना तरहकी प्रतिमा हैं, धातुकी भी बहुत प्रतिमा हैं। स्फटिकमणिकी अन्दाजा ९० प्रतिमा हैं। पुजारीको कुछ देकर आनन्दसे दर्शन करना चाहिये।

दूसरा सिद्धांत मंदिर है। यह भी बहुत मजबूत और विशाल मंदिर है। यह मंदिर भी करोड़ोंकी लागतका है। नीचेके मंदिरमें श्री पार्श्वनाथस्वामीकी १९ हाथ ऊँची बड़ी प्रतिमा है। और भी प्रतिमा हैं। नीचे भंडारमें हीरा, पन्ना, मूंगा, मोती, गरुड़मणि, पुष्पराग, वैडूर्य्य, चांदी, सोनाकी ३९ प्रतिमाएं हैं। भंडारकी चावी ३ हैं। १ भट्टारकजीके पास व दो मुखिया पंचोंके घरपर रहती हैं। जब यात्री आते हैं तब तीनों चावीवाले इकट्ठे होकर और कुछ रुपया लेकर बहुत यात्रियोंके संघटनके समय

मंडप तैयार करके बहुत दीपक-कपूर जलाकर आनंदसे दर्शन कराते हैं। कमती यात्री होनेपर कमती पैसा देनेसे मामूली दीपक जलाकर दर्शन कराते हैं। जो रुपया लिया जाता है वह २२ मंदिरोंकी पूजा व जीर्णोद्धारमें लगाया जाता है। यहां और भंडार वगैरह कुछ नहीं लेते हैं। इसी मंदिरमें सिद्धांत शास्त्र श्रीधवल, महाधवल, जयधवल ताडपत्रोंपर लिखा हुआ है। उसका दर्शन भी उसी समय कराते हैं। ये भी भंडारमें रहते हैं। फिर दूसरे मंजिलमें अनेक प्रकारकी रंग बिरंगी बहुत प्रतिमा हैं। एक नंदीश्वर कूट सहित चैत्यालय है, तीसरे मंजिलमें स्फटिक मुंगादिकी प्रतिमा बहुत हैं। यहांपर भी दर्शन करना चाहिये। और मंदिरोंमें भी अनेक प्रकारकी प्रतिमा दो २ मंजिलोंमें हैं। बहुत जगह एक दो प्रतिमा स्फटिकमणिकी रहती हैं। पुजारीसे पूछपाछके दर्शन करना चाहिये। यहांपर १ बोर्डिंग भी है। वहांपर १ चैत्यालय है। भट्टारकजीके मठमें स्फटिकमणिकी प्रतिमा है। आगे यह मूलबद्री शहर समुद्रके बीचमें द्वीपपर था। यहांपर हजारों घर जौहरी लोगोंके थे।

वे लोग समुद्रसे द्वीपांतरमें व्यापारको जाते थे। सो कोई भाग्यवान् प्रतिमा लेकर आते थे। सो यहांपर विराजमान हैं। यही मंदिर भी उन्हीं लोगोंने बनवाया था। आज इन प्रतिमाओंकी कोई कीमत भी नहीं दे सकता है। कलकत्ता, बम्बई, इन्दौर, देहलीके सेठ भी ऐसे मंदिर बनवानेको असमर्थ हैं। उन महानुभावोंको कोटिशः धन्यवाद है, जिन्होंने ऐसा कार्य करके अपनी चंचल लक्ष्मी, तथा जन्म सफल किया। मंदिरोंके लिये सेठ लोग

करोड़ोंकी जीविका देगये थे। वह अंगरेजोंने लेली। सिर्फ मंदिरोंकी पूजा प्रच्छालके लिये १८००) रुपया वार्षिक मिलता है। इतनेमें इतने बड़े भारी मंदिरोंका खर्च कैसे चल सकता है? जीर्णोद्धार भी कैसे होसकता है? यह बड़े खेदकी बात है। यहांके पंचोंने इन मंदिरोंका पूरा इंतजाम कर रखा है। उनको भी धन्यवाद है जो कि करोड़ोंकी जायदादकी रक्षा करते हैं। अब यहांसे ॥) सवारी देकर मोटरसे १२ मीलपर वेणुर क्षेत्र जाना चाहिये।

(२७६) श्री वेणुर क्षेत्र-(गोम्मटस्वामी)

यहां पर कोटसे घिरा हुआ १ मंदिर है। उसमें हँसमुख शांत मुद्रा २९ हाथ ऊंची श्री गोमट्टस्वामीकी प्रतिमा है। दरवाजेके पास दो मंदिर छोटे हैं। आगे फिर एक मंदिर बड़ा है। उसमें ठहरनेको दो कोठरी व धर्मशाला बाहर है। थोड़ी दूर १ मानस्थंभ है। ऊपर-नीचे स्थंभमें प्रतिमा विराजमान हैं। सामने तीन मंदिर हैं। १-चौवीसीका, २-आदिनाथस्वामीका, ३-चन्द्रप्रभुस्वामीका। एक मंदिरके ऊपर भी दर्शन है। यह मंदिर और गोमट्टस्वामीकी मूर्ति आज लक्षोंकी कीमतकी है। ग्राम छोटासा है। तालाव-नदी है। यहांका दर्शन करके फिर मोटरसे मूलबद्री आजावे। फिर "कारकल" मोटरसे ॥) सवारी देकर १० मील पर जाना चाहिये।

सूचना-रायचूर आदिका हाल ऊपर लिखा है। यहांसे अब कारकल, वरांग, तीर्थली, सीमोगा होकर बीरूर जाकर रास्ता मिलता है। सो यात्रियोंको पहिले नंबरके रास्ता आनेवालोंको दूसरे नंबरके रास्तेसे जाना चाहिये। दूसरे नंबरके रास्तेसे आनेवालोंको

पहिले नंबरके रास्ते जाना चाहिये। ऐसा करनेसे कोई भी यात्रा नहीं छूटेगी। और खर्च भी कम पड़ेगा।

(२७७) श्री कारकल क्षेत्र (गोमटस्वामी)।

कारकलमें दि० जैन धर्मशाला, या भट्टारकजीके मठमें ठहरना चाहिये। यहांसे शहर आध मील पड़ता है। शहर अच्छा है। भट्टारकजीके मठके पासमें धर्मशाला, पाठशाला, कुआ, तालाब हैं। सुन्दर रमणीक चीजें हैं। धर्मशालाकी उत्तर दिशामें लाखोंकी कीमतका चोरासा पहाड़ पर १ मंदिर है। इसमें वृषभको आदि लेकर वासुपूज्य पर्यंत १२ प्रतिमा चारों दिशामें १०-१० हाथ ऊँची खड्गासन हैं। छोटी-बड़ी और प्रतिमा भी हैं। नीचे ४ मंदिर हैं। दक्षिण दिशाके पहाड़पर कोट खिचा हुआ है। पहाड़का चढ़ाव सरल है। ऊपर मानस्थंभ, और बगलमें छोटे दो मंदिर हैं। बीचमें १८ गज (३९ हाथ) ऊंची शांत मुद्रा गोम्मटस्वामीकी प्रतिमा है। दर्शन करके उतरकर नीचे आजाय। फिर आगे पश्चिमकी तरफ चले, तो बीचमें चंद्रप्रभुका चैत्यालय है। आगे तालाबके बीच मंदिर है। जिसमें नीचे चार दिशामें ४ प्रतिमा हैं। ऊपर मंजिलमें १ प्रतिमा है। आगे फिर जानेपर ४ मंदिर रास्तेमें पड़ते हैं। आगे जानेपर ६ मंदिर बड़े भारी हैं। उनमें १० जगह दर्शन हैं, एक सामने बहुत बड़ा मंदिर है, सामने मानस्तंभ है। मंदिरमें एक बड़ी भारी विशाल नेमिनाथ स्वामीकी प्रतिमा है। और भी बहुत प्रतिमा हैं। एक प्रतिमा स्फटिकमणिकी है। ऊपर मंजिलमें भी प्रतिमा है। बगलमें दो मंदिर हैं। जिसमें दो प्रतिमा धातु पाषाणकी हैं। फिर इस मंदिरके बाहर

एक मंदिर चौवीसीका है। जिसमें सैकड़ों प्रतिमा हैं। यहांपर छोटी२ प्रतिमा स्फटिकमणिकी हैं। कुल मंदिर २३ हैं। उनकी कीमत दो करोड़ रुपयासे अधिक है। इस दक्षिण प्रांतके मंदिरों व मूर्तियोंकी रचना करानेवालोंको धन्य है। आजकल बड़े २ शहरोंके सेठ भी गोम्मटस्वामी सरीखो प्रतिमाका निर्माण नहीं करा सकने हैं। यहांका दर्शन करनेसे आनंद वरसता है। यहांका दर्शन करके मोटरसे तीर्थली जावे। टिकटका ४) लगता है। बीचमें वरांग उतर पड़े। फिर वहांका दर्शन करके दूसरे टायमसे जाना चाहिये। मोटर दिनमें तीन वार आती जाती है।

(२७८) श्री वरांग क्षेत्र।

यह ग्राम छोटा है, चारों तरफ कोट खिचा हुआ है। एक धर्मशाला, कुआ, मकान व विशाल मंदिर है। उसमें अंदाजा २०० छोटी बड़ी प्रतिमा हैं। दो तीन प्रतिमा श्वेत पाषाणकी हैं जो कांच सरीखी चमकती हैं। एक प्रतिमा स्फटिकमणिकी है। दर्शन करना चाहिये। इस मंदिरके सामनेके तालावमें कमलफूल रहने हैं। बीचमें मंदिर है। उसके चारों तरफ चारों दिशामें १० प्रतिमा शांत मुद्रायुक्त हैं। पावापुर सरीखी रमणीकता है। इस मंदिरके मालिक पद्मावती हुमचवाले भट्टारकजी हैं। यहांपर भण्डार लिया जाता है। मुनीम पुजारी रहता है। भंडार देना चाहिये। फिर मंदिरकी उत्तर तरफ एक मानस्तंभ है। जंगल और बड़े२ पहाड़ हैं। यहांकी यात्रा करके मोटरमें सवार होकर सोमेश्वर उतर पड़े। इधरसे आनेवाला कारकलकी यात्रा करके मूलबद्री चला जावे।

(२७९) सोमेश्वर ग्राम।

यहांपर मोटर स्टेशन है। मंगलोरसे यहां तक मोटर आती है। यहांपर आगे छह मीलके चढ़ावका पहाड़ है। सड़क लगी है। मोटरवालोंकी बैलगाड़ी हैं। उनपर बैठालकर पहाड़पर पहुंचा देते हैं। बैठाकर ईघर उधर लोगों करते रहते हैं। पहाड़ ऊपर आगे जानेको दूसरी मोटर तैयार रहती है। उसमें बैठकर तीर्थली उतर पड़े।

(२८०) तीर्थली।

यह शहर अच्छा है। नदी किनारे १ ब्राह्मणकी धर्मशाला है यहांसे मोटर या बैलगाड़ी करके १८ मील हुमच पद्मावती जाना चाहिये। यहांसे हुमच तक पक्की सड़क है। मोटरमें जानेसे कम पैसा लगता है। हुमच ग्राम भी अच्छा है। यहांसे २ मील "जैन वस्ती" (मंदिर) को पांवसे जाना चाहिये। अथवा किसी आदमीको साथ लेवेवे। २ मीलका रास्ता है, मोटर-बैलगाड़ी भी जाती है। तीर्थलीसे बैलगाड़ी करके ॥) सवारी लगता है। १४ मील तक पक्की सड़क है। ४ मील कच्चा रास्ता है। सो बैलगाड़ीवाला सीधा ही जैन वस्ती लेजाता है। बीचसे भी रास्ता फूटकर जाता है। हूमच नहीं जाना होता है। बैलगाड़ी वाला १-२ दिन ठहर जाता है। लौटकर फिर उसका किराया करना पड़ता है। अपने सुभीता माफिक कार्य करना चाहिये।

(२८१) हूमच पद्मावती तीर्थ।

यहांसे २ मील हूमच ग्राम है। इस छोटे ग्रामका नाम भी हूमच है। यहांपर ३० घर दि० जैन व १ भट्टारकजीका

मठ है। पद्मावतीदेवीका प्रसिद्ध मंदिर है। इस देशमें उसको मानते हैं इसको हूमच पद्मावतीके नामसे पुकारते हैं।

भट्टारक महाराज ऐसे विकट जंगल, पहाड़में जिन मंदिरोंकी रक्षाके लिये वसते हैं। धन्यवाद ! महाराजका तोपखाना, नौकर हस्ती, घोड़ा, बगीचा, नीचे १ मंदिर भी मठमें है। महाराजके भंडारमें मूलबद्री जैसी हीरा, पन्ना, पुष्पराज, आदिकी १८ प्रतिमा हैं। उत्तरप्रांत सरीखी प्रतिमा लाकर अपने देशमें बिराजमान करे, ऐसा धर्मात्मा धनाढ्य कोई नहीं है। महाराजको कुछ रुपया देनेसे दर्शन करा देते हैं। भट्टारक वयोवृद्ध विद्वान् हैं। यात्रियोंकी पाहुनागति करते हैं। रसोईका सामान अपने भंडारसे देते हैं। जीमनेवालोंको अपनी रसोई जिमाते हैं। महाराजने एक पहाड़ खुदवा कर बगीचा लगाया है। उसमें नाना प्रकार पुष्पादि हैं। उस बगीचेमें १ प्राचीन मंदिर निकला है। एक प्रतिमा भी निकली है। बगीचेमें उसका दर्शन अपूर्व है। फिर बाहर एक बड़ा मंदिर और प्राचीन प्रतिमा है। पद्मावतीके मंदिरकी परिक्रमामें भी प्रतिमा बिराजमान हैं। पासमें १ धर्मशाला, कुआ, व वनकी शोभा अद्भुत है। आगे १ मंदिर पार्श्वनाथका है। आगे एक पंचवस्ती नामकी बड़ी मंदिरकी वस्ती है। उसमें कुल ७ मंदिर व २० छोटी-बड़ी प्रतिमा हैं। एक बड़ा भारी मानस्थंभ है। उसपर प्रतिमा व शिलालेख है। पांच शिलालेख दूसरे हैं। मंदिरके पीछे जंगल है। आगेके तालाबमें कमल फूल रहते हैं। तालाबके पीछे महाराजके बगीचामें नारियल, सुपारी, पानस, आम इत्यादिके वृक्ष हैं। और पद्मावतीजीके मंदिरके पीछे पहाड़ ऊपर आध मील चढ़-

कर एक प्राचीन मंदिर है जिसमें गोमट्टस्वामीकी ९ हाथ ऊंची प्रतिमा महा मनोज्ञ है। फिर पहाड़के आस-पास जंगलमें प्राचीन टूटे फूटे मंदिर हैं। वहींपर प्रतिमा व शिलालेख हैं। एक जानकार आदमीको साथ लेकर सबका दर्शन करें। यहांकी प्राचीन रचना देखकर आनन्द प्राप्त होता है। परन्तु आज इनकी मरम्मत कराने तथा देखनेवाला भी कोई नहीं है। किसी दिन यह बड़ा भारी शहर था। बड़े२ धर्मात्मा धनाढ्य रहते थे। उन्हीं लोगोंने यह रचना कराई थी। फिर यहांसे लौटकर तीर्थली लौट आवे। मोटरका २) भाड़ा देकर सीमोगा शहर उतर पड़े।

(२८२) सीमोगा शहर।

नदीके किनारे शहरसे १ मील अन्यमतियोंकी बड़ी भारी धर्मशाला है। यहांपर सब बातका आराम है। शहर अच्छा रमणीक व व्यापारप्रधान कस्बा है। कुछ मारवाड़ी श्वेताम्बर भाइयों की दुकानें हैं। दि०कुछ भी नहीं हैं। यहांसे ।।।) टिकटका देकर बिरूर जंकशन जाना चाहिये।

(२८३) बीरूर जंकशन।

यहांसे १ गाड़ी बेलग्राम, मीरज होकर पूना जाकर मिलती है। इसका हाल आगे लिखा जायगा। १ गाड़ी यहांसे आरसी-केरी बदलकर हासन, मंदगिरि, जैनबद्री होकर बेंगलोर म्हैसूर जाकर मिलती है। इसका हाल ऊपर लिख दिया है। यहांसे १ गाड़ी सीमोगा होकर आगे मोटरसे तीर्थली, हूमच पद्मावती उल्टा पहिलेकी स्टेशन होता हुआ रायचूर जाकर मिलती है। इसका हाल भी ऊपर लिखा है। मद्राससे १ गाड़ी जोलारपेठ, पोडनूर

होकर एरोड़ा मिलती है । एक गाड़ी वीरूरसे आरसीकेरी बदल-कर बेंगलूर जाकर मिलती है । इसके बीचमें किसी भाईकी इच्छा हो तो उतर पड़े । अब आरसीकेरीका हाल लिखते हैं ।

नोट–पूना तरफकी गाड़ीसे आनेवाले भाईयोंको आरसी-केरीसे बेंगलूर, म्हैसूर होकर जैनबद्रीकी यात्रा करता हुआ सीमो-गाका होकर मूलबद्री जाना चाहिये ।

वहांसे लौटकर मंगलूरकी तरफ होकर मद्रास, रायचूरके रास्तेसे जानेसे सब वंदना होजाती है । मद्रास तरफसे आनेवा-लोंको उधरकी सब यात्रा करके लौटकर कारकल सोमेश्वर होकर सीमोगा, जैनबद्री, म्हैसूर, बेंगलूर होकर वीरूर जंक्शन मिलजाना चाहिये । ऐसा करनेसे खर्च कम और यात्रा सब होजाती है । आरसीकेरीसे बेंगलूर जानेसे गाड़ी भाड़ा ।।।) देकर नीटूर उतर पड़े ।

(२८४) नीटुर ।

स्टेशनसे २ मील उत्तरकी तरफ ग्राम है । वहांपर एक प्राचीन कीमती मंदिर है । बहुतसी प्रतिमा हैं । एक प्रतिमा खड्गा-सन ५ हाथ ऊंची शांत मुद्रा धातुकी विराजमान है । कुछ घर दि० जैनियोंके भी हैं, वहांसे चलकर रेल्वे भाड़ाका ।=) देकर तीपटुर उतर पड़े ।

(२८५) तीपटुर ।

स्टेशनसे २ मील ग्राम है, वहांपर १ धर्मशाला, पाठशाला, १ रंगदार मंदिर और ५ हाथ ऊँची खड्गासन प्रतिमा है और ३ प्रतिमा धातुकी विराजमान हैं, ४० घर दि० जैनियोंके हैं । यहांसे टिकटका =) देकर हीराहेल्ली उतर पड़े ।

(२८६) हीराहेल्ली (अतिशयक्षेत्र चन्द्रप्रभु पहाड़)।

स्टेशनपर स्टेशन मास्तरके पास सामान रखकर किसी आदमीको साथ लेकर, सामने पहाड़ दिखता है वहांपर चला जावे। पहाड़की तलेटीमें धर्मशाला है, १ आदमी रहता है. सामने पहाड़ है, पाव मील सीढ़ियां हैं. पहाड़पर कोटसे घिरे हुये बीचमें पांच मंदिर हैं और बड़ी भारी मनोज्ञ प्रतिमा है।

श्री चंद्रप्रभकी प्रतिमा अच्छी है। मंदिरमें ताला लगा रहता है। धर्मशालाके आदमीसे चावी लेकर स्नानादिसे निवटकर, सामग्री लेकर पहाड़पर जाना चाहिये। पहाड़पर भी ठहरनेका स्थान है। लौटकर स्टेशन जावे। टिकट ।।) देकर बेंगलूर चला जाना चाहिये। बेंगलूरका हाल लिख दिया है। अब आगे बीरूरसे पूना तककी यात्रा लिखी जाती है। बीरूरसे टिकटका २।।।) देकर टिकट हुबलीका लेलेना चाहिये।

(२८७) हुबली जंकसन।

स्टेशनसे =) सवारीमें १ मील दूर दि० जैन बस्ती है। वहांपर धर्मशाला, कुआ, जंगल, बाजार, आदि सबका सुभीता है। तीन मंदिर इसी जगहपर हैं। प्रतिमा बड़ी मनोज्ञ और प्राचीन हैं। पासहीमें १ दुसरा मंदिर है। उसमें धातुकी प्रतिमा है। एक श्वेताम्बरी–दिगम्बरी इकट्ठा मंदिर है। सबका दर्शन करके फिर बाजार देखें। यहांपर कपड़ेकी २० मिल हैं। कुछ देखकर और लौटकर आरटाल क्षेत्र जवे।

(२८८) श्री आरटाल क्षेत्र (पार्श्वनाथ अतिशयक्षेत्र)

हुबलीसे २४ मील बैलगाड़ीसे आरटाल क्षेत्र जावे।

शहर जिला धारवाड़, तहसील बंकातुर, धुडसीके पास है। रास्ता पक्की सड़क है। यहां १ बड़ा भारी कीमती मंदिर है। मूलनायक प्रतिमा श्री पार्श्वनाथकी विराजमान है। यह प्राचीन, मनोहर, अतिशयवान है। और भी जहां-तहां प्रतिमा विराजमान हैं। कुछ घर दि० जैन भाईयोंके हैं। यात्रा करके हुबली लौट आवे। (स्टेशनके पास दि० जैन बोर्डिंग व धर्मशाला है, वहां पर ठहरना चाहिये।)

सबका दर्शन करके फिर स्टेशन लौट आवे, यहांसे दो लाइन जाती हैं, उनका अलग२ ब्योरा इसप्रकार है। पहिली लाइन पूना तरफ जाती है, यहांसे रेल किराया १॥।) देकर बेलगांव जावे।

(२८०.) बेलगांव।

स्टेशनसे "बाला" जीका मन्दिर पूछकर जाना चाहिये। उसी मन्दिरके पास मानस्थम्भवाली जैन वस्ती पूछकर यहांपर या "बाला" जीके मन्दिरमें ठहर जाना चाहिये। फिर मानस्थम्भवाली वस्तीमें गढ़के मन्दिरमेंसे लाई हुई प्राचीन प्रतिमा है, और अनेक प्राचीन प्रतिमा हैं। मानस्थंभपर भी प्रतिमा है। एक कुआ व ठहरनेका स्थान है, किसी आदमीको साथ लेकर शहरमें २ मीलके चक्करमें ७ मन्दिर हैं, उनका दर्शन करे। फिर गढ़में जाना चाहिये। गढ़के ४ दरवाजा हैं, एक तरफ बाहर तालाव व चारों तरफ खाई खुदी हैं, और तोपे भी पड़ी हुई हैं, भीतर ३ मन्दिर हैं, जिसमें १ जैन मन्दिर कीमती है। ऊपरकी गुम्मट व दीवालोंमें प्रतिमा है। पहिले यहांका राजा जैन था, उसीने यह गढ़ व जैन मन्दिर बनवाया था, पीछे मुसलमान राजा हुआ, उसने तुड़वा कर पत्थर

गढ़में लगवाये। इस समय भी यह शहर लंबा-चौड़ा हैं। एक जैन बोर्डिंग भी है। यहांका सब दर्शन करके और मोटर किरायाका २) देकर स्तवनिधि जाना चाहिये। 'नीपाणी" से १ मील इस तरफ व बेलगांवसे ३८ मील यह क्षेत्र बीचमें पड़ता है।

(२९०) स्तवनिधि ।

सडककी उत्तर दिशामें दूसरा रास्ता पहाड़के पाससे जाता है। यहांपर बड़ा पहाड़ व जगल है। एक गढ़, धर्मशाला व दुकान है। पहाड़पर कुआ है। यहा प्राचीनकालके ४ मंदिर है। अतिशयवान प्रतिमाएं भी है। १ मानस्तंभ है। १ मंदिरमें भैरव क्षेत्रपालकी मूर्ति है। यहांपर हजारों लोग बोल चढ़ाने आते है। मुनीम-पुजारी भी रहता है। भंडार देना चाहिये। लौटकर नीपाणी आवे। ३ मील पड़ता है।

(२९१) निपाणी शहर ।

यह शहर अच्छा है। २ दि० जैन मंदिर बहुत घर जैनियोंके है। यहासे १) सवारी देकर मोटर या तांगासे कोल्हापुर आवे।

(२९२) कोल्हापुर शहर ।

स्टेशनके सामने पास ही दि० जैन धर्मशाला है। मंदिर भी है। सो पूछकर चला जाना चाहिये। इसीके पास अन्यमतियोंकी धर्मशाला बालाजीके मंदिरमें है। दोनों जगह ठहर सकते है। शहरमें सेठ माणिकचद हीराचन्द बंबईवालोंका बोर्डिंग है। स्टेशनसे १ मील चौकबाजारमें धर्मशाला, कुआ, बगीचा व मंदिर है। बोर्डिंगसे १ आदमीको साथ लेकर शहरमें दर्शनोंको जाना चाहिये। बोर्डिंगके मंदिरमें २ प्रतिमा स्फटिकमणिकी है।

शहरमें भी ७ मंदिर और हैं । दो भट्टारकोंका मठ है-लक्ष्मीसेन व जिनसेनजीका । वहांपर भी मंदिर है । एक मंदिर मानस्तंभवाला बहुत प्राचीन है । बाहर मानस्तम्भपर ४ जिनबिंब हैं । कनाड़ीमें शिलालेख है । मंदिरमें प्राचीन बहुत प्रतिमा है । उनमें ९ प्रतिमा बहुत विशाल हैं । सबका दर्शन करे । एक जिनमंदिर कंसारगलीमें अंबाजीके मंदिरके पास है । यहांपर बड़ा भारी मंदिर है । फलफूलसे पूजा होती है । यह मंदिर भी देखने योग्य है । जैन मंदिरका दर्शन करके राजमहल, बाजार देखता हुआ ठिकाने लौट आवे टिकटका ।) देकर "हातकलंगड़ा" स्टेशन उतर जावे ।

(२९३) हातकलंगड़ा ।

किसीको ग्राम जाना हो तो जाय, आध मील दि० जैन मंदिर व कुछ घर दि० जैनियोंके हैं । अगर ग्राममें नहीं जाना हो तो स्टेशनसे २॥) रुपयामें लोटाफेरीका किराया करके कुम्भोज बाहुबली पहाड़ पर जावे । बीचमें नेजा ग्राम पड़ता है । उसका भी दर्शन करलेना उचित है । हातकलंगड़ासे ७ मील नेजग्राम व १ मील पहाड़ ग्रामसे है । ऐसे कुल ८ मील हैं । पहाड़के नीचे कुआ व जंगल है । ऊपर दो धर्मशालाएं हैं । सीढ़ियोंसे पाव मीलका चढ़ाव है । ऊपर १ कुआ और ९ मंदिर रमणीक हैं । अनेक तरहकी प्रतिमाएं हैं । बाहुबली स्वामीकी प्रतिमा खुले मैदानमें है । १ सहस्रकूट चैत्यालय भी है । यहांकी रचना अपूर्व व लाखों रुपयोंकी लागतकी है । बाहुबलीस्वामीने यहांपर कुछ दिनों तप किया था इससे उनकी प्रतिमा स्थापित है । और इस पहाड़का नाम भी बाहुबली पहाड़ है । यहांसे २ मील दूर कुंभोज ग्राम

है। वहांपर २ मंदिर व बहुत घर जैनियोंके हैं। इन दोनोंका इकट्ठा नाम बाहुबली कुंभोज बोलते हैं। यहांपर मुनीम पुजारी रहता है। बड़े २ मुनियोंने यहांपर ध्यान किया था, इससे यह महा पवित्र स्थान है। पासमें नेजा ग्राम है। उसमें भी १ मंदिर व बहुत घर जैनियोंके हैं। इस पहाड़के आस-पास नजदीक बहुत ग्राम हैं। इन्हीं ग्रामोंमें आहार करके मुनि आनंदसे ध्यान करते थे। कुछ भंडार देकर लौटकर स्टेशन हातकलंगड़ा आवे। यहांसे किराया ।) देकर मिरजका टिकट लेलेवे।

(२९४) मीरज जंकशन।

स्टेशनसे २ मील ग्राम है। ४ दि० जैन मंदिर व बहुत घर जैनियोंके हैं। स्टेशनपर १ ब्राह्मणकी धर्मशाला है। यहांसे १ रेलवे सांगली जाती है। टिकट =) है।

(२९५) सांगली शहर।

यह शहर भी अच्छा है। स्टेशनसे १ मील दूर है। २ मंदिर और अच्छी प्रतिमा व बहुत घर जैनियोंके हैं। १ धर्मशाला बोर्डिंग व कन्याशाला है। लौटकर फिर मीरज आवे। मीरजसे ॥) टिकटका देकर कुंडलरोड उतर पड़े।

(२९६) कुंडल रोड।

स्टेशनसे ३ मील दूर ग्राम है। १ धर्मशाला व दि० मंदिर है। १ प्रतिमा प्राचीन है। कुछ घर दि० जैनियोंके हैं। यहांसे पुजारीको साथ लेकर पहाड़पर जाना चाहिये।

(२९७) श्री झरीबरी पार्श्वनाथ।

पहाड़पर जानेकी सीढ़ियां लगी हैं। १ मीलकी चढ़ाई है।

ऊपर १ गुफा व २ मंदिर हैं। बहुत प्राचीन झरीबरी पार्श्वनाथकी २ प्रतिमा मुख्य हैं। और प्रतिमा बहुत हैं। पहाड़पर निरंतर प्रतिमाके ऊपर काल पानी टपकता रहता है! यात्रा करके स्टेशन लौट आवे। टिकटका २) देकर पूना चला जावे।

नोट-पूनासे मीरज आनेवाले भाई पहिले हातकलंगड़ासे कुंभोजकी यात्रा करके कोल्हापुर और मोटरसे नीपानी जावे, फिर स्तवनिधिकी यात्रा करके बेलगांव जाकर मिले। आगेकी यात्राका हाल ऊपर देख लेना चाहिये। २-उधरसे यात्रा करनेवाले भाई मीरज आकर मिलें। मीरजसे ३) देकर पूना चले जावें। ३-पूनासे फिर शोलापुर होकर कुर्डुवाड़ीसे पंढरपुर जावे। वहांसे लौटकर फिर कुर्डुवाड़ी आवे। फिर बारसी टाऊन, कुंथलगिरि आदिकी यात्रा करता हुआ लौटकर कुर्डुवाड़ी आवे। फिर धोंड़ आकर ठहर जावे, यहांसे १ रेल मनमाड़ जाती है, १ बारामती जाती है, सो पहिले बारामतीकी यात्रा करके फिर दहीगांवकी यात्रा करें। फिर बारामती धोंड़ आजावे। ४-पूनासे हरएक यात्री हर तरफ जासकते हैं। बम्बई आदि भी जासकते हैं, इसका परिचय आगे देखो! ५-कुर्डुवाड़ीसे रायचूर, मद्रास, होटगी, गदग, हुबली आदि हरएक तरफ जासक्ते हैं। शांतिसे यात्रा करके पुण्य-बन्ध करना चाहिये। अब आगे दूसरी लाइनका परिचय लिखता हूं, सो दोनों लाइनोंके समाचारको देखकर और मन स्थिर करके जाना चाहिये। अब गदक तरफकी यात्राको जाना चाहिये। हुबलीसे टिकट १ ॥) देकर, बदामीका लेलेना चाहिये। बीचमें गदक जंकशन गाड़ी बदलकर बदामी उतर पड़े।

(१९८) बदामीकी गुफाऐं।

स्टेशनपर धर्मशाला छोटीसी है, यहांसे २ मील दूर ग्राम है, ग्राम प्राचीन एवं अच्छा है। १ प्राचीन तालाब और पहाड़ नजदीक है। उसमें तीन स्थानमें बहुत गुफा हैं, जिसमें एक गुफामें महादेवजीका लिंग है, एकमें कुछ नहीं है। ऊपरकी गुफामें छोटी बड़ी बहुत दि० प्रतिमा हैं, सब पहाड़ीपर उकेरी हैं। बहुत प्राचीन और कीमती रचना है। नीचेके तालाबके आसपास बहुत प्राचीन खण्डित मन्दिर हैं। जैनियोंके घर नहीं हैं। यहांका दर्शन करके स्टेशन लौट आवे। टिकटका १।।) देकर बीजापुरका लेलेना चाहिये।

(१९९) बीजापुर।

स्टेशनसे २ मील जैन बस्ती पूछकर दि० जैन धर्मशालामें तांगा ≈) सवारीमें करके जाना चाहिये। यह शहर बादशाहके समयका है, कोटसे घिरा हुआ अच्छा है।

यहां२ जैन मन्दिर व बहुत घर जैनियोंके हैं। यहांसे २ मील दूर एक मन्दिर है, भौंहरा भी है, प्राचीन प्रतिमा व शेषफणा पार्श्वनाथजी विराजमान हैं। यह मन्दिर कीमती है व प्रतिमा जमीनसे निकली हुई है। यहांपर बादशाहकी बड़ी भारी मसजिद कबरस्थान गढ़ देखनेयोग्य है। बीजापुरसे यहांतक पक्की सड़क है, सैकड़ों लोग आते जाते हैं। रास्तेमें बादशाही खेल देखने जाना चाहिये लौटकर बीजापुर आवे। बादशाही चीजें देखने योग्य हैं, अगर देखना हो तो कुछ मुलायजा कर लेवे। फिर यहांसे मोटर, तांगासे ≈) सवारी देकर बावननगर जाना चाहिये। १४ मील दूर है, पक्की सड़क है।

(३००) अतिशयक्षेत्र बावननगर ।

यह शहर पहिले बड़ा था, परन्तु अब छोटा है, एक दि० जैन धर्मशाला और एक बड़ा भारी कीमती मन्दिर है । उसमें पाषाणकी १ हाथ ऊँची पार्श्वनाथकी प्रतिमा विराजमान है । यहां-पर भी दूर देशके लोग बोल कबूल चढ़ाने आते हैं ।

यहांका अतिशय—कोई फीउद्दीन बादशाहने यहांके मन्दिर व मूर्तियां तुड़वा दी थी। सिर्फ यह एक पार्श्वनाथकी प्रतिमा अपनी पुत्रीके खेलनेके लिये रख ली थी। बादशाहकी पुत्री इससे खेला करती थी। किसी १ दिन राणीके पेटमें बड़ी पीड़ा हुई, अनेक इलाज करानेपर भी नहीं मिटती थी। फिर रात्रिको रानीने स्वप्न देखा, कि—"अपनी लड़कीके खिलौना रूप जो यह प्रतिमा है। उसको धोकर पानी पिओ, तो पीड़ा शीघ्र मिट जायगी।" ऐसा करनेसे रानी अच्छी होगई। ऐसा प्रभाव देखकर राजाने बड़ा पश्चात्ताप किया और प्रतिज्ञाकी कि आजसे किसीके देवताको नहीं सताउँगा। ये बड़े सच्चे होते हैं और अपने द्रव्यसे एक मंदिर बनवाकर प्रतिमाको वहांपर स्थापित करदी और कुछ मंदिरके लिये जीविका भी लगा दी। वह अभीतक चलती है। भंडार व पुजारी रहता है। चार घर दि० जैनियोंके हैं। यात्रा करके बीजापुर लौट आवे। बीचमें गाड़ी होटगी बदलकर शोलापुर उतर जाना चाहिये।

(३०१) शोलापुर शहर ।

स्टेशनके पासमें अन्यमतियोंकी धर्मशाला है। शहरमें २ मील दूर दि० जैन धर्मशाला है। ४ मंदिर बढ़िया और प्रतिमा बहुत हैं। १ मंदिरके भीतर जमीनमें भौंहरा है। प्रतिमा भी है।

यहांपर दि० जैनियोंके घर बहुत हैं। यहांपर १ बोर्डिंग, पाठशाला, कन्याशाला व श्राविकाश्रम भी है। १ श्री आतनुर, २ श्री आष्टे विघ्नेश्वर पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्रोंके विषयमें शोलापुरके भाईयोंसे पूछकर यात्रा करना चाहिये।

(३०२) बारसी रोड कुर्दुवाडी।

यहांपर हरहमेश भीड रहती है। यहांपर हिंदुओंका परमपवित्र पंढरपुर तीर्थ है। अन्यमती लोग हजारोंकी सख्यामें रहते हैं। बारसी रोडपर खानेपीनेका सामान सब मिलता है। यहांपर १० घर दि० जैनियोंके हैं। यहांपर पार्श्वनाथस्वामीका १ मंदिर व २ चैत्यालय हैं। माल सब मिलता है। यहांसे १ रेलवे पूना, एक शोलापुर होकर हौटगी, १ बारसी टाऊन होकर लातुर व एक रेलवे रायचुर जाकर मिलती है। एक पंढरपुर जाती है। टिकट ॥) देकर पंढरपुरका लेना चाहिये।

(३०३) पंढरपुर तीर्थराज।

स्टेशनसे २ मील शहर है। धर्मशाला, पाठशाला, कन्याशाला और ६० घर दि० जैनियोंके हैं। शहरमें २ मंदिर और धातुकी प्रतिमा है। ग्राममें १ बडा भारी मंदिर वैष्णवोंका है। यह मंदिर पहिले नेमिनाथ स्वामीका दि० जैन था, सो आज वैष्णवोंका दीखता है। मंदिर बहुत लम्बा-चौड़ा है। ३ दरवाजा, बडा भारी कोट, बीचरमें छोटा मंदिर है। यहांपर चंद्रभागा नदी वहती है। नदीके दोनों तरफ घाट बंधा हुआ है। वैष्णवोंके मंदिर बहुत हैं। यहांपर हजारों लोग हरवक्त आते हैं। नदीमें पिंडदान, हाडक्षेपण, तर्पणादि करते हैं! बाजार बडा है। सामान सब मिलता

है । यह स्थान भी थोडेसे खर्चमें देख लेना चाहिये । लौटकर कुर्दुवाडी आवे । ।।) देकर टिकट बारसी टाऊनका लेवे ।

(१०४) बारसी टाऊन ।

स्टेशनसे थोडी दूर २ हिन्दु धर्मशाला हैं, उनमें आरामसे ठहर जाना चाहिये । शहरमें १ दि० जैन धर्मशाला व मंदिर है । जैनियोंके घर भी बहुत हैं । शहर अच्छा, सामान सब मिलता है । यहांसे जाने-आनेकी ९) में बैलगाडी करके श्री कुंथलगिरि जाना चाहिये । रास्ता कच्चा, २२ मील पडता है । बीचमें पीपलगांव पड़ता है । वहांपर ठहरनेका सुभीता है । आगे भूमगांव पड़ता है ।

(१०५) भुमगांव ।

यहांपर दि० जैन धर्मशाला, २ मंदिर, २० घर दि० जैनियोंके हैं । बीचमें नदी है । आधे ग्राममें १ मंदिर व धर्मशाला है । उधर भी मंदिर है । यहांसे ८ मील कुंथलगिरि है ।

(१०६) श्री सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि ।

यहांपर १ धर्मशाला और कुल १० मंदिर, तथा अच्छी२ प्रतिमाएं हैं । एक मंदिरमें भोंहरा है । पहाड़पर जानेको सीढ़िया लगी हैं । बीचमें सब मंदिर पडते हैं । पहाडका चढ़ाव सरल है । ऊपर बहुत बड़ा मूलनायकका मंदिर है ।

उसमें श्री आदिनाथकी प्राचीन प्रतिमा बिराजमान है । देशभूषण, कुलभूषण मुनि यहांसे मोक्षको पधारे हैं, उन्होंकी चरणपादुका हैं । पेटीमें दो स्फटिकमणिकी प्रतिमा है, सबका पूजन करके भंडार जमा करना चाहिये । यहांपर एक ब्रह्मचर्याश्रम भी है, उसको

देखकर सहायता करना चाहिये। लौटकर वापिस बारसी टाउन आवे। टिकट ॥) देकर एडसीका ले लेवे।

(१०७) एडसी स्टेशन।

यहांपर धाराशिव (उस्मानाबाद)को हर समय मोटर मिलती है। ॥) सवारी लगता है, १४ मील उस्मानाबाद पड़ता है, पक्की सड़क लगी है।

(१०८) धाराशिव (उस्मानाबाद) अतिशयक्षेत्र, गुफा दर्शन।

ग्राम अच्छा है, यहांपर १ मन्दिर, १ चैत्यालय है, उसमें बहुत रमणीक प्रतिमाएं हैं। यहांसे पुजारीको लेकर या किसी आदमीको साथ लेकर २ मील दुर गुफाओंके दर्शनोंको जाना चाहिये। गुफाओंको यहांपर " लहाणा " कहते हैं। आगे १ मील सीधा रास्ता है। फिर पहाड़ है, नीचे १ पानीका नाला पड़ता है, उतर कर फिर पहाड़पर चढ़ना पड़ता है, फिर कुछ दूर जाकर पहाड़ उतरना पड़ता है, फिर एक महादेवका मंदिर है, वहांपर १ ब्राह्मण अपने कुटुम्ब सहित रहता है। वहांपर बड़े२ पहाड़ोंको काटकर मुनिराजोंके ध्यान करनेकी बड़ी २ गुफाएं बनाई गई हैं। उसमें बहुत कालतक मुनि साधु विराजकर ध्यान करते थे। एक गुफामें और ही रंग-ढंगकी और दूसरे घाटकी प्रतिमा विराजमान हैं। उसकी उपमा कहांतक लिखी जाय। एक गुफा खाली है, तीसरी गुफामें पानीका कुण्ड है, ऊपर प्रतिमा विराजमान हैं। यह भी लक्षोंका काम है, इस क्षेत्रकी पूजा एक ग्वालने सहस्र पांखुरी कमलके फूलसे की थी। सो मरकर राजा करकण्डु हुआ था जिसकी कथा पूजाके प्रसंगमें कथाकोषमें लिखी है वहांसे पढ़कर पूजनमें चित्त देना चाहिये।

यहांकी यात्रा करके उस्मानाबाद लौट आवे व एडसी स्टेशन लौट आवे, फिर टिकिट ≈) देकर "तेर" का लेवे। उस्मानाबादमें २० घर जैनियोंके हैं। यहांपर नेमचंद बालचंदजी वकील एक सज्जन गृहस्थ हैं।

(३०९) तेर स्टेशन।

स्टेशनसे २ मील तेर टूटाफूटा ग्राम है, पहिले यह राजा करकुण्डकी राजधानी थी और यहांके सभी लोग जैन थे। इस पुण्य क्षेत्रमें २३ वार पार्श्वनाथ स्वामीका समवशरण आया था, और ७ वार महावीरस्वामीका समवशरण आया था। इस परम पूज्य ग्रामको धन्य है। ग्रामसे पश्चिमकी तरफ एक नागस्थाना नामका स्थान है, पूछकर जाना चाहिये। यहां कोटसे घिरी हुई एक दि० जैन धर्मशाला व भीतर २ मन्दिर हैं। उसमें बहुत स्थानोंपर बहुत प्रतिमा विराजमान हैं, एक प्रतिमा महावीरस्वामीकी ७ हाथ ऊँची पद्मासन शांत छवि विराजमान है। यहांपर एक पुजारी रहता है, भण्डार कुछ देना चाहिये। बाहर एक बावड़ी है, उसमें जैनोंकी बहुत प्रतिमा हैं, एक पार्श्वनाथकी फण सहित प्रतिमा है। उसको लोग नागदेव कहते हैं। इसीसे इसका नाम नागठाना प्रसिद्ध है। आजकल कोई जैन यहांपर नहीं आते हैं। देखरेख भी नहीं करते हैं। बड़ी विचित्र गति है! लौटकर स्टेशन आवे। टिकटका ।≈) देकर लातुर जावे।

(३१०) लातुर ।

बारसी टाउनसे लगाकर लातुर तक मुसलमान राजाका राज्य है। यह शहर किला, खाई, दरवाजा, बगीचा, राज्य परिवार संयुक्त

है। यहांपर २ दि० जैन मन्दिर और प्राचीन उस्मानाबाद जैसी प्रतिमा है। बहुत घर दि० जैनियोंके हैं। यहांका दर्शन करनेसे आनन्द होता है, प्राचीन चीजें देखने योग्य हैं। लौटकर टिकटका १) देकर कुरूडवाड़ी आजाय, फिर टिकट ।। देकर धोंड़ जावे।

(३११) धोंड़ स्टेशन।

यहांसे १ रेलवे मनमाड़ जाती है, एक पूना तक जाती है, १ बारामती जाती है। ॥) टिकटका देकर बारामती चला जावे।

(३१२) बारामती शहर।

स्टेशनसे १ मील दूर जैन धर्मशाला, मन्दिर, कुआ बाजारके बीचमें हैं। तांगावाला =) सवारी लेता है, यहांके मन्दिर बढ़िया हैं। बहुत घर दि० जैनियोंके हैं, व ४ घरमें चैत्यालय हैं। यहांपर गुड़ बहुत बढ़िया होता व बिकता है। यहांसे ४) में बैलगाडी भाड़ा करके "नातेपोते"—दहीगांव जाना चाहिये। करीब २० मील पड़ता है। बीचमें गोकुल, मोकरी और १ ग्राम पड़ता है। जिनमें १ १ चैत्यालय व दि० जैन हूमड़ भाइयोंके कुछ घर हैं। इस देशमें गुजरातके रहनेवाले भाई आकर वसे हैं। इनको "गुजर" बोलते हैं। सब जगहपर गुजरके घर व मंदिर पूछनेपर शीघ्र पता लग जाता है।

(३१३) दहीगांव अतिशय क्षेत्र (नातेपोते)।

यह ग्राम ठीक है। १५ घर गुजर लोगोंके हैं, एक बड़ी भारी धर्मशाला, कोट और कुल १० मंदिर हैं। एक स्थानपर बीचमें चतुर्मुख मंदिर है। उसमें १२ प्रतिमा चारों दिशामें हैं, चार२ कोनोंमें इस तरहसे अनेक प्रतिमा हैं। एक और बड़ा

मन्दिर है, उसमें भी बहुत प्रतिमा हैं। इसीके नीचे भोहरेंमें ४ मंदिर हैं, और बड़ी२ सुन्दराकार पद्मासन ८ प्रतिबिंब हैं। शिला-लेख भी हैं। इस मंदिरके बनवानेवाले इस प्रांतमें बड़े प्रभावशाली, ब्र० महतीसागरजी थे। उनकी क्षत्री और चरण पादुका हैं। यह मंदिर बहुत ऊंचा और कीमती मजबूत है। भंडार, मुनीम, पुजारी रहता है। मेला हरसाल भरता है। हरसमय यात्री आते जाते रहते हैं। इसके आगे नातेपोते आदिमें जैन गूजरोंके बहुत घर हैं। यात्रा करके लौटकर बारामती आजाय। फिर दौंड आवें। यहांसे टिकट १॥) देकर पूनाका लेवें। अगर मनमाड़ जाना हो तो २॥) देकर मनमाड़ चला जावे। किसीको कुर्दुवाड़ी रायचुर आदि जाना हो तो चला जावे।

(११४) पूना शहर।

स्टेशनके पास १ हिन्दू धर्मशालामें ठहरना चाहिये। या शुक्रवारी बाजारमें दि० जैन धर्मशाला है, उसमें ठहर जावे। तांगावाला ।) देकर सवारी और बेलगाड़ीवाला ≈) सवारीमें पहुं-चाता है। १ मंदिर दीतवारी, २ मंदिर शुक्रवारी, १ पेठमें ऐसे कुल ४ मंदिर हैं। सबका दर्शन करें। शहरमें ४० घर दि० जैनियोंके हैं। लाखोंका व्यापार होता है। घूमकर बाजार देख लेना चाहिये। कुछ खरीदना हो तो खरीद लें। लौटकर स्टेशन आवे।

१ रेलवे मीरज, सांगली, कोल्हापुर, बेलगांव, हुबली, बिरूर, सीमोगा, आरसीकेरी, हांसन, मंदगिरि, म्हैसुर, बेंगलूर होकर हीराहेली जाती है। १ कुर्दुवाड़ी, बारसी, तेर, लातुर, शोलापुर, रायचुर, होटगी होकर हुबली जाती है। इनका हाल ऊपरसे देखो

एक रेल बम्बई जाती है। टिकट २॥) देकर बम्बई जाना चाहिये।

(११५) बम्बई शहर।

यहांकी स्टेशनोंके नाम बोरीबंदर, दादर, चर्नीरोड, ग्रांटरोड, कोलाबा, परेल आदि छोटी-बडी लाइनके बहुत स्टेशन हैं। चाहे जहांपर उतर पड़े। मगर तांगेवालेसे किराया ठहराकर दि० जैन धर्मशाला हीराबाग, या सुखानन्द गुरुमुखरायकी धर्मशालामें ठहरे। १ मंदिर भूलेश्वरमें, १ गुलालवाडीमें तारदेव, १ श्राविकाश्रम, १ बोर्डिंगमें, १ चौपाटीपर सेठ माणिकचंद्रजीके बंगलेमें, १ पानही डाह्याभाइके बंगलेमें, १ सौभागचंदके बंगलेपर, कुल ७ मंदिर हैं। भूलेश्वर, गुलालवाड़ी तथा सेठजीके चैत्यालयमें २-२ प्रतिमा स्फटिकमणिकी हैं। सो सबका दर्शन करे। ग्रांटरोड, बोरीबंदर, मूलेश्वर, गिरगांवकी तरफ बाजार अच्छा है। ऐसे तो बम्बई सबसे अच्छा शहर है, सभी देखने योग्य है। फिर रानीबाग, जौहरीबाजार, चिड़िया घर, चौपाटी समुद्र, हेंगिंग गार्डेन, म्यूजियम, कपडाकांचका कारखाना, टंकशाल, बोरीबंदर स्टेशन देखने योग्य हैं, देखना हो सो देख लेवे। लौटकर स्टेशन आजावे। रेलवे हरसमय चारों तरफ जाती है। जहांको जाना हो वहांकी टिकट लेकर रेलवेको खोजकर बैठ जावे। बम्बईमें बिजलीक ट्रामवे चलती है, उसमें बैठकर घूमना चाहिये। हर जगहका ~) लगता है। सबसे बड़ा स्टेशन बोरीबंदर है। वहांपर जाकर टिकटका १॥।) देकर नाशिकका लेलेना चाहिये।

(११६) नाशिक शहर।

स्टेशनपर हरसमय मोटरबस व तांगा मिलते हैं। फी आदमी ~) ट्रामका लेकर ४ मील दूर शहरमें त्र्यम्बक दरवाजा दि० जैन

धर्मशालामें पहुंचा देता है। स्टेशनपर बाजार, डाकघर व टेलीग्राफ है। रास्तेमें भी अच्छी चीजें मिलती हैं। सो देखते जाना चाहिये। धर्मशालामें नल व ऊपर मंदिर है। थोड़ी दूर गलीमें कुआ है, जंगल भी थोड़ी दूर है। बाजार पास है। कुछ घर दि० जैनोंके हैं। बाजार अच्छा है, सामान सब मिलता है। फिर यहांसे तांगा, मोटर या बैलगाड़ीसे २॥ मील मसरुलगांव दि० जैन धर्मशालामें जाना चाहिये। बीचमें बाजार पड़ता है, देखता जावे। गोदावरी नदीके उसपार अन्यमतियोंकी धर्मशाला है। ब्राह्मण पिंडदान, तर्पन आदि करते हैं। यह शहर भी प्रसिद्ध है। यहांपर हजारों यात्री आने-जाते रहते हैं। शिवरात्रीपर बड़ा भारी मेला भरता है तब १ लाख तक आदमी इकट्ठे होजाते हैं।

(३१७) मसरुल गांव।

यहांपर १ दि० धर्मशाला, १ मंदिर, १ बगीचा व कुआ, है। मुनीम, पुजारी रहते हैं। भण्डार वगैरह देना चाहिये। यहांसे १ मील गंजपंथाजी जाना होता है। स्नान करके माली व द्रव्यको साथ लेकर पहाड़पर जाना चाहिये।

(३१८) श्री गंजपंथजी सिद्धक्षेत्र।

पहाड़की आधमीलकी सरल चढ़ाई है। सीढ़ियां लगी हैं। ऊपर कोट है। ३ गुफा हैं। उनमें खुदी हुई बहुत प्राचीन प्रतिमा व चरण पादुका हैं। १ पानीका कुण्ड व १ मंदिर है। यहांसे बलभद्रादि ८ करोड़ मुनिराज मोक्षको गये हैं। वंदना, पूजा करके थोड़ी दूर नीचे उतर आवे। फिर पहाड़ ऊपरकी

सड़क काटकर परिक्रमा है। वह आध मीलकी पड़ती है। परिक्रमा देकर पहाड़की तलेटीमें आजावे।

(३१९) तलेटी (गजपंथ)।

यहांपर १ कुआ, बगीचा, मंदिर व त्यागियोंका आश्रम है। त्यागी बंसीलाल आदि रहते हैं। यहां पर सुपात्र दान करके धर्मशालामें जावे व भंडार देकर नाशिक चला जावे। किसी भाईकी इच्छा हो तो अनंतगिरिकी यात्रा करके फिर नाशिक आवे व बैलगाड़ी करके मागीतुंगी चला जावे। अगर बैलगाड़ीमे न जावे तो लौटकर स्टेशन आवे। टिकिट ।।) देकर मनमाडका लेलेवे। बैलगाड़ीका रास्ता कष्टसाध्य है।

(३२०) अतिशयक्षेत्र अनंतगिरि (अंजनगिरी)।

नाशिकमे त्र्यम्बक महादेवके रास्तेमें पश्चिमकी तरफ १४ मील दूर अंजनी ग्राम है। यह कस्बा दक्षिणकी तरफ १ मील दूर सड़कसे है। यह एक जैनियोंका प्राचीन शहर था। आस-पास जंगलमें टूटेफूटे बहुत मंदिर हैं। १ मंदिरके पास बहुत बड़ी बावड़ी है। ग्रामके पास तालाब, व धर्मशाला है। जंगलमें लाखों रुपयाकी लागतके १० मंदिर टूटेफूटे हैं। एक अखंडित प्रतिमा छापरा ग्रामके पास विराजमान है। यहां पर पुजारी रहता है। किसी आदमीको साथ लेकर पहाड़ ऊपर जाना चाहिये। पहाड़ २ मील दूर पड़ता है। पहाड़पर १ गुफा व १ पानीका कुंड है। १ गुफामें मंदिर है। भीतर बहुत खंडित-अखंडित प्रतिमा विराजमान हैं। यही गुफा मुनिराजोंके ध्यानकी है। अंजना सुंदरीने यहींपर शैल हनूमानको जन्म दिया था। ऊपर जानेको सीढ़ियां

लगी हैं। यह रचना प्राचीन होनेसे व जैनियोंके न रहनेसे खंड-बंड होगई। पहाड़ ऊपर १ तालाव, व अंजनाकी मूर्ति है। यहां-पर मिथ्याती लोग जाते हैं। गुफाओंका दर्शन करके नीचे लौट आवे। कुछ भंडार देकर नाशिक लौट आना चाहिये। नाशिक आनेवाले जैनीभाई भी यहांकी यात्राको नहीं आते हैं! झट भागकर चले जाते हैं। नाशिकसे २२ मील व यहांसे ७ मील त्रम्बक महा-देवका मंदिर है। यहांपर नाशिक आनेवाले हजारों अन्यमती यात्रीगण हमेश आते-जाते रहते हैं। हमारे जैनी भाइ तो बहुत ही प्रमाद करते हैं। यहांसे मनमाड आवें।

(३२१) मनमाड़।

स्टेशनपर १ बड़ी भारी हिन्दू धर्मशाला है। वहांपर ठहर जाना चाहिये। फिर यहांसे मोटर या ९० मील मांगीतुंगी जाना चाहिये। बीचमें मालेगांव, सटाना पड़ता है। पक्की सड़क मांगीतुंगी तक जाती है।

(३२२) मालेगांव।

यह बादशाहके समयका ग्राम है। १ दि० जैन धर्मशाला, एक मंदिर, ४ घर जैनियोंके हैं। सेठ दगडुराम भागचंद्र काश-लीवाल सज्जन पुरुष हैं। यहांपर हाथसे कपड़ा बुना जाता है। व्यापार अच्छा है। बाजार भरता है। १ श्वे० मंदिर, धर्मशाला और बहुत घर श्वे० मारवाड़ियोंके हैं। मनमाड़से यह ग्राम २४ मील पड़ता है। यहांसे २२ मील सटाना पड़ता है। यहांसे मोटरसे धुलिया शहर भी जाना होता है। ३२ मील पड़ता है। १०) मोटरके लगते हैं।

(१२३) सटाना।

यह ग्राम भी अच्छा है। ४ घर दि० जैनियोंके व १ मंदिर भी है। यहांसे १४ मील मांगीतुंगी पड़ता है। यह बात याद रखना चाहिये कि नाशिकसे जाने-आनेमें यह ग्राम बीचमें पड़ता है। यहांसे १ सड़क नाशिक तरफ जाती है। उसीके बीचसे १ सड़क फूटकर बम्बई तक जाती है। एक मालेगांव होकर मनमाड़ जाती है।

(१२४) श्री सिद्धक्षेत्र मांगी-तुंगी।

यह क्षेत्र जंगलमें है। चारों तरफ पहाड़ है। १ नदी, कुआ, धर्मशाला, व ३ मंदिर रमणीक हैं। मुनीम, पुजारी, नौकर रहता है। ग्राम छोटासा है। शौचादिसे निवटकर द्रव्य व मालीको साथ लेकर पहाड़ पर जाना चाहिये। पहाड़ सरल है। सिर्फ १ मीलकी चढ़ाई कठिन है। सीढ़ियां लगी हैं। रास्ता सकरा है। बड़े शांतभावसे एवं धीरे २ चढ़ना चाहिये। ऊपर पहिले मांगीका पहाड़ आता है। उसीमें पहाड़ काटकर ५ बड़ी २ गुफाएं बनाई गई हैं। गुफाओं व परिक्रमामें बहुत प्रतिमा उकेरी हुई हैं। पानीका कुंड, व २ छत्री है। एक कृष्ण व दूसरी बलभद्रकी मूर्ति है। यहांका दर्शन पूजन, परिक्रमा करके आधी दूर नीचे आना चाहिये। फिर यहांसे तुंगीका पहाड़ १ मील दूर है। चढ़ाव कठिन है। इससे सावधानीसे पैर रखना चाहिये। १ गुफा, १४ प्रतिमा, व २ चरण पादुका हैं। दर्शन, पूजन, प्रक्षाल, परिक्रमा करके लौट आना चाहिये। आधा नीचे आने बाद, नीचे आनेका दूसरा रास्ता है। यह भी रास्ता विकट है, सावधानीसे उतरना चाहिये। बीचमें

फिर २ गुफा हैं। उनमें बहुत प्रतिमा हैं। ये गुफाए सुध-बुधके नामसे प्रसिद्ध हैं। मधु-कैटव यहांसे मोक्ष पधारे। यहांका दर्शन-पूजन करके धर्मशालामें लौट आवे। इस पहाड़से राम, हनु, सुग्रीव, नील-महानील आदि ९९ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। और कृष्णके भाई बलभद्रने बनचर्याका नियम लेकर घोर तपश्चरण किया जो मरकर पंचम स्वर्ग गये। कथा पद्मपुराण, हरिवंशपुराणमें देखो। कुछ रहकर जितनी यात्रा करनी हो करके फिर मनमाड़ आजावे। यहांसे जानेके २ रास्ते हैं। १-किसी भाईको नाशिक होकर जाना हो तो गजपंथा, अंजनगिरिकी यात्रा करके नाशिक स्टेशनसे रेलमें बैठकर मनमाड़ उतर पड़े। २-यहांसे १ रास्ता धुलिया तरफ जाता है ९० मील पडता है। बीचमें पीपरनार, साकरी, कुसुंवा गांव पड़ता है।

(३२५) पीपरनार गांव।

यह ग्राम ठीक है। १ मंदिर व कुछ घर जैनियोंके हैं। मांगीतुंगीसे यह ग्राम १४ मील है। यहांसे ८ मील साकरी गांव पड़ता है। यहांसे चींचपाड़ा स्टेशन भी जाते हैं।

(३२६) साकरी गांव।

ग्राम अच्छा है। १ मंदिर व कुछ घर जैनियोंके हैं। यहां तांगामें १४ मील चींचपाड़ा स्टेशन पड़ता है।

चींचपाड़ा-यहांसे १ रेलवे बारडोली-महुआकी यात्रा करके लौटकर बारडोली आकर सुरत जाकर मि लती है। दूसरी लाईन जलगांव, भुसावल, अमलनेर, जाकर मिलती है। इसका हाल ऊपर लिखा है। साकरीसे १२ मील कुसुंबागांव पड़ता है।

कुसुंबागांव—यह ग्राम अच्छा है। १ मंदिर व २० घर जैनियोंके हैं। यहांसे १४ मील धुलिया शहर पड़ता है।

(३२७) धूलिया शहर।

यह बड़ा भारी है। कपड़े रुईके कारखाने हैं। देखने काबिल है। १ मन्दिर है और राव सा० सेठ हीरालाल गुलाबचन्दजी सज्जन एवं धनाढ्य पुरुष हैं। २९ घर जैनियोंके हैं। स्टेशनसे २ मील दूर शहर पड़ता है। यहासे १ रेलवे चालीसगांव जाकर मिलती है। टिकट ।।) है। यहांसे मांगीतुंगी ६० मील पड़ता है। मोटर या बैलगाड़ीमे जाना पड़ता है। यहांसे एक रास्ता मालेगांव जाता है। ३२ मीलकी पक्की सड़कपर १।) में मोटरवाला लेजाता है। यहांसे मांगीतुंगी, नाशिक, मनमाड जाकर मिलना चाहिये। हाल ऊपर देखो। अब यहांसे १।) देकर बीचमें चालीसगांव गाड़ी बदलकर मनमाड जाना चाहिये। चालीसगांवसे आगेपीछेका भी हाल ऊपर ही लिखा जाचुका है। मनमाडसे १) टिकटका देकर हैद्राबाद निजाम रेलवेमे एरोड़ा या दौलताबाद जाना चाहिये।

(३२८) एरोला रोड, (दौलताबाद स्टेशन)।

यहांसे बैलगाड़ी भाड़े करके ९ मील दूर दोनों स्टेशनोंसे एरोला ग्राम जाना चाहिये। पक्की सड़क है। कोई भाईकी हिम्मत हो तो पैदल भी जासकते हैं। तांगा भी जाता है।

(३२९) एरोला ग्राम (गुफाओंकी यात्रा)।

एरोला ग्राम छोटा है। मगर प्राचीनकालमें बहुत बड़ा शहर था। ग्रामके आसपास प्राचीन चीजें देखने योग्य हैं। इसी ग्रामके नजदीक तालाव है। आगे १ लाल पत्थरका खुदाईका लाखों रुप-

योंकी कीमतका महादेवका अपूर्व मंदिर है। यहींपर प्राचीन अनेक मंदिर, छत्री, मसजिद, हिन्दु, मुसलमान, बौद्ध, जैन, शिवमतवालोंके बड़े२ कीमती खंडहर हैं। एक मील दूर इंडाकार पहाड़, २ मीलका लंबा, १ मीलका ऊंचा उत्तर, दक्षिण दिशामें है। पहाड़में लाखों रुपयोंकी रचना बनी है। उसको देखकर आश्चर्य होता है।

इस पहाड़में खुदी हुई छोटी-बड़ी कुल ९४ गुफा हैं। उनमें कितनी गुफा तो २—३ मंजलकी बनी हैं। ये गुफायें बौद्ध, शिव व जैन मतवालोंकी हैं। सभी मतवाले इनकी यात्राको आते हैं। पर हमारे भाग्यहीन जैनी तो कोई ही आता-जाता होगा। प्राचीन तीर्थोंके उद्धार व धार्मिक भावोंकी जैनियोंमें बिलकुल कमी है। इन तीर्थोंका जीर्णोद्धार भी नहीं कराते हैं। इन गुफाओंमेंसे ९ गुफाओंके नाम गणेश गुफा हैं। यह बड़ी भारी गुफा ३ मंजिलकी बनो हुई हैं। हजारों गणेशजीकी मूर्तियां भीतर वा बाहर जंगलमें हैं। बड़े२ पानीके कुंड व नदी वहती है। इस जगहपर औरंगाबाद आदिके आसपासके धोबी कपड़ा धोने आते हैं। सब गुफाओंमें ये ही गुफा कीमती हैं। ये इतनी लंबी चौड़ी है कि २० हजार आदमी बैठ सकते हैं। तीसरी कैलाशपुरी—इसमें हजारों मूर्तियां शिवकी हैं। ४ नागशय्या, ३३ करोड़ देवी देवताकी मूर्ति हैं। पांचवी विष्णुपुरी (कृष्णलीला) का मंदिर आध मील ऊपर तक है। चारों तरफ विष्णु भगवानकी लीलाका ही ठाठ है। यह गुफा अब भी बड़ी रंगदार है। यहांपर ब्राह्मण, साधु आदि रहते हैं। बौद्ध गुफा यह २ मंजिलकी है। इसमें बड़ी२ पद्मासन खड्गासन मूर्तियां बहुत हैं। एक गुफा मुसलमानोंकी है।

उसमें बहुत कबरस्थान २४ पीर, औलियापीर आदि हैं। कहांतक लिखिये। यह दृश्य बिना प्रत्यक्षके आनंद नहीं दे सकता है। आगे दि० जैन गुफा हैं। यह रचना हजारों वर्ष पहिलेकी है। इस रचनासे ही श्वेताम्बरी झगड़े शांत हो सकते हैं।

(३३०) एरोलाकी जैन गुफाएँ।

पहिले एरोला ग्राममें, जहां कि ठहरनेका स्थान है, शौचादिसे निवटकर पूजाकी सामग्री लेकर एक जानकार आदमीके साथ लेकर दि० जैन गुफाओंमें जाना चाहिये। ग्रामसे आध मील दूर १ छोटासा पहाड़ है। ऊपर पार्श्वनाथका पहाड़ नीचे २ गुफा हैं। उसमें सब जगह पहाड़को काटकर काम किया गया है। ऊपरके मंदिरमें हाथी, घोड़ा, सिंहासन, भामंडल, द्वारपाल, इन्द्र आदिकी रचना बड़ी मनोहर है। ऊपरके मंदिरके दर्शन करके नीचे गुफाओंमें जाना चाहिये। नीचे कुल ३ पहाड़ोंमें ५ गुफा हैं जिसमें २ गुफा लम्बी चौड़ी बढ़िया २ दो मंजलोंकी हैं। उसमें अनेक प्रतिमा, स्थंभ व दीवालोंमें हैं। यह अपूर्व रचना देखनायोग्य है। १ गुफामें मानस्थंभ है। बड़ा हाथी, २ सिंह भी हैं। और भी आसपास शिलालेख कनाड़ी भाषामें लिखे हैं। यहांपरसे दौलताबाद जानेको रास्ता है। उसमें भी अनेक प्राचीन रचना मिलती है। देखता हुआ दौलताबाद चला जाय। अगर दौलताबादसे आये हो तो एरोड़ाकी तरफ चला जाय।

(३३१) दौलताबाद।

यहांपर भी कुछ घर दि० जैनियोंके हैं। एक प्राचीन मंदिर व प्रतिमा है। यहांसे ७ मील सड़कका रास्ता सीधा औरंगाबाद

जाता है । यहांसे स्टेशन १ मील दूर पड़ती है । रेलवे टिकटका ≈) देकर औरंगाबाद उतर पड़े ।

(३३२) औरंगाबाद ।

स्टेशनसे २ मील चौक बाजार मसजिदके सामने दि० जैन धर्मशाला है । तांगावाला ।) सवारीमें लेजाता है । यहांपर बाजार, पाठशाला नजदीक है । कुछ तकलीफ नहीं होती है । यहांपर नजदीक कुल ३ मंदिर हैं । और घरमें ७ चैत्यालय व ४० घर दि० जैनियोंके हैं । एक बड़ा मंदिर है । उसके भोहरामें हजारों प्रतिमा हैं । इसी मंदिरमें धर्मशाला भी है । यह मंदिर सिर्फ एक भाईने बनवाया है । अब पंचोंके कब्जेमें है । वह विचारा मर गया है । किसी आदमीको साथ लेकर सबका दर्शन करें । फिर यहांसे तांगा करके पहाड़की गुफा देखने जाना चाहिये । ३ मील पहाड़ पड़ता है । बीचमें गौमापुर पड़ता है ।

(३३३) गौमापुर ।

यह शहर पहिले बड़ा था । सो टूटकर औरंगाबाद बस गया है । यह ग्राम अब छोटासा है । जैनियोंके घर बहुत थे । अब पुजारी रहता है । पहाड़की गुफाओंकी पूजा करने यही पुजारी जाता है । १ मंदिर एवं प्राचीन प्रतिमा बहुत हैं । एक बादशाहकी मसजिद देखने योग्य है । यहांसे १॥ मील दूर पहाड़ है । तलेटी तक तांगा जाता है ।

(३३४) गौमापुरकी गुफाएं ।

पाव मीलका सरल चढ़ाव है । ऊपरकी तरफ बड़ी२ तीन गुफा हैं । उनमें बहुत जैन, बौद्ध, कृष्णकी मूर्तियां हैं । एक२

तरफ मंदिर परिक्रमा सहित बना हुआ है। मंदिरमें नेमिनाथस्वामीकी प्रतिमा बहुत ही मनोज्ञ है। यह मंदिर भी औरंगाबादके भाईयोंके जिम्मे है। यह रचना भी एरोला सी अपूर्व है। यहांकी यात्रा करके बीचमें शहर बाजार देखता हुआ धर्मशालामें आजाय। फिर यहांकी प्राचीन चीजें देखना हो तो देखलें। यह शहर लंबा चौड़ा पुराना खंडहर दशामें है। बादशाही राज्य है। ८) में बैलगाडी आने-जानेको करके अचनेरा जाना चाहिये। २० कोश रास्ता कच्चा-पक्का पड़ता है।

(३३५) श्री अचनेरा पार्श्वनाथ अतिशयक्षेत्र।

यह ग्राम प्राचीन मामूली है। यहांपर धर्मशाला व १ मंदिर है। जिसमें बहुत प्राचीन प्रतिमा हैं। कुछ जैनियोंके घर हैं। मेला भरता है। मंदिरमें १ प्राचीन छोटीसी पाषाणकी पार्श्वनाथकी प्रतिमा है। यहां बहुत लोग बोल कबूल चढ़ाने आते हैं।

(३३६) अचनेराके अतिशय।

किसी दिन एक रजःस्वला स्त्री मंदिरमें दर्शनोंको आगई थी। उसको देखकर स्वयं प्रतिमाजीकी गर्दन टूट गई थी। और मंदिरमें भौंरा उड़कर उस बाईपर टूट पड़े। सो बाई घरपर चली गई। यह खबर सुनकर पंच लोग मंदिरमें आये। देखकर बड़ा दुःख हुआ। फिर दूसरी प्रतिमा मंदिरजीमें लाकर विराजमान करनेका विचार किया। रात्रिमें एक सेठको स्वप्न हुआ कि यहांपर मेरे सिवाय दूसरी प्रतिमा नहीं बैठ सकेगी। अच्छे गुड़की लपसी बनाकर मेरा सेक करो। फिर गर्दनके बीचमें लपसी रखकर और कपड़ेसे बांधकर जमीनमें ६ महिनाके लिये रखदो। छह माहके

बाद मुझे निकालकर बैठा देना। इस प्रकार कहकर निश्चित किया। फिर सवेरे मिलकर सब पंचोंने वैसा ही किया। भोहरा बनवाकर छ महिना भगवानको गर्दन बांधकर रख दिया। वह भोहरा मंदिरमें मौजूद है। फिर छ माह बाद निकालकर देखी तो गर्दन पहिले जैसी मजबूत है। फिर होम विधान करके शुभ मुहूर्तमें आसपासके लोगोंको बुलाकर विराजान कर दिया। जबसे यह अतिशय क्षेत्र प्रगट हुआ है। आज भी वही कटी गर्दनका निशान दीख रहा है। यहांकी यात्रा करके किसीको जरूरत हो तो औरंगाबाद जाय नहीं तो बैलगाड़ीवालेको बोलकर बीचमें १२ मील ऊपर चीकलठाना चला जाय।

(१३७) चीकलठाना स्टेशन।

यहांसे मनमाड जानेवालोंको मनमाड जाना चाहिये। नहीं तो पैसींजरगाड़ीसे २=) देकर मीरखेरका टिकटलेना चाहिये। यह स्टेशन पर्भणी और पूनाके बीचमें है। बीचमें पर्भणी हिन्दु तीर्थ पड़ता है। अगर देखना हो तो पर्भणी उतर पड़े।

(१३८) पर्भणी।

स्टेशनके नजदीक शहर बड़ा रमणीक है। नदीके घाट, किला मंदिर प्राचीन चीजें देखने काबिल हैं। यहांपर ब्राह्मण पंडा लोग बहुत रहते हैं। पिंडदान, गंगास्नान आदि करते हैं। यहांपर सब सामान मिलता है। कुछ घर दि० जैनियोंके हैं। १ मंदिर यहांपर बहुत प्राचीन है। यहांसे लौटकर मीरखेट उतर पड़े। टिकट =) लगता है। मीरखेट—यहांसे मजूर करके १॥ मील दुर उत्तरकी तरफ पीपरी ग्राम जाना चाहिये। पीपरीगांव-यह

ग्राम छोटा है। १० घर जैनियोंके हैं। यहांसे २ मील उत्तरकी तरफ श्री उखलद क्षेत्र जाना चाहिये।

(३३९) उखलद अतिशयक्षेत्र।

पूर्णा नदीके किनारे एक पहाड़पर छोटासा ग्राम है। वहां पर १ दि० जैन मंदिर है। भीतर तप तेजवान, चतुर्थकालकी जमीनसे निकली हुई अंतरीक्ष श्री पार्श्वनाथकी प्रतिमा है। यहांपर धर्मशाला है। मेला भरता है। बहुत यात्री जाते-आते हैं। यात्रा करके मारखेट आजाना चाहिये। टिकट ।-) देकर पूर्णाका ले लेना चाहिये।

(३४०) पूर्णा जंकशन।

उखलदवाली पूर्णा नदी यहांपर बहती है। शहर अच्छा है। जैनियोंके घर बहुत हैं। यहां भी नदीका घाट मंदिरादि बहुत हैं। प्राचीन गढ़, बाजार देखनेयोग्य है। हजारों यात्री यहांपर आते जाते हैं। सब माल मिलता है।

(३४१) हींगोलशहर।

यहांसे १ रेलवे हींगोल जाती है। हींगोल अच्छा शहर है। ६० घर दि० जैनियोंके, २ मंदिर और ३ चैत्यालय हैं। प्राचीन प्रतिमा है। यहांसे मोटर, तांगा द्वारा ३।।) देकर बासम जाना चाहिये।

(३४२) बासम शहर।

यह शहर अच्छा एवं व्यापारप्रधान है। जैनियोंके २९ घर और २ मंदिर हैं। एक मंदिरमें भौंहरा है। उसमें बहुतसी प्राचीन प्रतिमा हैं। यहांपर बालाजीका मंदिर और कुंड देखनेयोग्य

है। यहांसे मालेगांव, सीरपुर (अंतरीक्ष पार्श्वनाथ) होकर अकोला तक १॥) में मोटर जाती है। इसका हाल ऊपर लिख दिया है।

पूर्णासे आगे १ गाड़ी शिकन्दराबाद, हैद्राबाद जाती है। सो यहांसे ३) देकर शिकन्दराबादका टिकट लेलेना चाहिये। शिकन्दराबाद उतर पड़े। बीच अलवल स्टेशन पड़ता है। यहांसे ३ मील माणिक्यस्वामी पड़ता है।

(३४३) शिकन्दराबाद।

शहर स्टेशनसे २ मील दूर है। शहर अच्छा रमणीक हैं। निजामका राज्य है। ३ मंदिर और बहुत प्रतिमा हैं। दि० भाईयोंके घर बहुत हैं। यहांसे ३ मील दूर जंगल है। तांगा करके कुलपाक जाना चाहिये।

(३४४) माणिक्यस्वामी अतिशयक्षेत्र (कुलपाक)।

यहांपर १ मंदिर बहुत प्राचीन तथा धर्मशाला है। मंदिरमें हरित वर्णकी प्रतिमा माणिक्य स्वामी (आदिनाथ) की सुन्दर विराजमान है। और भी बहुत प्रतिमा हैं। यहां बहुत प्रतिमा श्वेताम्बर भाईयोंने अपनी करली हैं। पहिले यहांपर लाल वर्ण रत्नकी प्रतिमा बहुत कीमती विराजमान थी, उसीका नाम माणिक्य स्वामी था। आज वह प्रतिमा लापता है। न मालूम वह कौन लेगया। उसीके बदलेमें स्फटिकमणिकी प्रतिमा विराजमान है। सुना जाता है कि कभी २ यहांपर केशर चंदनकी वृष्टि होती है! यात्रा करके सिकन्दराबाद लौट आना चाहिये। सिकंदराबादके एक स्टेशन पहिले अलवल स्टेशन पड़ता है। वहांसे ३ मील माणिक्यस्वामी पड़ता है। चाहे जहांसे चल जाय। सिकं-

दराबादसे १ रेलवे बाडी होकर रायचूर जाती है। १ लाईन बेजवाड़ा जाकर मिलती है। फिर आगे मद्रास तक आती है। अब यहांसे टिकट ~) देकर हैद्राबाद उतर जाना चाहिये।

(३४५) हैद्राबाद स्टेट।

यह बादशाही शहर भी अवश्य देखने योग्य है। यहांका बाजार, बड़े२ मकानात, राजा सा०का दरबार, पलटन, तोपखाना, अजायबघर, बाग आदि देखने योग्य हैं। स्टेशनसे १ मील शहर पड़ता है। ~) सवारीमें तांगावाला लेजाता है। मीनार नामक स्थानके पास दि० धर्मशाला है। वहांपर ठहर जाना चाहिये। शहरमें मीनारके काममे सुशोभित रमणीक बड़े २ पांच मंदिर और दि० भाईयोंके बहुत घर हैं। सब मंदिरोंमें प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। दर्शन करके बहुत आनन्द प्राप्त होता है। यहांसे लौटकर वापिस सिकन्दराबाद होता हुआ घर जाना हो तो चला जाय। नहीं तो फिर लौटकर मनमाड़ आजाय। टिकट अंदाजा ९) लगता है।

(३४६) मनमाड जंक्शन।

यहांसे रेलवे बंबई तरफ जाती है। एक भुसावल, खंडवा आदि जाती है। मोटर मांगीतुंगी तरफ जाती है। हाल ऊपर देखो। अब यहांसे टिकट ।) देकर नांदगांवका लेलेना चाहिये।

(३४७) नांदगांव।

स्टेशनसे पाव मील ग्राम है। २५ घर जैनियोंके हैं। १ बहुत भारी मंदिर, बहुत ऊंची कुडची देखने योग्य है। मंदिरके बाहर २ हाथी पत्थरके हैं। मंदिर रंगदार बढ़िया है। भीतर चार

मंदिर और बहुत प्रतिमा हैं । ऊपर जाकर शिखर आदि देखना चाहिये । मंदिरके पीछे कोट, बगीचा, कुआ, नदी है । यहांसे टिकट खंडवाका लेलेना चाहिये । बीचके शहर चालीसगांवसे लेकर नागपुर तक ऊपर लिख दिये हैं । गाड़ी भुसावल बदलकर खंडवा उतर जाना चाहिये ।

(३४८) खंडवा शहर ।

स्टेशनके पास शहर है । दि० जैन धर्मशाला, पाठशाला, कन्याशाला, औषधालय और १ बड़ा भारी मंदिर है । ६० घर जैन भाईयोंके हैं । मंदिरमें प्राचीन प्रतिमा बड़ी२ हैं । शहर व्यापारको अच्छा है । बाजार देखने योग्य है । यहांका दर्शन करके स्टेशन लौट आना चाहिये । यहांसे १ रेलवे भोपाल बदलकर मक्सी, उज्जैन जाती है । १ भोपालसे आगे बीना, आगरा, मथुरा देहली तक जाती है । १ बंबई तरफ जाती है । एक रेलवे इन्दौर तरफ जाती है । इनका हाल ऊपर लिखा जाचुका है । टिकट १।।) देकर मोरटक्का (खेडीघाट) का लेलेना चाहिये । बीचमें सनावद शहर पड़ता है । किसीको उतरना हो तो उतर पड़े । नहीं तो मोरटक्का उतरना चाहिये । सनावद शहर अच्छा है । २ धर्मशाला, ३ मंदिर व १०० जैनियोंके घर हैं ।

(३४९) मोरटक्का ।

स्टेशनपर रायबहादुर सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद्रजी इन्दौरवालोंकी धर्मशाला है । १ मंदिर, कुआ, बगीचा, रसोईघर, सब हैं । बाजार, नदी है । फिर यहांसे ।।) सवारीमें मोटर और ।) सवारीमें बैलगाड़ीसे ७ मील ओंकार जाना चाहिये ।

(३५०) ओंकारेश्वर।

ग्राम अच्छा है। बीचमें नर्मदा नदी पड़ती है। इसलिये बहुत बाजार, धर्मशाला, महादेवजीका मंदिर इस तरफ हैं। नदीके उस पार जाना चाहिये। उसपर घाट, मंदिर, धर्मशाला, बाजार आदि सब हैं। यहांपर ओंकार महाराजका मंदिर और मूर्ति है। यह यात्रा भी अन्य मतियोंकी उत्कृष्ट है। यहांपर पहाड़ोंमें साधु रहते हैं। हजारों यात्री आते जाते रहते हैं। हर समय यहांपर भीड़ रहा करती है। कोई कालमें यह मंदिर भी जैनियोंका था। हालमें ओंकार महाराजका है। इस मंदिरको देखता हुआ आगे १ मील नदी किनारे२ पूछकर दूसरी नदीतक पैदल चले जाना चाहिये। फिर नावसे नदी उतरकर १ मील दूर सिद्धवरकूट जाना चाहिये।

(३५१) श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र।

यहां ३ दरवाजा हैं, आध मीलके चक्रमें कोट खिंचा हुआ है, भीतर बहुत धर्मशाला हैं। नौकर मुनीम रहता है। यहां कोठीकी तरफसे वस्त्र, वर्तन, लकड़ी, पानी सब मिलता है। सामानकी दुकान व रसोईघर है। एक तरफ नदी है। एक तरफ जानेका रास्ता है। दोनों तरफ जंगल है। कोटके भीतर ७ मंदिर हैं। जिसमें एक मन्दिर बड़ा है, उसमें दो वेदी हैं। यही मूलनायक मन्दिर है और बहुतसी प्रतिमा हैं। एक छोटे मन्दिरमें प्राचीन कालकी २ प्रतिमा महावीरस्वामीकी हैं। दूसरे २ मन्दिरमें प्रतिमा सुन्दर हैं। यहांसे थोड़ी दूर जंगलमें नदीके किनारे पहिलेका टूटा हुआ मन्दिर और खण्डित प्रतिमा हैं। माळीको साथ लेकर

वहांपर अवश्य जाना चाहिये । सो ही निर्वाणकांडमें कहा है–

रेवा नदी सिद्धवरकूट, पश्चिम दिशा देह जहां छूट ।
द्वै चक्री दश काम कुमार, ऊठ कोड़ वंदौं भवतार ॥

२ चक्रवर्ती, १० कामदेव, साढ़ेतीन करोड़ मुनि मोक्षको पधारे हैं । यहांकी यात्रा करें । लौटकर मोरटक्का स्टेशन आना चाहिये । फिर टिकट १।) देकर मऊकी छावणीका लेवे । बीचमें बड़वाहा पड़ता है । वहांपर भी उतर पड़ना चाहिये । यहांसे भी मोटर, बैलगाडीसे बड़वानी जाते हैं ।

(३५२) बड़वाहा ।

यह शहर अच्छा है, १ मन्दिर और बहुत घर जैनियोंके हैं। यहां दानशीला वेशरबाई नामकी धर्मात्मा बाई रहती हैं । यहांसे मोटर आदि द्वारा ४० मील बड़वानी जाना चाहिये। बीचमें महेश्वर सुन्दर रोल आदि ग्राम पड़ते हैं । सबमें दि० जैनियोंकी वस्ती है। मन्दिर भी हैं, महेश्वर शहर अच्छा है, ६० घर जैनियोंके हैं।

(३५३) महेश्वर ।

यहांपर बड़ा भारी मन्दिर है । उसमें प्राचीन प्रतिमा बहुत हैं। १ सहस्रकूट चैत्यालय है। मन्दिर भी मजबूत और कीमती है । यह भी एक अपूर्व रचनाका तीर्थ स्थान है । यहांपर नर्मदा नदी बहती है । यहांपर महादेवका मन्दिर व नर्मदाका घाट बंधा हुआ है। बहुत लोग यहांपर पिण्ड दान करनेवाले अन्यमती लोग आते हैं । नदीपर पुराना किला देखने काबिल है । शहरमें और १ मंदिर व २ चैत्यालय हैं । यहांसे बड़वानी जाते हैं । लौटकर बड़वाहा आना चाहिये । जहांतक हो भाइयोंको यह दर्शन अवश्य

करना चाहिये। फिर बड़वाहासे मऊकी छावनी जाना चाहिये।

(३५४) मऊकी छावनी।

स्टेशनसे १ मील शहरमें दि० जैन धर्मशाला है। वहांपर ठहरना चाहिये। तांगावाला ≥) सवारी लेता है। फिर धर्मशालाके सामने ही ३ मंदिर हैं। बहुत कीमती, रंगदार हैं। प्रतिमा मनोज्ञ हैं, १ चैत्यालय थोड़ी दूर बंबई बाजारमें हैं, यहांपर पं० फतेहलालजी वैद्यराज रहते हैं। आप बड़े सज्जन और प्रेमी पुरुष हैं, आनन्दसे दर्शन करें। फिर यहांसे १) सवारी देकर मोटरसे धार शहर जाना चाहिये। मऊमें इन्दौरके राजा व अंग्रेजी दोनों राज्य हैं। दोनोंकी यहांपर फौज-पलटन रहती हैं। यहांपर ६० घर जैनियोंके हैं। धार यहांसे २९ मील पश्चिमकी तरफ पड़ता है।

(३५५) धार शहर।

इसका हाल वचनागोचर है। जैन अजैनोंका यह पुराण तथा त्रिलोकप्रसिद्ध तीर्थ है। उज्जैनी धारमें कुछ कालतक राज्य रहता था। इसका नाम जयंतीनगर भी बोलते हैं। बड़े२ कोटीध्वज सेठ व जौहरी रहते थे। हीरा आदि जवाहरातका काम यहांपर होता था। न्यायपरायण भोज, मुंज, शकादि राजा यहांपर हो गये। बड़े२ पंडित आशाधर, मेधावी, मानतुग आदि यहींपर हुए थे।

यहांके राज्यमें बड़े२ आचार्योंने ग्रन्थ बनाये थे। आदिनाथस्वामीको छोड़कर शेष तेवीस तीर्थंकरोंके यहांपर समवशरण आये थे। हालमें भी राजा सा०का राज्य है। स्थान बड़ा रमणीक है। बाग, बगीचा, तालाब, कुण्ड, बाजार आदिसे युक्त है। १

दि० धर्मशाला, ४० घर व १ मन्दिर है । मन्दिरमें ४ वेदी व प्रतिमा रमणीक हैं । यहांके दर्शनसे पाप कट जाता है । यहांकी यात्रा करके मऊ लौट आवे । अगर यहांसे मोटरका सुभीता पड़ जाय तो कुकशी होकर सुमारी जावे । कुकशीसे तालनपुरकी यात्रा करके फिर कुकशी आजाय । फिर कुकशीसे बड़वानी चला जाय, अपने सुभीतेसे काम करना चाहिये । धारसे कुकशीकी मोटरका ४) सवारी लगता है । यहांसे १ रास्ता राजघाट (नर्मदाका घाट) ऊपर जाकर मिलता है, फिर १ धर्मपुरी—बड़वानी जाता है ।

(३५६) कुकशी ।

धार स्टेटके राज्यमें यह अच्छा शहर है । व्यापार अच्छा होता है । यहां ३ घर दि० जैन व १ मन्दिर है । २०० घर श्वेतांबरी व ७ मन्दिर हैं । यहां सेठ रोडमल मेघराजजी सुसारी-वालोंकी दुकान है । उनसे मिलनेपर वे अच्छी खातिर करते हैं । आप सज्जन धर्मात्मा एवं दानी हैं । यहांसे ३ मील दूर पश्चिमकी तरफ तालनपुर क्षेत्र हैं । पक्की सड़क लगी है । बहुत लोग रास्तेमें आते जाते रहते हैं । यहींपर पुजारी रहता है । हमेशा पूजाको वहांपर जाता है, उसके साथ तालनपुर जाना चाहिये ।

(३५७) तालनपुर अतिशयक्षेत्र ।

यहांपर १ धर्मशाला कुआ व जंगल है । एक श्वेतांबर मंदिर है । जिसमें बहुत प्रतिमा हैं उनमें कुछ प्रतिमा दि० हैं । १ मंदिर दिगम्बरी है, जिसमें ७ प्रतिमा प्राचीनकालकी दूसरे रंग-ढंगकी हैं । उनमेंसे १ प्रतिमा मल्लिनाथ स्वामीकी बड़ी मनोहर नख केश सहित ऐसी आंगोपांग हैं कि हम लिख नहीं सकते हैं ।

हमने दर्शन किये पर, ऐसी प्रतिमा कहींपर देखनेमें नहीं आई।

यहांका विशेष हाल-यहांपर १ शहर था, वहांके मंदिरजीमें ये प्रतिमा विराजमान थी। इनका सैकड़ों वर्षोंतक पूजन, प्रक्षाल होता रहा था। फिर कोई राजाने शहरपर धावा किया। शहरको लूटकर जला दिया। उस समय लोगोंने जमीनमें गढ़ा खोदकर इन प्रतिमाओंको जमीनमें गाड़ दिया। न जाने कितने वर्षोंतक जमीनमें रही होंगी। एक किसान खेतमें हल चला रहा था। हलके धक्केसे वे मूर्तियां निकलने लगीं। यह देखकर वह किसान जमीन खोदने लगा। खोदनेसे ये ३२ प्रतिमाएं निकलीं। सब ही अखंडित और दिगम्बर थीं। किसानने उसकी खबर कुक्षीमें जाकर कर दी। फिर वहांसे श्वेतांबर, दिगम्बर दोनों तरफके लोग आये। दर्शन करके परम आनंद पाया। दोनों तरफके भाइयोंने आपसमें झगड़ा किया। उनमेंसे ७ दि० भाइयोंने व बाकी श्वे० ने ले लीं। दोनोंने अपना२ मंदिर बनवाकर उन मूर्तियोंको विराजमान कर दीं। यह बड़ा अतिशय है कि ये प्राचीनकालकी प्रतिमा होनेपर भी इनका एक अंग अथवा उपांग, नख, केश भी खराब नहीं हुए ये बड़ी शांत मुद्रा, जैनाचार्योंकी प्रतिष्ठित प्रतिमा हैं। उनका दर्शन पूजन करके कुक्षी लौट आवे। तालनपुरसे मुसारी ४ मील पड़ता है।

(१५८) मुसारी।

यहांपर एक मन्दिर है, ५ घर दि० जैनियोंके है। सेठ रोडमल मेघराज यहींके रहनेवाले हैं, यहांसे बड़वानी १४ मील है, बीचमें चोकल्दागांव आता है। यहांपर भी १ मन्दिर और ८

घर जैनियोंके हैं। वहींसे नदीपार होकर बड़वानी जाते हैं। कोई भाई धारसे महुआ, राजघाट, धर्मपुरी होकर बड़वानी आवे उनका हाल इसप्रकार है। मऊसे लारी मोटरमें आनेवालोंको ३) सवारी, छोटी मोटरमें ५) सवारी लगता है। बड़वानी ९० मील पड़ता है। बीचमें मनावर, गुजारी, अंजड़ पड़ता है, सबमें दि० जैन मंदिर और जैनियोंके घर हैं। राजघाट नर्मदा नदीका पुल है। वहांसे दूसरी सड़क फूटकर ७ मील धर्मपुरी शहरमें जाती है। राजघाटपर एक रास्ता धार और एक मऊसे आकर मिलता है। यहांसे एक रास्ता धर्मपुरी, वांकानेर, एक रास्ता अंजडगांव होकर बड़वानी जाकर मिलता है। धर्मपुरीसे एक रास्ता वांकानेर, मनावर होकर बड़वानी जाकर मिलता है, सबसे अच्छा बैलगाड़ीका रास्ता है, कहींपर पक्की सड़क आजाती है। धर्मपुरी-यह भी धार राज्यमें अच्छा शहर है। यहांपर १ मंदिर व बहुत घर जैनियोंके हैं। किसीको देखना हो तो मांडु पहाड़की शेर करके फिर धर्मपुरी होकर राजघाट आजावे। फिर बड़वानी आना चाहिये।

(३५९) मांडु पहाड़।

धर्मपुरीसे बैलगाड़ी करके यहांपर आना होता है। हिंदुस्थानमें लोग बंबई कलकत्ताकी शेर करके आश्चर्य करते हैं परंतु पहिले समयमें मांडु शहर सरीखा दूसरा शहर नहीं था। धर्मपुरीसे उत्तरकी तरफ, धारके दक्षिणकी तरफ यह एक बादशाही राज्य है। पहाड़पर चारों तरफ १२ मीलके चक्रमें कोटसे घिरा हुआ १८ दरवाजेके आने जाने हैं। उसके बीचमें ३ मंजलका शहर है। ऐसा शहर तो हमने नहीं देखा है। पहिले नीचे शह-

रमें सड़क, तालाव, कुआ, बगीचा इत्यादि हैं। फिर पुल बांधकर ऊपर मकान, तालावादि हैं। फिर ऊपर पुल बांधकर शहर है। उसके ऊपर दो दो तीन२ मंजलके मकान हैं। और करोड़ोंकी लागतकी मसजिद आदि हैं। गधासा भैंसासा सेठकी हवेली, बादशाही दरबार देखनेयोग्य है। एक जगह मांडु महादेवका स्थान है। पहाड़से बहुत नीचे उतरनेके बाद बड़े२ ऊंचे दरवाजे हैं, नीचे कुंड है, पहाड़से पानी गिरता है। ऊपर उर्दू, फारसीका लेख, नीचे पाताल जैसे गढ़ा इत्यादि रचना देखने योग्य है। १ जैन धर्मशाला, १ मंदिरमें प्राचीन प्रतिमा हैं। पहाड़के रास्तेमें जैन शिलालेख एक बगलके खंडहरमें हैं, भीतर प्रतिमा नहीं है। पर मंदिर अपूर्व है। लौटकर धर्मपुरी आवे। फिर राजघाट आजावे। राजघाटसे बड़वानी चला जाना चाहिये। बड़वानी आनेके चार रास्ता हैं–१ धुलिया खानदेशसे, २ बडवाहा महेश्वर होकर, ३ मऊकी छावनीसे सीधा, ४ धार, कुकशी, चीकल्दा होकर।

सब हाल ऊपर लिखा जाचुका है। यह शहर राजा सा० का सुन्दर रमणीक है, माल व्यापार सब तरहका होता है। वस्तु, फल, फूल आदि सब सामान यहांपर ताजा पैदा होता है। हर समय हर तरहके पदार्थ मिलते हैं। घर२में पानीका कुआ है। १ दि० जैन धर्मशाला व बोर्डिंग शहरमें है। सो पूछकर यहांपर ठहरना चाहिये। फिर शहरमें १ मंदिर व सरस्वती भवन है। सेठ भीकाजी चांदूलालजी आदि कुल २० घर दि० जैनियोंके हैं। यहांपर धर्मशालाके पास एक ब्राह्मणके कब्जेमें १ प्राचीन दि० जैन मंदिर व ९ प्रतिमा भी हैं। उसका बड़ा+ जीर्णोद्धार होकर

है। पूछ करके दर्शन करना चाहिये। फिर यहांसे सब सामान लेकर बैलगाड़ी या मोटरमें पांच मील बावनगजाजी (चूलगिरि) जाना चाहिये। बीचमें पहाड़ी रास्ता ठीक है, कुछ डर नहीं है। सैकड़ों आदमी आते जाते रहते हैं। पर रास्ता भूलना नहीं चाहिये। यहां १ रास्ता पहाड़ी सीधा ३ मीलका भी है।

(३६०) श्री बावनगजाजी (चूलगिरि सिद्धक्षेत्र)

पहाड़की तलेटीमें २ धर्मशाला, १ कुआ, ४ कुंड और कुल १६ मंदिर तथा बहुत प्रतिमा हैं। आगे १ मील आगे रास्तेमें जानेपर १ मंदिरको आदि लेकर २ मंदिर हैं जहां पहाड़में खुदी हुई बहुतसी प्रतिमा हैं। श्री बावनगजा (आदिनाथ) स्वामीकी खड्गासन प्रतिमा ५२ गज ऊंची है। वहां ही एक ९ गज ऊँची श्री नेमिनाथकी प्रतिमा है। यह प्रतिमा मंदिर बनते समय जमीनसे निकली थी। फिर पहाड़पर जाना चाहिये। १ मीलका चढ़ाव है, १ मंदिर है। चूलेश्वर गिरिपर कोट व दरवाजा है। भीतर १ मंदिर और बहुत प्राचीन खंडित प्रतिमा हैं। आगे बड़ा मंदिर है, उनकी परिक्रमाके आलोंमें बहुत प्रतिमा है। मंदिरके पीछे गणधरदेवकी मूर्ति है। मंदिरमें बहुत प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। भीतर इन्द्रजीत व कुम्भकर्णकी चरणपादुका मनोहर हैं। इस पहाड़से रावणका भाई कुंभकर्ण और पुत्र इन्द्रजीतादि मुनि मोक्ष पधारे हैं। पहाड़से रेवा नदी सामने दीखती है।

(३६१) रेवा नदी।

इसको अन्यमती पवित्र मानते हैं, पूजते व परिक्रमा देते हैं। जैनागमसे यह नर्मदा नदी अपने भावों द्वारा ही मान्य हैं।

इसके तीरपर अनंतानंत सिद्ध हुए हैं। इसलिये यह क्षेत्र स्वयं पुज्यनीक है। सब यात्रा करके नीचे आजाना चाहिये। यहांपर भंडार भराकर बड़वानी लौट आवें। यहांसे तालनपुर अतिशय क्षेत्र भी जा सकते हैं। हाल ऊपर देखो! नहीं तो लौटकर मऊ होकर इन्दौर चला जावे।

(३६९) इन्दौर शहर।

यह शहर आजकल अच्छा है। श्री० रायबहादुर सरसेठ हुकुमचंदजी आदि बड़े२ सेठ साहूकार रहते हैं। होल्कर राजाका राज्य है। व्यापार बहुत है, स्टेशनके पास सेठजीकी जंवरीबागमें धर्मशाला है वहांपर सब आराम है, यहींपर ठहरना चाहिये। वहांपर सेठ सा० की तरफसे सब सामान मिलता है। किसी यात्रीको किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होती है। यहांपर लाखों रुपयाकी कीमतके जड़ाव काम सहित १९ मंदिर हैं। किसी आदमीको साथ लेकर सबका दर्शन करें। २ छावणी, १ नसिया, २ तुकोगंज, १ दीतवारा, १ मंदिर मारवाड़ी (शक्कर) बाजारमें हैं। तुकोगंजमें उदासीन आश्रम है। उसमें २५ त्यागी रहते हैं। रास्तेमें अच्छे मकान वगैरह मिलते हैं सो भी देखना चाहिये। दीतवारामें बड़ा मंदिर है। २-३ मंजिलोंमें दर्शन है। बड़ी२ विशाल प्रतिमा हैं। एक मंदिरमें नंदीश्वर द्वीपकी रचना धातुमयी है। पहिले यहांपर २४ प्रतिमा चौबीसों महाराजकी स्फटिकमणिकी थी। अब भी ३ प्रतिमा उस मंदिरमें मौजूद हैं। १ मंदिर कस्तूरीका है। १ मंदिर मल्हारगंजमें है। यहांपर धर्मशाला, कुआ भी है। यहां श्याम वर्ण बहुत विशाल प्रतिमा नेमिनाथकी है। यहांपर

और भी प्रतिमा हैं। एक मंदिर रजवाड़ाके पीछे नरसिंहपुरा जैनोंका है। दर्शन करके शहर देख लेवे।

जंवरीबागमें स्व० हु० दि० जैन महाविद्यालय है। जिसमें न्यायतीर्थ और शास्त्री कक्षातककी पूर्ण पढ़ाई होती है। एक विशाल बोर्डिंगहाउस भी है जिसमें करीब १०० विद्यार्थी रहते हैं। दीतवारामें कंचनबाई श्राविकाश्रम है। जैन औषधालय, भोजनशाला, कंचनबाई प्रसूतिगृह और तिलोकचंद जैन हाईस्कूल, कल्याण बोर्डिंग हाउस आदि अनेक जैन संस्थायें दर्शनीय हैं। सब देखना चाहिये। बाजार बहुत बड़ा है। कुछ खरीदना हो सो खरीद लेवे। फिर यहांसे मोटरका १।।) देकर श्री बेनडाजी जावे। बीचमें जमकुपुरा पड़ता है। यहां भी १ मंदिर है। जिसमें प्राचीन प्रतिमा दर्शनीय हैं। यहां २० घर जैनियोंके हैं। २ मील दूरीपर बेनडाजीका मंदिर है। बीचमें १ बड़ा भारी तालाव है। तालावके पाससे रास्ता है। आगे तालावके किनारे ही मंदिर दीखता है।

(१६३) श्री बैनडाजी अतिशय क्षेत्र।

यहांपर बड़ा भारी गढ़ खिंचा हुआ है। बीचमें धर्मशाला, कुआ है। मुनीम रहता है। भंडार भी है। छोटासा ग्राम पासमें है। ग्राममें १ चैत्यालय है। ४ घर जैनियोंके हैं। गढ़के भीतर ही बड़ा भारी विशाल गुम्मटवाला बादशाही समयका मंदिर है। भीतर ३ जगह बहुत प्रतिमा हैं। बहुत यात्री आते-जाते रहते हैं। लौटकर वापिस इन्दौर आवे। इन्दौरसे १ गाड़ी फतिहाबाद। १, रतलाम, नीमच, जावरा, मंदसौर, चितौड़गढ़। १ बड़ोदरा, १

नागदा, मथुरा। १ उदयपुर आदि। आगे भीलोड़ा, नसीराबाद होकर अजमेर जाती है। इसका हाल लिखा गया है वहांसे जानना।

(३६४) हरद्वार-हिन्दू तीर्थ।

देहलीसे १॥) देकर सहारनपुर जावे। सहारनपुरसे टिकटका ॥=) देकर लकसर जावे। लकसरसे गाड़ी बदलकर हरद्वार जावे। टिकट।-) लगता है। दूसरा रास्ता--कानपुरसे ॥।) टिकटका देकर लखनऊ जावे। या काशीसे टिकटका ३॥) देकर लखनऊ जावे। फिर लखनऊसे सहारनपुर लाईनमें टिकटका ५॥) देकर लकसरका लेवे। यहां गाड़ी बदलकर हरद्वार शहर स्टेशनसे १ मील दूर है। =) सवारीमें तांगावाला लेजाता है। अन्य मतवालोंकी धर्म-शाला बहुत हैं। यह हिन्दुओंका अच्छा तीर्थ है। शहर बढ़िया है। माल सब मिलता है। देहली, लाहौर, सहारनपुरकी तरफसे यात्री बराबर आते जाते रहते हैं। हर समय मेलासा भरा रहता है। रेलमें भी बड़ी भीड़ रहती है। स्टेशनपर जगह नहीं मिलती है। आगेका स्टेशन हृषीकेश है। टिकट =) है।

(३६५) हृषीकेश।

यह भी हिन्दुओंका भारी तीर्थ है। यहांसे आगे देहरादून जाकर मिल जावे। या वापिस हरिद्वार आजावे। हरिद्वारसे आगे सत्यनारायण तीर्थ है।

(३६६) सत्यनारायण।

यह भी हिन्दुओंका तीर्थ है। यहांसे फिर आगे पांव रास्ता है। कुल १८० मील पहाड़के भीतर होकर बद्रीनाथ जाते हैं।

पहाड़ी रास्ता हर तरहका है। बीचमें बहुत धर्मशाला, ग्राम सदा-वर्त हैं। बीचमें ३ जगह त्रिवेणी नदियां पड़ती हैं। उसको भी प्रयाग बोलते हैं। फिर कुछ दूर पहाड़में सीकर हीडोल चढ़कर जाना चाहिये।

(१६७) बद्रीनाथ।

पहाड़के बीचमें बड़ा ग्राम है। पंडा लोग रहते हैं। १ मंदिर है। द्वारकाधीशकी मूर्ति है। और भी हिन्दु मूर्तियां बहुत हैं। यहांपर भी छाप लगाते हैं। पंडा बहुत रहते हैं। विशेष हाल खुद मालूम करो। लौटकर अपनी इच्छानुसार जहां चाहे जासकते हैं। रास्ता हर जगह पूछते रहना चाहिये।

ब्र० प्रेमसागरजी, मुनिसंघ, ब्र० शीतलप्रसादजी, वर्णीत्रय-पं० गणेशप्रसादजी, पं०दीपचन्दजी व बाबा भागीरथजी, मुनि मुनींद्रसागरजी, गोमटस्वामी, प्राचीन प्रतिमायें, पं०पन्नालालजी, सिंहपुरी, चन्द्रपुरी, त्यागी सम्मेलन, सोलह स्वप्न, मुनि चन्द्रसागरजी, मुनि अनन्तसागरजी, नेमगिरि आदि२।